मास्टर ऑफ आर्ट्स (हिन्दी)

एम.ए. (हिन्दी)
अन्तिम वर्ष

प्रयोजनमूलक हिन्दी
(तृतीय प्रश्न पत्र)

दूरवर्ती अध्ययन एवं सतत् शिक्षा केन्द्र
महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय,
चित्रकूट (सतना) म.प्र. - ४८५३३४

प्रयोजनमूलक हिन्दी

ई–संस्करण 2023–24 / **M.A Hindi. –II - 33**

प्रेरणा एवं मार्गदर्शन :

प्रो. भरत मिश्र

कुलपति

महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट (म.प्र.)

पाठ्यक्रम निर्माण समिति

डॉ. कुसुम कुमारी सिंह, डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी, डॉ. ललित सिंह

पाठ्यक्रम संयोजक

डॉ. कुसुम कुमारी सिंह

पाठ्यक्रम अभिकल्पना एवं सम्पादक मण्डल :

डॉ. कमलेश थापक डॉ. ललित सिंह

डॉ. कुसुम कुमारी सिंह डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी

मुद्रण प्रस्तुति

डॉ. सन्तोष अरसिया, उपकुलसचिव (दूरवर्ती परीक्षा)

सन्तोष राजपूत, सहायक कुलसचिव (दूरवर्ती परीक्षा)

शिवांगी त्रिपाठी

सम्पर्क सूत्र :

डॉ. कमलेश थापक, निदेशक, दूरवर्ती शिक्षा

दूरवर्ती अध्ययन एवं सतत् शिक्षा केन्द्र

महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट (म.प्र.)

दूरभाष– 07670–265460, E-mail – directordistancemgcgv@gmail.com, website : www.mgcgvchitrakoot.com

प्रकाशक :

दूरवर्ती अध्ययन एवं सतत् शिक्षा केन्द्र

महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट (म.प्र.)

प्राक्कथन...

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की तपोस्थली, मंदाकिनी नदी के सुरम्य तट पर स्थापित महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय भारतरत्न नानाजी देशमुख के शैक्षिक चिंतन और संकल्पों की जीवंत अभिव्यक्ति है, जो म.प्र.शासन द्वारा 12 फरवरी, 1991 को विशेष अधिनियम 09, 1991 द्वारा स्थापित हुआ।

विश्वविद्यालय का ध्येय वाक्य है–'विश्वं ग्रामे प्रतिष्ठितम्' अर्थात ग्राम विश्व का लघु रूप है। विश्वविद्यालय चित्रकूट में स्थित है, जो एक प्रसिद्ध तीर्थ स्थल है। नई पीढ़ी के लिये यह स्थान आदर्श एवं प्रेरणा का केन्द्र है।

विश्वविद्यालय में कृषि, प्रबंधन, अभियांत्रिकी, लोक विज्ञान, ग्रामीण विकास एवं स्थानीय स्वशासन, लोक शिक्षा, कला, संस्कृति एवं साहित्य सहित सभी अकादमिक धारायें प्रभावी रूप में उपस्थित हैं। विश्वविद्यालय, ग्राम को समाज जीवन की मूल इकाई मानकर शिक्षण, प्रशिक्षण, शोध और प्रसार कार्यों से सर्वांगीण विकास के लिए विगत 3 दशकों से अधिक समय से समर्पित प्रयास कर ग्रामोदय से राष्ट्रोदय के संकल्प में लगा हुआ है। विश्वविद्यालय ने अपनी गतिविधियों और कार्यक्रमों के माध्यम से कौशल विकास के उन्नयन एवं प्रमाणन तथा सतत विकास लक्ष्यों की प्राप्ति में महत्वपूर्ण योगदान कर रहा है तथा शासन के सहयोगी के रूप में उल्लेखनीय भूमिका का निर्वहन कर रहा है।

प्राचीन एवं सनातन भारतीय ज्ञान की परम्परा के आलोक में आई, राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 चिरवांछित जन आकांक्षाओं की सम्यक् अभिव्यक्ति है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के युगान्तरकारी प्रावधानों को लागू करने में मध्यप्रदेश अग्रणी राज्य रहा है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने नवाचारों के लिए सकारात्मक और अनुकूल वातावरण उपलब्ध कराया है। विद्यार्थियों की पठन–पाठन की स्वतंत्रता, कौशल विकास के समुचित अवसर तथा राष्ट्रीय प्राथमिकताओं के अनुसार आने वाले भविष्य के लिए तैयार करने की प्रतिबद्धता राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रावधानों में स्पष्टतः दिखाई देती है।

विश्वविद्यालय ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रावधानों को दूरवर्ती के विभिन्न पाठ्यक्रमों में अर्थपूर्ण रूप से जोड़कर इन्हें सत्र 2023–24 से पुनः संशोधित/परिवर्धित रूप में प्रारम्भ किया है। विश्वविद्यालय उच्च शिक्षा के प्रसार एवं रोजगार के अवसर बढ़ाने हेतु दूरवर्ती माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में विशेष प्रयास कर रहा है। दूरवर्ती पद्धति से संचालित विभिन्न पाठ्यक्रमों में नियमित संपर्क कक्षाओं के आयोजन, उच्च शिक्षा की स्व–अध्ययन सामग्री एवं नई शैक्षिक प्रौद्योगिकी का उपयोग करते हुए शिक्षार्थी को बेहतर शैक्षणिक अनुभव प्रदान करने की व्यवस्था सुनिश्चत की जा रही है।

विश्वविद्यालय के दूरवर्ती अध्ययन एवं सतत शिक्षा केन्द्र द्वारा सत्र 2024–25 में संचालित परास्नातक, स्नातक तथा डिप्लोमा स्तरीय दूरवर्ती पाठ्यक्रमों के शिक्षार्थियों हेतु ई–स्वनिर्देशित अध्ययन सामग्री प्रस्तुत करते हुये मुझे हर्ष का अनुभव हो रहा है।

पाठ्यक्रम से जुडे सभी शिक्षार्थियों, अभिभावकों, प्रशासकों, समन्वयकों और अन्य सभी को मेरी मंगलकामनायें

प्रो. भरत मिश्रा
कुलपति

अनुक्रमणिका

इकाई I : हिन्दी भाषा : विकास, बोलियाँ तथा व्याकरण

- हिन्दी भाषा का विकास क्रम
- लिपि व बोलियों का संक्षिप्त परिचय
- व्याकरण, सन्धि, समास, उपसर्ग, प्रत्यय, छंद, अलंकार

इकाई II : विविध शब्द-संग्रह

- पर्यायवाची (समानार्थक) शब्द
- विलोमार्थी (विपरीतार्थक) शब्द
- अनेकार्थक शब्द
- समूहार्थक शब्द
- मुहावरे
- लोकोक्तियाँ

इकाई III : अनुवाद : अर्थ, परिभाषा, प्रकार एवं उपकरण

- अनुवाद का अर्थ
- अनुवाद : परिभाषा और अनुवाद का स्वरूप
- अनुवाद : प्रकार एवं उपकरण
- भारत में देवनागरी कम्प्यूटर
- कुछ अन्य अनुवाद-प्रभेद

इकाई IV : मीडिया की भाषा : प्रस्तुति, विशेषताएँ, विकार व समस्याएँ

- मीडिया में भाषा का प्रयोग व महत्व
- मीडिया की भाषा की प्रकृति व विशेषताएँ
- मीडिया की भाषा के विकार व समस्याएँ

इकाई V : प्रयोजनमूलक हिन्दी : अभिप्राय एवं स्वरूप

- प्रयोजनमूलक हिन्दी का अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप
- हिन्दी भाषा की प्रकृति एवं विशेषताएँ
- मातृभाषा
- मातृभाषा : हिन्दी
- संचार भाषा
- राजभाषा के रूप में हिन्दी

इकाई VI : प्रेस नोट तथा प्रेस विज्ञप्ति

- प्रेस नोट की परिभाषा और स्वरूप
- प्रेस विज्ञप्ति की परिभाषा और स्वरूप
- प्रूफ-संशोधन

इकाई VII : पारिभाषिक शब्दावली एवं शब्दकोष

- पारिभाषिक शब्दावली (पत्रकारिता से सम्बन्धित 100 शब्द)
- पारिभाषिक शब्दावली की परिभाषा एवं स्वरूप
- पारिभाषिक शब्दावली का महत्व
- शब्दकोष का अर्थ, प्रकार
- विश्वकोष की परिभाषा एवं उपयोगिता

इकाई VII : जनसंचार के माध्यम

- जनसंचार का अभिप्राय
- जनसंचार के माध्यम
- विज्ञापन में प्रयुक्त हिन्दी
- जनसंचार की विशेषताएँ
- जनसंचार माध्यमों की उपयोगिता
- जनसंचार माध्यमों के लिए समाचार लेखन
- विज्ञापन के प्रकार
- विज्ञापन और प्रयोजनमूलक हिन्दी
- समाचार पत्र
- आकाशवाणी तथा दूरदर्शन के लिए विज्ञापन लेखन

NOTES

इकाई - I

हिन्दी भाषा : विकास, बोलियाँ तथा व्याकरण

इकाई में शामिल है:

- हिन्दी भाषा का विकास क्रम
- लिपि व बोलियों का संक्षिप्त परिचय
- व्याकरण, सन्धि, समास, उपसर्ग, प्रत्यय, छंद, अलंकार

अध्ययन के उद्देश्य :

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात्, आप निम्न बिन्दुओं को समझने में सक्षम होंगे –

- हिन्दी भाषा का विकास क्रम : प्रारम्भिक काल, मध्यकाल, आधुनिक काल
- लिपि व बोलियों का संक्षिप्त परिचय, विशेषताएँ, मानकीकरण
- संधि, समास
- प्रत्यय, उपसर्ग

NOTES

हिन्दी भाषा : विकास क्रम, उपभाषाऐं एवं बोलियाँ

भाषा स्वयं में एक सतत प्रवहमान प्रक्रिया है। किसी भी भाषा के वर्तमान कालिक स्वरूप का मूल उसकी पूर्ववर्ती भाषा अथवा भाषाओं में निहित रहता है। जहाँ तक हिन्दी भाषा के विकास का प्रश्न है, इसकी कहानी काफी लम्बी है। इसकी जड़ें उस जनभाषा में विद्यमान हैं जिसे 'शौरसेनी अपभ्रंश' कहा जाता है। हेमचन्द्र ने अपभ्रंश को व्याकरण में निबद्ध करने का प्रयास किया था, वह अपभ्रंश की परिनिष्ठता की प्रवृत्ति का द्योतक माना जाना चाहिए। इसके आस-पास ही अपभ्रंश अपने कई रूपों में बँटने लगी थी। अपभ्रंश के अन्तिम चरण में प्रारम्भिक हिन्दी की झलक हमें मिलने लगती है। हिन्दी के इस प्रारम्भिक रूप को 'अवहट्ट' भी कहा गया है। वैदिक भाषा की ही धारा लौकिक संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश और अवहट्ट भाषाओं के रूप में विकसित होती हुई आज हिन्दी के रूप में फलफूल रही है। इस प्रकार हिन्दी का विकास अविछिन्न रूप से अपने मूल वैदिक संस्कृत से हुआ है।

हिन्दी का उद्भव एवं विकास : एक दृष्टि में

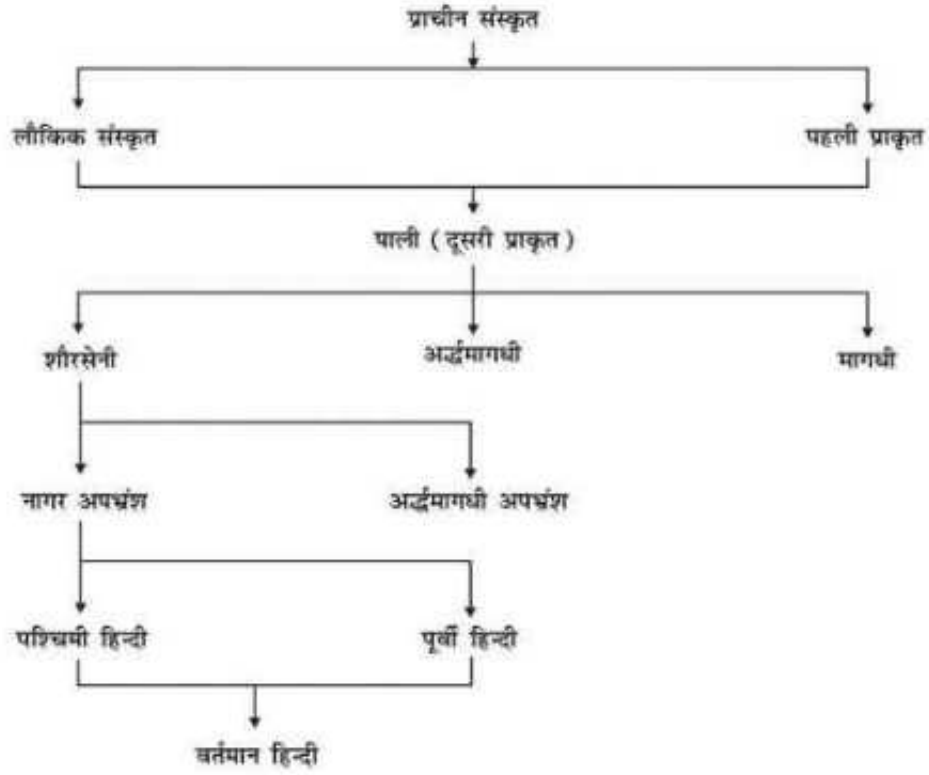

वैदिक संस्कृत से विकसित लौकिक संस्कृत तथा आगे और विकसित अन्य भाषाएँ व्याकरणबद्ध होकर तथा साहित्य का माध्यम बनकर गतिरुद्ध होती गईं और नई-नई जनभाषाएँ उनका स्थान ग्रहण करती गईं। हिन्दी भी जनभाषा थी। जब अपभ्रंश या अवहट्ट की गति रुद्ध हुई तब हिन्दी आगे बढ़ी। यह लगभग 1000 वर्ष से अपना विकास करती हुई विकास की कई सीढ़ियाँ पार कर चुकी है। हिन्दी साहित्य की बहुमूल्य सम्पत्ति ब्रजभाषा, खड़ी बोली और अवधी में है। जैसे, खड़ी बोली हिन्दी शौरसेनी अपभ्रंश से विकसित हुई उसी प्रकार ब्रजभाषा भी शौरसेनी अपभ्रंश से विकसित हुई, किन्तु अवधी, अर्द्धमागधी अपभ्रंश से विकसित हुई है। डॉ. भोलानाथ तिवारी ने अपने ग्रन्थ 'हिन्दी भाषा का संक्षिप्त इतिहास' में हिन्दी को पांच उपभाषाओं अथवा बोली समूहों 'पश्चिमी हिन्दी, पूर्वी हिन्दी, राजस्थानी, पहाड़ी तथा बिहारी' का सामूहिक नाम बताया है।

हिन्दी का उद्भव एवं विकास

भाषा का प्रयोग जन्म के साथ ही नहीं हो जाता। जब किसी भाषा में जन्म के बाद कुछ प्रौढ़ता आ जाती है, तो उसका रूप निखर आता है तथा वह बहुस्वीकृत हो जाती है तभी साहित्यकार उसे अपनी

अभिव्यक्ति का माध्यम बनाता है। हिन्दी भाषा 2000 ई. में जन्म लेकर विकसित होते-होते अब लगभग 1000 वर्षों की हो गई है। हिन्दी भाषा के विकास को समझने के लिए हम इसे निम्नलिखित तीन कालों में बाँट सकते हैं :

1. प्रारम्भिक काल — 1000-1500 ईसवी
2. मध्यकाल — 1500-1800 ईसवी
3. आधुनिक काल — 1800 से अब तक

आइए, अब हम प्रत्येक काल के विषय में चर्चा करें।

प्रारम्भिक काल (1000-1500 ईसवी)

इस काल में हिन्दी भाषा प्राचीन रूप से नवीन रूप में संक्रमण कर रही थी। अत: इसे 'आरम्भ काल' कह सकते हैं। इस काल के नाम पर प्राप्त सामग्री प्रामाणिकता की दृष्टि से असंदिग्ध नहीं है। वैसे हिन्दी भाषा का प्रयोग तो सातवीं शताब्दी से ही होने लगा था। राहुल जी ने 700 ई. से 1300 ई. तक के नमूने खोज रखे हैं। इस काल में प्राप्त सामग्री को निम्नलिखित चार भागों में बाँटा गया है :

i. शिलालेख, ताम्रपत्र तथा प्राचीन पत्र आदि।

ii. अपभ्रंश काव्य।

iii. चारण काव्य, गंगा-घाटी से लेकर राजस्थान तक में लिखे गए धार्मिक तथा काव्य ग्रंथ।

iv. हिन्दवी या पुरानी खड़ी बोली में लिखा गया साहित्य।

शिलालेख और ताम्रपत्र नहीं के बराबर लिखे गए। जो पट्टे-परवाने मिले वे अप्रामाणिक ठहराए गये। अत: प्रथम आधार सम्भव नहीं हो सकता। अपभ्रंश काव्यों में हिन्दी के नमूने अवश्य मिलते हैं। सिद्धों, जैनियों और नाथपंथी साधुओं द्वारा निर्मित जनभाषा साहित्य से पता चलता है कि उनकी भाषा शौरसेनी प्रसूत पश्चिमी हिन्दी (ब्रज और खड़ी बोली) का प्राचीन रूप है। सिद्धों का सम्पर्क गुजरात सहित ब्रज से लेकर बिहार तक था, अत: इस भाषा-रूप में अनेक बोलियों के शब्द मिलते हैं। आचार्य शुक्ल ने इसे 'सधुक्कड़ी' भाषा कहा है। कबीर आदि सन्तों की वाणियों में इसका विकसित एवं परिवर्तित रूप मिलता है।

चारणों द्वारा रचित 'रासो' काव्यों की अप्रामाणिकता सिद्ध हो चुकी है। इस काल की प्रमुख भाषा हिन्दी या पुरानी खड़ी बोली है जिसमें मुसलमान सूफी फकीरों ने काफी-कुछ लिखा है, नूरमुहम्मद ने तो 'हिन्दी' शब्द का भी प्रयोग किया है। एक उदाहरण देखिये :

हिंदू मग पर पाँव न राख्यौ।
का बहुतै जो हिन्दी भाख्यौ॥

अमीर खुसरो की गजलें, पहेलियाँ और मुकरियाँ खड़ी बोली के प्राचीन नमूने हैं। विशुद्ध खड़ी बोली का नमूना देखिए:

श्याम वरन की है इक नारी, माथै ऊपर लागै न्यारी ।
या का अरथ जो कोई खोले, कुत्ते की वह बोली बोले ॥

हेमचन्द के पद्य में खड़ी बोली का वास्तविक नमूना देखिए :

भल्ला हुआ जु मारिया, बहिणि म्हारा कन्तु ।
लज्जेजं तु वयस्सिअहु, जु भग्गा घर एन्तु ॥

जैन कवियों और सिद्धों की रचनाओं में हिन्दी का प्रारम्भिक रूप सुरक्षित है। पुष्पदंत की ये पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं :

जिहि दिसि दिसि तिमरइँ मिलवाई ।
तिहि दिसि दिसि जारइ मिलियाई ॥

इसी क्रम में सरहैया की एक रचना देखिए :

NOTES

जहि मन पवण न संचरइ, रवि ससि पाह पवेस ।
तहि बढ़ चित विसराम करु, सरहें कहिउ उएस ॥

इस समय भाषा के दो रूप 'पिंगल और डिंगल' भी प्रचलित थे। ब्रज का आश्रय लेकर चलने वाली सामान्य भाषा कवियों में 'पिंगल' के नाम से विख्यात थी। अपभ्रंश मिश्रण युक्त शुद्ध राजस्थानी 'डिंगल' कहलाती थी। विद्यापति ने अपनी 'पदावली' में मैथिली का प्रयोग किया। इस प्रकार इस काल के प्रमुख रचनाकारों में गोरखनाथ, विद्यापति, नरपति नाल्ह, कबीर, ख्वाजा बन्दानवाज, अब्दुल रहमान, अमीर खुसरो और शाह मीराजी मुख्य हैं।

इस काल की हिन्दी भाषा में मुख्यतया उन्हीं ध्वनियों (स्वरों-व्यंजनों) का प्रयोग मिलता है जो अपभ्रंश में प्रयुक्त होती थीं। कुछ मुख्य अन्तर भी हैं, जैसे- (1) अपभ्रंश में केवल आठ स्वर थे– अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ओ । ये आठों ही स्वर मूल स्वर थे। प्रारम्भिक कालीन हिन्दी में दो नए स्वर 'ऐ, औ' विकसित हो गए, जो संयुक्त स्वर थे तथा जिनका उच्चारण क्रमशः 'अए, अओ' जैसा था। (2) 'च, छ, ज, झ' संस्कृत, पालि, प्राकृत तथा अपभ्रंश में 'स्पर्श' व्यंजन थे, किन्तु आदिकालीन हिन्दी में वे 'स्पर्श-संघर्षी' हो गए और तब से अब तक 'स्पर्श-संघर्षी' ही हैं। 'न, र, ल, स' संस्कृत, पालि, प्राकृत तथा अपभ्रंश में 'दंत्य' ध्वनियाँ थीं। इस काल में ये 'वर्त्स्य' हो गए। अपभ्रंश में ड, ढ, व्यंजन नहीं थे, आदिकालीन हिन्दी में इनका विकास हुआ। 'न्ह, मह, ल्ह' पहले संयुक्त व्यंजन थे, अब वे क्रमशः न, म, ल के महाप्राण रूप हो गए, अर्थात् संयुक्त व्यंजन न रहकर मूल व्यंजन हो गए। (3) संस्कृत तथा फारसी आदि से कुछ नए शब्दों के आ जाने के कारण कुछ संयुक्त व्यंजन हिन्दी में आ गए जो अपभ्रंश में नहीं थे। कुछ अपभ्रंश शब्दों के लोप के कारण कुछ ऐसे संयुक्त व्यंजनों, स्वरानुक्रमों तथा व्यंजनानुक्रमों आदि के लोप की भी सम्भावना है जो अपभ्रंश में रहे होंगे।

आदिकालीन हिन्दी का व्याकरण समवेततः अपभ्रंश व्याकरण से इन बातों में भिन्न है– (1) अपभ्रंश संस्कृत, पालि, प्राकृत आदि की तुलना में वियोगात्मक होते हुए भी एक सीमा तक संयोगात्मक भाषा थी। काफी क्रिया तथा कारकीय रूप संयोगात्मक होते थे, किन्तु आदिकालीन हिन्दी में वियोगात्मक होते रूपों का प्राधान्य हो चला। सहायक क्रियाओं तथा परसर्गों (कारक चिन्हों) का प्रयोग पर्याप्त मात्रा में होने लगा और धीरे-धीरे संयोगात्मक रूप कम हो गए और उनका स्थान वियोगात्मक रूप लेते गए। (2) नपुंसकलिंग एक सीमा तक अपभ्रंश में था, यद्यपि, संस्कृत, पालि तथा प्राकृत की तुलना में उसकी स्थिति अस्पष्ट-सी होती जा रही थी। आदिकालीन हिन्दी में नपुंसकलिंग का प्रयोग प्रायः पूर्णतः समाप्त हो गया। गोरखनाथ के कुछ प्रयोगों को कुछ लोगों ने नपुंसकलिंग का माना है, किन्तु यह मान्यता पूर्णतः असंदिग्ध नहीं कही जा सकती। (3) हिन्दी वाक्य रचना में शब्द-क्रम धीरे-धीरे निश्चित होने लगा था। अपभ्रंश में शब्द-क्रम बहुत निश्चित नहीं था।

शब्द-समूह की दृष्टि से 'प्रारम्भिक हिन्दी' पर अपभ्रंश का प्रभाव है। इसे हम 'अपभ्रंश हिन्दी' भी कह सकते हैं जिसमें तद्भव शब्दों का अधिक प्रयोग किया गया है। प्रारम्भिक काल की हिन्दी में अरबी-फारसी के शब्दों की संख्या कम है। इस काल के साहित्य में प्रमुख रूप से 'डिंगल, मैथिली और दक्खिनी' के मिश्रित रूपों का प्रयोग किया गया है।

मध्यकाल (1500-1800)

हिन्दी का आदिकाल संघर्ष का काल था। मध्यकाल तक हिन्दी का रूप निखर आया। ब्रजी और अवधी तो बड़ी सशक्त हो गईं। अपभ्रंश से पीछा छूटा। खड़ी बोली विकसित होती रही। उक्त तीनों को 'भाषा' नाम से पुकारा जाता था। इसीलिए, संस्कृत के पण्डित केशवदास को भी कहना पड़ा :

भाषा बोल न जानहीं, जाके घर के दास ।
तामहं कविता करत है, जड़मति केशवदास ॥

पारम्परिक शैली में इस काल को 'स्वर्णयुग' कहकर सम्बोधित किया जाता है। इस युग में भाषा सम्बन्धी स्थिरता आ जाने के कारण साहित्य का कलात्मक विकास चरम बिन्दु पर पहुँच गया था। प्रारम्भिक हिन्दी के प्रस्फुटित रूप स्थानीय विशेषताओं के साथ उभर आये थे। बोलियों के विविध रूप विकसित हो गए थे। इस काल में अरबी-फारसी से सम्पर्क के कारण भाषा में 'क, ख' जैसी नई ध्वनियों का समावेश भी हो गया था। इस काल में पूर्वी क्षेत्र में अवधी और मैथिली, पश्चिमी क्षेत्र में पिंगल से ब्रजी तथा हिन्दवी या खड़ी बोली से निर्गुण कवियों की 'सधुक्कड़ी' भाषा का विकास हुआ।

मध्यकालीन साहित्य में जायसी के 'पद्मावत' (1540 ई. के आस-पास), तुलसी के 'रामचरितमानस' (1575 ई. के आस-पास), कुतुबन के 'मृगावती' (1500 ई.) नूरमुहम्मद के 'इन्द्रावती' (1744 ई. के आस-पास) आदि ग्रन्थों का प्रणयन हुआ। अवधी का तो था इस काल में चरम उत्कर्ष।

पूर्वी क्षेत्र में मैथिली की अपेक्षा अवधी अधिक महत्वपूर्ण बन गई थी। इस काल में अवधी के तीन रूप साफ दिखाई देते हैं– सूफियों की ठेठ अवधी (जायसी, कुतुबन, मंझन, नूर मुहम्मद) का प्रेमाख्यानक हिन्दू कवियों की शैली जिसमें पश्चिमी हिन्दी का पुट है (गोवर्धनदास, पुहुकर इत्यादि) तथा संस्कृत-मिश्रित साहित्यिक अवधी जिसमें रामकाव्य रचा गया (गोस्वामी तुलसीदास, लालदास, आदि)।

पश्चिमी राजस्थानी का विकासमान रूप मीराबाई, जसवन्तसिंह और वृन्द में दिखलाई देता है। इनकी भाषा मूलतः ब्रजी है, पर उसमें राजस्थानी का पुट साफ दिखाई देता है। दक्षिण में दक्खिनी हिन्दी का रूप निखर रहा था। निर्गुण काव्यधारा के कवियों में एक नवीन मिश्रित भाषा विकसित हो रही थी, जिसे हम 'सधुक्कड़ी' कह सकते हैं। इस काल में कृष्ण काव्य में प्रचलित ब्रजभाषा का विकास अत्यधिक सुन्दर रूप में हुआ। कृष्ण-भक्त कवियों में सूर, रसखान तो प्रमुख हैं ही, साथ ही केशव, महाराजा जसवन्तसिंह, बिहारी, मतिराम, भिखारीदास, पद्माकर, देव और घनानन्द के भाषा-लालित्य और भाषा-प्रयोगों को विस्मृत नहीं किया जा सकता। इस काल की ब्रजी भक्ति-क्षेत्र की भाव-प्रेरित अनुभूतियों से लेकर साज-सज्जा, चमक-दमक और क्रीड़ा-विलास की नानामुखी अभिव्यंजनाओं तक मुखरित है। इस काल में ब्रजभाषा क्षेत्रीय बोलियों से अधिक प्रभावित हुई है।

इस काल की भाषा में तद्भव शब्दों की अपेक्षा तत्सम शब्दों का प्रयोग अधिक हुआ है। अरबी-फारसी शब्दों की संख्या भी अधिक है। दक्खिनी हिन्दी के कवियों और लेखकों (नुसरती, कुली कुतुबशाह, वजही, वली इत्यादि) में फारसी-अरबी शब्दों का प्रयोग अधिक मिलता है। इस काल में ब्रजी, अवधी, मैथिली और दक्खिनी हिन्दी के अतिरिक्त खड़ी बोली में भी यत्किंचित साहित्य रचा गया है।

एक ओर ब्रजभाषा में शृंगारी रचनाएँ कोमलकान्त पदावली में हो रही थीं, तो दूसरी ओर शाहजहाँ के दरबार में उर्दू की कृत्रिम शैली शृंगारी रचनाएँ हो रही थीं। 18वीं तथा 19वीं शताब्दी में उर्दू में मीर गालिब, ईशा, जौक, दाग आदि प्रसिद्ध कवि हुए। ब्रजभाषा का प्रभाव बंगला भाषा तक पर पड़ा और लोग बंगला की 'ब्रजबुलि' कहने लगे।

इस काल में आकर ध्वनि, व्याकरण तथा शब्द-भंडार के क्षेत्र में मुख्यतया निम्नलिखित परिवर्तन हुए : जैसे-ध्वनि के क्षेत्र में दो-तीन बातें उल्लेखनीय हैं- (1) फारसी की शिक्षा की कुछ व्यवस्था तथा दरबार में फारसी भाषा का प्रयोग होने से उच्च वर्ग में तथा नौकरीपेशा लोगों में फारसी का प्रचार हुआ जिसके कारण उच्च वर्ग के लोगों की हिन्दी में तुर्की, अरबी-फारसी के काफी शब्द प्रचलित हो गए और 'क, ख, ग, ज, फ' ये पाँच नए व्यंजन हिन्दी में आ गए। (2) शब्दांत का 'अ' कम से कम मूल व्यंजन के बाद आने पर लुप्त हो गया। अर्थात् 'राम' का उच्चारण 'राम्' होने लगा। 'मानस' के अनेक छंद दोषपूर्ण हो जायेंगे यदि उनमें 'राम' न पढ़कर 'राम्' पढ़ा जाए, जैसे :

राम राम कहि राम कहि, राम राम कहि राम।

किन्तु 'भक्त' जैसे शब्दों में जहाँ अ के पूर्व संयुक्त व्यंजन था, 'अ' बना रहा। कुछ स्थितियों में अक्षरांत 'अ' का भी लोप होने लगा। उदाहरण के लिए, आदिकालीन 'जपता' अब उच्चारण में 'जप्ता' हो गया। (3) ह के पहले का अ कुछ स्थितियों में ए जैसा उच्चरित होने लगा था। पांडुलिपियों में ऐसे 'अ' के स्थान पर 'ए' के प्रयोग से इस बात का अनुमान होता है।

NOTES

व्याकरण के क्षेत्र में भी मुख्यत: तीन बातें ही उल्लेखनीय हैं– (1) इस काल में हिन्दी भाषा व्याकरण के क्षेत्र में पूरी तरह अपने पैरों पर खड़ी हो गई। अपभ्रंश के रूप में प्राय: हिन्दी से निकल गए। जो कुछ बचे थे, वे वह थे जिन्हें हिन्दी ने आत्मसात कर लिया था। (2) भाषा, आदिकालीन भाषा की तुलना में और भी वियोगात्मक हो गई। संयोगात्मक रूप और भी कम हो गए। परसर्गों तथा सहायक क्रियाओं का प्रयोग और भी बढ़ गया। (3) उच्च वर्ग में फारसी का प्रचार होने के कारण हिन्दी वाक्य-रचना फारसी वाक्य-रचना से प्रभावित होने लगी थी। उदाहरण के लिये, हिन्दी की प्रारम्भिक परम्परा के अनुकूल सूर-काव्य में आता है– 'इन्द्र कह्यो मम करो सहाइ।' यहाँ 'कि' का प्रयोग नहीं है किन्तु बाद में फारसी शब्द 'कि' के प्रयोग से वाक्य बनने लगे। उदाहरणार्थ रामप्रसाद निरंजनी के 'भाषा योग वासिष्ठ' (1741 ई.) में आता है : **"वेद में एक ठौर कहा है कि जब लग जीवता रहे तब लग कर्म को करना।"**

शब्द-भण्डार की दृष्टि से ये बातें मुख्य हैं– (1) इस काल में आते-आते काफी शब्द फारसी (लगभग 3500), अरबी (लगभग 2500), पश्तो (लगभग 50) तथा तुर्की से (लगभग 125) हिन्दी में आ गए और इन आगत विदेशी शब्दों की संख्या लगभग 6000 से ऊपर हो गई। फारसी से कुछ मुहावरे और लोकोक्तियाँ भी आईं। (2) भक्ति आन्दोलन के चरम बिन्दु पर पहुँचने के कारण तत्सम शब्दों का अनुपात भाषा में और भी बढ़ गया। (3) यूरोप से सम्पर्क होने के कारण कुछ पुर्तगाली, स्पेनी, फ्रांसीसी तथा अंग्रेजी शब्द भी हिन्दी में आ गए।

आधुनिक काल (1800 से अब तक)

भाषा-विकास की दृष्टि से इसे हम हिन्दी का समृद्ध काल कह सकते हैं। भाषा-प्रयोग की दृष्टि से विविधता के अतिरिक्त भाषा में स्थिरता भी आई है। भाषा के निम्नलिखित तीन रूपों का प्रयोग इस काल में हुआ है :

1. ब्रजी 2. खड़ी बोली, 3. मिश्रित (ब्रजी + खड़ी बोली)।

उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त तक काव्य में ब्रजभाषा का प्रयोग होता रहा और उसके उपरान्त खड़ी बोली ने काव्य में प्रवेश किया। भाषा-विकास की दृष्टि से इसके प्रारम्भिक चरण में भारतेन्दु, अम्बिकादत्त व्यास, प्रतापनारायण मिश्र, ठाकुर जगमोहन सिंह को स्मरण किया जा सकता है। ब्रजभाषा के रूप को सुरक्षित रखने में सत्यनारायण 'कविरत्न' तथा जगन्नाथ दास 'रत्नाकर' के नाम उल्लेखनीय हैं।

अंग्रेजों के आगमन के परिणामस्वरूप खड़ी बोली गद्य का विकास हुआ। हिन्दी भाषा के प्रचार में ईसाई मिशनरियों और फोर्ट विलियम कालेज के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। द्विवेदी युग भाषा में स्थैर्य लाने के लिये हमेशा याद रखा जायगा। हिन्दी भाषा के विकास के लिए 'नागरी प्रचारिणी सभा' और 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन' का जन्म हुआ। अनेक पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन आरम्भ हुआ। इन सबके माध्यम से हिन्दी भाषा की अभिव्यंजना-शक्ति में असाधारण वृद्धि हुई।

इस युग की अनेक बोलियाँ विकसित होकर उपबोलियों में विभक्त हो चुकी हैं। भाषा में अंग्रेजी शब्द अत्यधिक मात्रा में प्रवेश पा गये हैं। ऐसा अनुमान है कि लगभग तीन हजार अंग्रेजी शब्द हिन्दी-भाषा के अंग बन चुके हैं। शिक्षा के प्रसार और साहित्यिक रचनाओं के अतिरिक्त वैज्ञानिक साहित्य की रचना के परिणामस्वरूप हिन्दी में तत्सम शब्दों के प्रयोग में वृद्धि हुई है तथा तद्भव और देशज शब्दों के प्रयोग में गिरावट आयी है। हिन्दी में एक नए स्वर 'ऑ' का आगमन हो गया है। इसके अतिरिक्त ऐ, औ संयुक्त स्वरों की गणना मूल स्वरों में की जाने लगी है। खड़ी बोली इस युग की मुख्य भाषा है। इस युग का समस्त समृद्ध साहित्य खड़ी बोली में ही लिखा जा रहा है। इसके प्रमुख गद्य लेखकों में महावीरप्रसाद द्विवेदी, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, हजारीप्रसाद द्विवेदी, डॉ. गुलाबराय, डॉ. सत्येन्द्र, डॉ. विद्यानिवास मिश्र हैं। इस युग में साहित्य की विभिन्न विधाओं में आशातीत प्रगति हुई है।

निबन्ध, नाटक, एकांकी, रेडियो नाटक, उपन्यास, कहानी, संस्मरण, रेखाचित्र, रिपोर्ताज और कविता के क्षेत्र में महाकाव्य, खण्डकाव्य, गीत और प्रगीत आदि द्वारा हिन्दी साहित्य का भण्डार कितने ही प्रतिभाशाली लेखकों और कवियों द्वारा नित्य भरा जा रहा है। हिन्दी की यह प्रगति उसके सर्वाङ्गीण

विकास का द्योतक है। हिन्दी का व्याकरण भी आज समृद्ध है। उसके नियमों में जड़ता नहीं है, और उसमें अंग्रेजी भाषा के समान विकास की सम्भावनाएँ निहित हैं, जो भाषा के विकासमान स्वर्णिम भविष्य की सूचक हैं। विदेशी और प्रांतीय भाषाओं के शब्दों को ग्रहण और आत्मसात् करने की प्रवृत्ति भी हिन्दी के विकास में बाधक नहीं प्रत्युत सहायक ही सिद्ध हो रही है। इस दृष्टि से यह युग हिन्दी का वास्तविक 'स्वर्णयुग' है।

आधुनिककालीन हिन्दी में ध्वनि के क्षेत्र में चार-पाँच बातें उल्लेखनीय हैं- (1) आधुनिककाल में शिक्षा के व्यवस्थित प्रसार के कारण तथा प्रारम्भ में हिन्दी प्रदेश में अनेक क्षेत्रों में कचहरियों की भाषा उर्दू होने के कारण 'क़, ख़, ग़, ज़, फ़' जो मध्यकाल में केवल उच्च वर्गों के या फारसी पढ़े-लिखे लोगों तक प्रचलित थे, इस काल में प्राय: सन् 1947 तक सुशिक्षित लोगों में खूब प्रचलित हो गए, किन्तु स्वतंत्रता के बाद स्थिति बदली है और अंग्रेजी में प्रयुक्त होने के कारण 'ज़, फ़' तो एक सीमा तक अब भी प्रयोग में हैं किन्तु क, ख, ग के ठीक प्रयोग में कमी आई है। नई पीढ़ी, कुछ अपवादों को छोड़कर इनके स्थान पर प्राय: 'क, ख, ग' बोलने लगी है। हिन्दी की उर्दू शैली में इन पाँचों का ठीक उच्चारण होता है। (2) अंग्रेजी शिक्षा के प्रचार के कारण कुछ बहुशिक्षित लोगों द्वारा 'ऑ' (कॉलिज, डॉक्टर, ऑफिस, कॉफी आदि में) ध्वनि भी हिन्दी में प्रयुक्त हो रही है। यों सामान्य लोग उसके स्थान पर 'आ' का प्रयोग करते हैं। (3) अंग्रेजी शब्दों के प्रचार के कारण कुछ नए संयुक्त व्यंजन (जैसे- ड्र) हिन्दी में प्रयुक्त होने लगे हैं। (4) स्वरों में ए, औ हिन्दी में आदिकाल में आए थे। उस समय इनका उच्चारण अए, अओ था, अर्थात् वे संयुक्त स्वर थे। आधुनिक काल में मुख्यतया सन् 1940 के बाद ऐ और औ की स्थिति कुछ भिन्न हो गई है।

इस सम्बन्ध में तीन बातें उल्लेखनीय हैं– (क) पश्चिमी हिन्दी क्षेत्र में स्वर सामान्यत: मूल स्वर के रूप में उच्चरित होते हैं। (ख) पूर्वी हिन्दी क्षेत्र में अब भी ये अए, अओ रूप में संयुक्त स्वर के रूप में ही प्रयुक्त हो रहे हैं। (ग) नैया, वैयाकरण, कौआ जैसे शब्दों में, पश्चिमी तथा पूर्वी, दोनों ही हिन्दी क्षेत्रों में ऐ, औ का उच्चारण क्रमश: संयुक्त स्वर 'अइ, अउ' के रूप में अर्थात् संस्कृत-उच्चारण के समान होता है। (5) मध्यकाल में अ का लोप शब्दांत में तथा कुछ स्थितियों में अक्षरांत में होना आरम्भ हुआ था। आधुनिक काल तक आते-आते यह प्रक्रिया पूरी हो गई, अब हिन्दी में उच्चारण में कोई भी शब्द अकारांत नहीं है। (6) 'व' ध्वनि आदि तथा मध्यकाल में कुछ अपवादों को छोड़कर प्राय: द्व्योष्ठ्य रूप में उच्चरित होती थी, अब वह कुछ अपवादों को छोड़कर हिन्दी में काफी शब्दों में कम-से-कम पश्चिमी क्षेत्र में दन्तोष्ठ्य रूप में उच्चरित होती है। सम्भावना यह है कि द्व्योष्ठ्य 'व' का प्रयोग धीरे-धीरे बहुत कम रह जाएगा।

व्याकरण की दृष्टि से अधोलिखित बातें कही जा सकती हैं– (1) आदिकाल में हिन्दी की विभिन्न बोलियों के व्याकरणिक अस्तित्व का प्रारम्भ हो गया था किन्तु काफी व्याकरणिक रूप ऐसे थे जो आस-पास के क्षेत्रों में समान थे। मध्यकाल में उनमें इस प्रकार के मिश्रण में काफी कमी हो गई थी। सूर, बिहारी, देव आदि की ब्रजभाषा तथा जायसी, तुलसी आदि की अवधी इस बात का प्रमाण है। आधुनिक काल तक आते-आते ब्रजी, अवधी, भोजपुरी, मैथिली आदि कई बोलियों का व्याकरणिक अस्तित्व इतना स्वतंत्र हो गया है कि उन्हें बड़ी सरलता से भाषा की संज्ञा दी जा सकती है। (2) हिन्दी प्राय: पूर्णत: एक वियोगात्मक भाषा हो गई है। (3) प्रेस, रेडियो, शिक्षा तथा व्याकरणिक विश्लेषण आदि के प्रभाव से हिन्दी व्याकरण का रूप काफी स्थिर हो गया है। कुछ अपवादों को छोड़कर हिन्दी व्याकरण का रूप सुनिश्चित हो चुका है। व्याकरण के इस स्थिरीकरण में आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी का मुख्य हाथ रहा है। (4) कहा जा चुका है कि मध्यकाल में हिन्दी वाक्य-रचना एक सीमा तक फारसी से प्रभावित हुई थी।

आधुनिक काल में अंग्रेजी शिक्षा का प्रचार फारसी की तुलना में कहीं अधिक हुआ है। साथ ही समाचार-पत्रों, रेडियो तथा सरकारी कामों में प्रयोग के कारण अंग्रेजी भी हमारे अधिक निकट आई है। इसका परिणाम यह हुआ है कि हिन्दी भाषा वाक्य-रचना, मुहावरों तथा लोकोक्तियों के क्षेत्र में अंग्रेजी से बहुत अधिक प्रभावित हुई है। अंग्रेजी ने विरामचिन्हों के माध्यम से भी हिन्दी वाक्य-रचना को प्रभावित किया है। (5) इधर कुछ वर्षों से 'कीजिए' के लिए 'करिए' 'मुझे' के लिए 'मेरे को', 'मुझसे' के लिए 'मेरे से', 'तुझमें' के लिए 'तेरे में', 'नहीं जाता है' के स्थान पर 'नहीं जाता', 'नहीं जा रहा है' के स्थान

NOTES

पर 'नहीं जा रहा' जैसे नये रूपों तथा नये वाक्यांशों का प्रयोग बढ़ता जा रहा है। अर्थात् हिन्दी भाषा रूप-रचना तथा वाक्य-रचना, दोनों ही क्षेत्रों में परिवर्तित हो रही है।

शब्द-भण्डार की दृष्टि से सन् 1800 से लेकर अब तक के आधुनिक काल को मोटे रूप से छः सात उपकालों में विभाजित किया जा सकता है। सन् 1800 से सन् 1850 तक का हिन्दी शब्द-भण्डार मोटे रूप से वही था जो मध्यकाल के अन्तिम चरण में था। अन्तर केवल यह था कि धीरे-धीरे अंग्रेजी के अधिकाधिक शब्द हिन्दी भाषा में आते जा रहे थे। सन् 1850 से सन् 1900 तक अंग्रेजी के और शब्दों के आने के अतिरिक्त आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार के कारण तत्सम शब्दों का प्रयोग बढ़ा और कुछ पुराने तद्भव शब्द परिनिष्ठित हिन्दी से निकल गए। उदाहरण के लिए, 'इन्द्री' निकल गया और 'इंद्रिय' आ गया, यद्यपि 'इंद्री' का बहुवचन 'इंद्रियाँ' अब तक चल रहा है। सन् 1900 के बाद द्विवेदी काल तथा छायावादी काल में अनेक कारणों से तत्सम शब्दों का प्रयोग बढ़ना आरम्भ हो गया। प्रसाद, पन्त, महादेवी वर्मा आदि का पूरा साहित्य इस दृष्टि से उल्लेख है। इसके बाद प्रगतिवादी आंदोलन के कारण तद्भव शब्दों के प्रयोग में पुनः वृद्धि हुई तथा तत्सम शब्दों के प्रयोग में कुछ कमी हुई। सन् 1947 तक लगभग यही स्थिति रही।

सन् 1947 के बाद के शब्द-भण्डार में कई बातें उल्लेख्य हैं– (क) अनेक पुराने शब्द नए अर्थों में प्रचलित हो गए हैं। उदाहरण के लिए, 'सदन' शब्द राज्यसभा तथा लोकसभा के लिए प्रयुक्त हो रहा है। (ख) अभिव्यक्ति की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अनेक नए शब्द (फिल्माना, घुसपैठिया आदि) आ गए हैं। (ग) साहित्य में नाटक, उपन्यास, कहानी, कविता की भाषा बोलचाल के बहुत निकट है, उनमें अरबी, फारसी तथा अंग्रेजी के शब्दों का जमकर प्रयोग हो रहा है किन्तु आलोचना की भाषा अब भी एक सीमा तक तत्सम शब्दों से काफी लदी हुई है। (घ) इधर हिन्दी को पारिभाषिक शब्दों की बहुत आवश्यकता पड़ी है क्योंकि हिन्दी अब विज्ञान, वाणिज्य, विधि आदि की भी भाषा है। इसकी पूर्ति के लिए अनेक शब्द अंग्रेजी, संस्कृत आदि से लिए गए हैं तथा अनेक नए शब्द बनाए गए हैं। स्वतंत्रता के पूर्व हिन्दी में मुश्किल से 5-6 हजार परिभाषिक शब्द थे। किन्तु अब उनकी संख्या लगभग एक लाख से ऊपर है और दिनों-दिन उसमें वृद्धि होती जा रही है। हिन्दी शब्द-भण्डार अनेक प्रभावों को ग्रहण करते हुए तथा नए शब्दों से समृद्ध होते हुए दिनों-दिन अधिक समृद्ध होता जा रहा है जिसके परिणामस्वरूप हिन्दी अपनी अभिव्यंजना में अधिक सटीक, निश्चित, गहरी तथा समर्थ होती जा रही है।

आधुनिक काल राजनीति का है। अतः भारतीय राजनीति के केन्द्र दिल्ली की भाषा खड़ी बोली, ब्रजी, अवधी आदि को पीछे छोड़ प्रायः एकमात्र हिन्दी क्षेत्र की साहित्यिक अभिव्यक्ति का माध्यम बन गई है। अन्य बोलियों में यदि कुछ लिखा भी जा रहा है तो अपवादतः। यही खड़ी बोली हिन्दी हमारी राजभाषा तथा राष्ट्रभाषा भी बन गई है।

हिन्दी का भौगोलिक विस्तार

'हिन्दी' शब्द का प्रयोग आज भले ही भारत में बोली जाने वाली प्रमुख भाषा के लिए होता हो, किन्तु प्रारम्भ में यह शब्द भाषा के लिए प्रयुक्त न होकर 'भारतीय' या 'हिन्दुस्तानी' के अर्थ में प्रयुक्त होता था। प्रसिद्ध शायर इकबाल ने अपने गीत में 'हिन्दी' शब्द का प्रयोग 'भारतीय' के अर्थ में ही किया है :

हिन्दी हैं हम वतन हैं हिन्दोस्तां हमारा।

'हिन्दी' शब्द का प्रयोग भाषा के अर्थ में बहुत बाद में हुआ। वस्तुतः 'हिन्दी' शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत के 'सिन्धु' शब्द से हुई जो फारसी भाषा में 'हिन्दु' हो गया। हिन्दु से 'हिन्दी' शब्द का विकास निम्न प्रकार हुआ :

हिन्दु > हिन्द > हिन्दवी > हिन्दी

भारत की भाषा के लिए वे **'ज़बान-ए-हिन्दी'** का प्रयोग करते थे जिसे बाद में **'हिन्दी-ज़बान'** और फिर **'हिन्दी'** कहा जाने लगा।

हिन्दी' उत्तर भारत के बहुसंख्यक लोगों की भाषा है और उत्तर भारत एवं मध्य भारत के दस प्रान्तों में बोली-समझी जाती है। इन प्रान्तों के नाम हैं- 1. हिमाचल प्रदेश, 2. दिल्ली, 3. हरियाणा, 4. राजस्थान, 5. उत्तर प्रदेश, 6. उत्तराखण्ड, 7. मध्य प्रदेश, 8. छत्तीसगढ़, 9. बिहार, 10. झारखण्ड।

इस सम्पूर्ण भू-भाग को हिन्दी-क्षेत्र (या हिन्दी-प्रदेश) कहा जाता है। इन सभी राज्यों में बोली जाने वाली भाषा हिन्दी है, भले ही उसका क्षेत्रीय रूप कुछ भिन्न क्यों न हो। स्पष्ट है कि यह हिन्दी का व्यावहारिक अर्थ है जिसमें हिन्दी की सभी उपभाषाएँ एवं बोलियाँ भी समाविष्ट हैं। इन उपभाषाओं एवं उनके अन्तर्गत आने वाली बोलियों का विवरण इस प्रकार है:

हिन्दी की उपभाषाएँ एवं बोलियाँ

हिन्दी के अन्तर्गत पाँच उपभाषाएँ हैं जिन्हें हिन्दी का क्षेत्रीय रूप (भेद) कहा जा सकता है:

1. पश्चिमी हिन्दी उपभाषा
2. पूर्वी हिन्दी उपभाषा
3. राजस्थानी उपभाषा
4. बिहारी उपभाषा
5. पहाड़ी उपभाषा

इन उपभाषाओं के अन्तर्गत आने वाली 18 बोलियों का विवरण इस प्रकार है:

(क) **पश्चिमी हिन्दी** – इसके अन्तर्गत आने वाली पाँच बोलियों के नाम इस प्रकार हैं :

1. ब्रजी
2. कन्नौजी
3. खड़ी बोली (कौरवी)
4. बुन्देली
5. बाँगरू (हरियाणवी)

(ख) **पूर्वी हिन्दी** – पूर्वी हिन्दी के अन्तर्गत तीन बोलियाँ आती हैं, जिनके नाम हैं:

1. अवधी
2. बघेली
3. छत्तीसगढ़ी

(ग) **बिहारी हिन्दी** – बिहारी हिन्दी के अन्तर्गत तीन बोलियाँ गिनी जाती हैं, इनके नाम हैं:

1. मैथिली
2. मगही
3. भोजपुरी

(घ) **राजस्थानी हिन्दी** – राजस्थानी हिन्दी के अन्तर्गत निम्नलिखित चार बोलियाँ आती हैं:

1. मेवाती
2. मालवी
3. मारवाड़ी (मेवाड़ी)
4. जयपुरी (हाड़ौती, ढूंढाणी)

इस प्रकार व्यावहारिक दृष्टि से हिन्दी उत्तर भारत एवं मध्य भारत के दस प्रान्तों की भाषा है, जिसके अन्तर्गत पाँच उपभाएँ एवं अठारह बोलियाँ हैं। इन सभी बोलियों का साहित्य हिन्दी साहित्य के अन्तर्गत आयेगा। ब्रजभाषा के कवि सूरदास, अवधी के कवि तुलसीदास, मैथिली के कवि विद्यापति और राजस्थानी भाषा की कवयित्री मीराबाई की कविताओं में भले ही भाषागत वैविध्य हो किन्तु अन्ततः ये सभी हिन्दी के कवि माने जाते हैं। स्पष्ट है कि हिन्दी साहित्य के इतिहास ग्रन्थों में हिन्दी का यही अर्थ ग्रहण किया गया है। यह हिन्दी का व्यावहारिक एवं प्रचलित अर्थ है। इस अर्थ में हिन्दी भारत के बहुसंख्यक लोगों की भाषा है तथा इसे बोलने वालों की संख्या लगभग 60 करोड़ है।

यद्यपि हिन्दी बोलने-समझने वाले लोग पर्याप्त संख्या में भारत के अन्य प्रान्तों में भी रहते हैं तथापि वे हिन्दी के अतिरिक्त अपनी-अपनी प्रान्तीय भाषाओं का प्रयोग भी करते हैं। उदाहरण के लिए, महाराष्ट्र के लोग अपनी प्रान्तीय भाषा 'मराठी' के साथ-साथ हिन्दी को भी बोलते-समझते हैं।

भाषाशास्त्रीय दृष्टि से विचार करने पर हिन्दी के अन्तर्गत केवल दो उपभाषाएँ– पश्चिमी हिन्दी एवं पूर्वी हिन्दी आती हैं। इन दोनों के अन्तर्गत आने वाली आठ बोलियाँ ही अब हिन्दी की बोलियाँ मानी जायेंगी। सर जार्ज ग्रियर्सन ने भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से इसी को 'हिन्दी' कहा है।

हिन्दी का एक अन्य परिनिष्ठित अर्थ भी है जिसका मूल आधार 'खड़ी बोली' है। इस दृष्टि से हिन्दी उस भाषा को कहेंगे जो हिन्दी-प्रदेश के नगरों की भाषा है और जिसे खड़ी बोली हिन्दी कहा जाता है।

NOTES

यह वह हिन्दी है जो हिन्दी के समाचार-पत्रों, पत्र-पत्रिकाओं की भाषा है, शिक्षा का माध्यम है तथा रेडियो-दूरदर्शन के हिन्दी कार्यक्रमों की भाषा है। इस हिन्दी के अन्तर्गत हिन्दी की बोलियों को समाविष्ट नहीं किया जा सकता। प्रसाद, पन्त, निराला, मैथिलीशरण गुप्त आदि इसी हिन्दी के कवि हैं। जब हम कहते हैं कि हमें हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाना है तो हमारा तात्पर्य ब्रजी, अवधी, मैथिली तथा भोजपुरी से न होकर इसी परिनिष्ठित हिन्दी से होता है।

हिन्दी की बोलियों का सामान्य परिचय एवं उनका क्षेत्र

हिन्दी के अन्तर्गत आने वाली उक्त अठारह बोलियों का संक्षिप्त परिचय एवं उनका क्षेत्र इस प्रकार है :

1. **ब्रजी** – पश्चिमी हिन्दी की यह बोली ब्रज-क्षेत्र में बोली जाती है जिसके अन्तर्गत आगरा, मथुरा, फिरोजाबाद, अलीगढ़, हाथरस, एटा, धौलपुर, गुड़गाँव, भरतपुर, करौली, बदायूँ आदि क्षेत्र आते हैं। मध्यकाल में यह साहित्य में प्रयुक्त होने लगी, अतः इसे आदरार्थ 'ब्रजभाषा' कहा जाने लगा। ब्रजभाषा की मुख्य प्रवृत्ति है- शब्दों का औकारांत होना, यथा- आयौ, गयौ, भलौ, कारौ, पीरौ आदि।

2. **कन्नौजी** – कन्नौजी बोली का क्षेत्र फर्रुखाबाद, एटा, इटावा, कन्नौज, शाहजहाँपुर, हरदोई, मैनपुरी आदि जिले हैं। कुछ लोग इसे ब्रजभाषा का ही एक उपरूप मानते हैं। कन्नौजी की प्रधान प्रवृत्ति है- शब्दों का ओकारांत होना, यथा– आओ, गओ, भलो, कारो, पीरो आदि।

3. **बुन्देली** – यह बुन्देलखण्डी बोली है तथा झाँसी, हमीरपुर, ग्वालियर, भोपाल, सिवनी, ओरछा, सागर, नृसिंहपुर तथा होशंगाबाद में बोली जाती है।

4. **बांगरू** – इसे 'हरियाणवी' भी कहते हैं क्योंकि यह प्रमुख रूप से हरियाणा में बोली जाती है। 'बांगर' उस प्रदेश को कहते हैं जहाँ की भूमि ऊँची हो और बाढ़ में न डूबे। इस प्रकार की भूमि वाले हरियाणा को 'बांगढ़' या 'बांगर' प्रदेश कहते हैं और इसीलिए यहाँ की बोली 'बांगरू' कहलाई। इस बोली में मूर्धन्य ध्वनियों (ट, ठ, ड, ढ, ण) की अधिकता उच्चारण में है तथा 'न' के स्थान पर 'ण' का प्रयोग अधिक होता है। यथा– कौन > कौण, पानी > पाणी। व्यंजन द्वित्व भी पर्याप्त मिलता है, यथा– राजा > रज्जा, भीतर > भित्तर।

5. **खड़ी बोली** – खड़ी बोली को 'कौरवी' भी कहा जाता है। इसका क्षेत्र मेरठ, बिजनौर, मुजफ्फरनगर, सहारनपुर, मुरादाबाद, रामपुर आदि जिले हैं। 'ण' का प्रयोग क्रियाओं में प्रमुखता से होता है, जैसे- करणा, जाणा, खाणा, आणा आदि। व्यंजन द्वित्व की प्रवृत्ति भी इस बोली में मिलती है, यथा– बेट्टा, जात्ता, भेज्जा, छोट्टा, बड्डा आदि।

6. **अवधी** – यह पूर्वी हिन्दी की प्रमुख बोली है जो अवध क्षेत्र में बोली जाने के कारण अवधी कहलाती है। अवधी बोली लखनऊ, उन्नाव, कानपुर, रायबरेली, सीतापुर, फैजाबाद, गोंडा, फतेहपुर, बहराइच, लखीमपुर खीरी, सुल्तानपुर, प्रतापगढ़, बाराबंकी आदि जिलों में बोली जाती है। तुलसी का 'रामचरितमानस' एवं जायसी का 'पद्मावत' तथा द्वारिकाप्रसाद मिश्र का 'कृष्णायन' नामक महाकाव्य अवधी में रचित है। इसमें 'इया' प्रत्यय का प्रयोग प्रचुरता से होता है, जैसे- बिलइया, चरपइया, मलइया, आदि। 'वा' प्रत्यय का प्रयोग पुल्लिंग शब्दों में देखा जाता है– बेटवा, घोड़वा, रजिस्टरवा आदि। भूतकाल में 'इस' या 'इसि' प्रत्यय का प्रयोग अवधी में होता है। यथा– कहिस, रहिसि।

7. **बघेली** – अवधी बोली के दक्षिण का क्षेत्र बघेलखण्ड कहलाता है। यहाँ की बोली को बघेली कहा जाता है। इसका केन्द्र 'रीवां' को माना जा सकता है। इसके अतिरिक्त यह बोली दमोह, जबलपुर, मांडला, बालाघाट में भी बोली जाती है। कुछ लोग इसे स्वतन्त्र बोली न मानकर अवधी का ही एक उपरूप मानते हैं।

8. **छत्तीसगढ़ी** – छत्तीसगढ़ राज्य इस बोली का क्षेत्र है। इसे लरिया, खलोटी या खल्लाही भी कहा जाता है। रायपुर, बिलासपुर, कांकेर, राजनादगाँव, खैरागढ़, राजगढ़, सरगुजा में इसे बोला जाता है। इसका लोक-साहित्य पर्याप्त समृद्ध है। 'क' का उच्चारण यहाँ 'ख' के रूप में होता है, यथा– इलाका > इलाखा।

9. **भोजपुरी** – बिहार के शाहाबाद जिले के एक कस्बे का नाम 'भोजपुर' है। डॉ. उदय नारायण तिवारी के अनुसार इसी 'भोजपुर' के आधार पर इसका नाम 'भोजपुरी' पड़ा। इसका क्षेत्र पूर्वी उत्तर प्रदेश एवं बिहार तक फैला हुआ है। यह बस्ती, गोरखपुर, बलिया, देवरिया, आजमगढ़, गाजीपुर, जौनपुर, वाराणसी, मिर्जापुर, चंपारन, सहारपुर, पालामऊ, भोजपुर आदि में बोली जाती है। भोजपुरी में भूतकालिक क्रियारूप प्रायः लकारान्त होते हैं, यथा- आइल, गइल, रहली, भइल आदि। विशेषण अकारान्त होते हैं, यथा- छोट, भल, तोहार। छुटका, बड़का, छुटकी रूप भी विशेषणों में देखे जाते हैं। भविष्यत् काल की क्रियाएँ बकारान्त होती हैं, यथा– होब, जाइब, खाइब।

10. **मगही** – यह बोली बिहार में बोली जाती है। 'मगही' का विकास 'मागधी' से हुआ है, अतः कुछ लोग इसे 'मागधी' भी कहते हैं। गया, पटना, हजारीबाग, मुंगेर, पालामऊ, भागलपुर, रांची, सारन आदि जिलों में यह बोली जाती है। इस बोली में लोक-साहित्य प्रभूत मात्रा में उपलब्ध होता है।

11. **मैथिली** – मिथिला प्रदेश की बोली होने के कारण इसका नाम 'मैथिली' पड़ा। इसका एक अन्य नाम **'तिरहुतिया'** भी है। यह बोली बिहार के चम्पारन, मुजफ्फरपुर, मुंगेर, भागलपुर, दरभंगा, पूर्णिया आदि जिलों में बोली जाती है तथा साहित्य की दृष्टि से पर्याप्त समृद्ध है। 'विद्यापति' ने अपनी 'पदावली' इसी बोली में लिखी है। भाषिक दृष्टि से मैथिली और बंगला में इतनी समानता है कि बहुत दिनों तक लोग विद्यापति को बंगला-भाषा का कवि मानते रहे।

12. **मारवाड़ी** – यह राजस्थानी हिन्दी की बोली है जो मारवाड़-क्षेत्र में बोली जाने के कारण 'मारवाड़ी' कहलाती है। यह राजस्थान के बहुत बड़े भू-भाग में बोली जाती है जिसके अन्तर्गत जोधपुर, किशनगढ़, मेवाड़, जैसलमेर तथा बीकानेर जिले आते हैं। शेखावाटी, सिरोही, बीकानेरी इसी की उपबोलियाँ हैं।

13. **मेवाती** – 'मेव' लोगों की बोली होने से इसका नाम 'मेवाती' पड़ा। यह उत्तर-पूर्वी राजस्थान की बोली है और अलवर, भरतपुर, गुड़गाँव के आसपास बोली जाती है। इस क्षेत्र को 'मेवात' कहा जाता है। 'अहीरवाटी' मेवाती की प्रमुख उपबोली मानी जाती है।

14. **मालवी** – 'मालवा' प्रदेश की बोली होने से इसे 'मालवी' कहा गया। इसके अन्तर्गत दक्षिणी राजस्थान के बूँदी, झालावाड़ और उत्तरी मध्य प्रदेश के मंदसौर, इंदौर, उज्जैन तथा रतलाम जिले आते हैं।

15. **जयपुरी** – जयपुरी बोली को 'ढूंढाणी, ढूंढाही' आदि नामों से भी जाना जाता है। इसका परिनिष्ठित रूप जयपुर में बोला जाता है। इसके अतिरिक्त यह बोली कोटा, बूँदी आदि जिलों में भी बोली जाती है। 'हाड़ौती' इसकी प्रमुख उपबोली है।

16. **कुमाऊँनी** – इस बोली का क्षेत्र कुमाऊँ है जो अब 'उत्तराखण्ड' में है। कुमाऊँ में बोली जाने के कारण इसका नाम 'कुमाऊँनी' पड़ा। यह पहाड़ी उपभाषा वर्ग की बोली है। यह उत्तरकाशी, नैनीताल, हल्द्वानी, अल्मोड़ा, पिथौरागढ़ आदि जिलों में बोली जाती है।

17. **गढ़वाली** – यह भी पहाड़ी बोली है जो गढ़वाल-क्षेत्र में बोली जाने के साथ 'गढ़वाली' कही जाती है। उत्तरकाशी, टेहरी गढ़वाल, पौढ़ी गढ़वाल, श्रीनगर (गढ़वाल), बद्रीनाथ, दक्षिणी नैनीताल के साथ-साथ यह देहरादून तथा मसूरी में भी बोली जाती है। गढ़वाली का लोक-साहित्य पर्याप्त समृद्ध है।

18. **नेपाली** – नेपाली वस्तुतः एक भाषा है जो नेपाल में बोली जाती है, किन्तु इसे बोलने वाले लोग हिमाचल प्रदेश के शिमला, मण्डी, चम्बा, जौनसार, सिरमौर आदि इलाकों में भी हैं।

हिन्दी की इन बोलियों का यहाँ संक्षिप्त परिचय ही दिया गया है। वस्तुतः साहित्यिक दृष्टि से हिन्दी की तीन बोलियों ने इतनी प्रमुखता प्राप्त कर ली कि वे 'भाषा' की कोटि में आ गईं। इस बोलियों के नाम हैं- ब्रजी, अवधी एवं खड़ी बोली। मध्यकाल में जहाँ ब्रजी और अवधी में काव्य-रचना हुई वहीं आधुनिक काल में खड़ी बोली को प्रमुखता मिल गई। साहित्यिक दृष्टि से यही तीन बोलियाँ हिन्दी की प्रमुख बोलियाँ हैं और साहित्यिक हिन्दी का प्रतिनिधित्व करती हैं।

NOTES

हिन्दी की लिपि देवनागरी : विकास-क्रम एवं विशेषताएँ

भाषा को लिखने के लिए जिन संकेतों एवं चिन्हों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें 'लिपि' कहते हैं। प्राय: हर भाषा की अपनी लिपि होती है। हिन्दी की लिपि 'देवनागरी' है, अंग्रेजी भाषा की लिपि 'रोमन' है। उर्दू 'फारसी' लिपि में तथा पंजाबी 'गुरुमुखी' लिपि में लिखी जाती है।

भारतवर्ष में दो लिपियाँ प्राचीन लिपियों के रूप में जानी जाती हैं जिनके नाम हैं- 'ब्राह्मी' और 'खरोष्ठी'। प्राचीन शिलालेखों एवं सिक्कों पर यही दो लिपियाँ अंकित मिलती हैं। इनमें से देवनागरी लिपि का विकास ब्राह्मी लिपि से हुआ। ब्राह्मी लिपि से 'गुप्त' लिपि तदुपरान्त 'कुटिल' लिपि और फिर देवनागरी लिपि अस्तित्व में आई। इस विकास-क्रम को निम्न प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है :

ब्राह्मी > गुप्त लिपि > कुटिल लिपि > देवनागरी लिपि

देवनागरी लिपि का नामकरण

देवनागरी लिपि के नामकरण के सम्बन्ध में जो मत प्रचलित हैं वे इस प्रकार हैं :

1. विद्वानों का एक वर्ग यह मानता है कि गुजरात के 'नागर' ब्राह्मण इसका प्रयोग करते थे, इसलिए इसे 'नागरी' और फिर 'देवनागरी' कहा गया।
2. कुछ लोगों का यह भी विचार है कि यह नागवंशीय राजाओं की लिपि थी, इसलिए इसे देवनागरी कहा गया।
3. विद्वानों का एक वर्ग यह कहता है कि 'नगर' में प्रयुक्त होने के कारण इसका नाम 'नागरी' लिपि पड़ गया।
4. तान्त्रिक चिन्ह 'देवनागर' से इसका सम्बन्ध जोड़ने वाले लोग यह मानते हैं कि इसी चिन्ह के कारण इसे 'देवनागरी' नाम दिया गया।
5. इन सब मतों से अधिक तर्कसंगत यह मत है कि स्थापत्य की एक शैली नागर-शैली कहलाती थी जिसमें चतुर्भुजी आकृतियाँ होती थीं। नागरी लिपि में भी चतुर्भुज अक्षर 'ग, प, भ, म' आदि हैं, अत: इस साम्य के कारण इसका नाम 'देवनागरी' पड़ गया।

देवनागरी लिपि का विकास ब्राह्मी लिपि की उत्तरी शाखा से हुआ जिसे 'नागरी' कहा जाता था जो बाद में देवभाषा संस्कृत से जुड़ गई, परिणामत: 'नागरी' का नाम 'देवनागरी' हो गया।

देवनागरी लिपि का विकास

देवनागरी लिपि का सर्वप्रथम प्रयोग गुजरात के नरेश जयभट्ट (700-800 ई.) के एक शिलालेख में मिलता है। 18वीं शताब्दी में राष्ट्रकूट नरेशों में भी यही लिपि प्रचलित थी और 9वीं शती में बड़ौदा के ध्रुवराज ने भी अपने राज्यादेशों में इसी लिपि का प्रयोग किया। यह लिपि भारत के सर्वाधिक क्षेत्रों में प्रचलित रही है। उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात आदि प्रान्तों में उपलब्ध शिलालेखों, ताम्रपत्रों तथा हस्तलिखित प्राचीन ग्रन्थों में देवनागरी लिपि का ही सर्वाधिक प्रयोग हुआ है।

आजकल देवनागरी की जो वर्णमाला प्रचलित है, वह 11वीं शती में स्थिर हो गई थी और 15वीं शती तक उसमें सौन्दर्यपरक स्वरूप का भी समावेश हो गया था। ईसा की 8वीं शती में जो देवनागरी लिपि प्रचलित थी, उसमें वर्णों की शिरोरेखाएँ दो भागों में विभक्त थीं जो 11वीं शती में मिलकर एक हो गयीं।

11वीं शती की यह लिपि वर्तमान में प्रचलित है और हिन्दी, संस्कृत, मराठी आदि भाषाओं को लिखने में प्रयुक्त हो रही है। देवनागरी लिपि पर कुछ अन्य लिपियों का प्रभाव भी पड़ा है। उदाहरण के लिए, गुजराती लिपि में शिरोरेखा नहीं है, आज बहुत-से लोग देवनागरी में शिरोरेखा का प्रयोग लेखन में नहीं करते। इसी प्रकार अंग्रेजी की रोमन लिपि में प्रचलित विराम-चिन्ह भी देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिन्दी ने ग्रहण कर लिये हैं।

देवनागरी लिपि में सुधार और संशोधन

देवनागरी लिपि में समय-समय पर अनेक सुधार एवं संशोधन होते रहे हैं, जिन्हें देवनागरी लिपि का विकासात्मक इतिहास कहा जा सकता है। ये सुधार इसके दोषों का निराकरण करने हेतु तथा इसे लेखन एवं टंकण आदि की दृष्टि से अधिक उपयोगी बनाने हेतु किये जाते रहे हैं। इन सुधारों एवं संशोधनों का क्रमबद्ध विवेचन निम्न प्रकार किया जा सकता है :

1. सर्वप्रथम बम्बई के महादेव गोविन्द रानाडे ने एक लिपि-सुधार समिति का गठन किया। तदनन्तर महाराष्ट्र साहित्यपरिषद्, पुणे ने लिपि-सुधार योजना तैयार की।

2. सन् 1904 में 'तिलक' ने 'केसरी' नामक समाचार पत्र में देवनागरी लिपि के सुधार की चर्चा की, परिणामतः देवनागरी के टाइपों की संख्या 190 की गई और इन्हें 'तिलक टाइप' कहा गया।

3. तत्पश्चात् वीर सावरकर, महात्मा गाँधी, विनोबा भावे और काका कालेलकर ने इस लिपि में सुधार का प्रयास करते हुए इसे सरल एवं सुगम बनाने का प्रयास किया। 'हरिजन' समाचार-पत्र में काका कालेलकर ने देवनागरी की स्वर- ध्वनियों के स्थान पर 'अ' पर मात्राएँ लगाने का सुझाव दिया, जिससे देवनागरी में वर्णों की संख्या कम की जा सके। काका कालेलकर की बहुत-सी पुस्तकों में इस लिपि का प्रयोग किया गया है। इस लिपि का एक उदाहरण दृष्टव्य है :

प्रचलित देवनागरी	**काका कालेलकर की लिपि**
उसके खेत में ईख अच्छी है।	अुसके खेत में औख अच्छी है।

4. डॉ. श्यामसुन्दर दास ने यह सुझाव दिया कि प्रत्येक वर्ग में पंचम वर्ण- 'ङ, ञ, म, न, ण' के स्थान पर केवल अनुस्वार का प्रयोग किया जाये। यथा :

   अङ्क = अंक, कन्धा = कंधा, पञ्च = पंच, कण्ठ = कंठ, कम्बल = कंबल।

   श्यामसुन्दर दास जी का यह सुझाव व्यावहारिक था, इसलिए आज लोग पंचमाक्षरों के स्थान पर केवल अनुस्वार का प्रयोग करते हैं।

5. सन् 1953 में उत्तर प्रदेश सरकार ने अन्य प्रदेशों की सरकारों के प्रतिनिधियों की बैठक बुलाकर इन सुझावों को थोड़े हेर-फेर के साथ स्वीकार करा लिया और यह जोड़ दिया कि ह्रस्व 'इ' की मात्रा व्यंजन के दाहिनी ओर ही लगाई जाये, किन्तु दीर्घ 'ई' से उसकी भिन्नता दिखाने हेतु उसे तनिक छोटे रूप में कर दिया जाये।

   यथा- किसी = कीसी

   (यहाँ 'क' पर लगी छोटी 'इ' की मात्रा का डंडा छोटा कर दिया गया है।)

6. सन् 1953 ई. में ही डॉ. राधाकृष्णन् की अध्यक्षता में गठित एक उच्च स्तरीय समिति ने लिपि-सुधारों पर गहन विचार-विमर्श किया। इस समिति में विभिन्न प्रान्तों के 100 से अधिक प्रतिनिधियों और 14 मुख्यमन्त्रियों ने भाग लिया। इस समिति के सर्वमान्य सुझाव निम्नवत् थे :

   (i) ख, ध, भ, छ को घुण्डीदार ही रखा जाये।

   (ii) संयुक्त वर्णों को स्वतन्त्र तरीके से लिखा जाये, यथा :

   प्रेम = प्रेम श्रेय = श्रेय

   (iii) 'क्ष' का प्रयोग देवनागरी लिपि में जारी रखा जाये।

7. उक्त सुझावों के अतिरिक्त भाषा-विज्ञान के अधिकारी विद्वानों डॉ. उदयनारायण तिवारी, डॉ. धीरेन्द्र वर्मा, डॉ. भोलानाथ तिवारी तथा डॉ. हरदेव बाहरी आदि ने भी देवनागरी लिपि के दोषों का निराकरण करते हुए उसमें कुछ सुधार करने के सुझाव दिये। यथा :

स्व प्रगति की जाँच करें:

1. हिन्दी की अवधि बोली के बारे में आप क्या जानते हैं? स्पष्ट कीजिए।
2. देवनागरी लिपि के नामकरण के सम्बन्ध में किस प्रकार के मत प्रचलित हैं? बताइए।

NOTES

(क) संयुक्त अक्षरों में प्रयुक्त होने वाली 'र' ध्वनि के लिए 'र' के नीचे हलन्त लगाकर काम चलाया जाये।

(ख) संयुक्त अक्षरों 'क्ष, श्र, द्य, त्र' को वर्णमाला से निकाल दिया जाये और इनके स्थान पर 'क्ष, श्र, द्य, त्र' से काम चलाया जाये।

(ग) 'म्ह, ल्ह, न्ह, र्ह' संयुक्त व्यंजन होते हुए भी मूल महाप्राण व्यंजन हैं, अतः इनके लिए स्वतन्त्र लिपि चिन्ह होने चाहिए।

(घ) नागरी लिपि का प्रयोग हिन्दी, मराठी, संस्कृत, नेपाली आदि भाषाओं के लिए होता है, अतः इन भाषाओं की कुछ ध्वनियों को अंकित करने के लिए देवनागरी में अतिरिक्त चिन्ह ग्रहण कर लिये जायें तो निश्चय ही सभी भाषाओं को पूरी तरह लिखने की सामर्थ्य इसमें आ जायेगी और तब यह और भी अधिक उपादेय हो जायेगी।

इस प्रकार देवनागरी लिपि में समय-समय पर अनेक सुधार एवं संशोधन होते रहे हैं। प्रयास यही रहा है कि इस लिपि को अधिकाधिक उपयोगी बनाया जाये।

देवनागरी लिपि की प्रमुख विशेषताएँ

देवनागरी भारत की एक प्रमुख लिपि है जो संस्कृत, हिन्दी मराठी और नेपाली भाषाओं को लिखने में प्रयुक्त होती है। संसार की कोई भी लिपि पूर्णतः उपयुक्त नहीं कही जा सकती, क्योंकि प्रत्येक लिपि में जहाँ विशेषताएँ होती हैं, वहीं कुछ दोष भी विद्यमान रहते हैं। ऐसी स्थिति में उसी लिपि को वैज्ञानिक लिपि कहा जा सकता है, जिसमें गुण अधिकतम हों और दोष न्यूनतम हों।

यहाँ हम देवनागरी लिपि के गुण-दोषों का विवेचन अंग्रेजी की रोमन लिपि और उर्दू की फारसी लिपि से इसकी तुलना करके करेंगे और इस प्रकार देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता का परीक्षण करेंगे। देवनागरी लिपि की प्रमुख विशेषताएँ निम्नवत् हैं:

1. **वर्ण विभाजन में वैज्ञानिकता** – देवनागरी लिपि में स्वरों एवं व्यंजनों का वर्गीकरण वैज्ञानिक पद्धति पर किया गया है। साथ ही स्वर और व्यंजन वैज्ञानिक ढंग से क्रमबद्ध किये गये हैं। इस लिपि में मूलतः 14 स्वर, 35 व्यंजन और तीन संयुक्ताक्षर हैं। व्यंजनों का वर्गीकरण 'उच्चारण-स्थान' एवं 'प्रयत्न' के आधार पर किया गया है। इस विभाजन के कारण एक ओर तो वर्णों को शुद्ध रूप में उच्चरित किया जा सकता है तथा दूसरी ओर सुव्यवस्थित क्रम होने से उन्हें स्मरण रखने में भी सुविधा रहती है। रोमन लिपि में स्वर और व्यंजन परस्पर मिल हुए हैं, किन्तु देवनागरी में पहले स्वर-ध्वनियों को फिर व्यंजन-ध्वनियों को क्रमबद्ध किया गया है।

2. **प्रत्येक ध्वनि के लिए एक चिन्ह** – देवनागरी लिपि की यह अन्यतम विशेषता है कि इसमें प्रत्येक ध्वनि के लिए केवल एक चिह्न है, जबकि रोमन लिपि और फारसी लिपि में एक ध्वनि के लिए कई-कई विकल्प हैं, अतः वहाँ लिखने में भिन्नता आ सकती है, पर देवनागरी में प्रत्येक शब्द की केवल एक ही वर्तनी हो सकती है। उदाहरण के लिए, देवनागरी की 'क' ध्वनि रोमन लिपि में कई तरह लिखी जा सकती है, यथा :

कैट – Cat	'क' के लिए 'C'
किंग – King	'क' के लिए 'K'
क्वीन – Queen	'क' के लिए 'Q'
कैमिस्ट्री – Chemistry	'क' के लिए 'Ch'

इसी प्रकार फारसी लिपि में देवनागरी की 'ज' ध्वनि को व्यक्त करने के लिए चार विकल्प हैं– जे, ज्वाद, जीभ, जाल।

इस प्रकार स्पष्ट है कि देवनागरी लिपि रोमन और फारसी लिपियों की तुलना में अधिक वैज्ञानिक है।

3. **अपरिवर्तनीय उच्चारण** – देवनागरी लिपि के वर्ण चाहे जहाँ प्रयुक्त हों, उनका उच्चारण अपरिवर्तित रहता है, जबकि रोमन लिपि में एक वर्ण एक शब्द में जिस रूप में उच्चरित होता है, दूसरे शब्द में उस रूप में उच्चरित नहीं होता और उसका उच्चारण परिवर्तित हो जाता है। यथा :

   But – 'बट' में 'U' का उच्चारण 'अ' है। Put – 'पुट' में 'U' का उच्चारण 'उ' है।

   इसी प्रकार,

   City – 'सिटी' में 'C' का उच्चारण 'स' है। Camel – 'कैमल' में 'C' का उच्चारण 'क' है।

4. **उच्चारण और लेखन में एकरूपता** – देवनागरी लिपि में जो बोला जाता है, वही लिखा जाता है। इसे देवनागरी लिपि की प्रमुख विशेषता माना गया है। रोमन लिपि में यह विशेषता नहीं है, वहाँ उच्चारण और लेखन में भिन्नता दिखाई पड़ती है। यथा :

   Knowledge – 'नॉलेज' में 'K' 'W' 'D' का उच्चारण ही नहीं होता।

   Knife – 'नाइफ' में 'K' लिखा तो जाता है, पर बोला नहीं जाता।

   Psychology – 'साइकॉलाजी' में 'P' अनुच्चरित है।

5. **वर्णात्मक लिपि** – देवनागरी लिपि वर्णात्मक लिपि है, क्योंकि इसके सभी वर्ण उच्चारण के अनुरूप हैं। रोमन लिपि और फारसी लिपि में यह गुण नहीं है। देवनागरी लिपि में 'ज' ध्वनि को अंकित करने के लिए 'ज' वर्ण का प्रयोग होगा, किन्तु रोमन लिपि में 'ज' ध्वनि को अंकित करने के लिए J (जे) या Z (जेड) का प्रयोग किया जायेगा। इसी प्रकार फारसी में इसे 'जीम' से लिखा जायेगा।

6. **समग्र ध्वनियों को अंकित करने की क्षमता** – देवनागरी लिपि में किसी भी भाषा में प्रयुक्त होने वाली समग्र ध्वनियों को अंकित किया जा सकता है। रोमन लिपि इस दृष्टि से सक्षम नहीं है। उदाहरण के लिए, रोमन लिपि में हिन्दी भाषा में प्रयुक्त होने वाली ध्वनियों 'न, ण, ङ, ञ' को व्यक्त करने के लिए केवल 'N' से ही काम चलाया जाता है। सब जानते हैं कि 'न' और 'ण' तथा 'ङ', 'ञ' अलग-अलग ध्वनियाँ हैं, किन्तु अंग्रेजी की रोमन लिपि में इनके अन्तर को व्यक्त करने के लिए अलग-अलग लिपि-चिन्ह नहीं हैं। इस प्रकार स्पष्ट है कि हम रोमन लिपि से केवल काम चला सकते हैं, किन्तु हिन्दी भाषा में प्रयुक्त ध्वनियों को ठीक-ठीक नहीं लिख सकते। रोमन लिपि में महाप्राण बना लिया जाता है जो उचित नहीं है। देवनागरी में उपलब्ध इस गुण को 'सम्पूर्णता' भी कहा गया है। अपनी इसी सम्पूर्णता के कारण यह वैज्ञानिक लिपि कही जा सकती है।

7. **गत्यात्मक लिपि** – देवनागरी लिपि की एक विशेषता यह भी है कि यह अत्यन्त व्यावहारिक एवं गत्यात्मक है। आवश्यकतानुसार इसने अनेक नये लिपि-चिन्हों को भी अंगीकार कर लिया है। उदाहरण के लिए, फारसी लिपि की जो ध्वनियाँ हिन्दी में व्यवहृत होती हैं, उन्हें व्यक्त करने के लिए देवनागरी के कई वर्णों के नीचे बिन्दी लगाकर उच्चारणगत विशिष्टता को व्यक्त किया जाता है। यथा- क़, ख़, ज़, फ़। इसी प्रकार अंग्रेजी शब्दों में व्यवहृत होने वाली ध्वनि 'ऑ' को भी देवनागरी ने ग्रहण कर लिया है। 'कॉलेज', 'ऑफिस', 'डॉक्टर' जैसे शब्दों में इस 'ऑ' ध्वनि को देखा जा सकता है। मराठी में प्रयुक्त होने वाली 'क' ध्वनि भी देवनागरी में एक वर्ण के रूप में कहीं-कहीं आ गई है। इस प्रकार देवनागरी स्थिर एवं अपरिवर्तनीय लिपि न होकर गत्यात्मक लिपि है।

8. **सरल, कलात्मक एवं सुन्दर** – देवनागरी लिपि रोमन और फारसी लिपि की तुलना में सरल, कलात्मक एवं सुन्दर भी है। रोमन लिपि में जहाँ वर्णमाला के चार प्रारूप हैं- लिखने के कैपिटल अक्षर, छापे के कैपीटल अक्षर, लिखने के छोटे अक्षर तथा छापे के छोटे अक्षर, वहीं देवनागरी लिपि में अक्षर केवल एक ही तरह से लिखे जाते हैं। फारसी लिपि लिखने में बड़ी कठिन है।

NOTES

9. **कम खर्चीली** – किसी भी लिपि की एक विशेषता यह भी मानी गई है कि वह कम खर्चीली होनी चाहिए, अर्थात् वह कम स्थान घेरती हो तथा मुद्रण, टाइप आदि में अधिक खर्चीली न हो। देवनागरी लिपि संयुक्ताक्षरों एवं मात्राओं के कारण कम स्थान घेरती है, अत: रोमन लिपि या फारसी लिपि की तुलना में कम खर्चीली है। उदाहरण के लिए, निम्नलिखित तीनों शब्दों में देवनागरी लिपि रोमन लिपि की अपेक्षा कम स्थान तथा कम टाइपों का प्रयोग करती है :

   थोथा - Thotha, चन्द्रिका - Chandrika, स्कूल - School ।

10. **स्पष्टता** – देवनागरी लिपि में पर्याप्त स्पष्टता है। इसमें एक वर्ण में दूसरे वर्ण का भ्रम होने की बहुत कम गुंजाइश है, किन्तु फारसी लिपि में यह दोष बहुत है। एक नुक्ता होने या न होने से 'खुदा' से 'ख़ुदा' हो जाता है। इसी प्रकार अंग्रेजी की रोमन लिपि में भी बहुत-से अक्षरों में शीघ्रता से लिखने में पारस्परिक भ्रम होने की सम्भावना हो जाती है। यथा :

   e और c में, m और n में, j और i में, O और Q में।

11. **नियमबद्धता** – देवनागरी लिपि में जो नियमबद्धता है, वह सम्भवत: संसार की अन्य किसी लिपि में नहीं है। इसमें प्रत्येक वर्ण अपने निश्चित स्थान पर क्यों है, इसका उत्तर दिया जा सकता है। वाग्यन्त्र तथा उच्चारण-स्थान को ध्यान में रखकर इसके स्वरों एवं व्यंजनों का स्थान निर्धारित किया गया है। रोमन लिपि के सम्बन्ध में इस प्रश्न का उत्तर नहीं दिया जा सकता है कि A के बाद B क्यों आती है, किन्तु देवनागरी लिपि में इस प्रश्न का उत्तर दिया जा सकता है कि क के बाद ख और ख के बाद ग क्यों आता है। ये सभी कंठ्य ध्वनियाँ हैं और इनका उच्चारण स्थान कंठ है, अत: ये क्रमश: एक स्थान पर संयोजित की गई हैं। देवनागरी लिपि के व्यंजन-वर्णों का क्रम इस प्रकार है :

क ख ग घ ङ	कंठ्य
च छ ज झ ञ	तालव्य
ट ठ ड ढ ण	मूर्धन्य
त थ द ध न	दन्त्य
प फ ब भ म	ओष्ठ्य
य र ल व	अन्तस्थ
श ष स ह	ऊष्म

देवनागरी लिपि में व्यंजन-संयोग के नियम भी प्राय: सुनिश्चित हैं, अत: इनमें वर्तनी की भूलों की सम्भावना कम रहती है।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि देवनागरी लिपि में वे सभी विशेषताएँ उपलब्ध हैं जो एक वैज्ञानिक लिपि में होनी चाहिए। उसी लिपि को वैज्ञानिक लिपि कहा जा सकता है जिसमें गुण अधिक हों और दोष न्यूनतम हों। यद्यपि दुनिया की कोई भी लिपि ऐसी नहीं है, जिसमें कोई दोष ही न हो, तथापि वैज्ञानिक लिपि के लिए कम से कम दोषों वाली लिपि को ही मान्यता मिलेगी। देवनागरी लिपि में विशेषताएँ अधिक और दोष कम हैं, अत: इसे असंदिग्ध रूप से एक वैज्ञानिक लिपि कहा जा सकता है।

देवनागरी लिपि के कतिपय दोष

देवनागरी लिपि में जहाँ अनेक विशेषताएँ हैं, वहीं कुछ कमियाँ भी हैं। इनका विवरण निम्नवत् है :

1. देवनागरी लिपि में कुछ चिन्हों में एकरूपता नहीं है, यथा– 'र' का संयोग निम्न प्रकार चार रूपों में होता है :

   धर्म, क्रम, पृथ्वी, ट्रेन।

2. कुछ अक्षर अभी भी दो प्रकार से लिखे जाते हैं, यथा– अ - ऋ, ण - रग, ल - ळ, झ - भ आदि।
3. मात्राओं का कोई व्यवस्थित नियम नहीं है। कोई मात्रा ऊपर लगती है और कोई नीचे लगती है। कोई आगे लगती है, तो कोई पीछे।
4. साम्य-मूलक वर्णों के कारण इसे पढ़ने-समझने में कभी-कभी परेशानी हो जाती है। इस प्रकार के साम्य-मूलक वर्ण हैं- व, ब, म, भ, घ, ध।
5. देवनागरी लिपि अक्षरात्मक है, ध्वन्यात्मक नहीं, अत: रोमन लिपि में जहाँ शब्द में प्रयुक्त प्रत्येक ध्वनि को अंकित किया जा सकता है, वहाँ देवनागरी में नहीं।
6. देवनागरी में कहीं-कहीं क्रमानुसारिता का गुण भी नहीं है। पिता (Pita) शब्द में सबसे पहले 'इ' ध्वनि लिखी गई है, फिर 'प' ध्वनि अंकित की गई है, जबकि उच्चारण में 'इ' ध्वनि 'प' के बाद बोली जाती है।
7. शिरोरेखा के कारण इस लिपि को शीघ्रता से लिखने में कठिनाई का अनुभव होता है। सम्भवत: इसीलिए बहुत-से लोग इसे लिखने में शिरोरेखा का प्रयोग नहीं करते।
8. व्यंजन-संयोग में कहीं-कहीं अनियमितता है, यथा- प्रेम (Prem) में 'प' पूरा लिखा गया है और 'र' आधा, जबकि वास्तव में 'प' आधा होना चाहिए और 'र' पूरा।
9. टाइपिंग और मुद्रण हेतु रोमन लिपि देवनागरी लिपि से अधिक सुगम है।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर यह कहा जा सकता है कि नागरी लिपि को और अधिक उपयोगी एवं वैज्ञानिक बनाने की आवश्यकता है। इसमें कमियों को दूर करके उपयोगी एवं व्यावहारिक सुधार करने की आज भी जरूरत है, तभी इस लिपि को पूर्णत: वैज्ञानिक लिपि कहा जा सकता है।

देवनागरी लिपि का मानकीकरण

किसी भी भाषा का मानकीकरण लिपि, वर्तनी, उच्चारण आदि के स्तर पर किया जाता है। स्पष्ट है कि हिन्दी देवनागरी लिपि में लिखी जाती है, अत: हिन्दी के मानकीकरण के लिए देवनागरी लिपि का मानकीकरण भी परम आवश्यक है। इस दृष्टि से समय-समय पर देवनागरी लिपि की त्रुटियों का निराकरण करने हेतु अनेक विद्वानों ने सुझाव दिये जिनमें साहित्य-परिषद्, पुणे द्वारा गठित लिपि-सुधार समिति के सुझाव, महादेव गोविन्द रानाडे के सुझाव, काका कालेलकर की अध्यक्षता में गठित लिपि-सुधार समिति के सुझाव, आचार्य नरेन्द्रदेव की अध्यक्षता गठित समिति के सुझाव आदि प्रमुख हैं। इनमें से कुछ सुझाव व्यावहारिक थे जिन्हें स्वीकार कर लिया गया। भारत सरकार के शिक्षा मन्त्रालय ने सन् 1961 में एक विशेषज्ञ समिति को नियुक्त किया जिसने देवनागरी लिपि का मानकीकरण करते हुए अपने सुझाव-संशोधन अप्रैल, 1962 में सरकार को सौंपे। हिन्दी-वर्तनी में एकरूपता लाने तथा लिपि सम्बन्धी कठिनाइयों को दूर करते हुए जो नियम इस समिति ने बनाये, वे इस प्रकार हैं :

1. **संयुक्त वर्ण सम्बन्धी नियम**

(क) जिन वर्णों में खड़ी पाई है, उनका संयुक्त रूप बनाने के लिए खड़ी पाई को हटाकर ही दूसरा व्यंजन जोड़ा जाये, जैसे– ख् + या = ख्या, प् + या = प्या, ग् + न = ग्न। इनसे बने शब्द इस प्रकार होंगे :

यथा– प्रख्यात, प्यास, लग्न।

(ख) 'क' और 'फ' के संयुक्त व्यंजन बनाने के लिए इनकी घुण्डी को हटा दिया जाये, यथा- क + या = क्या, फ् + त = फ्त। इनसे बने शब्द होंगे क्यारी, हफ्ता।

(ग) ङ, छ, ट, ठ, ड, ढ, द और 'ह' के संयुक्ताक्षर बनाने के लिए इनके बीच हलन्त लगाना चाहिए, यथा– वाङ्मय, चिह्न, विद्या, ब्रह्मा। इन शब्दों के विद्या, चिह्न, ब्रह्मा आदि रूप अमानक माने जायेंगे।

NOTES

(घ) 'र' का संयोग प्रचलित रूप में तीन प्रकार से होगा– प्रकाश, धर्म, राष्ट्र।

(ङ) 'श्र' का प्रचलित रूप मान्य होगा, 'त् + र' के संयोग को 'त्र' माना जायेगा तथा 'त्त - त्त' दोनों रूपों में मानक माना जायेगा।

2. विभक्ति-चिह्न सम्बन्धी नियम

(क) हिन्दी के विभक्ति-चिह्न संज्ञा-शब्दों में शब्द से अलग लिखे जायेंगे किन्तु सर्वनामों में मिलाकर लिखे जायेंगे, यथा– राम ने, राम से, राम को, मुझसे, तुमने, तुमको, तुमसे, हमसे, हमको।

(ख) सर्वनामों के साथ यदि दो शब्दों वाले विभक्ति चिह्न हों तो पहला सर्वनाम से जोड़कर लिखा जायेगा और दूसरा अलग रहेगा। यथा– उसके लिए, उसमें से, उनके लिए।

(ग) सर्वनामों और विभक्तियों के बीच यदि निपात (ही, तक) आदि का प्रयोग हो तो विभक्ति को अलग लिखा जाये, यथा- आप ही के लिए, मुझ तक को।

3. क्रियापद सम्बन्धी नियम

(क) संयुक्त क्रियाएँ एक साथ मिलाकर नहीं, अपितु अलग-अलग लिखी जानी चाहिए। यथा– पढ़ा करता है, उठ बैठा, किया करता था।

(ख) पूर्वकालिक क्रिया का प्रत्यय मुख्य क्रिया के साथ जोड़कर लिखा जायेगा, यथा– आके, खाकर, जाकर, पीके।

4. अव्यय सम्बन्धी नियम - अव्यय सदा अलग से लिखे जायें, जैसे यहाँ तक, आपके साथ। किन्तु सामासिक पदों में अव्यय एक साथ लिखे जायेंगे, यथा– प्रतिदिन, यथासाध्य, यथाक्रम, मानवमात्र, भरपेट।

5. हाइफन सम्बन्धी नियम

(क) द्वन्द्व समास के पदों के बीच हाइफन होना चाहिए। यथा– माता-पिता, भाई-बहन, राम-सीता, बोल-चाल।

(ख) 'सा' या 'से' से पूर्व हाइफन का प्रयोग होना चाहिए, यथा– तुम-सा, राम-सा, बाण-से तीखे।

(ग) तत्पुरुष समास में हाइफन का प्रयोग सामान्यतः न करें, केवल वहीं करें जहाँ भ्रम होने की सम्भावना हो और हाइफन से वह भ्रम दूर हो रहा हो। यथा– भू-तत्व, भू-विज्ञानी; किन्तु 'रामराज्य', 'गंगाजल' में दोनों शब्दों के बीच हाइफन का प्रयोग अशुद्ध माना जायेगा।

6. अनुस्वार तथा अनुनासिक (चन्द्रबिन्दु) सम्बन्धी नियम

(क) पंचम वर्ण के स्थान पर मुद्रण की सुविधा को ध्यान में रखते हुए अनुस्वार का ही प्रयोग करना चाहिए, यथा: गंगा, चंचल, हिंदी, कंबल, ठंडा आदि।

(ख) जिन व्यंजनों में चन्द्रबिन्दु के बिना अर्थ का भ्रम हो सकता है, वहाँ चन्द्रबिन्दु का प्रयोग अनिवार्य रूप से पृथकता दिखाने हेतु किया जाना चाहिए। यथा :

हंस = एक पक्षी,	हँस = हँसना,
अंगना = स्त्री,	आँगना = आँगन।

7. श्रुतिमूलक 'य' और 'व' सम्बन्धी नियम

(क) जहाँ श्रुतिमूलक 'य' और 'व' का प्रयोग विकल्प से होता हो, वहाँ स्वर वाले रूप ही शुद्ध माने जायेंगे। यथा:

हुआ, गई, नई, लिए – शुद्ध हैं तथा हुवा, गयी, नयी, लिये – अशुद्ध हैं।

(ख) जहाँ 'य' और 'व' शब्द के ही मूल तत्व हों वहाँ स्वर वाला रूप अशुद्ध और 'य', 'व' वाला रूप ही शुद्ध होगा। यथा: स्थायी, अव्ययी भाव, दायित्व – शुद्ध हैं तथा स्थाई, अव्वई भाव, दाइत्व – अशुद्ध हैं।

8. **विदेशी ध्वनियों से सम्बन्धित नियम–** हिन्दी में अंग्रेजी की 'ऑ' तथा अरबी-फारसी की पाँच ध्वनियाँ 'क़, ख़, ग़, ज़, फ़' प्रचलित हैं, किन्तु इनका प्रयोग उन्हीं शब्दों में किया जाना चाहिए जहाँ उनका शुद्ध विदेशी रूप में उच्चारणगत भेद दिखाना हो। अंग्रेजी या फारसी के जो शब्द हिन्दी के अंग बन चुके हैं, उनमें हिन्दी की ध्वनियाँ ही चलेंगी। हिन्दी शब्दों से इनका भेद दिखाने के लिए इनका प्रयोग करना आवश्यक है।

   जैसे– डॉक्टर, कॉलेज, खाना-.खाना, बाग-बाग़, राज-राज़ का भेद स्पष्ट है।

9. **हलन्त सम्बन्धी नियम–** संस्कृत के बहुत-से शब्द हलन्तयुक्त थे, किन्तु हिन्दी में वे बिना हलन्त के ही चल रहे हैं। अत: ऐसे शब्दों में हलन्त लगाने की आवश्यकता नहीं है। यथा:

संस्कृत रूप	हिन्दी रूप
महान्	महान
जगत्	जगत
विद्वान्	विद्वान

10. **विसर्ग सम्बन्धी नियम–** संस्कृत के जिन तत्सम शब्दों में विसर्ग है और उन शब्दों को हिन्दी में प्रयुक्त करना हो तो वहाँ विसर्ग लगाना चाहिए। किन्तु जो शब्द तद्भव रूप में हिन्दी में आये हैं, वहाँ विसर्ग की आवश्कता नहीं है। यथा: 'दुख' को 'दु:ख' लिखना ठीक नहीं है किन्तु 'मन:स्थिति' शब्द में विसर्ग ठीक है।

11. **अन्य नियम–** शिरोरेखा का प्रयोग प्रचलित रहेगा, पूर्ण विराम के लिए खड़ी पाई (।) का प्रयोग मान्य है। शेष विराम-चिह्नों का वही स्वरूप रहेगा जो अंग्रेजी में प्रचलित है।

उक्त विवेचन से स्पष्ट है कि देवनागरी लिपि का मानकीकरण करने के लिए किये गये प्रयास सकारात्मक हैं। इनसे मानकीकरण को दिशा मिली है तथा सामान्य लोगों की ही नहीं जानकारों की भी अनेक समस्याएँ दूर हुई हैं।

उपसर्ग एवं प्रत्यय

हिन्दी में नवीन शब्दों की संरचना उपसर्ग, प्रत्यय तथा समास के आधार पर होती है। संधि के द्वारा भी नये शब्दों का निर्माण किया जाता रहा है। प्रस्तुत अध्याय में हम उपसर्ग एवं प्रत्यय, उनके स्वरूप एवं प्रकार तथा शब्द-निर्माण में उनकी भूमिका का अध्ययन करेंगे।

जो शब्दांश किसी शब्द के पूर्व जुड़कर उसके अर्थ में नवीनता या विशिष्टता ला देता है, उसे 'उपसर्ग' (Prefix) कहते हैं जबकि शब्द के बाद जुड़कर उसके अर्थ में नवीनता या विशिष्टता लाने वाले शब्दांश को 'प्रत्यय' (Suffix) कहा जाता है। उपसर्ग की सहायता से निर्मित किये गये शब्दों को 'उपसर्गमूलक' शब्द तथा प्रत्यय की सहायता से निर्मित किए गए शब्दों को 'प्रत्ययमूलक' शब्द कहा जाता है।

आइये, अब क्रमश: उपसर्गों, प्रत्ययों तथा उनसे निर्मित शब्दों का अध्ययन करें।

उपसर्ग (Prefix)

परिभाषा– "उपसर्ग वह शब्दांश है जिसका स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं होता और जो शब्द से पहले जुड़कर उसके अर्थ में विशिष्टता या नवीनता ला देता है।"

यथा : प्र + हार = प्रहार (चोट करना)
वि + हार = विहार (घूमना-फिरना

उप + हार = उपहार (भेंट)

परि + हार = परिहार (त्यागना)

सम् + हार = संहार (नष्ट करना)

NOTES

यहाँ 'प्र, वि, उप, परि, सम्' उपसर्ग हैं जो 'हार' शब्द से पहले जुड़कर उसके अर्थ को विशिष्टता प्रदान कर रहे हैं।

उपसर्गों के लक्षण

उपर्युक्त परिभाषा के आधार पर हिन्दी में प्रयुक्त होने वाले उपसर्गों के निम्नलिखित चार लक्षण बताये जा सकते हैं :

1. उपसर्ग शब्द न होकर शब्दांश होता है।
2. उपसर्ग शब्द से पहले जुड़ता है।
3. उपसर्ग का स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं होता, इसलिए वाक्य में उसका प्रयोग स्वतन्त्र रूप में नहीं होता।
4. उपसर्ग किसी शब्द में जुड़कर उसके अर्थ में नवीनता या विशिष्टता ला देता है।

उपसर्गों का वर्गीकरण

हिन्दी-भाषा के उपसर्गों को डॉ. भोलानाथ तिवारी ने तीन वर्गों में विभक्त किया है :

(अ) तत्सम उपसर्ग (ब) तद्भव उपसर्ग (स) विदेशी उपसर्ग।

तत्सम उपसर्गों के अन्तर्गत वे उपसर्ग आते हैं जो संस्कृत से ज्यों के त्यों लिये गए हैं और हिन्दी में प्रयुक्त संस्कृत के तत्सम शब्दों के साथ में प्रयुक्त होते हैं। यथा- 'अति, आध्, अनु, अप, आ, परि' आदि।

तद्भव उपसर्गों के अन्तर्गत वे उपसर्ग आते हैं जो ध्वनि-परिवर्तन की प्रक्रिया से गुजरते हुए हिन्दी में आए हैं तथा हिन्दी-शब्दों (तद्भव शब्दों) के साथ प्रयुक्त हो रहे हैं। यथा- 'औ, अ, कु, दु, नि, स' आदि।

विदेशी उपसर्ग- हिन्दी में विदेशी उपसर्ग उन शब्दों में प्रयुक्त होते हैं जो या तो अरबी-फारसी की परम्परा से हिन्दी को प्राप्त हुए अथवा अंग्रेजी से हिन्दी में आए हैं। इन्हें निम्नलिखित दो वर्गों में विभक्त किया जा सकता है :

(i) अरबी-फारसी के उपसर्ग, जैसे- अल, दर, बा, बे, ला आदि।

(ii) अंग्रेजी के उपसर्ग, जैसे- वाइस, हाफ, डिप्टी आदि।

आइये, हम सभी प्रकार के उपसर्गों का अलग-अलग अध्ययन करें।

(अ) तत्सम (संस्कृत) उपसर्ग

संस्कृत-उपसर्गों की संख्या 22 मानी गई है। इनमें से एक उपसर्ग 'अपि' का प्रयोग हिन्दी में नहीं होता। शेष 21 उपसर्ग एवं उनसे बने शब्दों की सूची यहाँ प्रस्तुत है। यह उल्लेखनीय है कि इन उपसर्गों से बने शब्द तत्सम ही होंगे, इसलिए इन्हें 'तत्सम' उपसर्ग भी कहा जाता है।

क्रमांक	उपसर्ग	अर्थ	उपसर्ग से निर्मित शब्द
1.	अति	अधिक	अतिशय, अतिक्रमण, अतिरिक्त, अत्याचार, अल्पल्प, अत्यन्त, अत्यावश्यक, अतीन्द्रिय।
2.	अधि	श्रेष्ठ, ऊपर	अधिकार, अधिपति, अध्यक्ष, अध्याहार, अध्यादेश, अधीक्षण, अध्यापक, अधिसूचना, अधिष्ठाता, अध्यात्म, अधिनायक।

NOTES

3.	अनु	पीछे, समान	अनुमान, अनुभव, अनुशासन, अनुरूप, अनुज, अनुप्रास, अनुज्ञा, अनूदित, अनुपूरक, अनुकूल, अनुपालन।
4.	अप	बुरा	अपभ्रंश, अपभ्रष्ट, अपकार, अपकीर्ति, अपमान, अपवर्तन, अपराध, अपशिष्ट।
5.	अभि	ओर, सामने	अभिमुख, अभियोग, अभ्यागत, अभ्यास, अभिलाषा, अभिराम, अभीष्ट, अभिवन्ता।
6.	अव	बुरा, हीन, नीचे	अवगुण, अवरोहण, अवनति, अवस्था, अवलोकन, अवगुंठन, अवसान, अवरोह, अवमानना, अवरोध, अवज्ञा।
7.	आ	तक, ओर, समेत	आजन्म, आजीवन, आमरण, आगमन, आयात, आचार, आजीविका, आरोहण।
8.	उत्	ऊपर, ऊँचा	उत्कर्ष, उत्पादन, उत्खनन, उन्मेष, उन्नति, उच्चारण, उद्‌बोधन, उदाहरण, उच्छ्वास, उद्‌गम, उत्सर्ग, उड्डयन।
9.	उप	सहायक, गौण, निकट	उपमंत्री, उपयोग, उपहार, उपकूल, उपनगर, उपवास, उपनाम, उपभोग, उपवन, उपमान, उपमेय, उपचार।
10.	दुर्	बुरा, कठिन	दुराचार, दुर्बल, दुर्जन, दुर्गुण, दुर्दशा, दुर्गति, दुर्भिक्ष, दुरभिसंधि, दुरन्त, दुर्दान्त, दुर्लभ, दुरात्मा, दुर्घटना।
11.	दुस्	बुरा, कठिन	दुस्तर, दुस्साहस, दुश्चरित्र, दुष्कर, दुस्साध्य, दुस्सह।
12.	नि	नीचे	निपात, नियोग, नियम, निकृष्ट, निबंध, निषेध, निपट, नियंत्रण, निवास, निकष।
13.	निर्	रहित, नहीं	निरपराध, निर्बल, निर्भय, निर्धन, निरर्थक, निर्निमेष, निर्दोष, निरभ्र, निर्जल, निरुक्त।
14.	निस्	निषेध, रहित	निस्सार, निश्चल, निष्काम, निश्चित, निःशुल्क, निष्कासन, निस्तार।
15.	परा	उल्टा, पीछे	पराजय, पराभव, पराधीन, परामर्श, परास्त, पराक्रम, पराकाष्ठा।
16.	परि	पूर्ण, चारों ओर	परिपूर्ण, परिमाप, परिजन, परीक्षा, पर्यटन, पर्यवसान, परिणाम, पर्याप्त।
17.	प्र	आगे, अधिक	प्रयोग, प्रबल, प्रगाढ़, प्रभाव, प्रहार, प्रवचन, प्रपंच, प्रख्यात, प्रेषक, प्रबुद्ध, प्रकोप, प्रमाण।
18.	प्रति	विरुद्ध, प्रत्येक	प्रतिकूल, प्रतिकार, प्रतिवादी, प्रत्युत्तर, प्रत्यर्पण, प्रत्यावर्तन, प्रतिहार, प्रत्येक, प्रतिरोध।
19.	वि	विशेष, अभाव	विज्ञान, विशेष, वियोग, विदेश, विलास, विकीर्ण, विरेचन, विस्मरण, विख्यात, विकराल, विदग्ध, विरोध।
20.	सम्	साथ, पूर्ण, शुद्ध	सम्यक्, संयोग, संताप, संचय, समन्वय, सम्प्रेषण, सन्तोष, सम्पदा, समर्पण, समग्र, संघर्ष।

NOTES

21.	सु	सहज, अच्छा, विशद	सुपुत्र, सुकर्म, सुपरिचित, सुदेश, स्वागत, स्वच्छ, सुलभ, सुव्यवस्थित, सुषुप्त, सुपाच्य, सुगंध, सुशील।

कुछ शब्दों में उपसर्ग का मूल रूप सुरक्षित नहीं रहता है। संधि के कारण वह बदला हुआ दिखता है। यथा :

प्रत्येक	=	प्रति + एक	'प्रति' उपसर्ग है।
अत्यंत	=	अति + अंत	'अति' उपसर्ग है।
उद्घाटन	=	उत् + घाटन	'उत्' उपसर्ग है।
व्यसन	=	वि + असन	'वि' उपसर्ग है।
स्वागत	=	सु + आगत	'सु' उपसर्ग है।
अभ्यागत	=	अभि + आगत	'अभि' उपसर्ग है।
उज्ज्वल	=	उत् + ज्वल	'उत्' उपसर्ग है।

(ब) तद्भव (हिन्दी) उपसर्ग

तद्भव शब्दों में हिन्दी-उपसर्गों का प्रयोग होता है, इसीलिए डॉ. भोलानाथ तिवारी इन्हें तद्भव उपसर्ग कहते हैं। ये संस्कृत से ही विकसित हुए हैं। इस प्रकार के उपसर्गों की सूची निम्नलिखित है :

क्रमांक	उपसर्ग	अर्थ	उपसर्ग से बने शब्द
1.	अ	अभाव, निषेध	अजान, अबेर, अछूता, अपच, अथाह, अमर, अछूत, अकाज।
2.	अध	आधा	अधखिला, अधपका, अधमरा, अधकचरा, अधपर, अधनंगा।
3.	अन	अभाव, निषेध	अनमिल, अनजान, अनपढ़, अनगढ़, अनमना, अनहोनी, अनभल, अनहित, अनसुनी।
4.	उन	एक कम	उनतीस, उनतालीस, उनसठ, उनचास, उनासी, उनहत्तर।
5.	औ	हीन, निषेध	औघट, औसर, औगुन, औढर, औतार।
6.	उ	ऊपर, ऊँचा	उनींदा, उथला, उचक्का, उबरा।
7.	कु	बुरा, नीच	कुठौर, कुरूप, कुकर्म, कुटेव, कुढंग, कुमार्ग।
8.	क	बुरा	कपूत।
9.	दु	बुरा, हीन, दो	दुबला, दुसूती, दुनाली, दुकाल, दुसह, दुपहरी।
10.	नि	बिना, रहित	निबल, निकम्मा, निडर, निहत्था, निधड़क, निपूता, निपूती।
11.	पर	दूसरा, बाद का	परलोक, परहित, परदादा, परजीवी, परवर्ती।
12.	स	सहित	सबल, सकाम, सगुन, सघन, सलोना, सरस, सजन, सपूत।
13.	सु	अच्छा	सुघड़, सुजान, सुफल, सुदेश, सुदिन, सुडौल।

14.	चौ	चार	चौराहा, चौपाया, चौगुना, चौखट, चौरंगी, चौपाल, चौकोर, चौमासा।
15.	ति	तीन	तिपाई, तिराहा, तिमाही, तिरंगा, तिकोना, तिगुना।
16.	दु	दो	दुगुना, दुमुँहा, दुरंगा, दुभांत, दुचाली, दुलत्ती, दुभाषिया, दुपट्टा।

उल्लेखनीय है कि हिन्दी के जिन उपसर्गों का तद्भव उपसर्गों के रूप में यहाँ विवरण दिया गया है, वे तत्सम शब्दों के साथ न जुड़कर तद्भव शब्दों के साथ ही जुड़ते हैं।

(स) विदेशी (अरबी-फारसी) उपसर्ग

हिन्दी में अरबी-फारसी के जो शब्द प्रयुक्त हो रहे हैं, उनमें अरबी-फारसी के उपसर्गों का प्रयोग होता है। यहाँ इस प्रकार के उपसर्गों की सूची दी जा रही है। ये उपसर्ग विदेशी उपसर्गों के अन्तर्गत आते हैं।

क्रमांक	उपसर्ग	अर्थ	उपसर्ग से बने शब्द
1.	अल	निश्चित	अलमस्त, अलबेला, अलबत्ता, अलगरज, अलहदा।
2.	कम	न्यून, हीन	कमजोर, कमसिन, कमअक्ल, कमबख्त, कमख्याल।
3.	खुश	अच्छा, प्रसन्न	खुशकिस्मत, खुशहाल, खुशबू, खुशदिल, खुशमिजाज, खुशखबरी।
4.	गैर	रहित, भिन्न	गैरहाजिर, गैरवाजिब, गैरमुमकिन, गैरकानूनी, गैरजिम्मेदार।
5.	ब	साथ, लिए	बदस्तूर, बमुश्किल, बतौर, बशर्ते, बनिस्बत, बदौलत, बकौल, बखूबी।
6.	बद	बुरा	बदबू, बदहाल, बदनाम, बदकार, बदनसीब, बदहजमी, बदहवास, बदजात, बदजुबान, बदकिस्मत।
7.	बे	बिना	बेइज्जत, बेगैरत, बेजुबान, बेखटका, बेखौफ, बेबुनियाद, बेसहारा, बेरहम, बेहया, बेचैन, बेबस।
8.	बा	साथ, अनुसार	बाकायदा, बाइज्जत, बामुलाहिजा, बाअदब, बामशक्कत।
9.	बिला	बिना	बिलाबजह, बिलाशक, बिलाकानून।
10.	ला	बिना	लाइलाज, लाचार, लाजवाब, लासानी, लाजिमी, लापता, लापरवाह।
11.	दर	में	दरहकीकत, दरमियान, दरकार, दरवेश, दरकिनार, दरख्वास्त।
12.	ना	बिना	नालायक, नाजायज, नापाक, नाचीज, नामुमकिन, नादान, नामुराद, नाबालिग, नाकाम।
13.	सर	अच्छा, श्रेष्ठ	सरपंच, सरदार, सरकश, सरताज, सरनाम, सरकार।
14.	हम	समान	हमउम्र, हमख्याल, हमवतन, हमबिस्तर, हमराज, हमदर्द, हमजोली, हमसफर, हमराह।
15.	हर	प्रत्येक	हरोज, हरवख्त, हरएक, हरघड़ी हरदम, हरतरफ।

स्व प्रगति की जाँच करें:

3. उपसर्ग को उदाहरण सहित परिभाषित कीजिए।
4. हिन्दी-भाषा के उपसर्गों को डॉ. भोलेनाथ तिवारी ने कितने वर्गों में विभक्त किया है ?

NOTES

इनमें से कुछ उपसर्ग ऐसे भी हैं जो पारिभाषिक दृष्टि से उपसर्ग की कोटि में नहीं आते हैं, जैसे- गैर, खुश, कम आदि। इनका स्वतन्त्र शब्द के रूप में भी प्रयोग होता है। यथा :

मै **गैर** नहीं हूँ। वह **खुश** था। यह तो बहुत **कम** है।

(द) अंग्रेजी उपसर्ग

ये भी विदेशी उपसर्ग हैं और उन शब्दों में प्रयुक्त होते हैं जो अंग्रेजी के शब्द हैं किन्तु हिन्दी में आ गए हैं। इनकी तथा इनसे बने कुछ शब्दों की सूची निम्न प्रकार है :

क्रमांक	उपसर्ग	अर्थ	उपसर्ग से बने शब्द
1.	सब	अधीन	सबरजिस्ट्रार, सबइंस्पेक्टर, सबकमेटी, सबस्टेशन।
2.	वाइस	उप	वाइसचेयरमैन, वाइसप्रेसीडेंट, वाइसचांसलर, वाइसप्रिंसिपल।
3.	डिप्टी	सहायक	डिप्टीमिनिस्टर, डिप्टीरजिस्ट्रार, डिप्टीकलेक्टर, डिप्टीइंस्पेक्टर।
4.	हैड	प्रधान	हैडमास्टर, हैडमिस्ट्रेस, हैडऑफिस, हैडक्लर्क, हैडपोस्टऑफिस।
5.	हाफ	आधा	हाफपैंट, हाफटाइम।
6.	चीफ	प्रमुख	चीफमार्शल, चीफमिनिस्टर, चीफइंजीनियर, चीफह्विप।

ध्यान रखिये :

1. कभी-कभी एक शब्द में दो या अधिक उपसर्ग भी प्रयुक्त होते हैं, जैसे :
   (i) 'निरपराध' में 'निर्' और 'अप' दो उपसर्ग हैं।
   (ii) 'समालोचना' में 'सम्' और 'आ' दो उपसर्ग हैं।
   (iii) 'अनुसंधान' में 'अनु' और 'सम्' दो उपसर्ग हैं।
2. संस्कृत में कुछ अव्यय उपसर्ग की भाँति शब्दों के प्रारम्भ में जुड़कर सामासिक पद बनाते हुए उनके अर्थ को बदल देते हैं। ऐसे कुछ अव्यय हैं- अधः (अधोपतन), अंतर (अंतर्जगत), अलम् (अलंकार), चिर (चिरकाल), पुनः (पुनर्जन्म), प्राक् (प्राक्कथन), बहि (बहिष्कार), सत् (सज्जन), सह (सहयोग), सम् (समादर), स्व (स्वराज्य)।

उपसर्गों की सही जानकारी से जहाँ नये शब्दों के निर्माण की तकनीक पता चलती है, वहीं वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धियों का निराकरण भी किया जा सकता है।

प्रत्यय (Suffix)

परिभाषा – वे शब्दांश जो किसी शब्द या धातु के अन्त में जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन या विशेषता ला देते हैं, प्रत्यय कहलाते हैं। इन शब्दांशों (प्रत्ययों) का स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं होता है।

उक्त परिभाषा के आधार पर प्रत्यय के निम्नलिखित लक्षण बताये जा सकते हैं :

1. प्रत्यय शब्द न होकर शब्दांश होते हैं।
2. वे किसी शब्द या धातु के बाद जोड़े जाते हैं।
3. शब्द में जुड़कर प्रत्यय उसके अर्थ को परिवर्तित कर देते हैं या विशिष्ट बना देते हैं।
4. प्रत्ययों का स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं होता है।

निम्नलिखित उदाहरणों से प्रत्ययों को स्पष्ट किया जा सकता है :

भला + आई	=	भलाई	('आई' प्रत्यय है)
मिला + वट	=	मिलावट	('वट' प्रत्यय है)
पाल + अन	=	पालन	('अन' प्रत्यय है)
बूढ़ा + पा	=	बुढ़ापा	('पा' प्रत्यय है)
हित + कर	=	हितकर	('कर' प्रत्यय है)
फल + इत	=	फलित	('इत' प्रत्यय है)
मामा + एरा	=	ममेरा	('एरा' प्रत्यय है)
पठ + अनीय	=	पठनीय	('अनीय' प्रत्यय है)
पच् + अक	=	पाचक	('अक' प्रत्यय है)

प्रत्ययों के भेद – सामान्यत: प्रत्यय निम्नलिखित दो प्रकार के होते हैं :

(i) कृत प्रत्यय (ii) तद्धित प्रत्यय

(अ) **कृत प्रत्यय** – जो प्रत्यय 'धातु' (क्रिया) में जुड़कर, संज्ञा एवं विशेषण शब्दों की रचना करते हैं, वे 'कृत' प्रत्यय कहे जाते हैं और इनसे बने शब्द 'कृदन्त' शब्द कहे जाते हैं। जैसे :

धातु		प्रत्यय		कृदन्त शब्द
चल	+	अक	=	चालक
लिख	+	आई	=	लिखाई
पढ़	+	आई	=	पढ़ाई

(ब) **तद्धित प्रत्यय** – जो प्रत्यय धातु को छोड़कर अन्य शब्दों (संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण) में जोड़े जाते हैं, वे 'तद्धित' प्रत्यय कहलाते हैं और इनसे निर्मित शब्दों को 'तद्धितान्त' शब्द कहा जाता है। जैसे:

शब्द		प्रत्यय		तद्धितान्त शब्द
दया	+	आलु	=	दयालु
लोहा	+	आर	=	लोहार
अफीम	+	ची	=	अफीमची
मुख	+	इया	=	मुखिया

'तद्धित' एवं 'कृत' प्रत्ययों का जो भेद ऊपर बताया गया है, उसे डॉ. भोलानाथ तिवारी एवं आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा हिन्दी के सन्दर्भ में अनुपयुक्त मानते हैं क्योंकि हिन्दी के अनेक प्रत्यय ऐसे भी हैं जो धातु में भी जुड़ते हैं और संज्ञा आदि शब्दों में भी जुड़ते हैं। यथा :

एरा –	लूट + एरा = लुटेरा	(कृदन्त शब्द, क्योंकि प्रत्यय 'लूट' धातु में जुड़ा है)
	मामा + एरा = ममेरा	(तद्धितान्त शब्द, क्योंकि प्रत्यय 'मामा' संज्ञा में जुड़ा है)
आई –	पढ़ + आई = पढ़ाई	(कृदन्त शब्द, क्योंकि प्रत्यय 'पढ़' धातु में जुड़ा है)
	भला + आई = भलाई	(तद्धितान्त शब्द, क्योंकि प्रत्यय विशेषण 'भला' में जुड़ा है)
नी –	कतर + नी = कतरनी	(कृदन्त शब्द, क्योंकि प्रत्यय 'कतर' धातु में जुड़ा है)
	ऊँट + नी = ऊँटनी	(तद्धितान्त शब्द, क्योंकि प्रत्यय संज्ञा-शब्द 'ऊँट' में जुड़ा है)

NOTES

प्रत्ययों का वर्गीकरण

ऐतिहासिक विकास की दृष्टि से डॉ. भोलानाथ तिवारी ने हिन्दी-प्रत्ययों को चार वर्गों मे विभक्त किया है :

(क) तत्सम प्रत्यय, (ख) तद्भव प्रत्यय,

(ग) देशज प्रत्यय, (घ) विदेशी प्रत्यय ।

(क) तत्सम प्रत्यय

क्रमांक	प्रत्यय		प्रत्यय से निर्मित शब्द
1.	अक	–	निंदक, पाचक, हिंसक, लेखक, पाठक।
2.	अनीय	–	पठनीय, पूजनीय, दयनीय, करणीय, रमणीय।
3.	आ	–	पूजा, कथा, शिक्षा, इच्छा, व्यथा।
4.	य	–	पूज्य, त्याज्य, पात्र्य, देय, क्षम्य।
5.	अ	–	कौशल, पौरुष, गौरव।
6.	आ	–	प्रिया, सुता, आदरणीया, माननीया।
7.	इक	–	आलंकारिक, सैनिक, मानसिक, सामाजिक, तामसिक।
8.	इत	–	हर्षित, पठित, पल्लवित, मुकुलित, फलित।
9.	इल	–	पंकिल, फेनिल, धूमिल।
10.	इमा	–	महिमा, गरिमा, कालिमा, मधुरिमा।
11.	ईन	–	कुलीन, युगीन, ग्रामीण, प्राचीन, नवीन।
12.	ईय	–	स्वकीय, भारतीय, भवदीय, स्वर्गीय।
13.	एय	–	कौन्तेय, राधेय, भागिनेय, गांगेय।
14.	तः	–	विशेषतः, सामान्यतः, मुख्यतः, वस्तुतः।
15.	तम	–	श्रेष्ठतम, लघुतम, महत्तम, उच्चतम, सर्वोत्तम।
16.	तर	–	लघुतर, श्रेष्ठतर, महत्तर, उच्चतर।
17.	त्व	–	लघुत्व, गुरुत्व, महत्व, देवत्व।
18.	मान्	–	श्रीमान्, धीमान्, बुद्धिमान्, मतिमान्।
19.	य	–	पांडित्य, सौन्दर्य, धैर्य, माधुर्य।
20.	ल	–	मंजुल, कुशल, वत्सल, धवल।
21.	लु	–	दयालु, कृपालु, श्रद्धालु, ईर्ष्यालु।
22.	वान्	–	धनवान, दयावान, गुणवान, बलवान।
23.	शाली	–	बलशाली, गौरवशाली, शक्तिशाली, प्रभावशाली।

(ख) तद्भव प्रत्यय

क्रमांक	प्रत्यय		प्रत्यय से निर्मित शब्द
1.	अन	–	चलन, कहन, सुनन, मिलन, घुटन।
2.	आ	–	जोड़ा, बोझा, चूरा, प्यासा।
3.	आई	–	पढ़ाई, सिलाई, लिखाई, बुराई।

NOTES

4.	आका	–	लड़ाका, धमाका, पटाका, धड़ाका।
5.	आर	–	सुनार, लोहार, चमार, गंवार।
6.	आस	–	मिठास, खटास, प्यास।
7.	आना	–	राजपूताना, तेलंगाना, पैंताना।
8.	आल	–	ससुराल, ननिहाल, घड़ियाल।
9.	आवना	–	लुभावना, डरावना, सुहावना।
10.	आवट	–	लिखावट, मिलावट, बुनावट।
11.	आहट	–	चिकनाहट, बुलाहट, कड़वाहट।
12.	इयल	–	मरियल, सड़ियल, अड़ियल।
13.	इन	–	लुहारिन, सुनारिन, तेलिन, पुजारिन।
14.	इया	–	डिबिया, लुटिया, पुरिया, रसोइया, ढोलकिया।
15.	ई	–	टोकरी, पहाड़ी, गुलाबी, बत्तीसी, मण्डली।
16.	ईला	–	पथरीला, कंटीला, जोशीला।
17.	उआ	–	गेरुआ, बबुआ, फगुआ।
18.	ऊ	–	पेटू, चालू, नक्कू।
19.	एरा	–	सपेरा, चितेरा, ममेरा, लुटेरा।
20.	ऐत	–	डकैत, लठैत, अल्हैत।
21.	ऐला	–	कसैला, विषैला, गुबरैला।
22.	ओला	–	मंझौला, खटोला, संपोला।
23.	औना	–	बिछौना, खिलौना, दिठौना।
24.	ता	–	सोता, खाता, पीता।
25.	त	–	बचत, खपत, रंगत, चाहत।
26.	नी	–	ओढ़नी चोरनी, चटनी, मिलनी।
27.	पा	–	बुढ़ापा, मोटापा, स्यापा।
28.	पन	–	बचपन, लड़कपन, बालपन।
29.	ल	–	मंजुल, मृदुल।
30.	वान	–	गाड़ीवान, कोचवान, फौलवान।
31.	वां	–	सातवां, आठवां, पाँचवां।
32.	वाल	–	कोतवाल, बकरवाल।
33.	सरा	–	तीसरा, दूसरा।
34.	हरा	–	इकहरा, दुहरा, तिहरा, सुनहरा।
35.	हारा	–	लकड़हारा, पनिहारा।

(ग) देशज प्रत्यय

क्रमांक	प्रत्यय		प्रत्यय से निर्मित शब्द
1.	अक्कड़	–	भुलक्कड़, सुक्कड़, पियक्कड़।
2.	अड़	–	अंधड़, भुक्खड़, मक्कड़।

NOTES

3.	आक	–	तैराक, फटाक, खटाक, तड़ाक।
4.	आटा	–	सन्नाटा, खर्राटा, फर्राटा।

(घ) विदेशी प्रत्यय

(अ) अरबी-फारसी प्रत्यय

क्रमांक	प्रत्यय		प्रत्यय से निर्मित शब्द
1.	आना	–	नजराना, दोस्ताना, सालाना।
2.	इयत	–	इन्सानियत, हैवानियत, खैरियत।
3.	इश	–	अजमाइश, फरमाइश, मालिश, बन्दिश।
4.	इन्दा	–	बाशिन्दा, परिन्दा, कारिन्दा।
5.	ई	–	खूनी, खुशी, देहाती।
6.	ईन	–	संगीन, नमकीन, शौकीन।
7.	खोर	–	घूसखोर, हरामखोर, टुकड़खोर।
8.	कार	–	सलाहकार, जानकार, पेशकार।
9.	गीर	–	आलमगीर, जहांगीर, राहगीर।
10.	गर	–	सौदागर, जादूगर, बाजीगर।
11.	गार	–	मददगार, खिदमतगार, गुनाहगार।
12.	ची	–	नकलची, बन्दूकची, मशालची।
13.	दार	–	दुकानदार, जमींदार, तहसीलदार।
14.	दान	–	पीकदान, पानदान, खानदान।
15.	बाज	–	दगाबाज, धोखेबाज, चालबाज।
16.	बर	–	दिलबर, नामबर, रहबर।
17.	बीन	–	तमाशबीन, दूरबीन।
18.	साज	–	घड़ीसाज, जालसाज।

(ब) अंग्रेजी प्रत्यय

क्रमांक	प्रत्यय		प्रत्यय से निर्मित शब्द
1.	इज्म	–	कम्यूनिज्म, जर्नलिज्म, जैनिज्म, टैरेरिज्म।
2.	इस्ट	–	कम्यूनिस्ट, जर्नलिस्ट, जैनिस्ट, टैरेरिस्ट।

प्रत्ययों से शब्द-निर्माण

(i) प्रत्ययों की सहायता से भाववाचक संज्ञाएँ, करणवाचक संज्ञाएँ तथा विशेषण बनाए जाते हैं। यहाँ कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं:

(अ) 'सज' धातु में 'आवट' प्रत्यय जोड़कर 'सजावट' भाववाचक संज्ञा बनाई गई है।

(ब) 'मथ' धातु में 'आनी' प्रत्यय जोड़कर 'मथानी' करणवाचक संज्ञा बनाई गई है।

(स) 'झगड़' धातु में 'आलू' प्रत्यय जोड़कर 'झगड़ालू' विशेषण बनाया गया है।

(द) 'बच्चा' शब्द में 'पन' प्रत्यय जोड़कर 'बचपन' भाववाचक संज्ञा बनाई गई है।

(ii) प्रत्ययों के प्रयोग से भाववाचक संज्ञाओं, विशेषणों, क्रिया-विशेषणों की रचना अनेक तरीकों से की जाती है। यहाँ कुछ उदाहरण प्रस्तुत हैं :

(अ) भाववाचक संज्ञा का निर्माण

(i) **जातिवाचक संज्ञा से भाववाचक संज्ञा**

जातिवाचक संज्ञा	+	**प्रत्यय**	= **भाववाचक संज्ञा**
मित्र	+	ता	= मित्रता
पशु	+	त्व	= पशुत्व
लड़का	+	पन	= लड़कपन
मनुष्य	+	त्व	= मनुष्यत्व

(ii) **विशेषण से भाववाचक संज्ञा**

विशेषण	+	**प्रत्यय**	= **भाववाचक संज्ञा**
खट्टा	+	आस	= खटास
सुन्दर	+	ता	= सुन्दरता
सर्द	+	ई	= सर्दी
राष्ट्रीय	+	ता	= राष्ट्रीयता
विद्वान्	+	ता	= विद्वत्ता

(iii) **क्रिया से भाववाचक संज्ञा -**

क्रिया	+	**प्रत्यय**	= **भाववाचक संज्ञा**
सिलना	+	आई	= सिलाई
कमाना	+	आई	= कमाई
छटपटाना	+	आहट	= छटपटाहट
घबराना	+	आहट	= घबराहट

(ब) विशेषणों का निर्माण

(i) **संज्ञा + इक-प्रत्यय**

समाज + इक = **सामाजिक**, पक्ष + इक = **पाक्षिक**, नीति + इक = **नैतिक**, लोक + इक = **लौकिक**, क्रम + इक = **क्रमिक**, आत्मा + इक = **आत्मिक**।

(ii) **संज्ञा + इत-प्रत्यय**

अंक + इत = अंकित, अनुमान + इत = अनुमानित, फल + इत = फलित।

(iii) **संज्ञा + इया-प्रत्यय**

बम्बई + इया = बम्बइया, पूरब + इया = पुरबिया, कन्नौज + इया = कनौजिया।

(iv) **संज्ञा + ई-प्रत्यय**

चीन + ई = चीनी, जापान + ई = जापानी, अरब + ई = अरबी।

(v) **संज्ञा + ईय-प्रत्यय**

जाति + ईय = जातीय, भारत + ईय = भारतीय, स्थान + ईय = स्थानीय।

NOTES

(vi) **संज्ञा + ईला-प्रत्यय**

रंग + ईला = रंगीला, चमक + ईला = चमकीला, रस + ईला = रसीला।

(vii) **संज्ञा + एरा-प्रत्यय**

मामा + एरा = ममेरा, लूट + एरा = लुटेरा, फूफा + एरा = फुफेरा।

(viii) **संज्ञा + नीय-प्रत्यय**

निन्दा + नीय = निन्दनीय, दया + नीय = दयनीय, विश्वास + नीय = विश्वसनीय।

(ix) **संज्ञा + वाला-प्रत्यय**

दूध + वाला = दूधवाला, रिक्शा + वाला = रिक्शेवाला, चाट + वाला = चाटवाला।

(x) **संज्ञा + शील-शाली-प्रत्यय**

क्षमा + शील = क्षमाशील, क्रिया + शील = क्रियाशील, भाग्य + शाली = भाग्यशाली।

सन्धि एवं समास

सन्धि

शब्द रचना में सन्धि एवं समासों की भी महत्वपूर्ण भूमिका है। सन्धित एवं सामासिक पदों के प्रयोग से भाषा में प्रौढ़ता आती है तथा लेखक का लाघव प्रदर्शित होता है। हम इस अध्याय में क्रमशः सन्धि एवं समासों का अध्ययन करेंगे।

सन्धि : अर्थ एवं परिभाषा

'सन्धि' का अर्थ है- आपस में मेल। शब्दों एवं वर्णों में भी आपस में मेल होता है। व्याकरण की भाषा में शब्दों या वर्णों के इसी मेल को 'सन्धि' कहते हैं।

परिभाषा– "जब दो वर्ण पास-पास होते हैं तो व्याकरण के नियमानुसार उनके मेल से होने वाले विकार को सन्धि कहते हैं।" दूसरे शब्दों में, दो शब्द जब एक-दूसरे के समीप आते हैं, तो पहले शब्द की अन्तिम ध्वनि या वर्ण और दूसरे शब्द की प्रथम ध्वनि या वर्ण आपस में मिल जाते हैं। यह मिलना ही सन्धि कहलाता है।

जैसे-	1. विद्या	+ अर्थी	=	विद्यार्थी
	2. जगत्	+ ईश	=	जगदीश
	3. यशः	+ दा	=	यशोदा

इस प्रकार 'शब्दों या वर्णों के आपसी मेल से जो विकार उत्पन्न होता है, उसे सन्धि कहते हैं।'

ऊपर दिए गये तीनों उदाहरणों को ध्यान से देखिए। पहले उदाहरण में दो शब्द 'विद्या' एवं 'अर्थी' आपस में मेल करने के लिए पास-पास हैं। पहले शब्द के अन्त में 'आ' ध्वनि है तथा दूसरे शब्द के प्रारम्भ में 'अ' ध्वनि है। इन दोनों का आपस में मेल होना है। अर्थात् = आ+अ = 'आ' इस प्रकार 'विद्यार्थी' शब्द बना।

दूसरे उदाहरण में 'जगत्' तथा 'ईश' दो शब्द मेल (सन्धि) के लिए पास-पास हैं। पहले शब्द के अन्त में 'त्' व्यंजन है तथा दूसरे शब्द के प्रारम्भ में 'ई' स्वर है। इन दोनों का आपस में मेल होना है। व्याकरण के नियमानुसार 'त्' एवं 'ई' आपस में मिलकर 'दी' बन गए हैं। इस प्रकार नया शब्द 'जगदीश' बना।

तीसरे उदाहरण में 'यशः' तथा 'दा' शब्दों का आपस में मेल होना है। प्रथम शब्द 'यशः' के अन्त में ':' विसर्ग है तथा दूसरे शब्द के प्रारम्भ में 'दा' है। इस प्रकार विसर्ग (:) एवं 'आ' दोनों मिलकर 'ओ' बन गए हैं और नया शब्द 'यशोदा' बना है।

उपर्युक्त उदाहरणों से स्पष्ट है कि जब अलग-अलग शब्दों के अन्तिम तथा प्रथम स्वर, व्यंजन या विसर्ग निकट आते हैं तो उनमें व्याकरण के निश्चित नियमों के अनुसार आपस में मेल हो जाता है तथा उनके स्वरूप में अन्तर (विकार) आ जाता है। इसी को सन्धि कहा जाता है।

सन्धि-विच्छेद– सन्धि करते समय व्याकरण के जिन नियमों का पालन किया जाता है, उन्हीं नियमों को ध्यान में रखते हुए जब सन्धियुक्त शब्दों को अलग-अलग करके लिखा जाता है, तो उसे 'सन्धि -विच्छेद' कहते हैं। जैसे:

विद्यार्थी	= विद्या+अर्थी	सूर्योदय	= सूर्य+उदय
मनोहर	= मन:+हर	सच्चरित्र	= सत्+चरित्र

सन्धि के प्रकार

सन्धि करते समय हमने देखा कि कभी दो स्वरों का आपस में मेल होता है, कभी व्यंजन तथा स्वर का आपस में मेल होता है और कभी विसर्ग के साथ स्वर या व्यंजन का मेल होता है। अर्थात् – स्वर, व्यंजन या विसर्ग का आपस में मेल होता है। इसी आधार पर सन्धियों के निम्नलिखित तीन प्रकार हैं :

(क) स्वर सन्धि, (ख) व्यंजन सन्धि, (ग) विसर्ग सन्धि।

(क) स्वर-सन्धि

दो स्वरों के मेल को स्वर-सन्धि कहते हैं। स्वर-सन्धि के निम्नलिखित पाँच भेद हैं :

(1) **दीर्घ स्वर-सन्धि–** जब दो एक जैसे स्वर (सवर्ण या सजातीय) पास-पास होने से आपस में मिलते हैं, तो दोनों के बदले सवर्ण दीर्घ स्वर हो जाता है। जैसे:

वेद	+	अन्त	=	अ	+	अ	=	आ	=	वेदान्त
कुश	+	आसन	=	आ	+	आ	=	आ	=	कुशासन
विद्या	+	आलय	=	आ	+	आ	=	आ	=	विद्यालय
विद्या	+	अर्थी	=	आ	+	अ	=	आ	=	विद्यार्थी
कवि	+	इन्द्र	=	इ	+	इ	=	ई	=	कवीन्द्र
हरि	+	ईश	=	इ	+	ई	=	ई	=	हरीश
मही	+	इन्द्र	=	ई	+	इ	=	ई	=	महीन्द्र
सती	+	ईश	=	ई	+	ई	=	ई	=	सतीश
भानु	+	उदय	=	उ	+	उ	=	ऊ	=	भानूदय
वधू	+	उत्सव	=	ऊ	+	उ	=	ऊ	=	वधूत्सव
हिम	+	आलय	=	अ	+	आ	=	आ	=	हिमालय
चरण	+	अमृत	=	अ	+	अ	=	आ	=	चरणामृत
गिरि	+	ईश	=	इ	+	ई	=	ई	=	गिरीश
नदी	+	ईश	=	ई	+	ई	=	ई	=	नदीश
मंजु	+	ऊषा	=	उ	+	ऊ	=	ऊ	=	मंजूषा
शिव	+	आलय	=	अ	+	आ	=	आ	=	शिवालय
पृथ्वी	+	ईश	=	ई	+	ई	=	ई	=	पृथ्वीश

(2) **गुण स्वर-सन्धि–** यदि 'अ, आ' के उपरान्त ह्रस्व या दीर्घ 'इ, उ' या 'ऋ' हो, तो उनकी जगह क्रमश: 'ए, ओ' तथा 'अर्' हो जाता है। जैसे:

महा	+	इन्द्र	=	आ	+	इ	=	ए	=	महेन्द्र
शुभ	+	इच्छा	=	अ	+	इ	=	ए	=	शुभेच्छा
नर	+	इन्द्र	=	अ	+	इ	=	ए	=	नरेन्द्र
नर	+	ईश	=	अ	+	ई	=	ए	=	नरेश
महा	+	इन्द्र	=	आ	+	इ	=	ए	=	महेन्द्र
महा	+	ईश	=	आ	+	ई	=	ए	=	महेश
चन्द्र	+	उदय	=	अ	+	उ	=	ओ	=	चन्द्रोदय
देव	+	ऋषि	=	अ	+	ऋ	=	अर्	=	देवर्षि
महा	+	ऋषि	=	आ	+	ऋ	=	अर्	=	महर्षि
पर	+	उपकार	=	अ	+	उ	=	ओ	=	परोपकार
महा	+	उत्सव	=	आ	+	उ	=	ओ	=	महोत्सव
राजा	+	ऋषि	=	आ	+	ऋ	=	अर्	=	राजर्षि

(3) **वृद्धि स्वर-सन्धि–** यदि 'अ, आ' के उपरान्त 'ए, ऐ' अथवा 'ओ, औ' हों, तो दोनों के स्थान पर क्रमशः 'ऐ, औ' हो जाते हैं। जैसे :

एक	+	एक	=	अ	+	ए	=	ऐ	=	एकैक
मत	+	ऐक्य	=	अ	+	ऐ	=	ऐ	=	मतैक्य
सदा	+	एव	=	आ	+	ए	=	ऐ	=	सदैव
महा	+	ऐश्वर्य	=	आ	+	ऐ	=	ऐ	=	महैश्वर्य
महा	+	ओज	=	आ	+	ओ	=	औ	=	महौज
परम	+	औदार्य	=	अ	+	औ	=	औ	=	परमौदार्य
जल	+	ओघ	=	अ	+	ओ	=	औ	=	जलौघ
महा	+	औषध	=	आ	+	औ	=	औ	=	महौषध
वन	+	औषध	=	अ	+	औ	=	औ	=	वनौषध
तथा	+	एव	=	आ	+	ए	=	ऐ	=	तथैव
पुत्र	+	एषणा	=	अ	+	ए	=	ऐ	=	पुत्रैषणा

(4) **यण् स्वर-सन्धि–** 'इ, ई, उ, ऊ, ऋ' के उपरान्त यदि कोई असमान (विजातीय) स्वर आये तो 'इ, ई' के स्थान पर 'य्' 'उ, ऊ' के स्थान पर 'व्' और 'ऋ' के स्थान पर 'र्' हो जाता है। जैसे:

यदि	+	अपि	=	इ	+	अ	=	य्	+	अ	=	य	=	यद्यपि
इति	+	आदि	=	इ	+	आ	=	य्	+	आ	=	या	=	इत्यादि
प्रति	+	उपकार	=	इ	+	उ	=	य्	+	उ	=	यु	=	प्रत्युपकार
नि	+	ऊन	=	इ	+	ऊ	=	य्	+	ऊ	=	यू	=	न्यून
प्रति	+	एक	=	इ	+	ए	=	य्	+	ए	=	ये	=	प्रत्येक
नदी	+	अर्पण	=	ई	+	अ	=	य्	+	अ	=	य	=	नद्यर्पण
धनु	+	अंतर	=	उ	+	अ	=	व्	+	अं	=	वं	=	धन्वंतर
सु	+	आगत	=	उ	+	आ	=	व्	+	आ	=	वा	=	स्वागत
अनु	+	इत	=	उ	+	इ	=	व्	+	इ	=	वि	=	अन्वित

अनु	+	एषण	=	उ	+	ए	=	व्	+	ए	=	वे	=	अन्वेषण
मातृ	+	आज्ञा	=	ऋ	+	आ	=	र्	+	आ	=	रा	=	मात्राज्ञा
अति	+	आचार	=	इ	+	आ	=	य्	+	आ	=	या	=	अत्याचार
मनु	+	अन्तर	=	उ	+	अं	=	व्	+	अं	=	वं	=	मन्वंतर
अभि	+	अर्थी	=	इ	+	अ	=	य्	+	अ	=	य	=	अभ्यर्थी
अति	+	अन्त	=	इ	+	अ	=	य्	+	अ	=	य	=	अत्यन्त
सु	+	अल्प	=	उ	+	अ	=	व्	+	अ	=	व	=	स्वल्प

(5) **अयादि स्वर-सन्धि–** यदि 'ए, ऐ, ओ, औ' के उपरान्त कोई असमान (विजातीय) स्वर आये तो 'ए, ऐ, ओ, औ' के स्थान पर क्रमशः 'अय्, आय्, अव्, आव्' हो जाते हैं। जैसे :

नयन – नै+अन = ए+अन
न्+ए+अ+न्+अ
न्+अय्+अ+न्+अ = नयन

गायक– गै+अक = ऐ+अक
ग्+ऐ+अ+क्+अ
ग्+आय्+अ+क्+अ = गायक

पवन – पो+अन = ओ+अन
प्+ओ+अ+न्+अ
प्+अव्+अ+न्+अ = पवन

पावक– पौ+अक = औ+अक
प्+औ+अ+क्+अ
प्+आव्+अ+क्+अ = पावक

इसी प्रकार :

गै	+	अन	=	गायन	गो	+	ईश	=	गवीश
नौ	+	इक	=	नाविक	नै	+	इका	=	नायिका
पो	+	इत्र	=	पवित्र	चे	+	अन	=	चयन
शे	+	अन	=	शयन	भो	+	अन	=	भवन
धौ	+	अक	=	धावक	गो	+	आक्ष	=	गवाक्ष
शौ	+	अक	=	शावक					

स्वर-सन्धि के कुछ अन्य उदाहरण :

अनु	+	अय	=	अन्वय					
अति	+	अन्त	=	अत्यन्त	अति	+	आवश्यक	=	अत्यावश्यक
उप	+	ईक्षा	=	उपेक्षा	अति	+	आचार	=	अत्याचार
प्रति	+	अक्ष	=	प्रत्यक्ष	पीत	+	अम्बर	=	पीताम्बर
उप	+	इन्द्र	=	उपेन्द्र	भो	+	अन	=	भवन
भोजन	+	आलय	=	भोजनालय	मुनि	+	इन्द्र	=	मुनीन्द्र
महा	+	ईश	=	महेश	यथा	+	उचित	=	यथोचित
यथा	+	इष्ट	=	यथेष्ट	रमा	+	ईश	=	रमेश
वि	+	आयाम	=	व्यायाम	वसुधा	+	एव	=	वसुधैव
सु	+	आगत	=	स्वागत	मृग	+	इन्द्र	=	मृगेन्द्र
राम	+	अयन	=	रामायन	लोक	+	उक्ति	=	लोकोक्ति
वि	+	अर्थ	=	व्यर्थ	सर्व	+	उदय	=	सर्वोदय
विद्या	+	आलय	=	विद्यालय	सुर	+	इन्द्र	=	सुरेन्द्र

NOTES

सती	+ ईश	= सतीश		सदा	+ एव	= सदैव
सूर्य	+ उदय	= सूर्योदय		शश	+ अंक	= शशांक
देव	+ ईश	= देवेश		तनु	+ अंगी	= तन्वंगी
अधि	+ ईश्वर	= अधीश्वर		सखी	+ आगमन	= सख्यागमन
अभि	+ इष्ट	= अभीष्ट		प्रति	+ आरोप	= प्रत्यारोप
दाव	+ अनल	= दावानल		प्रति	+ आशी	= प्रत्याशी
वि	+ आप्त	= व्याप्त		वि	+ अस्त	= व्यस्त
विद्या	+ उन्नति	= विद्योन्नति		अति	+ अल्प	= अत्यल्प
वि	+ आकुल	= व्याकुल		अधि	+ अक्ष	= अध्यक्ष
महा	+ इन्द्र	= महेन्द्र		प्रति	+ अय	= प्रत्यय
लोक	+ उक्ति	= लोकोक्ति		कथ	+ उपकथन	= कथोपकथन
हत	+ उत्साह	= हतोत्साह		बाल	+ उचित	= बालोचित
जन	+ उपयोगी	= जनोपयोगी		ग्राम	+ उत्थान	= ग्रामोत्थान
नील	+ उत्पल	= नीलोत्पल		प्राप्त	+ उदक	= प्राप्तोदक

(ख) व्यंजन-सन्धि

सन्धि के लिए प्रस्तुत शब्दों में यदि प्रथम शब्द के अन्त में 'व्यंजन-वर्ण' हो तथा दूसरे शब्द प्रारम्भ में 'स्वर' या 'व्यंजन' हो, तो वहाँ पर व्यंजन-सन्धि होती है। जैसे- उत्+घाटन = उद्घाटन।

व्यंजन सन्धि के कुछ प्रमुख नियम निम्नलिखित हैं :

(1) **प्रत्येक वर्ग–** 'क वर्ग, च वर्ग, ट वर्ग, प वर्ग' के पहले वर्ण 'क् च् ट् त् प्' के उपरान्त यदि कोई स्वर आए अथवा वर्ग का तीसरा, चौथा वर्ण (ग घ ज झ, झ ढ, द ध, ब भ) या य, र, ल, व, ह आये तो पहले वर्ण के स्थान पर उसी वर्ग का तीसरा वर्ण हो जाता है। 'क्' के स्थान पर 'ग्', 'च्' के स्थान पर 'ज्', 'ट' के स्थान पर 'ड्', 'त्' के स्थान पर 'द्' तथा 'प्' के स्थान पर 'ब्' हो जाता है। जैसे:

उदाहरण–

दिक्	+ दर्शन	= दिग्दर्शन		जगत्	+ ईश	= जगदीश
षट्	+ दर्शन	= षड्दर्शन		अप्	+ ज	= अब्ज
भगवत्	+ गीता	= भगवद्गीता		वाक्	+ दान	= वाग्दान
दिक्	+ गज	= दिग्गज		वाक्	+ ईश	= वागीश
दिक्	+ अंचल	= दिगंचल		जगत्	+ गुरु	= जगद्गुरु
दिक्	+ अम्बर	= दिगम्बर		चित्	+ आनन्द	= चिदानन्द
उत्	+ घाटन	= उद्घाटन		तिक्	+ अन्त	= तिगन्त
सुप्	+ अन्त	= सुबन्त		सत्	+ आचार	= सदाचार

(2) किसी वर्ग के प्रथम या तृतीय वर्ण के उपरान्त यदि कोई अनुनासिक वर्ण आये तो प्रथम वर्ण के स्थान पर उसी वर्ग का अनुनासिक वर्ण हो जाता है। जैसे:

वाक्	+ मय	= वाङ्मय,		षट्	+ मास	= षण्मास
जगत्	+ नाथ	= जगन्नाथ		तत्	+ मय	= तन्मय

उत्	+	नयन	= उन्नयन	उत्	+	मुख	= उन्मुख
उत्	+	मत्त	= उन्मत्त	उत्	+	नति	= उन्नति

(3) 'त्' के उपरान्त कोई स्वर या 'ग, घ, द, ध, ब, भ, य, र, व' आयें तो 'त्' के स्थान पर 'द्' हो जाता है। जैसे:

सत्	+	आनन्द	= सदानन्द	सत्	+	धर्म	= सद्धर्म
भगवत्	+	भक्ति	= भगवद्भक्ति	तत्	+	रूप	= तद्रूप

(4) 'त्' या 'द्' के उपरान्त 'च' या 'छ' आने पर 'त् और द्' के स्थान पर 'च्', 'ज्', 'झ' आने पर 'ज्', 'ट, ठ' आने पर 'ट्', 'ड, ढ' आने पर 'ड्' और 'ल' आने पर 'ल्' हो जाता है। जैसे:

उत्	+	चारण	= उच्चारण	शरत	+	चन्द्र	= शरच्चन्द्र
महत्	+	छत्र	= महच्छत्र	सत्	+	जन	= सज्जन
विपद्	+	जाल	= विपज्जाल	तत्	+	लीन	= तल्लीन
जगत्	+	छाया	= जगच्छाया	उत्	+	ज्वल	= उज्ज्वल
उत्	+	लेख	= उल्लेख	उत्	+	लास	= उल्लास

(5) 'त्, द्' के उपरान्त यदि 'श' हो तो 'त्, द्' के स्थान पर 'च्' और 'श' के स्थान पर 'छ' हो जाता है। जैसे:

मृत्	+	शकटिम्-	मृच्छकटिकम्	सत्	+	शास्त्र	= सच्छास्त्र
उत्	+	शृंखल	= उच्छृंखल	उत्	+	शिष्ट	= उच्छिष्ट

(6) 'म्' के आगे 'क्' से 'म्' तक का कोई वर्ण आये तो 'म्' के स्थान पर 'अनुस्वार' अथवा बाद के वर्ण का 'पाँचवाँ वर्ण' हो जाता है। जैसे :

सम्	+	कल्प	= संकल्प या सङ्कल्प	सम्	+	पूर्ण	= संपूर्ण या सम्पूर्ण
किम्	+	चित	= किंचित या किञ्चित	सम्	+	देह	= संदेह या सन्देह
सम्	+	तोष	= संतोष या सन्तोष	सम्	+	बन्ध	= संबंध या सम्बन्ध

व्यंजन-सन्धि के कुछ अन्य उदाहरण :

किम्	+	वा	= किंवा	सम्	+	हार	= संहार
सम्	+	योग	= संयोग	भूष्	+	अन	= भूषण
भर्	+	अन	= भरण	तृष्	+	ना	= तृष्णा
ऋ	+	न	= ऋण	राजन्	+	आज्ञा	= राजाज्ञा
प्राणिन्	+	मात्र	= प्राणिमात्र	तत्	+	मय	= तन्मय
अहन्	+	रात्र	= अहोरात्र	सम्	+	तोष	= संतोष
उत्	+	नति	= उन्नति	उत्	+	गम	= उद्गम
उत्	+	श्वास	= उच्छ्वास	उत्	+	मत्त	= उन्मत्त
उत्	+	योग	= उद्योग	किम्	+	नर	= किन्नर
उत्	+	भव	= उद्भव	उत्	+	लेख	= उल्लेख
परम्	+	तु	= परन्तु	सम्	+	सार	= संसार
सत्	+	आचार	= सदाचार	सत्	+	भाव	= सद्भाव

NOTES

सम्	+ धि	= सन्धि		शम्	+ कर	= शंकर
सम्	+ चय	= संचय		सम्	+ वाद	= संवाद
सम्	+ गठन	= संगठन		वाक्	+ मय	= वाङ्मय
सम्	+ वत्	= संवत्		सम्	+ उत् + आय	= समुदाय
सत्	+ चित्	= सच्चित्		सत्	+ वाणी	= सद्वाणी
सत्	+ आनन्द	= सदानन्द		उत्	+ नत	= उन्नत
सम्	+ चार	= संचार		उत्	+ जयिनी	= उज्जयिनी
उत्	+ मुख	= उन्मुख		तत्	+ लीन	= तल्लीन
चित्	+ मय	= चिन्मय		किम्	+ नर	= किन्नर
सत्	+ जन	= सज्जन		सम्	+ क्षेप	= संक्षेप
उत्	+ चारण	= उच्चारण		उत्	+ हरण	= उद्धरण
सम्	+ सार	= संसार		सत्	+ निहित	= सन्निहित
सम्	+ भ्रान्त	= संभ्रान्त		उत्	+ योग	= उद्योग
सम्	+ विधान	= संविधान		उत्	+ माद	= उन्माद
किम्	+ चित	= किंचित		उत्	+ अय	= उदय

(ग) विसर्ग सन्धि

सन्धि के लिए प्रस्तुत प्रथम शब्द के अन्त में यदि विसर्ग हो तथा दूसरे शब्द के प्रारम्भ में स्वर या व्यंजन वर्ण हो, तो वहाँ पर विसर्ग सन्धि होती है। विसर्ग-सन्धि के कुछ प्रमुख नियम निम्नलिखित हैं :

(1) विसर्ग के आगे यदि 'च' या 'छ' आये तो विसर्ग की जगह 'श', 'ट', 'ठ' आये तो 'ष' और 'त, थ' आये तो 'स' हो जाता है। जैसे :

निः	+ चल	= निश्चल		निः	+ छल	= निश्छल
धनुः	+ टंकार	= धनुष्टंकार		मनः	+ ताप	= मनस्ताप
निः	+ चित	= निश्चित		निः	+ तेज	= निस्तेज
निः	+ ठुर	= निष्ठुर		निः	+ चय	= निश्चय

(2) विसर्ग के उपरान्त यदि 'श, ष, स' आये तो ज्यों का त्यों बना रहता है अथवा उसके आगे का वर्ण हो जाता है। जैसे:

दुः + शासन = दुःशासन या दुश्शासन निः + सन्देह = निःसन्देह या निस्सन्देह

(3) यदि विसर्ग के उपरान्त 'क, ख, प, फ' आने पर विसर्ग वैसा ही बना रहता है। जैसे :

रजः	+ कण	= रजःकण		पयः	+ पान	= पयःपान

(4) यदि विसर्ग से पहले 'इ, उ' हो तो 'क, ख, प, फ' के पूर्व विसर्ग 'ष' में बदल जाता है। जैसे:

निः	+ कपट	= निष्कपट		निः	+ फल	= निष्फल
दुः	+ कर्म	= दुष्कर्म		निः	+ पक्ष	= निष्पक्ष
निः	+ पाप	= निष्पाप		दुः	+ प्रचार	= दुष्प्रचार

अपवाद– किन्तु कहीं-कहीं विसर्ग के स्थान पर 'स्' होता है। जैसे :

नमः + कार = नमस्कार		पुरः + कार = पुरस्कार	
भाः + कर = भास्कर		भाः + पति = भास्पति	

(5) यदि विसर्ग से पहले अ हो तथा उसके बाद घोष व्यंजन हो तो विसर्गयुक्त 'अ' (अः) 'ओ' हो जाता है।

जैसे :	अधः + गति = अधोगति		मनः + योग = मनोयोग
	वयः + वृद्ध = वयोवृद्ध		मनः + बल = मनोबल

(6) जहाँ पर विसर्ग के पहले 'अ, आ' के अतिरिक्त कोई अन्य स्वर हो तथा बाद में घोष वर्ण हो तो विसर्ग की जगह 'र्' हो जाता है। जैसे :

निः + आशा = निराशा		दुः + उपयोग = दुरुपयोग	
निः + गुण = निर्गुण		निः + दय = निर्दय	
दुः + ग = दुर्ग		दुः + दिन = दुर्दिन	
दुः + गुण = दुर्गुण		दुः + गम = दुर्गम	
निः + अर्थक = निरर्थक		निः + लज्ज = निर्लज्ज	
निः + मल = निर्मल		दुः + भावना = दुर्भावना	
अन्तः + देशीय = अन्तर्देशीय		पुनः + जन्म = पुनर्जन्म	

विगर्स-सन्धि के कुछ अन्य उदाहरण :

निः + रस = नीरस		निः + रोग = नीरोग	
अत + एव = अतएव		अधः + गति = अधोगति	
यशः + दा = यशोदा		पुनः + जन्म = पुनर्जन्म	
पुनः + उक्ति = पुनरुक्ति		यशः + अभिलाषी = यशोभिलाषी	
वयः + वृद्ध = वयोवृद्ध		दुः + कर = दुष्कर	
मनः + हर = मनोहर		आविः + कार = आविष्कार	
अहः + निश = अहर्निश		तपः + वन = तपोवन	
दुः + दिन = दुर्दिन		दुः + ग = दुर्ग	
निः + जन = निर्जन		दुः + जन = दुर्जन	
पयः + द = पयोद		मनः + भव = मनोभव	
मनः + रथ = मनोरथ		मनः + ज = मनोज	
मनः + गत = मनोगत		सरः + ज = सरोज	
श्रेयः + कर = श्रेयस्कर		निः + जल = निर्जल	
निः + विवाद = निर्विवाद		निः + काम = निष्काम	
निः + प्राण = निष्प्राण		निः + गुण = निर्गुण	
निः + भर = निर्भर		निः + आधार = निराधार	
निः + चिन्त = निश्चिन्त		पयः + धि = पयोधि	
दुः + भाव = दुर्भाव		मनः + अनुकूल = मनोनुकूल	
मनः + बल = मनोबल		यशः + घोष = यशोघोष	

NOTES

मन:	+	योग	= मनोयोग	नम:	+	कार	= नमस्कार
सर:	+	रुह	= सरोरुह	पुर:	+	कार	= पुरस्कार
तेज:	+	मय	= तेजोमय	तिर:	+	कार	= तिरस्कार
नि:	+	रव	= नीरव	बहि:	+	मुख	= बहिर्मुख
नि:	+	बल	= निर्मल	दु:	+	गुण	= दुर्गुण
दु:	+	भाग्य	= दुर्भाग्य	नि:	+	आशा	= निराशा
दु:	+	उपयोग	= दुरुपयोग	दु:	+	कर्म	= दुष्कर्म
नि:	+	फल	= निष्फल	नि:	+	पाप	= निष्पाप
नि:	+	आदर	= निरादर	दु:	+	व्यवस्था	= दुर्व्यवस्था
नि:	+	उक्ति	= निरुक्ति	पुन:	+	वास	= पुनर्वास
नि:	+	मल	= निर्मल	नि:	+	लिप्त	= निर्लिप्त
अन्त:	+	मन	= अन्तर्मन	दु:	+	योधन	= दुर्योधन
नि:	+	आमिष	= निरामिष	दु:	+	गति	= दुर्गति

समास : अर्थ एवं परिभाषा

यौगिक शब्दों के निर्माण में समास की प्रमुख भूमिका है। परस्पर सम्बन्ध रखने वाले दो या दो से अधिक पद मिलकर जब एक स्वतन्त्र और सार्थक शब्द बनाते हैं तब उस विकार रहित मेल को समास कहते हैं।

'समास' शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत की 'अस्' धातु में 'सम्' उपसर्ग तथा 'घञ्' प्रत्यय के योग से हुई है। इसका शाब्दिक अर्थ है- संक्षेप में करना। अर्थात्, "विभिन्न पदों को एक सम्यक् पद में निक्षेप करने की प्रक्रिया को समास कहते हैं। यथा- 'देवता के द्वारा दिया हुआ' इन पदों को संक्षेप होगा 'देवदत्त' जो सामासिक पद है।"

समास बनाने की प्रक्रिया में विभक्ति-चिन्हों, परसर्गों या योजक चिन्हों का लोप हो जाता है तथा संक्षिप्तीकरण की इस प्रक्रिया मे कोई अर्थगत अन्तर नहीं होता। सामासिक पद को विखण्डित करने की प्रक्रिया को 'विग्रह' कहते हैं। सामासिक पद को कारक-चिन्ह आदि लगाकर उनका पारस्परिक सम्बन्ध दिखलाना ही 'विग्रह' का लक्ष्य है। विग्रह के उपरान्त ही यह बताना सम्भव हो पाता है कि सामासिक पद में कौन-सा समास है।

सन्धि एवं समास में अन्तर

सन्धि और समास में कुछ अन्तर भी हैं। ये निम्न प्रकार हैं :

1. सन्धि में दो ध्वनियों (वर्णों) का मेल होता है, जबकि समास में दो पदों का मेल होता है।
2. सन्धि ध्वनि के स्तर की प्रक्रिया है जबकि समास शब्द के स्तर की प्रक्रिया है।
3. समास में पदों के प्रत्यय समाप्त कर दिए जाते हैं तथा उनके बीच के विभक्ति-चिन्ह का लोप हो जाता है, किन्तु सन्धि में दो वर्ण मिलकर विकार उत्पन्न करते हैं।
4. सन्धि के नियम प्राय: संस्कृत तत्सम शब्दों पर आधारित होते हैं, जबकि समास संस्कृत के शब्दों के साथ-साथ हिन्दी के अपने (तद्भव) शब्दों में भी होते हैं।
5. सन्धि को दो शब्दों में तोड़ना 'सन्धि-विच्छेद' कहा जाता है जबकि समास के दोनों पदों को अलग-अलग करने की प्रक्रिया 'समास-विग्रह' कहलाती है।

समास के भेद

मूलरूप से संस्कृत में केवल चार समास थे, और शब्दों में कौन-सा पद प्रधान है, इसे आधार बनाकर समास के निम्नलिखित चार भेद किए गए थे :

1. अव्ययीभाव समास– पहला पद प्रधान।
2. तत्पुरुष समास– दूसरा पद प्रधान।
3. द्वन्द्व समास– दोनों पद प्रधान।
4. बहुव्रीहि समास– कोई पद प्रधान नहीं (अन्य पद प्रधान)।

हिन्दी में इन चारों के अतिरिक्त दो और समास कर्मधारय और द्विगु भी माने गये हैं। इस प्रकार हिन्दी में कुल छः समास हैं-

1. अव्ययीभाव समास,
2. तत्पुरुष समास,
3. कर्मधारय समास,
4. बहुव्रीहि समास,
5. द्विगु समास,
6. द्वन्द्व समास।

आइये, इन समासों के विषय में अपेक्षित जानकारी प्राप्त करें-

1. **अव्ययीभाव समास** - जिस समास में पहला पद प्रधान हो और सम्पूर्ण सामासिक पद 'अव्यय' की भाँति काम करे, उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं। 'अव्यय' उस शब्द को कहते हैं जो वाक्य में प्रयुक्त होने पर ज्यों का त्यों रहता है अर्थात् किसी भी स्थिति में उसमें परिवर्तन (बदलाव) नहीं होता। अव्ययीभाव समास के कुछ उदाहरण निम्न प्रकार हैं :

   यथाशक्ति, यथानुरूप, यथासाध्य, यावज्जीवन, प्रतिदिन, प्रतिक्षण, भरपेट, हरपल, दिनों-दिन, भरसक आदि।

   अव्ययीभाव समास के सम्बन्ध में कुछ उल्लेखनीय तथ्य इस प्रकार हैं :

   1. इस समास में पूर्व पद की प्रधानता होती है।
   2. सामासिक पद अव्यय की भाँति काम करता है।
   3. संस्कृत में अव्ययीभाव समास के लिए यह आवश्यक था कि प्रथम पद अव्यय ही हो किन्तु हिन्दी में यह आवश्यक नहीं। यहाँ प्रथम पद अव्यय के अतिरिक्त संज्ञा या विशेषण भी हो सकता है, जैसे- जीवनपर्यन्त।
   4. डॉ. भोलानाथ तिवारी ने 'आजीवन', 'आजन्म' आदि शब्दों में समास न मानकर उपसर्ग की सत्ता स्वीकार की है, क्योंकि समास के लिए दो स्वतन्त्र पद आवश्यक हैं जो इनमें नहीं हैं।

2. **तत्पुरुष समास** - जिस समास में दूसरा पद (अन्तिम पद) प्रधान हो, उसे 'तत्पुरुष' समास कहा जाता है। तत्पुरुष समास में कारक-चिन्हों का लोप हो जाता है। इस आधार पर तत्पुरुष के कई भेद– 'कर्म तत्पुरुष, करण तत्पुरुष, सम्प्रदान तत्पुरुष, अपादान तत्पुरुष, सम्बन्ध तत्पुरुष और अधिकरण तत्पुरुष' माने गए हैं। यथा :

सामासिक पद	विग्रह	समास
यशप्राप्त	यश को प्राप्त	कर्म तत्पुरुष
हस्तलिखित	हाथ से लिखा हुआ	करण तत्पुरुष
मार्गव्यय	मार्ग के लिए व्यय	सम्प्रदान तत्पुरुष

स्व प्रगति की जाँच करें:

5. सन्धि को उदाहरण सहित परिभाषित कीजिए।
6. सन्धि एवं समास में क्या अन्तर है? स्पष्ट करें।

NOTES

रोगमुक्त	रोग से मुक्त	अपादान तत्पुरुष
राजकुमार	राजा का कुमार	सम्बन्ध तत्पुरुष
कलाप्रवीण	कला में प्रवीण	अधिकरण तत्पुरुष

उपर्युक्त सभी शब्दों में उत्तरपद (बाद वाला पद) प्रधान है, अत: यहाँ तत्पुरुष समास है। तत्पुरुष समास के कुछ अन्य उदाहरण निम्न प्रकार है :

ग्रंथकार, चिड़ीमार, शरणागत, रेखांकित, कष्टसाध्य, तुलसीकृत, मरणासन्न, छात्रावास, मालगाड़ी, धर्मयुक्त, भयाक्रांत, राष्ट्रपति, हतभाग्य, भयभीत, दीनानाथ, चन्द्रोदय, नरश्रेष्ठ, कलानिपुण आदि।

तत्पुरुष समास के भेद– तत्पुरुष समास के दो भेद किए गए हैं– 'व्यधिकरण' और 'समानाधिकरण'। व्यधिकरण में दोनों पदों की विभक्तियाँ अलग-अलग होती हैं जबकि समानाधिकरण में सभी पद एक ही वस्तु का निर्देश करते हैं। 'कर्मधारय' और 'द्विगु' को तत्पुरुष का अंग मानकर समानाधिकरण तथा शेष व्यधिकरण तत्पुरुष हैं।

3. **कर्मधारय समास–** जिस समास के दोनों पदों में विशेष्य-विशेषण अथवा उपमेय-उपमान का सम्बन्ध हो और पदों में एक ही कारक की विभिक्त आए उसे 'कर्मधारय' समास कहते हैं। जैसे- नीलकमल, महाकवि, महाजन, शिष्टाचार, चन्द्रमुखी, नवयुवक, सद्बुद्धि, सज्जन, मृगनयनी, चरणकमल, क्रोधाग्नि, मुखचन्द्र, पदपंकज, वचनामृत आदि।

कर्मधारय समास के दो भेद किए गए हैं, यथा :

(i) विशेषतावाचक कर्मधारय, जैसे– महापुरुष, शुभागमन, नीलोत्पल, महर्षि।

(ii) तुलनावाचक कर्मधारय, जैसे– लौहपुरुष, चन्द्रधवल, कमलाक्ष, राजीवलोचन।

4. **द्विगु समास–** जिस समास में पूर्वपद संख्यावाची विशेषण हो और दोनों पदों में विशेषण-विशेष्य को सम्बन्ध हो तथा पूरा पद एक 'समूह' या 'समाहार' का बोध कराए, उसे 'द्विगु' समास कहते हैं। जैसे- त्रिभुवन, सप्तर्षि, अष्टांग, पंचामृत, पंचवटी, सहस्राब्दी, अठन्नी, नौलखा, सप्ताह, षड्ऋतु, सतसई।

कभी-कभी सामासिक पद का पहला पद संख्यावाची तो होता है किन्तु सम्पूर्ण पद समाहार (समूह) का बोध नहीं कराता, तब वहाँ द्विगु समास नहीं माना जाता। जैसे- 'दशानन, त्रिनेत्र, चतुर्मुख' में यद्यपि पहला पद संख्यावाचक है किन्तु समस्त पद समूह या समाहार का बोध नहीं कराता, अत: यहाँ 'द्विगु' न मानकर 'बहुव्रीहि' ही मानना चाहिए।

5. **द्वन्द्व समास–** 'द्वन्द्व' का शाब्दिक अर्थ है- युग्म या जोड़ा। इस समास में दोनों पदों की प्रधानता रहती है। जिस सामासिक पद में दोनों पद प्रधान हों तथा विग्रह करने पर दोनों पदों के बीच 'और' अथवा 'या' का प्रयोग हो, उसे 'द्वन्द्व' समास कहा जाता है।

'द्वन्द्व' समास के निम्नलिखित तीन भेद हैं :

(i) इतरेतर द्वन्द्व, (ii) वैकल्पिक द्वन्द्व, (ii) समाहार द्वन्द्व।

'इतरेतर द्वन्द्व' में दोनों पदों के बीच 'और' का लोप होता है। जैसे- नरनारी (नर और नारी), राधाकृष्ण (राधा और कृष्ण), माता-पिता (माता और पिता), हुक्का-पानी (हुक्का और पानी)।

'वैकल्पिक द्वन्द्व' में दोनों पदों के बीच विकल्प सूचक संयोजक 'या' का लोप रहता है। जैसे- भला-बुरा (भला या बुरा), पाप-पुण्य (पाप या पुण्य), हानि-लाभ (हानि या लाभ), थोड़ा-बहुत (थोड़ा या बहुत)।

'समाहार द्वन्द्व' में समानार्थक शब्दों के जोड़ों में अन्य अर्थ का समाहार कर दिया जाता है। जैसे:

सामासिक पद	विग्रह	ध्वनित अर्थ
कागज-पत्र	कागज और पत्र आदि	कागजात
गोला-बारूद	गोला और बारूद	युद्ध-सामग्री
मार-पीट	मारना और पीटना	झगड़ा
नाच-रंग	नाच और रंग	विलास
बहू-बेटी	बहू और बेटी	इज्जत
चाय-पानी	चाय और पानी	रिश्वत (नाश्ता)
चमक-दमक	चमक और दमक	वैभव

6. **बहुब्रीहि समास–** अन्य पद प्रधान समास को 'बहुब्रीहि' कहा जाता है। इसमें न तो पूर्व पद को प्रधानता होती है, न उत्तर पद को, अपितु दोनों ही पद मिलकर किसी अन्य अर्थ को व्यक्त करते हैं। इसकी परिभाषा इस प्रकार दी जा सकती है- "जिस समास में कोई भी पद प्रधान नहीं होता और दोनों पद किसी अन्य शब्द के विशेषण होते हैं, उसे बहुब्रीहि समास कहा जाता है।"

इस समास के कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं :

दशासन	–	दश हैं आनन जिसके वह, अर्थात् रावण।
वीणापाणि	–	वीणा है पाणि में जिसके वह, अर्थात् सरस्वती जी।
चक्रपाणि	–	चक्र है पाणि में जिसके वह, अर्थात् विष्णु।
धनंजय	–	धन (भूसम्पदा) को जय करता है जो वह, अर्थात् अर्जुन।
शैलपुत्री	–	शैल (पर्वत) की पुत्री है जो वह, अर्थात् पार्वती।
मुरलीधर	–	मुरली को धारण करते हैं जो वह, अर्थात् श्रीकृष्ण।
सुधाकर	–	सुधा (अमृत) की वर्षा करता है जो वह, अर्थात् चन्द्रमा।
तिरंगा	–	तीन है रंग जिसमें वह, अर्थात् भारत का राष्ट्रध्वज।

'बहुब्रीहि' और 'द्विगु' इन दोनों समासों में मोटा अन्तर यही है कि भले ही दोनों का पहला पद संख्यावाची हो किन्तु द्विगु में समस्त पद समूह या समाहार का बोध कराता है, बहुब्रीहि में नहीं कराता। समास की जानकारी न होने के कारण वर्तनी की अशुद्धियाँ भी हो जाती हैं। जैसे :

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अनाधिकार	अनधिकार	निर्दयी	निर्दय
अपराधिक	आपराधिक	योगीराज	योगिराज
मंत्रीमण्डल	मंत्रिमण्डल	दोपहार	दुपहर
पक्षीगण	पक्षिगण	भ्रातागण	भ्रातृगण
प्रभूदयाल	प्रभुदयाल	शूलपाणी	शूलपाणि

स्व-प्रगति की जाँच के उत्तर

1. **अवधी** – यह पूर्वी हिन्दी की प्रमुख बोली है जो अवध क्षेत्र में बोली जाने के कारण अवधी कहलाती है। अवधी बोली लखनऊ, उन्नाव, कानपुर, रायबरेली, सीतापुर, फैजाबाद, गोंडा, फतेहपुर, बहराइच, लखीमपुर खीरी, सुल्तानपुर, प्रतापगढ़, बाराबंकी आदि जिलों में बोली जाती है। तुलसी का

NOTES

'रामचरितमानस' एवं जायसी का 'पद्मावत' तथा द्वारिकाप्रसाद मिश्र का 'कृष्णायन' नामक महाकाव्य अवधी में रचित है। इसमें 'इया' प्रत्यय का प्रयोग प्रचुरता से होता है, जैसे- बिलइया, चरपइया, मलइया, आदि। 'वा' प्रत्यय का प्रयोग पुल्लिंग शब्दों में देखा जाता है- बेटवा, घोड़वा, रजिस्टरवा आदि। भूतकाल में 'इस' या 'इसि' प्रत्यय का प्रयोग अवधी में होता है। यथा- कहिस, रहिसि।

2. देवनागरी लिपि के नामकरण के सम्बन्ध में जो मत प्रचलित हैं वे इस प्रकार हैं :

   1. विद्वानों का एक वर्ग यह मानता है कि गुजरात के 'नागर' ब्राह्मण इसका प्रयोग करते थे, इसलिए इसे 'नागरी' और फिर 'देवनागरी' कहा गया।

   2. कुछ लोगों का यह भी विचार है कि यह नागवंशीय राजाओं की लिपि थी, इसलिए इसे देवनागरी कहा गया।

   3. विद्वानों का एक वर्ग यह कहता है कि 'नगर' में प्रयुक्त होने के कारण इसका नाम 'नागरी' लिपि पड़ गया।

   4. तान्त्रिक चिन्ह 'देवनागर' से इसका सम्बन्ध जोड़ने वाले लोग यह मानते हैं कि इसी चिन्ह के कारण इसे 'देवनागरी' नाम दिया गया।

   5. इन सब मतों से अधिक तर्कसंगत यह मत है कि स्थापत्य की एक शैली नागर-शैली कहलाती थी जिसमें चतुर्भुजी आकृतियाँ होती थीं। नागरी लिपि में भी चतुर्भुज अक्षर 'ग, प, भ, म' आदि हैं, अतः इस साम्य के कारण इसका नाम 'देवनागरी' पड़ गया।

3. **परिभाषा–** "उपसर्ग वह शब्दांश है जिसका स्वतन्त्र अस्तित्व नहीं होता और जो शब्द से पहले जुड़कर उसके अर्थ में विशिष्टता या नवीनता ला देता है।"

   यथा : प्र + हार = प्रहार (चोट करना)

   वि + हार = विहार (घूमना-फिरना

4. हिन्दी-भाषा के उपसर्गों को डॉ. भोलानाथ तिवारी ने तीन वर्गों में विभक्त किया है :

   (अ) तत्सम उपसर्ग (ब) तद्भव उपसर्ग (स) विदेशी उपसर्ग।

   तत्सम उपसर्गों के अन्तर्गत वे उपसर्ग आते हैं जो संस्कृत से ज्यों के त्यों लिये गए हैं और हिन्दी में प्रयुक्त संस्कृत के तत्सम शब्दों के साथ में प्रयुक्त होते हैं। यथा- 'अति, आध्, अनु, अप, आ, परि' आदि।

   तद्भव उपसर्गों के अन्तर्गत वे उपसर्ग आते हैं जो ध्वनि-परिवर्तन की प्रक्रिया से गुजरते हुए हिन्दी में आए हैं तथा हिन्दी-शब्दों (तद्भव शब्दों) के साथ प्रयुक्त हो रहे हैं। यथा- 'औ, अ, कु, दु, नि, स' आदि।

   विदेशी उपसर्ग– हिन्दी में विदेशी उपसर्ग उन शब्दों में प्रयुक्त होते हैं जो या तो अरबी-फारसी की परम्परा से हिन्दी को प्राप्त हुए अथवा अंग्रेजी से हिन्दी में आए हैं।

5. **परिभाषा–** "जब दो वर्ण पास-पास होते हैं तो व्याकरण के नियमानुसार उनके मेल से होने वाले विकार को सन्धि कहते हैं।" दूसरे शब्दों में, दो शब्द जब एक-दूसरे के समीप आते हैं, तो पहले शब्द की अन्तिम ध्वनि या वर्ण और दूसरे शब्द की प्रथम ध्वनि या वर्ण आपस में मिल जाते हैं। यह मिलना ही सन्धि कहलाता है।

   जैसे- 1. विद्या + अर्थी = विद्यार्थी

2. जगत् + ईश = जगदीश

3. यशः + दा = यशोदा

इस प्रकार 'शब्दों या वर्णों के आपसी मेल से जो विकार उत्पन्न होता है, उसे सन्धि कहते हैं।'

6. सन्धि एवं समास में अन्तर– सन्धि और समास में कुछ अन्तर भी हैं। ये निम्न प्रकार हैं :

1. सन्धि में दो ध्वनियों (वर्णों) का मेल होता है, जबकि समास में दो पदों का मेल होता है।
2. सन्धि ध्वनि के स्तर की प्रक्रिया है जबकि समास शब्द के स्तर की प्रक्रिया है।
3. समास में पदों के प्रत्यय समाप्त कर दिए जाते हैं तथा उनके बीच के विभक्ति-चिन्ह का लोप हो जाता है, किन्तु सन्धि में दो वर्ण मिलकर विकार उत्पन्न करते हैं।
4. सन्धि के नियम प्रायः संस्कृत तत्सम शब्दों पर आधारित होते हैं, जबकि समास संस्कृत के शब्दों के साथ-साथ हिन्दी के अपने (तद्भव) शब्दों में भी होते हैं।
5. सन्धि को दो शब्दों में तोड़ना 'सन्धि-विच्छेद' कहा जाता है जबकि समास के दोनों पदों को अलग-अलग करने की प्रक्रिया 'समास-विग्रह' कहलाती है।

अभ्यास-प्रश्न

1. हिन्दी के विकास-क्रम पर प्रकाश डालते हुए इसके काल-खण्डों का उल्लेख कीजिये।
2. हिन्दी की उपभाषाओं तथा बोलियों के नाम तथा क्षेत्र बताइये।
3. हिन्दी की प्रमुख बोलियों का संक्षिप्त परिचय दीजिये।
4. ब्रजी तथा अवधी की प्रमुख कृतियों तथा उनके लेखकों के नाम बताइये।
5. मध्यकालीन हिन्दी के स्वरूप तथा उसकी प्रवृत्तियों पर टिप्पणी लिखिये।
6. देवनागरी लिपि के नामकरण तथा विकास-क्रम पर प्रकाश डालिये।
7. देवनागरी लिपि में हुए सुधार एवं संशोधनों पर टिप्पणी लिखिये।
8. देवनागरी लिपि की प्रमुख विशेषताएँ बताइये।
9. देवनागरी लिपि के दोषों पर प्रकाश डालिये।
10. देवनागरी लिपि के मानकीकरण हेतु बनाये गये नियमों का उल्लेख कीजिये।
11. उपसर्ग एवं प्रत्यय की परिभाषा देते हुए इन दोनों का अन्तर उदाहरणों द्वारा स्पष्ट कीजिए।
12. तत्सम एवं तद्भव उपसर्गों से आप क्या समझते हैं ? इनका अन्तर स्पष्ट कीजिये।
13. किन्हीं पाँच विदेशी उपसर्गों से निर्मित चार-चार शब्द बताइये।
14. प्रत्यय कितने प्रकार के होते हैं ? उदाहरण सहित समझाइये।
15. उपयुक्त प्रत्ययों द्वारा पाँच-पाँच संज्ञा एवं विशेषण शब्द बनाइये।
16. सन्धि एवं समास की परिभाषा देते हुए उनका अर्थ स्पष्ट कीजिये।
17. सन्धियाँ कितने प्रकार की होती हैं ? स्वर-सन्धि के उपभेदों को स्पष्ट कीजिये।

NOTES

18. समास के भेदों को उपयुक्त उदाहरणों द्वारा समझाइये।

19. निम्नलिखित शब्दों में सन्धि-विच्छेद करते हुए इनमें प्रयुक्त सन्धि का नाम बताइये :

(i) जिलाधीश, (ii) राघवेन्द्र, (iii) आद्यन्त, (iv) नामक, (v) राजर्षि।

20. निम्नलिखित सामासिक पदों का समास-विग्रह करते हुए इनमें प्रयुक्त समास का नाम बताइये :

(i) यथाशक्ति, (ii) रसोईघर, (iii) चौराहा, (iv) सीताराम, (v) प्रभाकर।

इकाई - II

NOTES

विविध शब्द-संग्रह

इकाई में शामिल है:

- पर्यायवाची (समानार्थक) शब्द
- विलोमार्थी (विपरीतार्थक) शब्द
- अनेकार्थक शब्द
- समूहार्थक शब्द
- मुहावरे
- लोकोक्तियाँ

अध्ययन के उद्देश्य :

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात्, आप निम्न बिन्दुओं को समझने में सक्षम होंगे -

- पर्यायवाची शब्द, विलोमार्थी शब्द
- अनेकार्थी शब्द, समूहार्थक शब्द
- मुहावरे, लोकोक्तियाँ

NOTES

(i) पर्यायवाची (समानार्थक) शब्द

जिन शब्दों के अर्थ में समानता होती है उन्हें 'पर्यायवाची' शब्द कहते हैं। यद्यपि हिन्दी भाषा में प्रयुक्त होने वाले समस्त शब्द अपना स्वतन्त्र अर्थ रखते हैं तथा पूरी तरह से कोई शब्द दूसरे शब्द का पर्याय नहीं होता, फिर भी कुछ समानताओं के आधार पर उन्हें पर्यायवाची शब्द मान लिया जाता है। ऐसे ही कुछ मुख्य शब्द और उनके पर्यायवाची शब्द यहाँ प्रस्तुत हैं।

शब्द	पर्यायवाची शब्द
महादेव	शिव, शंकर, नीलकण्ठ, भूतनाथ, हर, शम्भु, महेश।
कामदेव	मार, मन्मथ, मदन, अनंग, मनोज, रतिपति, मकरध्वज, पंचशर, कन्दर्प, हरिपु।
पवन	अनिल, वात, बयार, समीर, हवा, मरुत, प्रकम्पन।
पर्वत	महीधर, गिरि, शैल, अचल, मेरु, पहाड़, नग।
पृथ्वी	अचला, भू, भूमि, मेदिनी, धरा, धरित्री, वसुन्धरा, वसुधा, क्षिति।
फूल	प्रसून, पुष्प, कुसुम, सुमन, प्रफुल्ल।
बिजली	चपला, विद्युत, तड़ित, दामिनी, चंचला, क्षणप्रभा।
ब्रह्मा	स्वयंभू, विरोंचि, पितामह, विधाता, सृष्टिकर्त्ता, श्रष्टा, नाभिज, सदानन्द।
बहिन	भगिनी, सहोदरी, स्वसा, बहन।
माँ	माता, माई, मातृ, जननी, मातु, अम्ब।
बादल	मेघ, वारिद, नीरद, पयोधर, अम्बुद, जगजीवन।
राजा	नृप, नृपति, महीप, भूपति, अहिपति, महेश, नरेश।
रात	रात्रि, रजनी, निशा, तमी, क्षपा, विभावरी, वामा, रैन।
राधा	राधिका, वृषभानुजा, कृष्णप्रिया, हरिप्रिया, ब्रजरानी, ब्रजेश्वरी।
लक्ष्मी	श्री, इन्दिरा, रमा, कमला, क्षीरोदतनया, विष्णुप्रिया, चपला, सिन्धुसुता।
सागर	समुद्र, जलधि, नदीश, उदधि, पारावार, वारिधि, पयोधि, अर्णव, जलनिधि, नीरनिधि, नीरधि।
सरस्वती	वाणी, वागीश्वरी, इला, विधात्री, भाषा, भारती, शारदा, वीणाधारिणी, वीणापाणि, वीणावादिनि।
ऊँट	उष्ट्र, क्रमेलक, मरुयान, लम्बोष्ठ, महाग्रीव।
केला	कदली, काष्ठीला, रम्भा, गजवसा, भानुफल, कुंजरासरा, मोचा।
कोयल	पिक, कलकण्ठ, वसन्तदूत, श्याम, सारंग, पाली, कलापी।
तोता	शुक, सुनाज, सुआ, कीर, सुग्गा, दाड़िमप्रिय, रक्ततुण्ड।
धनुष	चाप, शरासन, कोदण्ड, कमान, धनु, विशिखासन।
तारा	तारक, नक्षत्र, ऋक्ष, सितार, उडु।
सोना	हाटक, स्वर्ण, कनक, कंचन, सुवर्ण, हेम।
सूर्य	दिनकर, दिवाकर, मार्तण्ड, सविता, रवि, पतंग, दिनपति, दिननाथ, दिनमणि, आदित्य, भास्कर।
नारी	स्त्री, अबला, महिला, कामिनी, रमणी, भामिनी, प्रमदा, ललना।
हाथी	मतंग, गयन्द, शुंडाल, वितुण्ड, हस्ती, गज, बज्रदन्ती, कुंजर।
हिमालय	हिमगिरि, पर्वतराज, नगराज, हिमाद्रि, हिमवान, कैलास।
प्रेम	अनुराग, रति, प्रीति, स्नेह।
आम	आम्र, रसाल, अमृतफल, सहकार।
अग्नि	आग, ज्वाला, अनल, कृशानु, पावक, धनंजय, दहन।
अमृत	सुधा, सोम, अमिय, मधु, पीयूष, जीवनोदक।

NOTES

जंगल	अरण्य, विपिन, कानन, वन।
घोड़ा	अश्व, वाजि, हय, तुरंग, रविसुत, घोटक, सैन्धव।
आँख	नेत्र, नयन, लोचन, दृष्टि, दृग, चक्षु, अक्षि।
आकाश	अम्बर, गगन, नभ, अन्तरिक्ष, शून्य, व्योम।
राक्षस	असुर, दनुज, दानव, यातुधान, निशिचर, निशाचर, रजनीचर, दैत्य, मायावी।
इच्छा	ईप्सा, आकांक्षा, अभिलाषा, कामना, चाह, मनोरथ, ईहा, स्पृहा।
इन्द	देवराज, मघवा, सुरपति, वासव, पुरन्दर।
वस्त्र	कपड़ा, पट, वसन, अम्बर, चीर।
कमल	जलज, सरोज, पंकज, नीरज, वारिज, शतदल, पद्म, अम्बुज, पुण्डरीक, अब्ज, अरविन्द।
सिंह	शेर, व्याघ्र, शार्दूल, मृगराज, पंचमुख, केशरी, केहरी, मृगेन्द्र।
कुबेर	यक्षराज, धनाधिप, धनद, राजराज, किन्नरेश।
गणेश	एकदन्त, लम्बोदर, मूषकवाहन, गजवदन, गजानन, विनायक, गणपति, विघ्ननाशक, भवानीनन्दन।
गंगा	देवनदी, सुरसरिता, भागीरथी, मन्दाकिनी, देवापगा, ध्रुवनन्दा।
हनुमान	वज्रांग, बजरंगबली, कपीश, पवनपुत्र, महावीर, संकटमोचन।
हीरा	हीरक, हीर, वज्र, रत्नेश।
हाथ	कर, हस्त, तनेरुह, पाणि, बाहु, भुजा।
घर	गेह, निकेतन, भवन, सदन, आगार, आवास, गृह, निलय, धाम, मकान।
गदहा	गधा, खर, गर्दभ, रासभ, वेशर, चक्रीवान, वैशाखनन्दन।
चन्द्रमा	हिमांशु, चांद, सुधांशु, सुधाकर, राकेश, शशि, सारंग, निशाकर, निशापति, रजनीपति, कलानिधि, इन्दु।
जल	सलिल, नीर, उदक, पानी, अम्बु, तोय, जीवन, वारि, पय, अमृत, मेघपुरुष।
तालाब	सरोवर, सर, तड़ाग, पुष्कर, जलाशय, पद्माकर।
नदी	सरिता, तटिनी, आपगा, निम्नगा, निर्झरिणी, तरंगिणी, कूलंकषा।
नाव	नौका, तरिणी, जलयान, जलपात्र, तरी, बेड़ा, डोंगी, पतंग।
पत्नी	भार्या, बहू, वधू, दारा, कलत्र, प्राणप्रिया।
पति	स्वामी, आर्यपुत्र, वल्लभ, भर्ता।
पक्षी	खग, विहग, विहंग, पखेरु, परिन्दा, चिड़िया, शकुन्त, अण्डज, पतंग, द्विज।
मुर्गा	अरुणशिखा, ताम्रशिखा, ताम्रचूड़, कुक्कुट, तमचुर।
पुत्र	बेटा, सुत, तनय, लड़का, आत्मज, तनुज।
पुत्री	बेटी, सुता, तनया, आत्मजा, दुहिता, तनुजा।
बाण	शर, तीर, विशिख, शिलीमुख, इषु।
वृक्ष	तरु, द्रुम, पादप, विटप, पेड़, गाछ, अगम।
मछली	झख, मीन, मत्स्य, जलजीवन, शफरी, पाड़ोन।
मुनि	अवधूत, यती, संन्यासी, वैरागी, तापस, सन्त, भिक्षु, महात्मा, साधु।
सर्प	साँप, भुजंग, अहि, विषधर, व्याल, उरग, फणी, पन्नग, नाग।
दूध	दुग्ध, क्षीर, पद, स्तन्य, गोरस।
जीभ	रसना, स्वादिनी, वाणी, जिह्वा, रसज्ञा, रसाल।
छात्र	विद्यार्थी, बटुक, शिष्य, अन्तेवासी।

NOTES

तरकश	तूण, निषंग, तूणीर, उपासंग।
बन्दर	वानर, कपि, शाखामृग, मर्कट, हरि, कीश।
नाव	नौका, तरी, प्लव, तरणी, वेणी, नैया।
मोर	मयूर, कलापी, सारंग, केकी, नीलकंठ, शिखी।
हंस	मराल, विवेकी, विधिवाहन, कलहंस, चक्रांग।

(ii) विलोमार्थी (विपरीतार्थक) शब्द

परस्पर विरुद्ध, उल्टा या विपरीत अर्थ का ज्ञान कराने वाले शब्दों को 'विलोमार्थी' या 'विपरीतार्थक' शब्द कहते हैं। ये शब्द पर्यायवाची शब्दों से विपरीत होते हैं, अत: इन्हें 'विलोम शब्द' के नाम से भी पुकारा जाता है। शब्द के अर्थ को अधिक स्पष्ट करने के लिए कभी-कभी 'विलोम' शब्द बहुत सहायक होते हैं।

हिन्दी भाषा में कुछ शब्दों के विलोम शब्द उनके साथ ही अस्तित्व में रहते हैं, जैसे- ऊँचा-नीचा, बड़ा-छोटा, काला-गोरा, आदि-अन्त आदि। कुछ शब्दों के विलोम शब्द उपसर्ग एवं प्रत्यय लगाकर बनाए जाते हैं, जैसे- सुगन्ध-दुर्गन्ध, सक्षम-अक्षम आदि। कुछ महत्त्वपूर्ण विलोम शब्द यहाँ प्रस्तुत हैं।

शब्द	विलोम शब्द	शब्द	विलोम शब्द	शब्द	विलोम शब्द
अंत	आदि	आमिष	निरामिष	अंतरंग	बहिरंग
आलस्य	उद्यम	अंतर्जातीय	सजातीय	आविर्भाव	तिरोभाव
अंतिम	प्रथम	आशीर्वाद	शाप	अंतर्मुखी	बहिर्मुखी
अंश	पूर्ण	उत्कर्ष	अपकर्ष	अकाल	सुकाल
उत्कृष्ट	निकृष्ट	अकृत्रिम	कृत्रिम	उत्पत्ति	विनाश
निष्क्रिय	सक्रिय	उदयाचल	अस्ताचल	अग्र	पश्च/पश्चात्
उपकार	अपकार	अग्रज	अनुज	उषा	संध्या
अत्यधिक	स्वल्प	अद्यतन	पुरातन	ऋजु	सरल
अधम	उत्तम	ऋणी	उऋण	अनुकूल	प्रतिकूल
एकत्र	विकीर्ण	अनुभवहीन	अनुभवी	ऐहिक	पारलौकिक
कटु	मधुर	अपमान	सम्मान	कटुभाषी	मृदुभाषी
अपेक्षा	उपेक्षा	कठोर	कोमल	कनिष्ठ	ज्येष्ठ/वरिष्ठ
अभिज्ञ	अनभिज्ञ	कुख्यात	विख्यात	कुमार्ग	सन्मार्ग
कुलदीप	कुलांगार	आगामी	विगत	क्रम	व्यतिक्रम
आज्ञा	अवज्ञा	क्रिया	प्रतिक्रिया	ध्वंस	निर्माण
क्रुद्ध	शान्त	क्रोध	शान्ति	नवीन	प्राचीन
नश्वर	शाश्वत	खिलना	मुरझाना	नास्तिक	आस्तिक
गतिशील	गतिहीन	निमीलन	उन्मीलन	गम्भीर	वाचाल/चंचल
निरक्षर	साक्षर	निरुद्देश्य	सोद्देश्य	गृहस्थ	संन्यासी
गोपन	प्रकाशन	निर्मल	मलिन	गोरक्षक	गोभक्षक
निर्माण	विनाश	ग्राह्य	त्याज्य/अग्राह्य	न्यून	अधिक
पतनोन्मुख	विकासोन्मुख	घात	प्रतिघात	परिश्रम	आलस्य
घरेलू	बनैला	पालक	घातक	चतुर	अनाड़ी
पुरस्कृत	दंडित	चिंतित	निश्चिंत	चेतना	मूर्छा

शब्द	विलोम शब्द	शब्द	विलोम शब्द	शब्द	विलोम शब्द
पूर्ववर्ती	परवर्ती	छली	निश्छल	पौर्वात्य	पाश्चात्य
जंगम	स्थावर	प्रफुल्ल	म्लान	जय	पराजय
प्रलय	सृष्टि	प्रवृत्ति	निवृत्ति	ज्येष्ठ	कनिष्ठ
ज्योतिर्मय	तमोमय	प्रस्थान	आगमन	तटस्थ	पक्षपाती
प्राचीन	अर्वाचीन	तमोगुण	सत्त्वगुण	प्रेषक	प्रापक
तामसिक	सात्त्विक	फूट	एकता	बंधन	मुक्ति
तुच्छ	महान्	त्याज्य	ग्राह्य	बुद्धिजीवी	श्रमजीवी
दाता	भिक्षुक	बुराई	अच्छाई	दीन	समृद्ध
दीर्घकाय	लघुकाय	दुराचारी	सदाचारी	भूखा	तृप्त
दुश्चरित्र	सच्चरित्र	भौतिक	आध्यात्मिक	दृश्य	अदृश्य
मंगल	अमंगल	धीर	अधीर	शोषक	पोषक
मिथ्यावादी	सत्यवादी	श्लाघा	निन्दा	मूक	वाचाल
श्वास	प्रश्वास	मौखिक	लिखित	श्रव्य, अदृश्य	दृश्य
मौलिक	अनूदित	श्रीगणेश	इतिश्री	यथार्थवादी	आदर्शवादी
संगठन	विघटन	योग	वियोग	संतुष्ट	असंतुष्ट
योगी	भोगी	रक्षक	भक्षक	संवाद	विवाद
संश्लेषण	विश्लेषण	सकाम	निष्काम	सक्षम	अक्षम
रुक्ष	स्निग्ध	सघन	विरल	रुग्ण	स्वस्थ
सचेष्ट	निश्चेष्ट	सज्जन	दुर्जन	लज्जालु	निर्लज्ज
सदाचारिणी	दुराचारिणी	सदुपयोग	दुरुपयोग	लिप्त	निर्लिप्त
सम	विषम	लोभ	त्याग	समीपस्थ	दूरस्थ
लोलुप	संतुष्ट	सम्पन्न	विपन्न	विकल्प	संकल्प
सम्पदा	विपदा	विकास	ह्रास	अथ	इति
सुविचार	कुविचार	विजय	पराजय	सुविज्ञ	अल्पज्ञ
विधवा	सधवा	स्थूल	सूक्ष्म	विधि	निषेध
हर्ष	विषाद	ह्रास	रुदन	विरोध	समर्थन
विलम्ब	अविलम्ब	विवाद	निर्विवाद	ह्रस्व	दीर्घ
विविधता	एकता	हिंसा	अहिंसा	विशालकाय	लघुकाय
वीर	कायर	विशेष	सामान्य	एक	अनेक
विस्तार	संक्षेप	ज्ञेय	अज्ञेय	विस्तृत	सीमित
नख	शिख	विहीन	युक्त	व्यक्तिगत	समष्टिगत/ सामूहिक
कृतज्ञ	कृतघ्न	लघु	गुरु	प्रत्यक्ष	परोक्ष, अप्रत्यक्ष
प्राच्य	पाश्चात्य	उपेक्षा	अपेक्षा	ऐतिहासिक	अनैतिहासिक
पठित	अपठित	आयात	निर्यात	गरल	सुधा
शिव	अशिव	श्वेत	कृष्ण	कर्मण्य	अकर्मण्य
मंगल	अमंगल	निन्दा	स्तुति		

NOTES

स्व प्रगति की जाँच करें:

1. पर्यायवाची शब्द किसे कहते हैं ?
3. विलोमार्थी शब्द किसे कहते हैं ?

NOTES

(iii) अनेकार्थक शब्द

हिन्दी भाषा में अनेक ऐसे शब्द प्रयुक्त होते हैं जिनके अनेक (बहुत-से) अर्थ होते हैं। वाक्य में प्रयुक्त होने पर ये शब्द सन्दर्भ या प्रसंग के अनुसार अर्थ देते हैं। जैसे– **'कर'** शब्द के अर्थ हैं- किरण, हाथ, टैक्स तथा सूँड़। इस शब्द के विभिन्न सन्दर्भगत अर्थ निम्नलिखित वाक्यों में स्पष्ट हैं :

(i) आप अपने **कर-कमलों** से पुरस्कार प्रदान कीजिए।

(ii) **कर** बढ़ोत्तरी से सभी परेशान हैं।

(iii) हाथी ने अपनी **कर** से लकड़ी उठाकर महावत को दे दी।

शब्द	विभिन्न
अर्क	रस, सूर्य, आक का पौधा, इन्द्र, स्फटिक।
अक्ष	सर्प, रथ, मण्डल, ज्ञान, आँख, धुरी, पहिया, कील।
अर्थ	कारण, लिए, धन, मतलब, प्रयोजन।
अतिथि	यात्री, मेहमान, साधु, अपरिचित, यज्ञ में सोमलता लाने वाला व्यक्ति।
अरुण	सूर्य का सारथी, सूर्य, लाल।
उत्तर	जवाब, हल, उत्तर दिशा, श्रेष्ठ, बाद वाला।
कर	किरण, हाथ, टैक्स, सूँड़।
कला	अंश, गुण कान, पतचार।
कला	अंश, गुण, ब्याज, चातुर्य, चांद का सोलहवाँ अंश।
कल	बीता हुआ दिन, आने वाला दिन, चैन, मशीन।
काम	मतलब, कामदेव, कार्य।
खग	पक्षी, तारा, बाण, गन्धर्व।
गो	वज्र, गाय, स्वर्ग, आँख, बाण, पृथ्वी, सरस्वती, सूर्य, बैल।
अंक	गोद, गिनती के अंक, चिह्न, संख्या, अध्याय।
अम्बर	कपड़ा, आकाश।
अमृत	जल, पारा, दूध, अन्न, स्वर्ण।
आम	मामूली, साधारण, फल विशेष।
कनक	सोना, धतूरा, गेहूँ।
खर	तिनका, गधा, दुष्ट, एक राक्षस।
गुरु	भारी, शिक्षक, श्रेष्ठ, ग्रह विशेष।
घन	अधिक, घना, बादल, जिसमें लम्बाई, चौड़ाई एवं मोटाई बराबर हो।
जलज	कमल, शंख, मोती, मछली, चन्द्रमा, शैवाल, काई।
अधीर	उतावला, चंचल, उत्तेजित, भीरु, कायर।
अधर	निराधार, शून्य, निचला होंठ, स्वर्ग, पाताल।
अनन्त	सीमारहित, ब्रह्मा, विष्णु, शिव, शेषनाग, लक्ष्मण, बलराम, बाँह का आभूषण, अनन्त चतुर्दशी पर बाँह में बाँधा जाने वाला धागा।
अवगुंठन	छिपाना, ढकना, घूँघट, बुर्का।
चक्र	पहिया, भ्रम, कुम्हार का चाक, चकवा पक्षी, गोल घेरा।

NOTES

जड़	वृक्ष की जड़, मूर्ख, निर्जीव, मूल कारण।
जनक	पिता, मिथिला के राजा, उत्पन्न करने वाला।
मुद्रा	मोहर, छाप, सिक्का, अँगूठी।
लोहित	लाल रंग, रक्त, मंगल ग्रह।
विधि	कार्य करने का ढंग, ब्रह्मा, भाग्य, ईश्वर।
सीता	जनक की पुत्री, जुती हुई भूमि।
शकुनि	पक्षी, दुर्योधन का मामा।
व्यंजन	'क' से 'ह' तक के सभी वर्ण, पकवान, भोजन-सामग्री।
श्रुति	धान, वेद।
भव	संसार, उत्पत्ति, शिव।
योग	जोड़, मिलान, योग, साधना।
तारा	नक्षत्र, आँख की पुतली, बालि की स्त्री।
ताल	तालाब, ताली, संगीत की ताल, जाँघ पर हथेली मारना।
नाग	हाथी, साँप, एक जाति विशेष।
पक्ष	पंख, बल, सहाय, पार्टी, पन्द्रह दिन का समय।
पृष्ठ	पीठ, पन्ना, पंख।
मित्र	सूर्य, प्रिय, सहयोगी, दोस्त।
जीवन	जल, प्राण, जीवित।
पय	दूध, पानी।
पानी	जल, इज्जत, चमक।
हरि	इन्द्र, सर्प, विष्णु, मेंढक, सिंह, सूर्य, चाँद, घोड़ा, तोता, बन्दर, यमराज, हवा, ब्रह्मा, शिव, किरण, कोयल, हंस, आग, हाथी, पहाड़, कामदेव।
सारंग	हवा, स्त्री, साँप, मेंढक, कोयल, दीपक, हिरन, मोर, कामदेव, कपूर, मधुमक्खी, फूल, रात, सोना, आकाश, छाता, वर्ण, भौंरा, पपीहा।
शिव	शुभ, कल्याणकारी, महादेव, भाग्यशाली।
सर	तालाब, सिर, पराजित।
निशाचर	राक्षस, प्रेत, उल्लू, चोर।
खल	दुष्ट, धतूरा, दवा कूटने का पात्र।
तीर	बाण, नदी का किनारा, पास।
कुल	वंश, सारा, सभी।
कृष्ण	काला, भगवान कृष्ण।
द्विज	पक्षी, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, दाँत, चाँद, अण्डज।
पयोधर	स्तन, बादल, पर्वत, गन्ना।
पुष्कर	कमल, आकाश, ताल, भाग, सूर्य, बुद्ध, सर्प, शिव, विष्णु।
हंस	घोड़ा, योगी, पक्षी विशेष, सूर्य, श्वेत।
अज	दशरथ के पिता, बकरा, शिव, ब्रह्मा, माया, राशि।
चपला	स्त्री, बिजली, लक्ष्मी, चंचल।
तात	पिता, भाई, पूज्य, पुत्र, गुरु, मित्र बड़ा।

NOTES

(iv) समूहार्थक शब्द

जिन शब्दों से किसी समूह (चाहे वह वस्तुओं का हो या प्राणियों का) का बोध होता है, वे समूहार्थक शब्द कहलाते हैं। जैसे- 'सेना' शब्द से हमें सैनिकों के समूह का बोध होता है। इसी प्रकार 'दल' से खिलाड़ियों के समूह का 'गिरोह' से डाकुओं के समूह का तथा 'ढेर' से वस्तुओं के समूह का बोध होता है। कुछ महत्वपूर्ण समूहार्थक शब्द निम्नलिखित हैं :

कक्षा – छात्र-छात्राओं की।
काफिला – यात्रियों का, व्यापारियों का।
कुंज – लताओं का।
गट्ठर – लकड़ियों का।
गठरी – सामान की।
गिरोह – डाकुओं का।
गुच्छा – फूलों का, अंगूरों का, चाबियों का।
छत्ता – मधुमक्खियों का।
झुण्ड – पशु-पक्षियों का।
टुकड़ी – सेना की।
टोली – व्यक्तियों, बालकों, छात्रों, यात्रियों की।
दल – छात्रों, खिलाड़ियों, सैनिकों का।
ढेर – वस्तुओं का।
पुंज – तारों का।
मण्डल – प्रतिनिधियों का।
मण्डली – गायकों, कलाकारों, मित्रों की।
श्रेणी – अधिकारियों, कर्मचारियों की।
संघ – छात्रों, व्यापारियों, कर्मचारियों का।
समाज – व्यक्तियों, जातियों का।

मुहावरा : परिभाषा एवं विशेषताएँ

परिभाषा– "जिन वाक्यांशों में सामान्य या शाब्दिक अर्थ से इतर अन्य ही कोई विशिष्ट अर्थ निहित होता है, वे मुहावरे कहलाते हैं।"

मुहावरे वाक्यांश होते हैं, इसलिए इनका प्रयोग स्वतन्त्र रूप से नहीं होता । इनका प्रयोग वाक्य के अंग रूप में ही किया जाता है। उदाहरणार्थ- निम्नलिखित मुहावरों एवं उनके अर्थों को देखिए :

(1) **अँगूठा दिखाना**	–	(समय पर धोखा देना)	राम ने अपने साथियों से अपना काम तो निकाल लिया, परन्तु जब साथियों का काम पड़ा तो उसने **अँगूठा दिखा दिया।**
(2) **ईंट का जवाब पत्थर से देना**	–	(करारा जवाब देना)	भारतीय सेना शत्रु को **ईंट का जवाब पत्थर से देने** के लिए सदैव तैयार रहती है।
(3) **चाँद पर थूकना**	–	(सम्माननीय व्यक्ति पर दोषारोपण करना)	गांधीजी की निन्दा करना **चाँद पर थूकने** के समान है।
(4) **जीती मक्खी निगलना**	–	(जान-बूझ कर बुरा कार्य करना)	राम जैसे ईमानदार व्यक्ति के विरुद्ध गवाही देना **जीती मक्खी निगलने** के समान है।

NOTES

मुहावरों की विशेषताएँ

(1) मुहावरा अपरिवर्तनशील होता है।

(2) मुहावरा किसी भी भाषा की अमूल्य निधि है।

(3) मुहावरा वाच्यार्थ की अपेक्षा लक्ष्यार्थपरक और व्यंग्यार्थपरक होता है।

(4) मुहावरों के प्रयोग से भाषा में अद्‌भुत शक्ति आ जाती है।

(5) मुहावरा लोकभाषा की व्यापकता को रेखांकित करता है।

हिन्दी में प्रचलित प्रमुख मुहावरे, उनके अर्थ तथा वाक्य-प्रयोग

1. **अक्ल पर पत्थर पड़ना** (मूर्खतापूर्ण आचरण करना)– मेरी अक्ल पर पत्थर पड़ गये थे जो उस जुआरी और चोर का विश्वास कर लिया।

2. **अँधेर घर का उजाला होना** (घर में एकमात्र पुत्र होना)– प्रकाश का पुत्र उसके अँधेरे घर का उजाला है।

3. **अपना उल्लू सीधा करना** (अपना स्वार्थ सिद्ध करना)– आजकल राजनीति में हर व्यक्ति अपना उल्लू सीधा करने में लगा रहता है।

4. **अन्धे के हाथ बटेर लगना** (अनायास ही अयोग्य व्यक्ति को कोई मूल्यवान वस्तु मिल जाना)– मोहन के पास होने की सम्भावना भी नहीं थी, किन्तु वह कक्षा में प्रथम आया। यह तो अन्धे के हाथ बटेर लग गयी।

5. **आँखों से गिर जाना** (सम्मान खो देना)– जिस दिन से गिरीश चोरी में पकड़ा गया है, वह सभी की आँखों से गिर गया है।

6. **अंकुश रखना** (नियंत्रण में रखना)– सीताराम अपने सभी बच्चों को अंकुश में रखता है, मनमानी की छूट नहीं देता।

7. **अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना** (अपनी प्रशंसा आप करना)– मुन्ना अपनी प्रशंसा आप ही कर रहा था तो एक दिन वीनू ने कहा कि अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनना अच्छा नहीं है।

8. **आकाश-पाताल एक करना** (अत्यधिक परिश्रम करना)– परीक्षा में प्रथम श्रेणी यों ही नहीं आती, उसके लिए आकाश-पाताल एक करना होता है।

9. **आग-बबूला होना** (अत्यधिक क्रोधित होना)– तुम्हारा मित्र इतनी-सी बात पर आग-बबूला हो गया।

10. **आटे-दाल का भाव मालूम होना** (वास्तविकता ज्ञात होना)– गुरुजी बोले, "बेटा, बाप के राज में मौज कर लो, जब घर का भार सिर पर आयेगा तब आटे-दाल का भाव मालूम हो जायेगा।"

11. **आसमान सिर पर उठाना** (बहुत शोर या उपद्रव करना)– अध्यापक के कक्षा से बाहर जाते ही छात्रों ने आसमान सिर पर उठा लिया।

12. **आँखों में धूल झोंकना** (धोखा देना)– मैं तुम्हारी असलियत जान गया हूँ, अब तुम मेरी आँखों में धूल नहीं झोंक सकते।

13. **आपे से बाहर होना** (बहुत क्रोधित होना)– अपने मित्र का अपमान होता देखकर रविशंकर आपे से बाहर हो गया।

14. **आग में घी डालना** (झगड़ा बढ़ाना)– जैसे-तैसे मामला ठंडा हुआ था कि मोहन ने आकर आग में घी डाल दिया।

15. **आस्तीन का साँप होना** (विश्वासघाती होना)– तुम सुरेश पर बड़ा विश्वास करते हो न, वह आस्तीन का साँप है, किसी दिन भारी धोखा देगा।

NOTES

16. **आंखों का तारा होना** (बहुत प्रिय होना)– आजकल ब्रजेश अपनी आज्ञाकारिता और विनम्रता से माँ-बाप की आँखों का तारा बना हुआ है।

17. **अपने पैरों पर खड़े होना** (स्वावलम्बी होना)– दिनेश शिक्षा समाप्त करके अपने पैरों पर खड़ा हो गया है।

18. **अमर होना** (सदैव प्रसिद्ध रहना)– नेताजी सुभाषचन्द्र बोस भारतीय इतिहास में अमर हो गये हैं।

19. **अपनी खिचड़ी अलग पकाना** (सबसे अलग रहकर कार्य करना)– वह किसी के साथ नहीं मिल सकते और अपनी खिचड़ी अलग पकाते रहते हैं।

20. **अन्न-जल उठना** (मृत्यु होना)– कल शाम उनका दुनिया से अन्न-जल उठ गया।

21. **आवाज उठाना** (विरोध में बोलना)– युवा-वर्ग भ्रष्टाचार के विरुद्ध आवाज उठा सकता है।

22. **अंगारे बरसना** (बहुत गर्मी)– ज्येष्ठ मास में इतनी गर्मी पड़ती है मानो आसमान से अंगारे बरस रहे हों।

23. **अंगारों पर चलना** (जान-बूझकर खतरा मोल लेना)– देशभक्तों ने देश की स्वतंत्रता के लिए अंगारों पर चलना उचित समझा।

24. **अँगूठा दिखाना** (निर्धारित समय पर इनकार करना)– महिला ने पड़ोसिन को ऐन वक्त पर रुपया देने के नाम पर अँगूठा दिखा दिया।

25. **आँखें बदलना** (घोषित पक्ष से हट जाना)– स्वार्थ के कारण उसने आँखें बदल लीं।

26. **आँखों में खून उतरना** (अत्यधिक क्रोध आना)– शत्रु को देखते ही उनकी आँखों में खून उतर आया।

27. **आग लगने पर कुआँ खोदना** (आपत्ति आने के बाद उससे बचने हेतु प्रयत्न)– बरसात आने पर छप्पर कैसे छाया जा सकता है, तुम्हारी यह बात आग लगने पर कुआँ खोदने की तरह है।

28. **आकाश के तारे तोड़ना** (असम्भव कार्य करना)– वैज्ञानिकों ने चन्द्रलोक पर पहुँच कर आकाश के तारे तोड़ लिए।

29. **ईंट से ईंट बजाना** (समूल नाश करना)– अपनी बहुमूल्य वस्तुएँ प्राप्त करने के लिए उन्होंने चोरों के घर की ईंट से ईंट बजा दी।

30. **ईंट का जवाब पत्थर से देना** (कड़ा मुकाबला करना)– डाकुओं को ईंट का जवाब पत्थर से मिला तभी उन्होंने डकैती डालना छोड़ा।

31. **इस कान से सुनना उस कान से निकालना** (ध्यान न देना)– कार्यालय के लिपिकों ने अधिकारी की बात को इस कान से सुना और उस कान से निकाल दिया।

32. **ईद का चाँद होना** (बहुत समय बाद दिखाई देना)– विवाह क्या हुआ तुम तो ईद के चाँद हो गये, दिखाई ही नहीं पड़ते।

33. **उड़ती चिड़िया पहचानना** (भीतर तक की बातें जान लेना)– अनुभव होने पर लोग उड़ती चिड़िया पहचान ही लेते हैं।

34. **उल्टे छुरे से मूँड़ना** (धोखा देना, चपत लगा देना)– आजकल बहुत-से लोग समाज को उल्टे छुरे से मूँड़ने में लगे हैं।

35. **उँगली उठाना** (दोष लगाना)– लोग तुम पर उँगली उठायें, इससे पहले ही अपनी आदतें सुधार लो।

36. **उल्टी गंगा बहाना** (विरुद्ध बातें करना)– यह कैसी उल्टी गंगा बहा रहे हैं आप, स्वागत तो हमको करना चाहिए।

NOTES

37. **उल्लू सीधा करना** (स्वार्थ सिद्ध करना)– आजकल हर आदमी अपना उल्लू सीधा करना चाहता है।

38. **ऊँट के मुँह में जीरा होना** (अल्प मात्रा में सामग्री होना)– हजारों बाढ़-पीड़ितों के लिए एक लाख रुपये की सहायता ऊँट के मुँह में जीरा थी।

39. **एड़ी-चोटी का पसीना एक करना** (बहुत मेहनत करना)– निर्धन व्यक्ति परिवार की उन्नति के लिए एड़ी-चोटी का पसीना एक कर रहे हैं।

40. **एक लाठी से सबको हाँकना** (बिना सोच-समझे व्यवहार करना)– शक्ति के घमंड में दुष्ट लोग सभी को एक लाठी से हाँक रहे हैं।

41. **कटी पतंग होना** (निराश्रित होना)– विधवा स्त्री कटी पतंग होती है।

42. **कलेजे पर साँप लोटना** (मन में कष्ट होना)– तुम्हारी सफलता के विषय में सुनकर तुम्हारे शत्रुओं के कलेजे पर साँप लोट रहे हैं।

43. **कसौटी पर कसना** (परीक्षा लेना)– संकट की कसौटी पर कसे गये मित्र ही सच्चे होते हैं।

44. **कलेजा ठण्डा होना** (संतोष होना)– मेरा कलेजा उससे बदला लेने के बाद ठंडा होगा।

45. **कमर सीधी करना** (आराम करना)– कार्य करते-करते थक गया हूँ, जरा कमर सीधी कर लूँ।

46. **कलई खुलना** (भेद मालूम होना)– अब अगर तुम एक भी शब्द बोले, तुम्हारी सारी कलई खुल जायेगी।

47. **कुत्ते की मौत मरना** (कष्ट पाकर मरना)– उसने इतने पाप किये थे कि कुत्ते की मौत मरा।

48. **कान पर जूँ न रेंगना** (परवाह न करना)– मैं नौकर से रोज जल्दी आने को कहता हूँ, पर उसके कान पर जूँ नहीं रेंगती है।

49. **कानों-कानों खबर न होना** (किसी को पता न लगना)– तुम अपने पिता को बता देना कि मैं कल उनसे मिलूँगा, किन्तु इस बात की किसी को कानों-कान खबर न हो।

50. **कमर कसना** (दृढ़ निश्चय करना)– इस बार सेकेण्डरी के छात्रों ने परीक्षा में प्रथम श्रेणी लाने के लिए कमर कस ली है।

51. **कलेजे पर पत्थर रखना** (कड़ा जी करना)– सम्पूर्ण सम्पत्ति लुट जाने पर उन्होंने कलेजे पर पत्थर रख लिया।

52. **कोल्हू का बैल होना** (निरन्तर मेहनत करते रहना)– वृद्ध होते हुए भी बाबा कोल्हू के बैल की तरह खेत में लगे रहते हैं।

53. **कान काटना** (चतुराई भरे कार्य करना)– छोटा होने पर भी वह हम सबके कान काट रहा है।

54. **कीचड़ उछालना** (दोष लगाना, कलंक लगाना)– ऐसे सज्जन पुरुष पर कीचड़ उछालते तुम्हें शर्म नहीं आती।

55. **खून का प्यासा होना** (कट्टर शत्रु होना)– आतंकवादी शान्तिप्रिय नागरिकों के खून के प्यासे हो रहे हैं।

56. **खाक छानना** (सर्वत्र भटकना)– वृद्ध पिता अपने इकलौते पुत्र की तलाश में जगह-जगह खाक छान रहा है।

57. **खाक डालना** (भुला देना)– उन्होंने पुरानी दुश्मनी पर खाक डाल दी।

58. **खरी-खोटी सुनाना** (बुरा-भला कहना)– नौकर के तनिक-सी देर में पहुँचने पर राम ने उसे खूब खरी-खोटी सुनायी।

59. **खटाई में पड़ना** (खतरे में पड़ना)– उसके कारण मेरी नौकरी खटाई में पड़ गयी है।

NOTES

60. **खून-पसीना एक करना** (अत्यधिक परिश्रम करना)– ईमानदार व्यक्ति खून-पसीना एक करके अपना पेट पालते हैं।

61. **गला काटना** (बेईमानी करना)– सुरेश आज धनी बना बैठा है, जानते हो उसने परिवारीजनों का गला काटकर यह सम्पत्ति अर्जित की है।

62. **गिरगिट की तरह रंग बदलना** (एक मत पर न टिकना)– आजकल लोग धन-सम्पदा प्राप्त करने के लिए गिरगिट की तरह रंग बदल रहे हैं।

63. **गड़े मुर्दे उखाड़ना** (भूली हुई बातों का सन्दर्भ देना)– हम सभी भारतीयों को प्रेम से रहना चाहिए, गड़े मुर्दे उखाड़ने से कोई लाभ नहीं होगा।

64. **गागर में सागर भरना** (थोड़े शब्दों में अधिक भाव भर देना)– बिहारी ने 'सतसई' में गागर में सागर भर दिया है।

65. **गाल बजाना** (बढ़-चढ़कर बातें करना)– भाई तुम काम कम करते हो, गाल अधिक बजाते हो।

66. **घाव पर नमक छिड़कना** (दुःख में दुःख देना)– देवेन्द्र के यहाँ चोरी हो गयी थी और पड़ोसी हँसकर उसके घाव पर नमक छिड़क रहे थे।

67. **घड़ों पानी पड़ना** (बहुत लज्जित होना)– जब श्याम चोरी करते पकड़ा गया तो उस पर घड़ों पानी पड़ गया।

68. **घी के दीपक जलाना** (खुशियाँ मनाना)–मुकदमे में जीत जाने पर श्याम के घर घी के दीपक जल रहे थे।

69. **घर का दीपक बुझना** (एकमात्र सन्तान का मर जाना)– रोहिताश्व की मृत्यु हो जाने पर बेचारे हरिश्चन्द्र के घर का दीपक बुझ गया।

70. **चपत लगाना** (धोखा देकर धन ऐंठना)– उस दुकानदार ने खराब टी.वी. सेट देकर मुझे 12 हजार की चपत लगा दी।

71. **चम्पत हो जाना** (उड़न-छू होना)– आयकर वालों को देखकर बड़े व्यापारी शहर से चम्पत हो गये।

72. **चिकनी-चुपड़ी बातें करना** (चापलूसी करना)– आजकल स्वार्थी रामकुमार अपने चाचा से चिकनी-चुपड़ी बातें करते हुए देखा जा रहा है।

73. **चुल्लू भर पानी में डूब मरना** (अत्यधिक लज्जा का अनुभव होना)– परीक्षा में मात्र दस प्रतिशत अंक पाकर राम के लिए चुल्लू भर पानी में डूब मरने वाली बात हो गई।

74. **चाँदी काटना** (बहुत धन कमाना)– तुम्हारे मित्र ने जब से शेयर का काम किया है, वह चाँदी काट रहा है।

75. **चिकना घड़ा होना** (बेशर्म होना)– राधे ऐसा चिकना घड़ा है कि उस पर कहने-सुनने का कोई असर ही नहीं होता।

76. **चैन की बंशी बजाना** (बड़े आनन्द से रहना)– जब से राम को उसके चाचा की सम्पत्ति मिली है, तब से वह चैन की बंशी बजा रहा है।

77. **जमीन पर पैर न पड़ना** (अत्यधिक इतराना या अभिमान करना)– सुरेश ने प्रथम श्रेणी में परीक्षा उत्तीर्ण क्या कर ली, अब उसके जमीन पर पैर ही नहीं पड़ते।

78. **जहर का घूँट पीना** (अपमान का उत्तर न देना)– उसने सबके सामने मेरा अपमान किया पर मैं जहर का घूँट पीकर रह गया।

79. **जान पर खेलना** (जान की परवाह न करना)– नेताजी सुभाषचन्द्र बोस देश-हित के लिए अपनी जान पर खेल गये।

NOTES

80. **झख मारना** (विवश होना)– अंग्रेजों को झख मारकर भारत छोड़ना ही पड़ा।

81. **टस से मस न होना** (कुछ भी असर न होना)– अध्यापक के बार-बार समझाने पर भी राम टस से मस न हुआ।

82. **टाँग अड़ाना** (काम में बाधा डालना)– इस लड़के की यह बहुत बुरी आदत है कि सबके काम में टाँग अड़ाता है।

83. **ठण्डा होना** (मर जाना)– शिकारी की एक ही गोली से शेर ठण्डा हो गया।

84. **ठोकर खाना** (बेकार घूमना)– एम.ए. होकर भी वह दर-दर की ठोकर खा रहा है।

85. **डकार जाना** (हड़प जाना)– रामलाल अपने चाचा की सारी सम्पत्ति अकेले ही डकार गया।

86. **डींग मारना** (शेखी मारना)– यों ही डींग मारने से क्या होगा ? मर्द हो तो कुछ करके दिखाओ।

87. **ढिंढोरा पीटना** (प्रचार करना)– राम से कोई बात मत कहना क्योंकि वह ढिंढोरा पीट देगा।

88. **तारे गिनना** (नींद न आना)– दिनेश पत्नी के वियोग में तारे गिन-गिनकर रात काट रहा है।

89. **तिल का ताड़ बनाना** (थोड़ी बात को बहुत बढ़ाकर कहना)– कल के मैच में तुम्हारे मित्र ने केवल एक रन बनाया था और तुम उसे सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी बताकर तिल का ताड़ बना रहे हो।

90. **तीन तेरह होना** (बिखर जाना)– रमेश के पिता के मरते ही उसका परिवार तीन तेरह हो गया।

91. **दम तोड़ना** (मर जाना)– बन्दूक की एक गोली से शेर ने दम तोड़ दिया।

92. **दाँत खट्टे करना** (बुरी तरह से हराना)– भारत ने हॉकी में पाकिस्तान के दाँत खट्टे कर दिये।

93. **दाँत पीसना** (क्रोध प्रकट करना)– दाँत क्यों पीस रहे हो, मैंने तो तुम्हारी बात का उत्तर दिया है।

94. **दाँतों तले उँगली दबाना** (आश्चर्य करना)– उसकी सफलता देखकर सभी ने दाँतों तले उँगली दबा ली।

95. **दाल में काला होना** (सन्देहपूर्ण स्थिति)– धन के अभाव में भी वह बहुत बड़ी योजना पर काम कर रहा है, लगता है दाल में कुछ काला है।

96. **दूध का दूध, पानी का पानी करना** (स्पष्ट निर्णय करना)– बहुत दिन से तुम मुझे धोखा दे रहे हो। आज तो दूध का दूध, पानी का पानी हो जाना चाहिए।

97. धज्जियाँ उड़ाना (दुर्दशा करना या दोष-पर-दोष निकालना)– रमेश ने माधव के सिद्धान्तों की धज्जियाँ उड़ा दीं।

98. **नौ-दो ग्यारह होना** (भाग जाना)– गाँव वालों के आते ही चोर नौ-दो ग्यारह हो गये।

99. **नमक-मिर्च मिलाना** (बात को बढ़ा-चढ़ाकर करना)– रमेश को नमक-मिर्च मिलाकर कहने की आदत है।

100. **निन्यानवे के फेर में पड़ना** (धन जोड़ने की चिन्ता में रहना)– सुरेश आजकल निन्यानवे के फेर में पड़ गया है।

101. **पानी-पानी होना** (लज्जित होना)– राम के असभ्य व्यवहार से उसका पिता पानी-पानी हो गया।

102. **पैर तले की जमीन खिसकना** (घबरा जाना)– जेब में हाथ डालते ही मेरे पैर तले की जमीन खिसक गयी क्योंकि जेब कट गयी थी और पैसे गायब थे।

103. **पीठ दिखाना** (हारकर भाग जाना)– दुश्मन को पीठ दिखाकर भागने की अपेक्षा वहीं मर जाना अच्छा है।

104. **फूँक-फूँक कर पाँव रखना** (बहुत सावधानी से काम करना)– देखो मोहन ! समय बहुत खराब है, अत: फूँक-फूँक कर पाँव रखने की आवश्यकता है।

NOTES

105. **फूला न समाना** (बहुत प्रसन्न होना)– राम सेकेण्डरी परीक्षा में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुआ है, अत: इस कारण वह फूला नहीं समा रहा है।

106. **बाल बाँका न होना** (कुछ हानि न होना)– विरोधियों ने सारे प्रयत्न कर लिये लेकिन किशोर का बाल बाँका नहीं कर सके।

107. **बाल की खाल निकालना** (व्यर्थ की नुक्ताचीनी करना)– मोहन सदैव बाल की खाल निकालता रहता है।

108. **बाल-बाल बचना** (हानि होते-होते बचना)– गोविन्द छत से गिरने से बाल-बाल बच गया।

109. **मैदान मारना** (लड़ाई जीतना)– भारत-पाकिस्तान युद्ध में भारतीय सैनिकों ने मैदान मार लिया।

110. **मिट्टी में मिलना** (बर्बाद होना)– सट्टेबाजी के कारण सेठ रामदास मिट्टी में मिल गये।

111. **मुट्ठी गर्म करना** (रिश्वत देना)– काम निकालना है तो पुलिस की मुट्ठी गर्म करो।

112. **मुँह में पानी भरना** (लालायित होना)– मिठाई की दुकान देखकर राम के मुँह में पानी भर आया।

113. **मूँछों पर ताव देना** (अकड़ना)– ठाकुर साहब ने मूँछों पर ताव देते हुए कहा, "देखें कौन हमारे सामने आता है।"

114. **मक्खन लगाना** (चापलूसी करना)– हरप्रसाद अधिकारी को मक्खन लगाने में चतुर है।

115. **मुँह लटकाना** (सुस्त होना)– अरे हरी ! तुम तो तनिक-सी बात पर मुँह लटकाकर बैठ गये।

116. **लकीर पीटना** (पुरानी रीति पर चलना)– रीति-रिवाजों की लकीर पीटने से क्या लाभ, समय देखकर काम करो।

117. **लोहा मानना** (श्रेष्ठता स्वीकार करना)– पाकिस्तान भारत का लोहा मान गया।

118. **लोहे के चने चबाना** (बड़ा कठिन काम करना)– क्रिकेट में भारत पर विजय पाना लोहे के चने चबाना है।

119. **श्रीगणेश करना** (आरम्भ करना)– रमेश ने वकालत का श्रीगणेश कर दिया है।

120. **हवाई किले बनाना** (ऊँची-ऊँची कल्पनाएँ करना)– मोहन को अभी लाटरी मिली भी नहीं, किन्तु वह हवाई किले बनाने लगा है।

121. **हाथ-पाँव फूल जाना** (भय या शोक से घबरा जाना)– हथियारबन्द डाकुओं को देखकर गाँव वालों के हाथ-पाँव फूल गये।

122. **हाथ-पर-हाथ धरे बैठे रहना** (कुछ न करना)– हाथ-पर-हाथ धरे बैठे रहने से काम नहीं चलेगा।

123. **हवा से बातें करना** (बहुत तेज चलना)– थोड़ी देर में गाड़ी हवा से बातें करने लगी।

124. **बेड़ियाँ कट जाना** (स्वतंत्र हो जाना)– 15 अगस्त, 1947 को हमारे देश की परतन्त्रता की बेड़ियाँ कट गयीं।

125. **बातों में उड़ाना** (महत्त्व न देना)– मेरे प्रश्न को बातों में मत उड़ाओ, उत्तर दो।

लोकोक्तियाँ : अर्थ एवं विशेषताएँ

'लोकोक्ति' का अर्थ है- लोक+उक्ति अर्थात् लोक की उक्ति, अर्थात् 'कहावत' लोक (समाज) में प्रचलित एवं लोक द्वारा स्वीकृत की गई 'उक्ति' ही कालान्तर में बोल-चाल में प्रचलित हो जाती है तथा लोकोक्ति का रूप ग्रहण कर लेती है। लोकोक्ति के पीछे कोई कहानी या घटना अवश्य होती है। लोकोक्तियाँ स्वतंत्र वाक्य होती हैं। इनका प्रयोग करने के लिए वाक्य के अन्तर्गत इन्हें ज्यों -का-त्यों रखा जाता है। लोकोक्तियों के प्रयोग से भाषा सरल एवं बोधगम्य हो जाती है।

हिन्दी की कुछ प्रमुख लोकोक्तियों के अर्थ एवं वाक्य-प्रयोग यहाँ प्रस्तुत हैं :

हिन्दी में प्रचलिति प्रमुख लोकोक्तियाँ, उनके अर्थ एवं वाक्य-प्रयोग

NOTES

1. **अक्ल बड़ी या भैंस** (शारीरिक बल से बुद्धि बल श्रेष्ट है)– मरियल से लड़के ने बुद्धिबल से बड़े-बड़ों को झुका दिया है, इसीलिए कहते हैं कि अक्ल बड़ी या भैंस।

2. **अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता** (एक व्यक्ति द्वारा कुछ नहीं किया जा सकता है)– वे चार थे और रमेश अकेला था, क्या कर सकता था। भाई, अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता।

3. **अन्धी पीसे कुत्ते खायें** (कुप्रबन्ध से वस्तु का नष्ट होना)– मामा के विवाह में अन्धी पीसे कुत्ते खायें वाली बात हो रही थी।

4. **अपनी-अपनी ढपली अपना-अपना राग** (एकजुट न होना)– देश में आजकल नेता अपनी-अपनी ढपली अपना-अपना राग अलाप रहे हैं।

5. **अरहर की टटिया गुजराती ताला** (सामान्य वस्तु की असामान्य सुरक्षा करना)–झुग्गी वालों ने रात के लिए चौकीदार रखा है। वाह ! भाई, अरहर की टटिया, गुजराती ताला।

6. **अधजल गगरी छलकत जाय** (ओछा व्यक्ति अधिक उछल-कूद करता है)– भाई साहब पर देने को कुछ नहीं है और बातें बड़ी-बड़ी करते हैं। ठीक ही है, अधजल गगरी छलकत जाय।

7. **अपनी करनी पार उतरनी** (कर्म का फल सबको भोगना पड़ता है)– रामदास की गिरफ्तारी पर इतना दुखी क्यों हो रहे हो। अरे, अपनी करनी पार उतरनी।

8. **आम खाने या पेड़ गिनने** (अनावश्यक बातों में रुचि न लेना)– कार्य कैसे हुआ, तुम्हें इससे क्या मतलब ? तुम्हें आम खाने या पेड़ गिनने।

9. **आप भला तो जग भला** (अच्छे व्यक्ति के लिए सभी अच्छे होते हैं)– तुम्हें दूसरों से क्या मतलब, तुम तो अपना काम करो, ध्यान रखो, आप भला तो जग भला की कहावत सही है।

10. **आगे नाथ न पीछे पगहा** (किसी तरह का बन्धन न होना)– उनकी ओर ध्यान मत दो, उनके तो आगे नाथ न पीछे पगहा।

11. **आम के आम और गुठलियों के दाम** (दुहरा लाभ)– हजारीप्रसाद ने रुपये में महीने भर तक अखबार पढ़ा और आधी रकम की रद्दी बेच ली। इसे कहते हैं- आम के आम और गुठलियों के दाम।

12. **आधा तीतर आधा बटेर** (बेमेल कार्य करना)– कोई भी कदम उठाने से पहले अच्छी तरह सोच लेना। आधा तीतर आधा बटेर न हो जाय।

13. **अन्धों में काना राजा** (मूर्खों में कम पढ़ा-लिखा भी विद्वान् समझा जाता है)– रामसिंह की अपने समाज में अन्धों में काना राजा जैसी स्थिति है।

14. **इधर जाएँ तो खाई उधर जाएँ तो कुआँ** (सभी ओर परेशानी होना)– बच्चों को लेकर भावुक हरिप्रसाद के सामने इधर जाएँ तो खाई उधर जाएँ तो कुआँ वाली बात हो रही है।

15. **उधार दो दुश्मन बनाओ** (उधार देना संकट मोल लेना है)– आजकल तो यह हो रहा है कि ग्राहकों को उधार दो और दुश्मन बना लो।

16. **उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे** (अपना अपराध औरों पर मढ़ना)– चोरी करके भी सौदान साहूकार बना घूमता है और दूसरों को चोर कहता है। इसे कहते हैं-उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे।

17. **उल्टे बाँस बरेली को** (विपरीत कार्य करना।)– मन्त्री महोदय ने पहाड़ी क्षेत्र में बाहर से गिट्टियाँ मँगाने का आदेश देकर उल्टे बाँस बरेली को वाली कहावत को चरितार्थ कर दिया है।

स्व प्रगति की जाँच करें:

3. मुहावरा को परिभाषित कीजिए।
4. मुहावरों की क्या विशेषताएँ हैं ? बताइए।
5. लोकोक्ति का क्या अर्थ है?

NOTES

18. **ऊँची दुकान फीके पकवान** (दिखावा अधिक वास्तविकता कम)– आदमी तो बहुत तगड़ा है पर दिल चूहे का सा है। वाह, ऊँची दुकान फीका पकवान।

19. **ऊँट के मुँह में जीरा** (आवश्यकताएँ बड़ी पूर्ति नाममात्र की)– यहाँ अकालपीड़ितों के दो सौ शिविर लगे हैं और राहत सामग्री पचास शिविरों के लिए ही भेजी गई है। यह सहायता तो ऊँट के मुँह में जीरा साबित होगी।

20. **अन्त भला तो सब भला** (कार्य का अन्तिम चरण महत्त्वपूर्ण होता है)– यदि अब भी भगवान का नाम ले लो तो जीवन सुधर जायेगा। अन्त भला तो सब भला।

21. **अन्धे के आगे रोये अपने नैना खोये** (हृदयहीन के आगे दु:खड़ा रोना व्यर्थ है)– आजकल नेताओं को अपनी समस्या बताना अन्धे के आगे रोये अपने नैना खोये जैसा है।

22. **एक पंथ दो काज** (दोहरा लाभ उठाना)– वे दोनों आगरा परीक्षा देने गये थे, और वहाँ लालकिला और ताजमहल भी देख इसे कहते हैं एक पंथ दो काज।

23. **एक मछली सारे तालाब को गंदा करती है** (एक के बुरा होने पर सभी को लांछन लगना)– कक्षा में परीक्षा देते समय नकल एक ही छात्र कर रहा था, पर सभी की परीक्षा निरस्त कर दी गई। ठीक ही कहा है, एक मछली सारे तालाब को गन्दा कर देती है।

24. **करेला और नीम चढ़ा** (दुष्ट को बुरी संगति मिलना)– एक तो वे पहले से ही झूठे और मक्कार थे। अब भ्रष्टाचारियों के साथ रहकर करेला और नीम चढ़ा वाली कहावत चरितार्थ कर रहे हैं।

25. **का वर्षा जब में कृषि सुखाने** (समयोपरान्त मिली सहायता से क्या लाभ)– जब डाकू लूटपाट करके चले गये, तब पुलिस गाँव पहुँची। दु:खी ग्रामीणों ने कहा, का वर्षा जब कृषि सुखाने।

26. **काठ की हाँड़ी बार-बार नहीं चढ़ती है** (व्यक्ति को एक बार ही मूर्ख बनाया जा सकता है)– अब तुम मुझे नहीं बहका सकते। काठ की हाँड़ी बार-बार नहीं चढ़ती है।

27. **कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा, भानुमती ने कुनबा जोड़ा** (असंगत गठबन्धन)– तुमने तो अपने निबन्ध में औरों के विचार जोड़कर रख दिये हैं, तुम्हारा इसमें क्या है। यह तो कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा भानुमती ने कुनबा जोड़ा वाली बात हो गई।

28. **कोयले की दलाली में काले हाथ** (गलत काम का बुरा परिणाम)– मैंने कुछ भी नहीं किया। मैं तो केवल उनके साथ गया था, मुझे भी सजा दे दी, सच है, कोयले की दलाली में काले हाथ।

29. **खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है** (संगति का प्रभाव अवश्य पड़ता है)– पहले वे ना-नुकर कररहे थे, किन्तु राम तथा मोहन के 'हाँ' करते ही सभी ने हाँ कर दी। सच है, खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग बदलता है।

30. **खिसियानी बिल्ली खम्भा नोंचे** (दुर्बलता में शक्ति-प्रदर्शन)– जब कुछ नहीं कर पाये तो अपने हाथों को दीवार परमारने लगे। यही हुआ न खिसियानी बिल्ली खम्भा नोंचे।

31. **खोदा पहाड़ निकली चुहिया** (अधिक परिश्रम पर परिणाम कम)– दोनों मजदूरों ने रात भर कार्य किया और मजदूरी मिली कुल पचास रुपये। यह तो खोदा पहाड़ निकली चुहिया वाली बात हुई।

32. **घर की मुर्गी दाल बराबर** (सरलता से मिली वस्तु का महत्त्व नहीं होता)– अपने विद्वान बड़े भाई को वह मूर्ख समझता है। इसे कहते हैं- घर की मुर्गी दाल बराबर।

33. **घर में नहीं दाने अम्मा चली भुनाने** (व्यर्थ का दिखावा)– जब सामर्थ्य नहीं थी तो इतना बखेड़ा, क्यों किया। अरे, घर में नहीं दाने, अम्मा चली भुनाने।

NOTES

34. **घर आये नाग न पूजिये बाँबी पूजन जायँ** (प्राप्त वस्तु को छोड़कर अप्राप्त के लिए प्रयत्न करना)– अच्छे चिकित्सक घर आये थे, तब नहीं दिखाया, अब अस्पताल जा रहे हो। सच है- घर आये नाग न पूजिये बाँबी पूजन जायँ।

35. **घर का भेदी लंका ढाये** (पक्ष वाले द्वारा विपक्ष के साथ मिलकर नुकसान कर देना)– विभीषण ने रावण की मृत्यु का भेद बताकर लंका के सर्वनाश का मार्ग प्रशस्त किया था। तभी तो कहते हैं- घर का भेदी लंका ढाये।

36. **चोर-चोर मौसरे भाई** (बुरी प्रवृत्ति के लोग शीघ्र ही निकट आ जाते हैं)– रमेश और सुरेश दोनों ही पीने वाले हैं, तभी तो मित्र हैं। सच है- चोर-चोर मौसेर भाई।

37. **चोर की दाढ़ी में तिनका** (अपराधी का सशंकित रहना)– कक्षा में खोई पुस्तक के बारे में पूछने पर रमेश के चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगीं। सच कहते हैं, चोर की दाढ़ी में तिनका।

38. **चमड़ी जाय पर दमड़ी न जाय** (अत्यधिक कंजूसी)– आर्थिक मामलों में रामदीन का सिद्धान्त है, चमड़ी जाय पर दमड़ी न जाय।

39. **छठी का दूध याद दिलाना** (कठिन मेहनत पड़ना/बहुत हैरानी होना)– अखाड़े में लड़ते समय श्याम पहलवान ने घनश्याम को छठी का दूध याद दिला दिया।

40. **जल में रहकर मगर से बैर** (बलवान से शत्रुता रखना)– तुम्हें अधिकारियों की बात मान लेनी चाहिए। जल में रहकर मगर से बैर नहीं किया करते।

41. **जिसकी लाठी उसकी भैंस** (शक्तिवान ही विजयी हो रहा है)– कैसा समय आ गया है, चारों ओर जिसकी लाठी उसकी भैंस वाली कहावत चरितार्थ हो रही है।

42. **डूबते को तिनके का सहारा** (घोर संकट में थोड़ी सहायता भी बहुत होती है)– उसकी तो थोड़ी सहायता भी बहुत थी। अरे, डूबते को तिनके का सहारा होता है।

43. **तीन लोक से मथुरा न्यारी** (सबसे अलग व्यवहार)– अपने हरिशंकर को तो तीन लोक से मथुरा न्यारी रहती है।

44. **तेते पाँव पसारिये जेती लम्बी सौर** (सीमा के अन्दर ही कार्य करना चाहिए)– व्यर्थ में के दिखावे में क्या रखा है। अरे, तेते पाँव पसारिये जेती लम्बी सौर।

45. **थोथा चना बाजे घना** (ओछा व्यक्ति अधिक डींग हाँकता है)– राम कमाता तो कुछ नहीं और बातें बड़ी-बड़ी करता है। सच है- थोथा चना बाजे घना।

46. **दूध का जला छाछ भी फूँक-फूँककर पीता है** (एक बार धोखा खाने वाला व्यक्ति हर कदम सावधानी से रखता है)– जब से उन्होंने मेले में धोखा खाया है तब से वे जब भी बाहर निकलते हैं, दूध का जला छाछ भी फूँक-फूँककर पीता है की तरह व्यवहार करते हैं।

47. **दान की बछिया के दाँत नहीं देखे जाते** (मुफ्त में मिली वस्तु में कमी नहीं देखी जाती)– पण्डितजी को कम कीमत के कपड़े मिले पर वे चुप ही रहे क्योंकि दान की बछिया के दाँत नहीं देखे जाते।

48. **धोबी का कुत्ता घर का न घाट का** (बिल्कुल बेकार व्यक्ति)– मेरा एक मित्र सरकारी नौकरी करता है, पर है धोबी का कुत्ता, घर का न घाट का।

49. **नाच न जाने आँगन टेढ़ा** (अपनी कमी दूसरों पर थोपना)– जब वे यह प्रश्न हल नहीं कर सकते थे तो यह क्यों कहते रहे कि प्रश्न गलत है, मैं समझ गया नाच न जाने आँगन टेढ़ा।

50. **नौ दिन चले अढ़ाई कोस** (बहुत धीमी गति से कार्य करना)– चाचीजी, आपके बस का कार्य नहीं है यह ! आप तो नौ दिन चले अढ़ाई कोस की तरह कार्य करती हैं।

NOTES

51. **न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी** (झगड़े को जड़ से समाप्त करना)– वित्तमंत्री का विचार है कि आर्थिक समानता आ जाय तो गरीबी स्वयं समाप्त हो जायेगी, क्योंकि न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी।

52. **न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी** (कार्य के लिए असम्भव शर्त रखना)– संगठन की सदस्यता हेतु अध्यक्ष ने ऐसे नियम बनाए हैं कि कोई साधारण व्यक्ति सदस्य बन ही नहीं बन सकता। न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी।

53. **पाँचों उँगली घी में होना** (हर प्रकार से लाभ में रहना)– खालिद मियाँ कहीं भी चले जायें उनकी तो हर जगह पाँचों उँगली घी में रहती हैं।

54. **बाबरे गाँव में ऊँट आना** (छोटी वस्तु के लिए अधिक उत्साह दिखाना)– गाँव में पहली बार मोटर-साइकिल आई तो उसे देखने के लिए लोगों का ताँता लग गया। इसे कहते हैं, बाबरे गाँव में ऊँट आना।

55. **बिल्ली के भाग से छींका टूटा** (कार्य में संयोगवश मिली सफलता)– प्रतिपक्ष के लोग कुछ देर पहले ही गये थे, वरना आज भयंकर रक्तपात होता। बिल्ली के भाग से छींका टूट गया और उन्हें स्वयं को बहादुर साबित करने का मौका मिल गया

56. **बन्दर क्या जाने अदरक का स्वाद** (मूर्ख उत्तम वस्तु का महत्त्व नहीं समझता)– उन्हें विधानसभा में बैठने का अवसर क्या मिला वे जोर-जोर से चीखने लगे। सच है- बन्दर क्या जाने अदरक का स्वाद।

57. **रस्सी जल गई पर ऐंठ न गई** (शक्ति समाप्त होने पर भी व्यर्थ का)– हरप्रसाद के पिता अब भी उसी तुनक में रहते हैं जबकि सब-कुछ लुट चुका है। सच है- रस्सी जल गई पर ऐंठ न गई।

58. **मुँह में राम बगल में छुरी** (कपटपूर्ण आचरण करने वाला व्यक्ति)– सीता की पड़ोसन तो मुँह में राम बगल में छुरी वाली औरत है।

59. **सूत न कपास कोरी से लट्ठम-लट्ठा** (निराधार बात पर झगड़ा करना)– भैंस के दूध के बँटवारे पर झगड़ते हुए दोनों भाइयों को रामू काका ने फटकारा कि पहले भैंस तो ले आओ तभी लड़ना। सूत न कपास कोरी से लट्ठम-लट्ठा क्यों करते हो।

60. **होनवार बिरवान के होत चीकने पात** (महान् व्यक्ति की पहचान बचपन में ही होने लगती है)– देखो तो किस तरह एक-एक चीनी के दाने को बीन रहा है तुम्हारा छुटकू। बड़ा होकर बड़ा किफायत वाला बनेगा। सच है, होनहार बिरवान के होत चीकने पात।

61. **होम करते हाथ जलना** (अच्छा कार्य करते कष्ट पाना)– रामदीन सेठ गरीबों को कम्बल बाँटने निकले थे कि रास्ते में दुर्घटना के शिकार हो गये। इसे कहते हैं- होम करते हाथ जलना।

स्व-प्रगति की जाँच के उत्तर

1. **पर्यायवाची (समानार्थक) शब्द**– जिन शब्दों के अर्थ में समानता होती है उन्हें 'पर्यायवाची' शब्द कहते हैं। यद्यपि हिन्दी भाषा में प्रयुक्त होने वाले समस्त शब्द अपना स्वतन्त्र अर्थ रखते हैं तथा पूरी तरह से कोई शब्द दूसरे शब्द का पर्याय नहीं होता, फिर भी कुछ समानताओं के आधार पर उन्हें पर्यायवाची शब्द मान लिया जाता है। ऐसे ही कुछ मुख्य शब्द और उनके पर्यायवाची शब्द यहाँ प्रस्तुत हैं।

शब्द	पर्यायवाची शब्द
महादेव	शिव, शंकर, नीलकण्ठ, भूतनाथ, हर, शम्भु, महेश।

2. **विलोमार्थी (विपरीतार्थक) शब्द**– परस्पर विरुद्ध, उल्टा या विपरीत अर्थ का ज्ञान कराने वाले शब्दों को 'विलोमार्थी' या 'विपरीतार्थक' शब्द कहते हैं। ये शब्द पर्यायवाची शब्दों से विपरीत होते हैं, अत: इन्हें 'विलोम शब्द' के नाम से भी पुकारा जाता है। शब्द के अर्थ को अधिक स्पष्ट करने के लिए कभी-कभी 'विलोम' शब्द बहुत सहायक होते हैं।

हिन्दी भाषा में कुछ शब्दों के विलोम शब्द उनके साथ ही अस्तित्व में रहते हैं, जैसे- ऊँचा-नीचा, बड़ा-छोटा, काला-गोरा, आदि-अन्त आदि। कुछ शब्दों के विलोम शब्द उपसर्ग एवं प्रत्यय लगाकर बनाए जाते हैं, जैसे- सुगन्ध-दुर्गन्ध, सक्षम-अक्षम आदि।

NOTES

3. "जिन वाक्यांशों में सामान्य या शाब्दिक अर्थ से इतर अन्य ही कोई विशिष्ट अर्थ निहित होता है, वे मुहावरे कहलाते हैं।"

4. **मुहावरों की विशेषताएँ**

   (a) मुहावरा अपरिवर्तनशील होता है।

   (b) मुहावरा किसी भी भाषा की अमूल्य निधि है।

   (c) मुहावरा वाच्यार्थ की अपेक्षा लक्ष्यार्थपरक और व्यंग्यार्थपरक होता है।

   (d) मुहावरों के प्रयोग से भाषा में अद्‌भुत शक्ति आ जाती है।

   (e) मुहावरा लोकभाषा की व्यापकता को रेखांकित करता है।

5. 'लोकोक्ति' का अर्थ है- लोक+उक्ति अर्थात् लोक की उक्ति, अर्थात् 'कहावत' लोक (समाज) में प्रचलित एवं लोक द्वारा स्वीकृत की गई 'उक्ति' ही कालान्तर में बोल-चाल में प्रचलित हो जाती है तथा लोकोक्ति का रूप ग्रहण कर लेती है। लोकोक्ति के पीछे कोई कहानी या घटना अवश्य होती है। लोकोक्तियाँ स्वतंत्र वाक्य होती हैं। इनका प्रयोग करने के लिए वाक्य के अन्तर्गत इन्हें ज्यों -का-त्यों रखा जाता है। लोकोक्तियों के प्रयोग से भाषा सरल एवं बोधगम्य हो जाती है।

अभ्यास-प्रश्न

1. पर्यायवाची तथा विलोम शब्दों की परिभाषा देते हुए इनका अर्थ तथा अन्तर स्पष्ट कीजिये।
2. अनेकार्थक शब्द की परिभाषा दीजिये तथा समुचित उदाहरणों द्वारा किन्हीं तीन अनेकार्थक शब्दों के अर्थ स्पष्ट कीजिये।
3. समूहार्थक शब्द किन्हें कहते हैं ? किन्हीं पाँच समूहार्थक शब्दों का वाक्य प्रयोग करते हुए उनका अर्थ स्पष्ट कीजिये।
4. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिये :

   (i) इन्द्र (ii) चन्द्रमा (iii) पक्षी (iv) समुद्र (v) सूर्य।

5. निम्नलिखित शब्दों के अनेक अर्थ वाक्य-प्रयोग द्वारा स्पष्ट कीजिये :

   (i) चक्र (ii) चपला (iii) जनक (iv) तारा (v) सर।

6. 'मुहावरा' किसे कहते हैं ? उपयुक्त उदाहरणों द्वारा स्पष्ट कीजिये।
7. 'लोकोक्ति' किसे कहते हैं ? लोकोक्ति एवं मुहावरे का अन्तर स्पष्ट कीजिये।
8. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ लिखिये तथा इनका स्वरचित वाक्यों में प्रयोग कीजिये :

   (i) अन्धे के हाथ बटेर लगना (ii) आटे-दाल का भाव मालूम होना
   (iii) आग लगने पर कुआँ खोदना (iv) उड़ती चिड़िया पहचानना
   (v) कुत्ते की मौत मरना (vi) गिरगिट की तरह रंग बदलना
   (vii) तीन तेरह होना (viii) नौ-दो ग्यारह होना
   (ix) बाल की खाल निकालना (x) श्रीगणेश करना

NOTES

9. निम्नलिखित लोकोक्तियों का अर्थ बताइये तथा इनका स्वरचित वाक्यों में प्रयोग कीजिये :

(i) अन्धी पीसे कुत्ते खायें
(ii) आधा तीतर आधा बटेर
(iii) एक पंथ दो काज
(iv) खिसियानी बिल्ली खम्भा नोंचे
(v) घर का भेदी लंका ढाये
(vi) जिसकी लाठी उसकी भैंस
(vii) नाच न जाने आँगन टेढ़ा
(viii) बन्दर क्या जाने अदरक का स्वाद
(ix) मुँह में राम बगल में छुरी
(x) सूत न कपास कोरी से लट्ठम-लट्ठा

इकाई - III

अनुवाद : अर्थ, परिभाषा, प्रकार एवं उपकरण

इकाई में शामिल है:

- अनुवाद का अर्थ
- अनुवाद : परिभाषा और अनुवाद का स्वरूप
- अनुवाद : प्रकार एवं उपकरण
- भारत में देवनागरी कम्प्यूटर
- कुछ अन्य अनुवाद-प्रभेद

अध्ययन के उद्देश्य :

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात्, आप निम्न बिन्दुओं को समझने में सक्षम होंगे –

- अनुवाद का अर्थ, परिभाषा तथा अनुवाद का स्वरूप
- अनुवाद के प्रकार एवं उपकरण
- भारत में देवनागरी कम्प्यूटर

NOTES

अनुवाद का अर्थ

अनुवाद से तात्पर्य है, किसी एक भाषा में जो कहा गया है, उसे दूसरी भाषा में कहना। यानी, अनुवाद एक भाषिक प्रक्रिया है अथवा भाषिक प्रक्रिया का परिणाम है जिसमें किसी एक भाषा में की गई अभिव्यक्ति को दूसरी भाषा में बदला जाता है। यह अभिव्यक्ति का बदलना वस्तुतः भाषान्तर करना है, अर्थान्तर करना नहीं है। जो एक भाषा में कहा गया है, उसका अर्थ तो वही रहता है, उसकी भाषिक संरचना बदल जाती है। इसलिए अनुवाद को 'भाषान्तर' कहा जाता है।

आज 'अनुवाद' शब्द का तात्पर्य यही है। लेकिन, इस शब्द का अर्थ प्राचीन समय में थोड़ा-सा भिन्न था। उस प्राचीन अर्थ को समझने के लिए हम 'अनुवाद' शब्द का व्युत्पत्तिपरक अर्थ देखेंगे।

'अनुवाद' शब्द 'वद्' धातु में 'अनु' उपसर्ग और 'घञ्' प्रत्यय के योग से बना है [अनु + वद् + (घञ् प्रत्यय) = अनुवाद।]

'वद्' का अर्थ है – बोलना या कहना।

'अनु' उपसर्ग – 'पीछे', 'बाद में', 'अनुवर्तिता' आदि अर्थों में प्रयुक्त होता है। इस तरह 'अनुवाद' का शाब्दिक अर्थ हुआ– किसी के कहने के बाद कहना। या, किसी कथन के पीछे (अनुवर्ती) अथवा बाद का कथन। पुनःकथन या पुनरुक्ति।

'शब्दार्थ चिन्तामणि' नामक कोश में 'अनुवाद' का अर्थ इस प्रकार दिया गया है : 'प्राप्तस्य पुनःकथनम्' (पहले कहे गए को फिर से कहना) या 'ज्ञातार्थस्य प्रतिपादनम्' (ज्ञात अर्थ को प्रतिपादित करना)।

प्राचीन काल में हमारे यहाँ शिक्षा की मौखिक परम्परा थी। गुरु जो कहते थे, शिष्य उसे दुहराते थे। इस दुहराने को भी 'अनुवाद' अथवा 'अनुवचन' कहा जाता था। 'अनुवाक्' भी मूलतः यही था। बाद में 'अनुवाक्' वेद के उस प्रभाग (सैक्शन) को कहा जाने लगा, जिसे एक बार गुरु से सुनकर दुहराया या पढ़ा-सीखा जा सके।

ऋग्वेद से लेकर ब्राह्मणग्रंथों, उपनिषदों और व्याकरण-ग्रंथों आदि में 'अनु' उपसर्ग तथा 'वद्' पदों का अलग-अलग प्रयोग मिलता है। जिनका अर्थ 'गुरु की बात का शिष्य द्वारा दुहराया जाना', 'पश्चात्कथन', 'दुहराना', 'पुनःकथन', 'ज्ञात को कहना', 'समर्थन के लिए प्रयुक्त कथन', 'विधि या विहित का पुनःकथन', 'आवृत्ति', 'सार्थक आवृत्ति' आदि है।

पाणिनि ने 'अष्टाध्यायी' में ('अनुर्यत्समया' (2.1.15) के अनुसार) 'अनु' शब्द का प्रयोग पीछे-पीछे, किनारे-किनारे, साथ-साथ, बाद में; अर्थात् समीपवाची अर्थ में किया है; यथा –

अनुरथम् = रथ के पीछे-पीछे, अनुगंगम् = गंगा के किनारे, अनुरूपम् = अनुरूप (समरूप)।

अनुज्येष्ठम् = ज्येष्ठ के बाद में (क्रमानुसार)

इस प्रकार 'अनुवाद' के प्रसंग में 'अनु' का अर्थ है– किसी कथन से मिलता हुआ या समरूपी कथन, पूर्वकथन के अनुसार अथवा पश्चाद्वचन। जैसा कि 'अष्टाध्यायी' में दिया गया है – 'अनुवादे चरणम्' (2.4.3)। इस पर श्रीषचंद्र वसु ने टिप्पणी करते हुए लिखा है :

"The word 'ANUVAD' means repetition by way of explanation, illustration or corroboration, that is to say when a speaker demonstrates for some special purpose, a proposition which had already been demonstrated before, that is called ANUVAD.
(Ashtadhyayi of Panini, Vol. I, Page, 308)

'अनुवाद' वास्तव में सार्थक अभ्यास को माना गया है। निरर्थक आवृत्ति या अभ्यास 'पुनरुक्त' है (न्यायदर्शन पर लिखा 'वात्स्यायन-भाष्य' द्रष्टव्य है, जिसमें शब्द-विशेष की व्याख्या के संदर्भ में 'परीक्षाप्रकरणम्' में यह बात कही गई है।)

प्राचीन इतिहास यही बताता है कि संस्कृत विद्वान् अपने मौलिक चिन्तन एवं लेखन के लिए विश्वविख्यात थे। वेद-पुराण, उपनिषद्, काव्य-महाकाव्य, नाट्यग्रंथ, शास्त्र एवं भाष्य आदि अनेक ग्रंथों की रचना आर्य ऋषियों-मनीषियों ने की थी। विज्ञान, गणित, ज्योतिष, संगीत, आयुर्वेद इत्यादि के क्षेत्र में भी वे विश्वभर में अग्रणी थे। यहाँ के ज्ञान-विज्ञान को दूसरे देशों ने सम्मान के साथ ग्रहण किया, उन दिनों यहाँ की

संपर्क-भाषा संस्कृत थी। कालांतर में वैदिक संस्कृत से भिन्न लौकिक संस्कृत (सामान्यजन की भाषा) विकसित हुई। समय के साथ-साथ पालि, प्राकृत और अपभ्रंश आदि कई भाषाओं का उद्भव इस लौकिक संस्कृत से हुआ।

संस्कृत-ग्रंथों के अनुवाद की पहली प्रक्रिया दूसरे देशों और अपने यहाँ की इन जनभाषाओं में आरम्भ हुई। ऐसे उदाहरण नहीं मिलते जिनसे ज्ञात हो सके कि विदेशी ग्रंथों का संस्कृत में अनुवाद हुआ हो। संभवत: इसके मूल में श्रेष्ठता का भाव रहा होगा। संस्कृत-साहित्य के अत्यन्त समृद्ध होने के कारण अन्य भाषाओं के साहित्य को आर्य पण्डित अपनी भाषा (संस्कृत) में लाने-योग्य नहीं समझते होंगे, शायद यही कारण है कि प्राचीन संस्कृत-साहित्य में 'अनुवाद' शब्द का प्रयोग तो मिलता है, किन्तु अनूदित साहित्य अथवा उसके सिद्धांत की चर्चा नहीं मिलती। हो सकता है कि कुछ लोग इस धारणा से सहमत न हों, किन्तु कोई अनुवाद उपलब्ध न होने से अभी तो यही धारणा स्वीकार करनी पड़ेगी।

जैसा कि हमने देखा; 'अनुवाद' का व्युत्पत्तिमूलक अर्थ है - पुन:कथन, सार्थक अभ्यास या आवृत्ति; एक बार कही हुई बात को दुबारा कहना। यह पुनरावृत्ति 'अर्थ' की होती है, शब्द की नहीं। आज 'अनुवाद' शब्द अंग्रेजी के 'ट्रांसलेशन' शब्द के अर्थ में प्रयोग किया जा रहा है। 'ट्रांसलेशन' का शाब्दिक अर्थ है 'पारवहन'; एक स्थान-बिन्दु से दूसरे स्थान-बिन्दु पर ले जाना। यह स्थान-बिन्दु भाषिक पाठ है। इसमें भी ले जाई जाने वाली वस्तु 'अर्थ' होती है, शब्द नहीं। यानी, इन दोनों ही शब्दों के व्युत्पत्तिपरक अर्थ व्यावहारिक धरातल पर समान हैं।

वस्तुत: 'अनुवाद' शब्द का भारतीय परम्परा वाला अर्थ आधुनिक सन्दर्भ में भी वैध है, और इसी को केन्द्र-बिन्दु बनाकर हम अनुवाद की प्रकृति को अच्छे ढंग से समझ सकते हैं, जैसा कि डॉ. सुरेश कुमार ने कहा है। उन्होंने अपनी पुस्तक 'अनुवाद सिद्धान्त की रूपरेखा' (1986, पृष्ठ: 22) में बहुत स्पष्टता के साथ समझाया है कि 'अनुवाद' कार्य के तीन सन्दर्भ हैं - समभाषिक, अन्यभाषिक, और संकेतांतरणपरक। समभाषिक सन्दर्भ में अर्थ की पुनरावृत्ति एक ही भाषा की सीमा के भीतर होती है, परन्तु इसके आयाम अलग-अलग हो जाते हैं। (उन्होंने इन आयामों की चर्चा विस्तृत रूप में की है)। अन्यभाषिक अनुवाद दो भाषाओं के बीच में होता है। ये दो भाषाएँ ऐतिहासिकता और क्षेत्रीयता के समन्वित मानदण्ड पर स्वतंत्र भाषाओं के रूप में पहचानी जाती हैं। व्यवहार में 'अनुवाद' शब्द से अन्यभाषिक अनुवाद का ही अर्थ लिया जाता है। संस्कृत परम्परा का 'छाया' शब्द तथा उर्दू का 'तरजुमा' शब्द इसी स्थिति का संकेत करने के लिए प्रयुक्त किए जाते हैं।

अनुवाद शब्द के उपर्युक्त दोनों सन्दर्भ डॉ. सुरेश कुमार के अनुसार, अपेक्षाकृत सीमित हैं। इनमें अनुवाद को भाषा-संकेतों का व्यापार माना गया है। वस्तुत:, भाषा-संकेत, संकेतों की एक विशिष्ट श्रेणी हैं, जिनके द्वारा संप्रेषण कार्य सम्पन्न होता है। सम्प्रेषण के लिए विभिन्न कोटियों के संकेतों को काम में लाया जाता है। इन्हें हम सामान्य संकेत कहते हैं। इनकी दृष्टि से भी हम अनुवाद शब्द की व्याख्या कर सकते हैं। इसके अनुसार एक कोटि के संकेतों द्वारा कही गई बात को दूसरी कोटि के संकेतों द्वारा पुन: कहना अनुवाद है।

इस प्रकार 'अनुवाद' शब्द की व्यापक परिधि में तीनों कोटियों के अनुवादों का स्थान है - समभाषिक अनुवाद, अन्यभाषिक अनुवाद और संकेतांतरण अनुवाद। इनमें परस्पर सम्बन्ध भी है, किन्तु सैद्धान्तिक औचित्य की दृष्टि से अन्यभाषिक अनुवाद की स्थिति केन्द्रीय है। इसलिए 'अनुवाद' शब्द से प्राय: अन्यभाषिक अनुवाद का ही अर्थ ग्रहण किया जाता है।

अनुवाद की परिभाषा और अनुवाद का स्वरूप

अनुवाद का वास्तविक स्वरूप अनुवाद की परिभाषा से ही समझा जा सकता है। अब तक अलग-अलग दृष्टि से विभिन्न विद्वानों ने अनुवाद की परिभाषा दी है। मुख्य रूप से तीन दृष्टिकोण हैं, जिनके अंतर्गत इन परिभाषाओं को रखा जा सकता है :

(1) अनुवाद एक प्रक्रिया है।

(2) अनुवाद एक (जटिल भाषिक) प्रक्रिया की परिणति है।

(3) अनुवाद एक सम्बन्ध का नाम है।

NOTES

अनुवाद को एक प्रक्रिया (भाषिक प्रक्रिया) मानने वाले प्रमुख विद्वानों की उल्लेखनीय परिभाषाएं निम्नांकित हैं : -

(अ) "मूल भाषा के सन्देश के सममूल्य सन्देश को लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत करने की क्रिया को अनुवाद कहते हैं। सन्देशों की यह मूल्यसमता पहले अर्थ और फिर शैली की दृष्टि से निकटतम एवं स्वाभाविक होती है।"

(नाइडा ई.ए, तथा टेबल आर., द थ्यौरी एंड प्रेक्टिस ऑव ट्रांसलेशन, 1969, पृ. - 12)

(ब) "एक भाषा की पाठ्यसामग्री को दूसरी भाषा की समतुल्य पाठ्यसामग्री द्वारा प्रतिस्थापित करना अनुवाद कहलाता है।"

(कैटफोर्ड, जे.सी., ए लिंग्विस्टिक थ्यौरी ऑव ट्रांसलेशन; एन एस्से इन एप्लाइज्ड लिंग्विस्टिक्स, 1965, पृ. - 20)

(स) "अनुवाद एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा सार्थक अनुभव (अर्थपूर्ण सन्देश के अर्थ) को एक भाषा-समुदाय से दूसरे भाषा-समुदाय में संप्रेषित किया जाता है।" (पट्टनायक, डी.पी., लिंग्विस्टिक्स एण्ड ट्रांसलेशन, (लेख) आस्पेक्ट्स ऑव एप्लाइड लिंग्विस्टिक्स, 1968, पृ. - 57)

(द) "अनुवाद वह प्रविधि है, जिसके माध्यम से एक भाषा में कही गई बात/विचार/सामग्री को, दूसरी भाषा में उसी क्षमता के साथ कह दिया जाता है।" (भाटिया, कैलाश चन्द्र, अनुवाद कला : सिद्धांत और प्रयोग, 1985, पृ. - 18)

(य) "भाषा ध्वन्यात्मक प्रतीकों की व्यवस्था है और अनुवाद इन्हीं प्रतीकों का प्रतिस्थापन है, अर्थात् एक भाषा के प्रतीकों के स्थान पर दूसरी भाषा के निकटतम (कथनतः और कथ्यतः) समतुल्य और सहज प्रतीकों का प्रयोग है। इस प्रकार अनुवाद निकटतम, समतुल्य और सहज प्रतिप्रतीकन प्रक्रिया है।"

(तिवारी, भोलानाथ, अनुवाद विज्ञान, 1972, पृष्ठ - 18)

(र) "अनुवाद से तात्पर्य एक भाषा की सामग्री को दूसरी भाषा में प्रस्तुत करना है। अनुवाद एक प्रकार का ऑपरेशन अर्थात् सक्रिया है। इस सक्रिया द्वारा एक भाषा की पाठ्य-सामग्री दूसरी भाषा में प्रतिस्थापित की जाती है।"

(रोहरा, सती कुमार, अनुवाद : विविध आयाम, पृष्ठ - 15)

'The Oxford Universal Dictinoary' में भी कहा गया है : "The action or process of turning from one language into another; also, the product of this, a version in a different language." (Page - 2347) अर्थात् एक भाषा से दूसरी भाषा में रूपांतरण की कार्रवाई अथवा प्रक्रिया; साथ ही इसका उत्पादन जो अलग तरह की भाषा में होता है, (अनुवाद है)।

अनुवाद को एक (जटिल भाषिक) प्रक्रिया की परिणति मानने वाले कुछ विद्वानों की प्रमुख परिभाषाएं इस प्रकार हैं :

(क) "एक भाषा या भाषा-भेद से दूसरी भाषा या भाषा-भेद में प्रतिपाद्य को स्थानांतरित करने की प्रक्रिया या उसके परिणाम को अनुवाद कहते हैं।"

हार्टमन, आर. आर. तथा स्टार्क, एफ. सी., डिक्शनरी ऑन लैंग्वेज एण्ड लिंग्विस्टिक्स, 1972, पृ. - 242)

(ख) "एक भाषा (स्रोत भाषा) की पाठ्य-सामग्री में अंतर्निहित तथ्य का समतुल्यता के सिद्धात के आधार पर दूसरी भाषा (लक्ष्य भाषा) में संगठनात्मक रूपांतरण अथवा सर्जनात्मक पुनर्गठन ही अनुवाद कहा जाता है।"

(श्रीवास्तव, रवीन्द्रनाथ, गोस्वामी, कृष्णकुमार, अनुवाद : सिद्धांत और समस्याएं, 1985)

जो विद्वान् अनुवाद को एक सम्बन्ध का नाम देते हैं, उनमें एकमात्र परिभाषा हैलिडे की है। हैलिडे के अनुसार- "अनुवाद एक सम्बन्ध का नाम है, जो दो या दो से अधिक पाठों के बीच होता है; ये पाठ समान स्थिति में समान प्रकार्य सम्पादित करते हैं। अर्थात्, दोनों पाठों का सन्दर्भ समान होता है और उनसे व्यंजित होने वाला सन्देश भी समान होता है।" (हैलिडे, एम. ए., ट्रांसलेशन; द लिंग्विस्टिक साईस एण्ड लैंग्वेज टीचिंग, 1964, पृ. 124)

जैसा हमने पहले ही कहा, ये सभी परिभाषाएँ अनुवाद के विविध पक्षों को रेखांकित करती हैं और किसी न किसी रूप में अनुवाद के स्वरूप पर प्रकाश डालती हैं।

इसमें कोई सन्देह नहीं कि अनुवाद एक भाषाई प्रक्रिया से प्राप्त परिणाम है। अधिकांश विद्वान् इसे एक प्रक्रिया ही मानते हैं। लेकिन 'अनुवाद' केवल प्रक्रिया नहीं है। यदि यह प्रक्रिया है तो इसे अनुवाद-प्रक्रिया या अनुवादकार्य कहा जाना चाहिए, न कि केवल 'अनुवाद'। यह बात भी ठीक है कि अनुवाद एक सम्बन्ध है, जो दो या दो से अधिक, किन्तु भिन्न भाषाओं के पाठों के बीच होता है; बशर्ते कि वे पाठ समानार्थक हों। इसी आधार पर डॉ. सुरेश कुमार ने सही निर्णय दिया है कि, "अनुवाद एक निष्पत्ति है - अनुवादकार्य का परिणाम है - जो अपने मूल पाठ से पर्यायता के सम्बन्ध से जुड़ा है।"

यह तो हम देख ही चुके हैं कि अनुवाद में एक भाषा में अभिव्यक्त अर्थ को दूसरी भाषा में व्यक्त किया जाता है या स्थानान्तरित किया जाता है। पहली भाषा के पाठ को मूल पाठ कह सकते हैं और दूसरी भाषा के पाठ को अनूदित पाठ। दोनों पाठों का भाषिक परिधान भले ही बदला हुआ हो, उनका अर्थ समान होना चाहिए। अर्थात्, अनुवाद के द्वारा एक भाषा में व्यक्त अर्थ को दूसरी भाषा के माध्यम से संप्रेषित किया जाता है। यह भाषान्तरण है, अर्थान्तरण नहीं। इसलिए 'अनुवाद' की सही प्रक्रिया तो यह है कि एक भाषा (स्रोत भाषा) की सामग्री को पढ़ या सुनकर, दूसरी भाषा (लक्ष्य भाषा) का प्रयोक्ता जो अर्थ ग्रहण करे लक्ष्य भाषा में उसी सामग्री के अनूदित रूप को पढ़कर या सुनकर स्रोत भाषा का प्रयोक्ता भी ठीक उसी मूल अर्थ को ग्रहण कर ले।

समग्रतः 'अनुवाद' की उपर्युक्त परिभाषाओं से गुजरते हुए हम पाते हैं कि :

(1) अनुवाद, एक भाषा (स्रोत भाषा) की सामग्री को दूसरी भाषा (लक्ष्य भाषा) में रूपांतरित करने की प्रक्रिया का परिणाम (या परिणति) है।

(2) वह सामग्री मूल पाठ कहलायेगी जिसका अनुवाद होता है और रूपांतरित सामग्री अनूदित सामग्री कहलायेगी।

(3) मूल पाठ और अनूदित सामग्री में समतुल्यता होनी चाहिए, यद्यपि यह सर्वांशतः असम्भव-सी बात है, लेकिन दोनों सामग्रियां अधिकतम साम्य रखती हों।

(4) दूसरी भाषा (लक्ष्य भाषा) प्रायः वह होती है, जिसके प्रयोक्ता पहली भाषा (स्रोत भाषा) से भिन्न सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के होते हैं।

(5) एक भाषा (स्रोत भाषा) से दूसरी भाषा (लक्ष्य भाषा) में स्थानांतरित होने वाली वस्तु को हम पाठ्यसामग्री, सार्थक अनुभव, सूचना या सन्देश-कुछ भी कह सकते हैं। ये विभिन्न नाम अनुवाद की सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि के विभिन्न पहलुओं तथा अनुवाद-कार्य के उद्देश्यों में अन्तर से जुड़े हैं। (डॉ. सुरेश कुमार, अनुवाद-सिद्धान्त की रूपरेखा, पृष्ठ - 28) जैसे, भाषागत पाठ्यसामग्री नाम से व्यक्त होने वाली सुनिश्चितता अनुवाद के भाषा-वैज्ञानिक आधार की विशेषता है जिसका विशेष उपयोग मशीनी अनुवाद में होता है। सूचना और सार्थक अनुभव अनुवाद के समान भाषा वैज्ञानिक आधार का संकेत करते हैं, और 'संदेश' से अनुवाद की पाठ-संकेत वैज्ञानिक पृष्ठभूमि परिलक्षित होती है।

अनुवाद : प्रकार एवं उपकरण

अनुवाद, जैसा कि शुरू से ही कहा जाता रहा है, एक भाषिक प्रक्रिया का परिणाम है। जब हम अनुवाद प्रकारों की चर्चा करते हैं, तो अनूदित पाठ के वर्गीकरण की चर्चा के साथ-साथ अनुवाद करने की

NOTES

प्रणालियों या पद्धतियों की भी चर्चा कर रहे होते हैं। कारण है कि अनुवाद की प्रणालियां जैसे परिणाम सामने लायेंगी, वैसे ही अनूदित पाठों के प्रकार होंगे। यानी, अनूदित पाठ और अनुवाद-प्रणालियों में गहरा सम्बन्ध है।

अत: जब हम अनुवाद के प्रकारों का वर्गीकरण करेंगे तो कई आधारों को अपनाते हुए करेंगे। ये आधार मुख्य रूप से इस प्रकार हैं : (अ) भाषा, (ब) विषय, (स) विधा, (द) अनुवाद की प्रकृति। अब हम क्रमश: इन आधारों के अनुसार अनुवाद-प्रकारों का परिचय प्राप्त करेंगे।

(अ) भाषा– भाषा के आधार पर अनुवादों के प्रकार इस प्रकार निर्धारित किये जा सकते हैं : (1) भाषा बाह्य अनुवाद-प्रकार, (2) भाषा केन्द्रित अनुवाद-प्रकार, (3) मिश्रित अनुवाद-प्रकार।

पुन: भाषा बाह्य वर्ग में दो प्रकार के अनुवादों को लिया जाता है :

(क) पाठ के आकार की दृष्टि से - पूर्ण अनुवाद और आंशिक अनुवाद।

(ख) अनुवाद के अभिकर्त्ता की दृष्टि से - मानव अनुवाद और मशीनी अनुवाद।

पूर्ण अनुवाद का तात्पर्य है– मूलभाषा के पाठ के प्रत्येक अंश का अनुवाद, और यदि मूल पाठ के कुछ अंश छोड़ दिए जायें तो इस प्रकार से किए गए अनूदित पाठ को आंशिक अथवा अपूर्ण अनुवाद कहेंगे।

मानव अनुवाद मनुष्यकृत अनुवाद है, जिसमें अनुवाद-प्रक्रिया के सभी चरण मनुष्य द्वारा सम्पन्न किए जाते हैं। मनुष्य ही ऐसे अनुवाद में मूलभाषा के पाठ का विश्लेषण करता है एवं उसके अर्थग्रहण की प्रक्रिया पूरी करता है। स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की तुलना कर अर्थान्तरण की प्रक्रिया से गुजर कर, उपयुक्त पर्यायों का चयन करता है और अंतत: अनूदित पाठ का पुनर्गठन करता है। इसके विपरीत मशीनी अनुवाद में अनुवाद-प्रक्रिया सम्पन्न करने में भौतिक साधनों का प्रयोग किया जाता है। मशीनी अनुवाद का सर्वोत्तम उदाहरण कम्प्यूटर की सहायता से किया गया अनुवाद है। आज के वैज्ञानिक युग में कम्प्यूटर के प्रयोग ने अनुवाद के क्षेत्र में आशातीत सफलता दिलाई है।

यहाँ हम कम्प्यूटर-अनुवाद के विषय में थोड़ा विस्तारपूर्वक जानकारी करेंगे, क्योंकि यह अनुवाद की नई मशीनी तकनीक है।

कम्प्यूटर-अनुवाद– कम्प्यूटर-विज्ञान के संस्थापक नार्बर्ट वाइनेर ने सन् 1947 में कहा था, "जहाँ तक मशीनी अनुवाद का प्रश्न है, मुझे यह करने में हिचक नहीं होती कि विभिन्न भाषाओं के शब्दों की सीमाएँ इतनी अधिक स्पष्ट हैं और इनके भावात्मक तथा सार्वदेशिक अर्थ इतने अधिक व्यापक हैं कि अर्द्ध-यांत्रिक अनुवाद की कोई व्यवस्था अधिक सम्भव नहीं जान पड़ती।"

इस कथन को बदलने के प्रयत्न चलते रहे और निराशा को दूर करने के लिए कम्प्यूटर से जुड़े वैज्ञानिकों ने अपने अन्वेषण जारी रखे। 7 जनवरी, 1954 को, यानी नार्बर्ट वाइनेर के उपर्युक्त कथन के मात्र 7 वर्ष बाद ही, न्यूयार्क में विश्व के पहले अनुवादक-कम्प्यूटर का प्रदर्शन किया गया। आई. बी. एम. (इंटरनेशनल बिजनेस मशीन्स) नामक कम्पनी ने इस कम्प्यूटर का निर्माण किया था जिसमें गणित से सम्बन्धित कुल 60 वाक्यों का रूसी से अंग्रेजी में अनुवाद किया जा सकता था।

गुणाकर मुले (कम्प्यूटर क्या है, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 1986, पृष्ठ 47), लिखते हैं कि अनुवाद करते समय हमारा जब भी अपरिचित शब्दों से सामना होता है, तो हम उन्हें शब्दकोश में देखते हैं और फिर व्याकरण के नियमों के अनुसार वाक्य में सजाते हैं। कम्प्यूटर के लिए यह काम आसान नहीं है। इसमें अनेक तकनीकी कठिनाइयाँ हैं। उदाहरण के लिए, पहले अनुवादक-कम्प्यूटर के लिए अनुवाद के नियमों का जो विशेष 'प्रोग्राम' तैयार किया गया था, उसमें 2500 सूचनाएँ थीं। गणित के जटिल सवालों को हल करने के लिए भी प्रोग्रामों में इतनी अधिक सूचनाएँ नहीं होतीं। अत: अनुवादक-कम्प्यूटरों के निर्माण की तकनीकी कठिनाइयां स्पष्ट हैं।

इधर के दशकों में अनुवादक-कम्प्यूटरों का विकास और निर्माण करने का अच्छा प्रयास किया गया है।

गुणाकर मूले ने पहले अनुवादक-कम्प्यूटर को सन् 1954 में प्रदर्शित बताया है, जबकि डॉ. कैलाशचन्द्र भाटिया ने कम्प्यूटर-अनुवाद का ऐतिहासिक परिदृश्य प्रस्तुत करते हुए सन् 1939 में ही इस तरह के

प्रयासों और प्रदर्शन की जानकारी दी है (द्रष्टव्य-अनुवाद कला : सिद्धान्त और प्रयोग, दिल्ली, 1985, पृष्ठ 33)।

डॉ. भाटिया यंत्रानुवाद का इतिहास बताते हुए उल्लेख करते हैं कि यंत्रानुवाद का प्रारम्भ सन् 1956 में जार्जटाउन विश्वविद्यालय वाशिंगटन के 'मशीन ट्रांसलेशन रिसर्च तथा लैंग्वेज प्रोजेक्ट' के अन्तर्गत किया जा चुका था। यद्यपि इससे भी पहले सन् 1939 में रूस के दो वैज्ञानिकों श्री हिमनोंव तथा त्रायनस्की ने इस दिशा में पहल प्रारम्भ कर दी थी जिसका प्रदर्शन भी 31 जुलाई, 1944 में मास्को में किया था। इस मॉडल की क्षमता (स्मरणशक्ति) मात्र 1000 शब्द थी। वाशिंगटन में भी इस दिशा में शोध का प्रारम्भ तब हुआ, जब सन् 1954 में न्यूयार्क स्थित आई.बी.एम. का कम्प्यूटर रूसी का अंग्रेजी में अनुवाद करने में सफल हो गया जिसका प्रारम्भ डॉ. वीवर के निर्देशन में सन् 1949 में प्रारम्भ कर दिया गया था।

कम्प्यूटर से अनुवाद करने के लिए एक विशेष भाषिक प्रोग्रामिंग भाषा विकसित करनी होती है। इस दिशा में पहला प्रयास एम. आई. टी. ने किया। इस कम्पनी ने 'कोमिट' नामक प्रोग्रामिंग भाषा का विकास किया। इस दिशा में एक और प्रयास 'नेशनल ब्यूरो ऑफ स्टैंडर्ड' नामक केन्द्र ने किया। वाशिंगटन की महिला गणितज्ञ श्रीमती आइडा रोड्स ने एक प्रोग्रामिंग भाषा विकसित की।

गत तीन दशकों में अनेक विकसित अनुवादक-कम्प्यूटरों का निर्माण किया गया है। इनमें रूसी से अंग्रेजी और अंग्रेजी से रूसी में अनुवाद करने वाले कम्प्यूटर सर्वाधिक हैं। विश्वभर में सन् 1958 तक तकनीकी लेखों का अनुवाद करने वाले केवल तीन कम्प्यूटर थे। इनमें से सबसे उन्नत कम्प्यूटर सोवियत संघ में निर्मित था जिसकी भंडारण क्षमता 952 अंग्रेजी शब्द और 1973 रूसी शब्दों की थी, बाद में और भी विकसित कम्प्यूटर बनाये गए। सोवियत संघ में फ्रांसीसी-रूसी अनुवादक-कम्प्यूटर के सत्रह प्रोग्राम तैयार हुए जिनमें 8500 सूचनाएँ थीं। सन् 1963 के पश्चात् ऐसे रूसी-अंग्रेजी कम्प्यूटर बन गए थे जो एक दिन में तकनीकी लेखों के एक लाख शब्दों का अनुवाद करने में समर्थ थे। आज निरन्तर ऐसे विकसित कम्प्यूटर बनाए जा रहे हैं जिनकी क्षमता दस लाख शब्दों से भी ऊपर है।

जापान विश्व में तकनीकी अन्वेषणों के लिए विख्यात है। अनुवादक-कम्प्यूटर के विकास के क्षेत्र में भी जापान ने नये कीर्तिमान स्थापित किये हैं। 'अनुवाद' पत्रिका (भारतीय अनुवाद परिषद्, नई दिल्ली) के 40 वें अंक में एक सूचना का उल्लेख है – टोकियो की एक फर्म ने जापानी-अंग्रेजी अनुवाद का एक कम्प्यूटर यंत्र तैयार किया है। यह यंत्र एक घंटे में 3000 शब्दों का अनुवाद प्रस्तुत करता है। परन्तु इस तरह किया गया अनुवाद एकदम सुनिश्चित नहीं होता, उसका सम्पादन करना होता है। अनुवाद की गति तो तेज है, पर मूल जापानी वाक्यों को उस यंत्र में डालने में समय लगता है। इसके द्वारा एकरूप शब्दावली वाले अनुवादों में कम समय लगता है और खर्च भी कम पड़ता है। तकनीकी साहित्य एवं समाचार-लेखों का अनुवाद करना अधिक सुगम है। अनुवाद से पहले यंत्र में व्यक्तिवाचक संज्ञाओं को भरा जाता है। इस शब्दकोश में लगभग चालीस हजार शब्द हैं और आवश्यकतानुसार इन्हें घटाया-बढ़ाया जा सकता है।

जापान ने यू. एन. 700 नामक मिनी कम्प्यूटर और भी विकसित बनाया है। तोशिबा कार्पोरेशन द्वारा निर्मित इस अनुवादक-कम्प्यूटर से अंग्रेजी से जापानी में अनुवाद करना अधिक शुद्ध एवं तीव्र गति से सम्भव है। माना जाता है कि इस कम्प्यूटर द्वारा 90 प्रतिशत से भी अधिक शुद्ध अनुवाद हो सकता है और यह कम्प्यूटर एक घंटे में लगभग 5000 शब्दों का अनुवाद करने में समर्थ है। इस कम्प्यूटर का निर्माण पेटेन्ट दस्तावेजों तथा वैज्ञानिक एवं तकनीकी लेखों का सही अनुवाद करने के लिए किया गया है। इसके सॉफ्टवेयर में 30,000 बुनियादी शब्दों का समावेश किया गया है, साथ ही विशेष विषयों के 50,000 अतिरिक्त शब्दों की व्यवस्था भी की गई है।

भारत में देवनागरी कम्प्यूटर

हमारे यहाँ भी देवनागरी कम्प्यूटर के निर्माण में सफलता प्राप्त की जा चुकी है। आई. आई. टी., कानपुर ने द्विभाषी कम्प्यूटर का निर्माण किया है। पहला द्विभाषी कम्प्यूटर 'सिद्धार्थ' है जिसमें हिन्दी के स्थान पर तमिल का भी उपयोग किया जा सकता है। तमिल व्यवस्था का नाम 'तिरुवल्लवर' है। यह कम्प्यूटर पिलानी के टेक्नोलॉजी संस्थान और डी. सी. एम. के सहयोग से तैयार किया गया। आई.आई.टी., कानपुर ने जो अंग्रेजी-हिन्दी कम्प्यूटर तैयार किया उसमें अंग्रेजी की 7 बिट मानक संकेत-प्रणाली को 8 बिट

NOTES

में विस्तृत करके देवनागिरी के लिए स्थान बनाया गया है।

हमारे यहाँ की परिस्थितियों के लिए सर्वाधिक उपयुक्त और विकसित कम्प्यूटर 'लिपि' माना जाता है। यह एक त्रैभाषिक कम्प्यूटर है, जिसमें अंग्रेजी के साथ हिन्दी, तेलुगु, कन्नड, मलयालम आदि में से किन्हीं दो भाषाओं की व्यवस्था सम्भव है। फिलहाल इसमें अंग्रेजी के अतिरिक्त हिन्दी और तेलुगु के संसाधक (प्रोसेसर) तथा मुद्रण की व्यवस्था है। इनके अतिरिक्त कुछ संस्थानों ने अंग्रेजी-हिन्दी शब्द-संसाधक (वर्ड-प्रोसेसर) भी बनाये हैं, जैसे - 'शब्दमाला', 'आलेख' इत्यादि।

कुछ और द्विभाषी कम्प्यूटर निर्माणधीन हैं। जहां तक अनुवाद का प्रश्न है, इस दिशा में बहुत कम सफलता मिली है। इस दिशा में सर्वाधिक प्रयत्न आई.आई.टी., बम्बई के सुप्रसिद्ध गणितज्ञ डॉ. प्रेम किशोर कुलश्रेष्ठ ने किया है। वे सन् 1962 ई. में वेनिस में आयोजित यंत्रानुवाद पर हुई संगोष्ठी में गए थे और सन् 1963 में उन्हें यूनेस्को की ओर से 'मशीनी अनुवाद' के लिए फैलोशिप भी मिली थी। सन् 1966 में उन्होंने 'भारत-संरचना' नामक पुस्तक भी लिखी।

कम्प्यूटर से अनुवाद– कम्प्यूटर-अनुवाद में निम्नलिखित तीन घटक अनिवार्य हैं :

1. मशीन - कम्प्यूटर, 2. उपयुक्त प्रक्रिया, 3. वैज्ञानिक रूप से संगठित सुविचारित भाषा सूचनाएँ।

कम्प्यूटर मुख्यत: दो तरह के होते हैं, एक तो 'एनालॉग कम्प्यूटर' जिनसे किसी चीज की मात्रा का मापन किया जाता है। यह मापन 'तुलना' या 'सादृश्य' के द्वारा होता है। दूसरे 'डिजिटल कम्प्यूटर' जिनमें किसी चीज की गणना के लिए '1' और '0' का प्रयोग (बाइनरी डिजिट्स) जिन्हें 'बिट' कहते हैं, की प्राय: गणितीय एवं तार्किक क्रियाएँ की जाती हैं। हिन्दी में 'एनालॉग कम्प्यूटर' को 'अनुरूपी कम्प्यूटर' और 'डिजिटल' को 'आंकिक कम्प्यूटर' कह सकते हैं।

मोटे तौर पर कम्प्यूटर की संरचना में निम्नलिखित घटक होते हैं :

(i) **इनपुट डिवाइस** – यह कम्प्यूटर में सूचनाएँ (डाटा) भरने के लिए, यह टाइपराइटर की तरह होती है।

(ii) **केन्द्रीय संसाधन इकाई (सेंट्रल प्रोसेसिंग यूनिट)–** इसे संक्षेप में 'सी.पी.यू.' कहा जाता है। यह सर्वाधिक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जिसमें निम्नलिखित तीन इकाइयाँ होती हैं :

(i) नियंत्रण इकाई (कंट्रोल यूनिट), (ii) स्मृति इकाई (मेमोरी यूनिट), (iii) गणितीय इकाई (अरथमेटिक यूनिट)।

नियंत्रण इकाई सभी प्रक्रियाओं पर नियंत्रण रखती है। यह मनुष्य के मस्तिष्क की तरह है। सबसे पहले यही इकाई देखती है कि प्रोग्राम से क्या निर्देश लेना है। फिर यह उस निर्देश की संपूर्ति के लिए डाटा उपलब्ध कराती है और यदि डाटा को एकत्र करना है तो उसको एकत्र करती है। एक निर्देश के बाद दूसरे निर्देश का पालन कराती है।

स्मृति इकाई डाटा (या प्रोग्राम तथा डाटा) को संचित करती है। यह इकाई नियंत्रण के बिना कुछ नहीं कर सकती।

गणितीय तार्किक इकाई (ALU) नियंत्रण इकाई के निर्देशन में कार्य करती है। इसमें सर्किट्स होते हैं और यह गणितीय प्रक्रियाओं, जोड़, घटाना, गुणा, भाग तथा अनेक तार्किक प्रक्रियाओं को सम्पन्न करने की क्षमता रखती है। इसमें अस्थायी भण्डारण (टेम्परेरी स्टोरेज) होते हैं जिन्हें रजिस्टर कहते हैं। स्मृति (मेमोरी) से 'कैरेक्टर्स' (चिह्न कह लें) पढ़े जाते हैं।

स्मरणीय है कि ALU (गणितीय तार्किक इकाई) 'मेमोरी-लोकेशन', पर सीधा कोई कार्य नहीं कर सकती। पहले इसे अपने रजिस्टर में डाटा लाना पड़ता है।

(iii) **निर्गम इकाई (आउटपुट यूनिट)** – यह इकाई केन्द्रीय संसाधन इकाई (सी.पी.यू.) से डाटा प्राप्त करती है और सामान्यत: उसे मानव द्वारा पढ़ने योग्य रूप में प्रस्तुत करती है। इसमें डाटा को स्क्रीन पर दिखाने की व्यवस्था होती है, जिसे VDU (विजुअल डिस्प्ले यूनिट) कहते हैं और मुद्रण की भी व्यवस्था होती है।

NOTES

(iv) **बृहद् भण्डारण इकाई (मास स्टोरेज यूनिट)** – यह इकाई अधिक स्थायी रूप से सूचनाओं को भण्डारित करती है। डिस्क, टेप या फ्लॉपी डिस्क भण्डारण इकाई के रूप में प्रायः प्रयोग किए जाते हैं।

कम्प्यूटर की संरचना को हम सांकेतिक रूप से निम्नांकित रेखाचित्र द्वारा समझ सकते हैं :

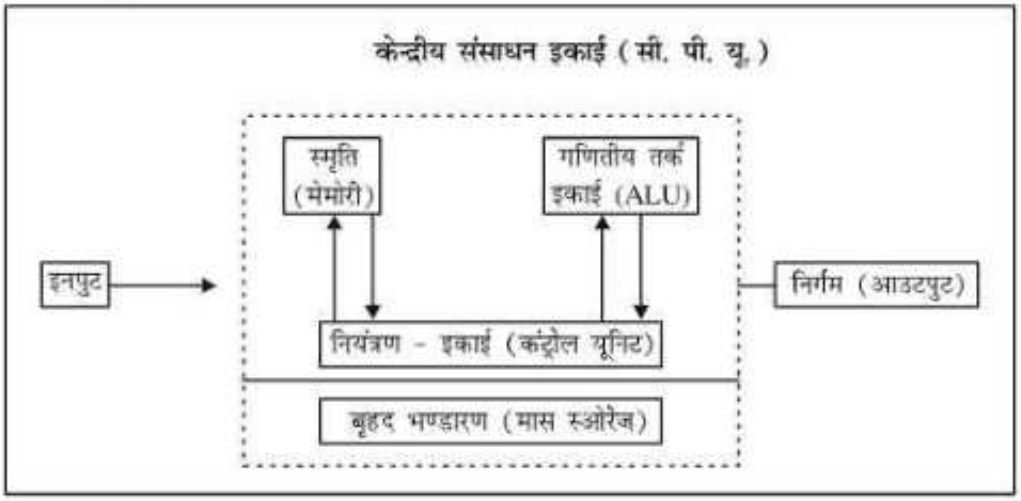

चित्र : कम्प्यूटर

संक्षेप में कम्प्यूटर की कार्यप्रणाली भाषा के सन्दर्भ में मात्र इतनी है कि वह 'इनपुट डिवाइस' (टाइपराइटर के की-बोर्ड की तरह कार्य करने वाले हिस्से) से कम्प्यूटर में भेजे जाने वाले अक्षर को अपनी भाषा में बदल देता है - कम्प्यूटर की भाषा O और I से बनती है। जैसे - हमने A या मान लें हिन्दी में (अ) दबाया, तो कम्प्यूटर के भीतर वह तुरन्त उसकी अपनी कम्प्यूटर भाषा में OIOI के हिसाब से अलग तरह से परिवर्तित हो जाएगा, इसी तरह अन्य अक्षर भी। निम्न चित्र में इसे देखें:

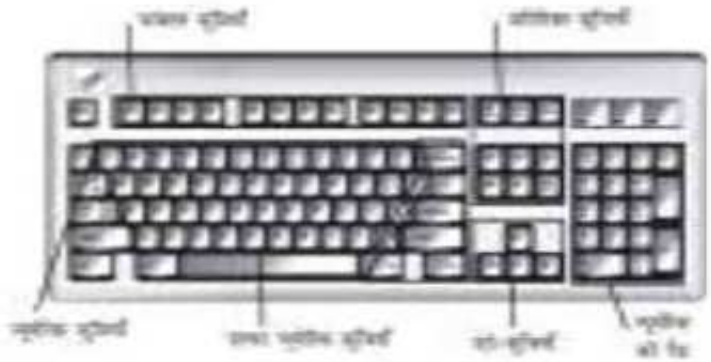

चित्र : की-बोर्ड

स्व प्रगति की जाँच करें:

1. अनुवाद को परिभाषित कीजिए।
2. कम्प्यूटर मुख्यतः कितने प्रकार के होते हैं? स्पष्ट करें।

NOTES

दरअसल कम्प्यूटर में अपनी बुद्धि नहीं है। उसमें बुद्धि भरी जाती है। यह भरी जाने वाली बुद्धि 'प्रोग्राम' कहलाती है। यानि, हम एक 'डिस्क' में सांकेतिक भाषा में 'निर्देश' अंकित करके कम्प्यूटर से जोड़ देते हैं। बटन दबाते ही कम्प्यूटर तदनुसार कार्य करता है, स्क्रीन पर आने वाली सूचनाओं के अनुसार हम आगे कार्य करते जाते हैं। कम्प्यूटर उन्हीं निर्देशों के अनुसार काम करता चलता है।

ये निर्देश - 'प्रोग्राम' कहलाते हैं। प्रोग्राम 'फ्लोचार्ट' के रूप में बनाया जाता है। एक उदाहरण 'फ्लो चार्ट' का देखें :

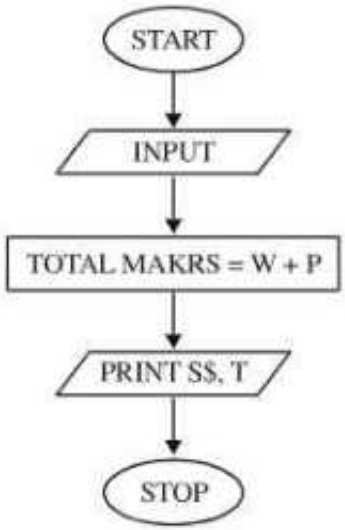

मान लो S$ = विद्यार्थी का नाम।

W = विद्यार्थी के लिखित परीक्षा में अंक।

P = विद्यार्थी के प्रायोगिक परीक्षा में अंक।

T = कुल योग

इसे प्रोग्राम बनाने वाला ऐसे लिखेगा - (S$ = विद्यार्थी का नाम अकारादि क्रम से)।

```
10 INPUT S$, WP
20 LET T = W + P
30 PRINT S$, T
40 END
```

यहाँ प्रत्येक पंक्ति में तीन बातें हैं :

10	INPUT	S$, W, P
पंक्ति संख्या	कमाण्ड	इनपुट-सूचना के लिए (वेरियेबल्स)

स्क्रीन पर सभी तीन स्थितियां एक-एक रिक्त स्थान के साथ दर्शाई जाती हैं।

पंक्ति संख्या, 10, 20, 30, 40 ..... आदि के रूप में दी जाती हैं जिससे आवश्यकता पड़ने पर बाद में पंक्तियों के मध्य में वक्तव्यों को जोड़ा जा सके।

यदि हमें पंक्ति सं. 10 और 20 में कुछ जोड़ना पड़ रहा है, तो उसे हम 15 पंक्ति संख्या दे सकते हैं। कम्प्यूटर अपने आप पंक्ति संख्या 15 को पंक्ति संख्या 10 के बाद और पंक्ति संख्या 20 से पहले जोड़ लेगा। कम्प्यूटर एक के बाद दूसरा वक्तव्य जोड़ता चला जाएगा, जब तक कि END तक नहीं पहुंचे।

कमाण्ड, विभिन्न निर्देश हैं जिनसे कम्प्यूटर यह जान पाता है कि अब क्या करना है। ये कमाण्ड हैं - इनपुट, प्रिंट, LET, GO TO आदि।

वेरियेबल्स, कॉलम हैं जिनमें सूचना एकत्र की जाती है। यह सूचना है, जो गणना आदि के लिए हम कम्प्यूटर में भरते हैं।

अलग-अलग कम्प्यूटर की कार्यप्रणाली अलग-अलग होती है।

यहाँ विस्तार में जाने की आवश्यकता नहीं है। हम पुनः देवनागरी कम्प्यूटर पर आते हैं।

आई. आई. टी. कानपुर द्वारा विकसित देवनागिरी कम्प्यूटर का कुंजीफलक (keyboard) इस प्रकार का है :

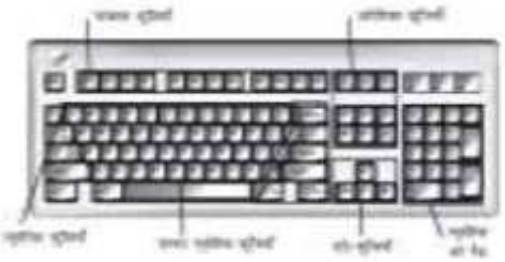

कम्प्यूटर से अनुवाद के लिए सबसे महत्वपूर्ण निम्नलिखित दो बाते हैं :

1. कोश (डिक्शनरी), 2. भाषिक विश्लेषणात्मक अध्ययन।

कम्प्यूटर से अनुवाद तब तक सम्भव नहीं है, जब तक कि द्विभाषी कोश तैयार करके न रखा जाये। इसके लिए सबसे अच्छा यह रहेगा कि प्रयोग के आधार पर आवृत्तिपरक शब्दावलियाँ प्रस्तुत की जाएँ। हिन्दी में इस दिशा में भाषाविद् डॉ. कैलाश चन्द्र भाटिया और जगन्नाथन के कार्य उल्लेखनीय हैं। इनकी सहायता ली जा सकती है।

प्रारम्भ में भाषातमक विश्लेषण और कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग को साथ-साथ रखा गया। लेकिन इससे शुद्ध अनुवाद में कठिनाई उपस्थित हुई, अतः अनुभव किया गया कि दोनों को पृथक्-पृथक् रखना ठीक रहेगा। मुख्य कारण यह भी था कि भाषिक विश्लेषण में किसी कारणवश यदि हेर-फेर करना पड़े तो सारा प्रोग्राम बदलना पड़ जाता है और प्रोग्राम का निर्माण बहुत श्रमसाध्य कार्य है।

अनुवाद का मुख्य कार्य विश्लेषण पर आधारित है। पहले शब्द और सन्दर्भ के अनुसार उस शब्द के अर्थ को निश्चित करना होता है, तब अर्थग्राम को अन्य अभिप्रेय भाषा में रूपान्तरित किया जाता है। यह कार्य सामान्यतः शब्द के स्तर पर किया जाता है। लेकिन कभी-कभी रूपग्राम और आक्षरिक संरचना (स्वर तथा बलाघात के साथ) भी अर्थ को निश्चित करने में सहायक होती है।

डॉ. कैलाशचन्द्र भाटिया ने भाषिक विश्लेषण पर अच्छा अध्ययन प्रस्तुत किया है। साथ ही वे उदाहरणों सहित हिन्दी में भाषिक संरचना विषयक कठिनाइयों पर ध्यान दिलाते हुए कहते हैं कि हिन्दी में 'से' परसर्ग रूप में भी है और क्रिया रूप में भी। 'से' सामान्यतः करण-कारक का चिह्न है और अपादान का भी, पर 'मुझसे चला नहीं जाता' में कर्तृत्व की ओर संकेत भी है। शब्दों, क्रियायों, प्रत्यय-उपसर्गों से ही काम नहीं चलता, वरन् भाषा के रचनात्मक स्वरूप पर भी वाक्यगर्भित अर्थ निर्भर करता है। एक ओर वाक्य के अन्तर्गत पदबन्धों की संरचना का महत्व बढ़ गया है तो दूसरी ओर प्रोक्ति-विश्लेषण आवश्यक हो गया है।

भाषा के वैज्ञानिक विश्लेषण का कार्य सर्वप्रथम पाणिनि ने प्रारम्भ किया था, पर आज विश्व के अनेक देश इस ओर अग्रसर में हैं। प्रत्येक भाषा की विशेषताएं भिन्न-भिन्न होती हैं। सर्वनाम सरलतम होते हुए भी तब जटिलता ले लेते हैं, जब उनका प्रभाव क्रिया की अन्विति पर पड़ता है। जर्मन, तेलुगु आदि भाषाओं में संधिविधान की कठिनाई है, तो हिन्दी के सन्दर्भ में 'लिंग-विधान' अत्यधिक समस्या लिए हुए है क्योंकि क्रिया लिंगानुसार (कर्त्ता तथा कर्म के अनुसार भी) परिवर्तित होती है। हिन्दी की संयुक्त-क्रियाओं की जटिलता सर्वविदित है। इस प्रकार अनेक भाषिक पक्ष परस्पर इस प्रकार गुंथे हुए हैं कि उन्हें अलग-अलग करना भी सम्भव नहीं है।

कम्प्यूटर, व्याकरण के प्रदत्त सिद्धान्तों और कोश की सहायता से स्रोत भाषा के वाक्य को लक्ष्य भाषा में रूपान्तरित कर सकता है। इससे शब्दशः अनुवाद तो आसानी से हो जायेगा, किन्तु वह सफल नहीं हो पायेगा, ऐसा अनुमान है। कारण यह है कि शब्दशः अनुवाद कई बार बेतुका होता है। ऐसी स्थिति में यह

NOTES

किया जा सकता है कि कम्प्यूटर द्वारा किये गये शाब्दिक अनुवाद का पुन: किसी उपयुक्त व्यक्ति द्वारा परिमार्जन-सम्पादन किया जाये। इससे समय और श्रम की बचत हो जाएगी, साथ ही शब्दावली की एकरूपता भी बनी रहेगी।

इन सब कठिनाइयों को समझते हुए हमें डॉ. कैलाशचन्द्र भाटिया का यह सुझाव उपयुक्त लगता है कि 'व्याकरणिक संरचना' का जितना सूक्ष्म विश्लेषण, शब्द की जितनी सूक्ष्मातिसूक्ष्म अर्थच्छटाओं (शब्दकोश) के साथ वाक्यान्तर्गत पदबन्धों की संरचना तथा प्रोक्ति संरचना के नियमों-उपनियमों को कम्प्यूटर की 'प्रोग्रामिंग' की विधि से दिया जायेगा, उतना ही अनुवाद मूल के निकट होगा और सम्पादन में कम समय लगेगा। यह प्रक्रिया उन दोनों भाषाओं पर लागू होगी जिनके मध्य 'ट्रांसफर व्याकरण' का निर्माण करना है जिससे कम्प्यूटर में प्रस्थापित 'इन्टरप्रेटर' ठीक-ठीक अनुवाद-कार्य सम्पादन कर सके।

हमारे यहाँ अनुवादक कम्प्यूटर की दिशा में उल्लेखनीय कार्य किया जा रहा है। आई. आई. टी., कानपुर; बिड़ला इंस्टीट्यूट पिलानी; डी. सी. एम. तथा हिन्दुस्तान आदि संस्थाओं द्वारा द्विभाषी कम्प्यूटर्स का विकास किया गया है। डॉ. ओम विकास के प्रयत्नों से इलेक्ट्रॉनिकी विभाग, वैज्ञानिक प्रौद्योगिकी विभाग ने राजभाषा विभाग के सहयोग से 'अनुवाद प्रारूप' तैयार करने के लिए कम्प्यूटर से वैज्ञानिक अनुवाद-कार्य की योजना बनायी है। अनेक अन्य संस्थान भी इस दिशा में सक्रिय हैं। अंग्रेजी से हिन्दी और हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के मध्य परस्पर अनुवाद की दिशा में प्रयत्न किये जा रहे हैं।

कम्प्यूटर से वैज्ञानिक साहित्य के अनुवाद की दिशा में और भी प्रयास अपेक्षित हैं। हमारा विनम्र सुझाव है कि संस्कृत पर आधारित उन सिद्धान्तों को वैज्ञानिक शब्दावली के निर्माण में अपनाया जाये, जो डॉ. रघुवीर ने अपनाये थे। निर्मित शब्दों का एक मानक कोश भरकर, हिन्दी और अंग्रेजी भाषाओं की भाषिक संरचना को ध्यान में रखकर 'प्रोग्राम' तैयार किया जाए और एक ऐसा 'सॉफ्टवेयर' विकसित किया जाए कि वैज्ञानिक साहित्य का अनुवाद एकरूपता के साथ, शीघ्र ही सम्पन्न हो सके।

भाषा केन्द्रित अनुवाद-प्रकारों को डॉ. सुरेश कुमार ने निम्नलिखित 5 वर्गों में रखा है :

(1) भाषा-संरचना, (2) भाषा-शैली, (3) भाषा-माध्यम (4) भाषा-प्रतीक; और (5) भाषापाठ-प्रारूप।

यह वर्गीकरण विशुद्ध भाषा-विज्ञान की दृष्टि से किया गया है। इसमें भाषा-संरचना वाला वर्ग संरचनात्मक भाषा-विज्ञान की मान्यताओं पर आधारित है जिसमें भाषा-संरचना के विश्लेषणात्मक स्तर, विशेष रूप से व्याकरणिक स्तर की श्रेणियों के अधिक्रम को देखा जाता है। यह सभी जानते हैं कि दो भाषाओं की संरचना बिल्कुल एक जैसी नहीं होती। उनकी समस्त व्यवस्थाओं में पूर्णत: सममूल्यता नहीं होती, क्योंकि सभी भाषाएँ स्वनिष्ठ होती हैं और उनकी इकाइयों तथा श्रेणियों की सार्थकता उन भाषाओं के भीतर आपसी सम्बन्धों पर आधारित होती है। अत: एक भाषा की पाठ्यसामग्री को दूसरी भाषा में स्थानान्तरित तो किया जा सकता है, किन्तु दोनों भाषाओं में संरचना की समग्रता के स्तर पर सममूल्यता स्थापित नहीं की जा सकती। इसलिए व्यावहारिक रूप में कोई भी अनुवाद समग्र अनुवाद नहीं हो सकता। इसलिए मूलभाषा पाठ (या स्रोत-भाषा पाठ) की भाषिक संरचना और लक्ष्य-भाषा पाठ की भाषिक संरचना के बीच संवाद-स्तर स्थापित किया जा सके तो उसे 'परिसीमित' अनुवाद की संज्ञा दी जा सकती है। इस 'परिसीमित' अनुवाद के चार भेद किए गए हैं – स्वनिमिक, लेखिमीय, व्याकरणिक और शब्द-कोशीय। (द्रष्टव्य, डॉ. सुरेश कुमार की पुस्तक, अनुवाद सिद्धान्त की रूपरेखा, 1982, पृष्ठ 76)

जहाँ तक व्याकरणिक स्तर की श्रेणियों के अधिक्रम के अनुसार अनुवाद के प्रकारों की बात है, मूलभाषा के पाठ से लक्ष्य-भाषा पाठ में वाक्य-प्रति-वाक्य, उपवाक्य-प्रति-उपवाक्य, पदबंध-प्रति-पदबंध, पद-प्रति-पद और रूप-प्रति-रूप/प्रत्यय-प्रति -प्रत्यय अनुवाद किया जाता है। इनमें से अंतिम दो कोटियाँ विशेष महत्व रखती हैं। मानव-अनुवाद में भी यह एक सीमा तक मिलता है, किन्तु व्यवस्थित रूप में न होकर, जहाँ-तहाँ मिलता है। इसे श्रेणीबद्ध अनुवाद कहते हैं। जहाँ यह स्थिति न हो, यानी मूल पदबन्ध का अनुवाद उपवाक्य में हो या इसके विपरीत हो – उसे 'मुक्त अनुवाद' कहा जाता है।

मिश्रित अनुवाद के प्रकारों में कई प्रकार के अनुवादों की गणना की जा सकती है, लेकिन वे विशेष उद्देश्यों से प्रेरित होते हैं, इसलिए इनका व्यवहार सीमित है। इनमें सूचनानुवाद, परोक्ष अनुवाद, सारानुवाद, रूप प्रधान अनुवाद, पुनरनुवाद आदि की चर्चा की जा सकती है।

(ब) विषय– विषय के आधार पर हम अनुवाद के प्रकारों को इस प्रकार निर्धारित कर सकते हैं - सरकारी रिकार्डों का अनुवाद, विधि-साहित्य का अनुवाद, वैज्ञानिक साहित्य का अनुवाद, सर्जनात्मक साहित्य का अनुवाद इत्यादि। लेकिन यह वर्गीकरण बहुत व्यापक है।

(स) विधा– विधा को आधार बनाकर यदि हम अनुवाद के प्रकार निर्धारित करें, तो प्राय: साहित्यिक अनुवादों के ही वर्ग बना सकेंगे। इस प्रकार के अनुवादों को हम काव्यानुवाद, नाटकानुवाद, कथानुवाद, कथेतर गद्यानुवाद आदि वर्गों में रख सकते हैं। यह वर्गीकरण एक सीमित वर्गीकरण है, क्योंकि इसमें साहित्येतर अनुवादों को वर्गीकृत करने की गुंजाइश नहीं है।

(द) अनुवाद की प्रकृति– अनुवाद की प्रकृति के आधार पर भी हम अनुवाद का वर्गीकरण कर सकते हैं, इस आधार पर डॉ. भोलानाथ तिवारी ने अनुवादों के निम्नांकित प्रकार दिए हैं : (द्रष्टव्य, अनुवाद विज्ञान, पृष्ठ 24)

(1) मूलनिष्ठ अनुवाद, (2) मूलमुक्त (मूलाधारित अनुवाद) (3) शब्दानुवाद (4) भावानुवाद (5) छायानुवाद (6) सारानुवाद (7) अनुवाद (8) रूपान्तरण (9) वार्तानुवाद अथवा आशु-अनुवाद।

यह अपेक्षाकृत व्यापक वर्गीकरण है। कभी-कभी तो यह भी पता लगाना कठिन हो जाता है कि हम जो अनुवाद पढ़ रहे हैं, वह किस श्रेणी में आएगा। यह भी निश्चित नहीं हो पाता कि हम जिस कृति का अनुवाद करने जा रहे हैं, उसमें किस वर्ग की अनुवाद-प्रक्रिया को सर्वांशत: स्वीकार करके चला जाए। कई बार एक से अधिक तरह के अनुवाद-वर्गों का आश्रय लेना पड़ता है। डॉ. कैलाश चन्द्र भाटिया ने अपनी पुस्तक 'अनुवाद कला : सिद्धान्त और प्रयोग' (दिल्ली 1985) में सुप्रसिद्ध नाइडा द्वारा निर्दिष्ट अनुवाद की तीन प्रणालियों को ठीक मानकर उनका निवेदन किया है। हमारे विचार से यह तीन प्रणालियाँ ही समुचित हैं। भाषाविद् नाइडा द्वारा निर्दिष्ट अनुवाद की तीन प्रणालियाँ इस प्रकार हैं : 1. शाब्दिक अनुवाद, 2. भावानुवाद, 3. पर्यायों के आधार पर अनुवाद।

1. **शाब्दिक अनुवाद–** इस तरह के अनुवाद में एक भाषा से दूसरी भाषा के मात्र शब्द ही बदल दिए जाते हों, ऐसी बात नहीं है। बल्कि शब्दों के परिवर्तन के साथ-साथ दूसरी भाषा का व्याकरणिक रूप भी अपनाया जाता है। वैज्ञानिक साहित्य आदि के अनुवाद में, जिसमें पारिभाषिक शब्दावली की प्रचुरता होती है, पर 'शाब्दिक अनुवाद' का सिद्धान्त लागू होता है। यह अनुवाद कभी वाक्य/उपवाक्य/पदबन्ध के अनुसार होता है और कभी उसका विपर्यय भी संभव है। डॉ. भाटिया ने एक स्थल पर बताया है कि, 'जब किसी भाव के प्रकाशन या वस्तु के यथारूप वर्णन के लिए कोई शब्द किसी भाषा में नहीं मिलता तो उससे सम्बन्धित विदेशी शब्द के अनुवाद की आवश्यकता होती है। एक प्रकार से विदेशी शब्दों को उद्धृत न करके उनका शाब्दिक अनुवाद प्रस्तुत कर दिया जाता है।' (अनुवाद कला : सिद्धान्त और प्रयोग, पृष्ठ 50)

   शाब्दिक अनुवाद में मूल के प्रत्येक शब्द पर अनुवादक का ध्यान जाता है, इसीलिए इसे शब्दानुवाद भी कहते हैं। इसका प्रयोग एक से अधिक प्रकार के अनुवादों के लिए होता रहा है। अत: इसके कई उपभेद संभव हैं। अँग्रेजी में लिटरल ट्रांसलेशन, वर्बल ट्रांसलेशन, वर्ड-फॉरवर्ड ट्रांसलेशन आदि इसी को कहा जाता है। शाब्दिक अनुवाद के निम्नलिखित तीन उपभेद हो सकते हैं :

   (अ) ऐसा अनुवाद जिसमें मूल सामग्री की हर शब्दाभिव्यक्ति का प्राय: उसी क्रम में अनुवाद कर दिया जाए। ऐसा अनुवाद प्राय: हास्यास्पद और असफल सिद्ध होता है। इसे ही 'मक्षिका स्थाने मक्षिका' कह सकते हैं। जैसे- Where are you going का कोई इस रूप में अनुवाद करे - कहाँ हो तुम जा रहे ? या 'वह पानी-पानी हो गया' का अनुवाद कोई यह करे - He became water-water !

   (ब) दूसरा शाब्दिक अनुवाद वह है जिसमें क्रम आदि को मूल पाठ का नहीं रखते, किन्तु मूल पाठ के प्रत्येक शब्द का अनुवाद में पूरा ध्यान रखते हैं और मूल पाठ की शैली अनुवाद में स्पष्टत: दृष्टिगत होती है। यह अनुवाद पूर्वोक्त हास्यापद अनुवाद से कुछ ठीक होते हैं, किन्तु आदर्श अनुवाद की श्रेणी में नहीं आते। इन्हें कामचलाऊ अनुवाद कह सकते हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि ऐसे अनुवाद में लक्ष्य-भाषा की सहज प्रकृति नहीं आ पाती, स्रोत-भाषा की शैलीगत छाया लक्ष्य-भाषा पर प्रभावी रहती है। ऐसे कामचलाऊ अनुवाद के कुछ उदाहरण

NOTES

देखें– 'डॉक्टर ने मरीज की नब्ज देखी– The doctor saw the pulse of patient. बल्ब जलाओ– Burn the lamp. फूल तोड़ना वर्जित है– Breaking the flower is prohibited.'

(स) शाब्दिक अनुवाद का तीसरा रूप वह है जिसे 'आदर्श' अनुवाद कह सकते हैं। यह पूर्वोक्त दोनों तरह के शाब्दिक अनुवादों से सर्वथा दोषमुक्त और उत्तम कोटि का होता है। इस तरह के अनुवाद में मूल सामग्री के प्रत्येक शब्द, बल्कि प्रत्येक अभिव्यक्ति-इकाई (पद, पदबन्ध , मुहावरा, लोकोक्ति, उपवाक्य, वाक्य) के लक्ष्य-भाषा में उपलब्ध पर्याय के आधार पर अनुवाद करते हुए मूल सामग्री के मंतव्य को लक्ष्य-भाषा में रूपान्तरित किया जाता है। इसमें किसी भी शब्द या अभिव्यक्ति-इकाई की उपेक्षा नहीं की जाती। यथा– As provided in the presidential order reffered to in para 1 above. 'ऊपर अनुच्छेद-1 में निर्दिष्ट राष्ट्रपति के आदेश में किए गए प्रावधान के अनुसार।'

शाब्दिक अनुवाद की कुछ सीमाएँ हैं। एक तो मूल सामग्री की शैली अर्थात् स्रोत भाषा का प्रभाव अनूदित सामग्री पर, लक्ष्य भाषा पर स्पष्टत: दिखाई देता रहता है। इस गन्ध के कारण अनूदित सामग्री की भाषा सहज न होकर कृत्रिम तथा निष्प्राण दिखाई देने लगती है। दूसरे, शब्दावली की समस्या सदैव बनी रहती है और जैसा हमने पूर्व में कहा, कभी-कभी अनेक अनुवाद हास्यापद, अटपटे या बेतुके हो जाते हैं। एक सीमा यह भी है कि प्राय: अर्थग्रहण में कठिनाई रहती है।

2. **भावानुवाद–** शब्द भावार्थ का वाहक होता है। वह वस्तु-विशेष या भाव-विशेष को स्पष्ट करने के लिए संकेत मात्र है। अत: अनुवाद करते समय उस शब्द से अधिक उसमें निहित भाव के प्रति सजग रहना आवश्यक होता है। मूल सामग्री की भाषा (स्रोत भाषा) में प्रयुक्त शब्दों के पर्यायों का भी ज्ञान होना चाहिए।

भावानुवाद में उपर्युक्त तथ्य को दृष्टिपथ में रखना चाहिए।

इस प्रकार के अनुवाद में मूल सामग्री के शब्द, वाक्य, वाक्यांश आदि पर अधिक ध्यान न देकर भाव, अर्थ या विचार पर अधिक ध्यान दिया जाता है और उसी को लक्ष्य भाषा में व्यक्त करते हैं। अंग्रेजी में 'Sense for sense' ऐसे ही अनुवाद को कहा जाता है।

सर्जनात्मक साहित्यिक कृतियों के अनुवाद में इसी तरह के अनुवाद की आवश्यकता होती है। ऐसा अनुवादक भी सर्जनात्मक लेखक से कम नहीं होता। वह कारयित्री प्रतिभावान लेखक के रूप में हमारे सामने आता है।

भावानुवाद की सीमा यह है कि उसमें मूल सामग्री की शैली नहीं आ पाती, अत: उसके अभाव में वह मूल सामग्री पर आधृत कोई दूसरी रचना प्रतीत होती है। इससे अनुवाद तो मौलिक रचना का-सा आनन्द दे सकता है, किन्तु मूल कृति के अभिव्यक्ति सौन्दर्य का पता नहीं चल पाता। यहाँ अनुवादक की शैली ही प्रधान रहती है और उसका ही अभिव्यक्ति-पक्ष सामने आता है।

3. **पर्यायों के आधार पर अनुवाद–** पद-समष्टि वाक्य के लिए पर्याप्त महत्त्वपूर्ण है। इसके साथ ही प्रत्येक शब्द की स्थिति और उसके प्रयोग का भी कम महत्त्व नहीं है। अनुवादक को शब्दों के पर्यायों का पर्याप्त ज्ञान होना चाहिए। किस सन्दर्भ में किस शब्द का प्रयोग सर्वथा उचित है, इसके प्रति सचेत रहना चाहिए। मूल सामग्री में प्रयुक्त शब्द की मूल आत्मा को समझकर अनुवादक को उसके लिए उपयुक्त पर्याय शब्द का चयन करना चाहिए। स्रोत भाषा में प्रयुक्त शब्द के भाव को लक्ष्य भाषा में व्यक्त करने की कला अनुवादक के लिए आवश्यक है, इसके लिए अपेक्षित है कि वह स्रोत भाषा में प्राप्त शब्दकोशों में उस शब्द की सूक्ष्मातिसूक्ष्म अर्थच्छटाओं को देखे।

यों आदर्श पर्याय बहुत कम हुआ करते हैं। पूर्णत: समान अर्थ वाले दो शब्द प्राय: नहीं हुआ करते। ऐसा होता तो इतने शब्दों की आवश्यकता ही क्या थी। व्यवहार में इन सब पर्यायों में निकटता तो होती है, पर अर्थ की समानता कम होती है। जैसे – मृदु, कोमल, मृदुल, मुलायम, नरम, नाजुक, सुकुमार – इन शब्दों का भाव समान है, किन्तु इनके प्रयोग से इनमें भिन्नता स्थापित हो जाएगी। इस श्रेणी का अनुवाद पूर्ववर्ती दोनों अनुवादों का सहायक है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि आदर्श अनुवाद के लिए इन तीनों श्रेणियों का समन्वय आवश्यक है। फिर विषय की आवश्यकतानुसार इन अनुवाद-पद्धतियों को अपनाना चाहिए। वस्तुत: एक आदर्श अनुवाद तो वह है जो शाब्दिक अनुवाद और भावानुवाद, दोनों पद्धतियों को यथानुकूल अपनाते हुए मूल भाव के साथ-साथ मूल शैली को लेकर सहज रूप में सामने आता है। अनुवाद में क्योंकि मूल कृति की आत्मा को जीवित रखना होता है, इसलिए अनुवादक को मूल कृति की सर्जन-प्रक्रियाओं से गुजरते हुए उसके सत्य और संगीत को जीवित मोती की तरह एक भाषा-सीप से निकालकर दूसरी भाषा-सीप में कुछ इस तरह रखना पड़ता है कि वह जीवित बना रहे और उसकी ऊपरी चमक तथा आंतरिक दीप्ति वैसी बनी रहे, जैसी पहले थी।

कुछ अन्य अनुवाद-प्रभेद

अनुवाद का उपर्युक्त प्रणालियों के अतिरिक्त अनुवाद के कुछ और भी प्रभेद हैं। इनका संक्षिप्त परिचय निम्नवत् है :

(अ)छायानुवाद– संस्कृत-नाटकों में 'छाया' शब्द का प्रयोग मिलता है। उनमें स्त्री पात्र तथा सेवक आदि प्राकृत भाषा का प्रयोग करते दिखाई देते हैं। नाट्यकृतियों में उनके कथनों को संस्कृत-छाया के रूप में दिया जाता था। उदाहरणार्थ- कालिदास के सुप्रसिद्ध नाटक 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्' में पहले अंक में नटी का कथन है :

ईषदीषच्चुम्बिआइं भमरेहिं उह सुउमारकेसरसिंहाइं।
ओदंसअति दअमाणा पमदाओ सिरीस कुसुमाइं।

इसकी संस्कृत-छाया इस प्रकार दी गई है :

ईषदीषच्चुम्बितानि भ्रमरैः पश्य सुकुमारकेसरशिखानि।
अवतंसयन्ति दयमानाः प्रमदाः शिरीषकुसुमानि।

(हिन्दी अनुवाद : यह देखो, भ्रमर-समूह ने धीरे-धीरे चुम्बन करते हुए जिनके रसों को चूस लिया है, ऐसे कोमल केसरयुक्त गुच्छों वाले शिरीष के फूलों को मदमाती युवतियाँ सदय भाव से अपने-अपने कर्णफूल बना रही हैं।)

स्पष्ट है कि इस अर्थ में 'छायानुवाद' शब्द का प्रयोग भी हो सकता है।

'छाया' शब्द का प्रयोग उस समय भी हो सकता है, जब किसी पुस्तक की कुछ छाया या छायावत् धुंधला प्रभाव लेते हुए स्वतंत्र रूप से कोई रचना की जाये। प्राय: नाम, स्थान, वातावरण आदि का देशीकरण कर लिया जाता है। डॉ. भोलानाथ तिवारी, (अनुवाद विज्ञान, पृष्ठ 30) के अनुसार, "छायानुवाद ऐसे अनुवाद को कहा जाना चाहिए जो शब्दानुवाद की तरह मूल के शब्दों का अनुसरण न करे, अपितु दोनों ही दृष्टियों से मूल से (शब्दत:, भावत:) मुक्त होकर अर्थात् बिना मूल से विशेष बंधे उसकी छाया लेकर चले।"

(ब)सारानुवाद– यह मूल रचना के 'सार' का अनुवाद होता है। सामान्यत: समाचार-पत्रों आदि की विभिन्न एजेन्सियाँ सारानुवाद तैयार करती हैं। किसी बड़ी सरकारी रिपोर्ट आदि का भी सारानुवाद सम्भव है।

सारानुवाद में मूल के उपयोगी अंश बने रहते हैं। यह प्रक्रिया अपेक्षाकृत कठिन है और साधना की माँग करती है। वस्तुत: सारानुवाद में मूल की मुख्य-मुख्य बातों का 'मूल-मुक्त' अनुवाद होता है। यह संक्षिप्त, अतिसंक्षिप्त, अत्यन्त संक्षिप्त, आदि कई प्रकार का हो सकता है।

संक्षिप्तता, सरलता, स्पष्टता तथा लक्ष्य-भाषा के स्वाभाविक सहज प्रवाह के कारण व्यावहारिक कार्यों में यह अनुवाद-पद्धति अपेक्षाकृत अधिक उपयोगी और सुविधाजनक है।

(स)टीकानुवाद– 'टीका' भारत की बहुत प्राचीन पद्धति है। संस्कृत, पाली, प्राकृत में लिखे हुए ग्रंथों की टीकाएँ बहुतायत में उपलब्ध हैं। टीकानुवाद वस्तुत: लक्ष्य-भाषा में किया गया 'भाष्य' है।

स्व प्रगति की जाँच करें:

3. शाब्दिक अनुवाद से आप क्या समझते हैं ? स्पष्ट करें।
4. भावानुवाद पर एक लघु नोट लिखें।

NOTES

स्व-प्रगति की जाँच करें

1. एक भाषा (स्रोत भाषा) की पाठ्य-सामग्री में अंतर्निहित तथ्य का समतुल्यता के सिद्धांत के आधार पर दूसरी भाषा (लक्ष्य भाषा) में संगठनात्मक रूपांतरण अथवा सर्जनात्मक पुनर्गठन ही अनुवाद कहा जाता है।

2. कम्प्यूटर मुख्यत: दो तरह के होते हैं, एक तो 'एनालॉग कम्प्यूटर' जिनसे किसी चीज की मात्रा का मापन किया जाता है। यह मापन 'तुलना' या 'सादृश्य' के द्वारा होता है। दूसरे 'डिजिटल कम्प्यूटर' जिनमें किसी चीज की गणना के लिए '1' और '0' का प्रयोग (बाइनरी डिजिट्स) जिन्हें 'बिट' कहते हैं, की प्राय: गणितीय एवं तार्किक क्रियाएँ की जाती हैं। हिन्दी में 'एनालॉग कम्प्यूटर' को 'अनुरूपी कम्प्यूटर' और 'डिजिटल' को 'आंकिक कम्प्यूटर' कह सकते हैं।

3. शाब्दिक अनुवाद– इस तरह के अनुवाद में एक भाषा से दूसरी भाषा के मात्र शब्द ही बदल दिए जाते हों, ऐसी बात नहीं है। बल्कि शब्दों के परिवर्तन के साथ-साथ दूसरी भाषा का व्याकरणिक रूप भी अपनाया जाता है। वैज्ञानिक साहित्य आदि के अनुवाद में, जिसमें पारिभाषिक शब्दावली की प्रचुरता होती है, पर 'शाब्दिक अनुवाद' का सिद्धान्त लागू होता है। यह अनुवाद कभी वाक्य/उपवाक्य/पदबन्ध के अनुसार होता है और कभी उसका विपर्यय भी संभव है। डॉ. भाटिया ने एक स्थल पर बताया है कि, 'जब किसी भाव के प्रकाशन या वस्तु के यथारूप वर्णन के लिए कोई शब्द किसी भाषा में नहीं मिलता तो उससे सम्बन्धित विदेशी शब्द के अनुवाद की आवश्यकता होती है। एक प्रकार से विदेशी शब्दों को उद्धृत न करके उनका शाब्दिक अनुवाद प्रस्तुत कर दिया जाता है।'

4. भावानुवाद– शब्द भावार्थ का वाहक होता है। वह वस्तु-विशेष या भाव-विशेष को स्पष्ट करने के लिए संकेत मात्र है। अत: अनुवाद करते समय उस शब्द से अधिक उसमें निहित भाव के प्रति सजग रहना आवश्यक होता है। मूल सामग्री की भाषा (स्रोत भाषा) में प्रयुक्त शब्दों के पर्यायों का भी ज्ञान होना चाहिए।

   भावानुवाद में उपर्युक्त तथ्य को दृष्टिपथ में रखना चाहिए।

   इस प्रकार के अनुवाद में मूल सामग्री के शब्द, वाक्य, वाक्यांश आदि पर अधिक ध्यान न देकर भाव, अर्थ या विचार पर अधिक ध्यान दिया जाता है और उसी को लक्ष्य भाषा में व्यक्त करते हैं। अंग्रेजी में 'Sense for sense' ऐसे ही अनुवाद को कहा जाता है।

   सर्जनात्मक साहित्यिक कृतियों के अनुवाद में इसी तरह के अनुवाद की आवश्यकता होती है। ऐसा अनुवादक भी सर्जनात्मक लेखक से कम नहीं होता। वह कायित्री प्रतिभावान लेखक के रूप में हमारे सामने आता है।

   भावानुवाद की सीमा यह है कि उसमें मूल सामग्री की शैली नहीं आ पाती, अत: उसके अभाव में वह मूल सामग्री पर आधृत कोई दूसरी रचना प्रतीत होती है। इससे अनुवाद तो मौलिक रचना का-सा आनन्द दे सकता है, किन्तु मूल कृति के अभिव्यक्ति सौन्दर्य का पता नहीं चल पाता। यहाँ अनुवादक की शैली ही प्रधान रहती है और उसका ही अभिव्यक्ति-पक्ष सामने आता है।

अभ्यास-प्रश्न

1. अनुवाद की परिभाषा देते हुए उसके अर्थ एवं स्वरूप की विवेचना कीजिये।
2. अनुवाद के विभिन्न प्रकारों की समीक्षा कीजिये।
3. अनुवाद की प्रकृति के आधार पर अनुवाद के वर्गीकरण पर टिप्पणी लिखिये।
4. अनुवाद के उपकरणों का संक्षिप्त वर्णन कीजिये।
5. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिये :

   (i) मशीनी अनुवाद, (ii) भारत में देवनागरी कम्प्यूटर

इकाई - IV

मीडिया की भाषा : प्रकृति, विशेषताऐं, विकार व समस्याऐं

इकाई में शामिल है:

- मीडिया में भाषा का प्रयोग व महत्व
- मीडिया की भाषा की प्रकृति व विशेषताऐं
- मीडिया की भाषा के विकार व समस्याऐं

अध्ययन के उद्देश्य :

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात्, आप निम्न बिन्दुओं को समझने में सक्षम होंगे –

- मीडिया में भाषा का प्रयोग, महत्व
- नया मीडिया, परम्परागत मीडिया
- संचार (मीडिया) का अर्थ एवं प्रकृति
- संचार (मीडिया) की विशेषताऐं
- मीडिया की भाषा के विकार व समस्याऐं

NOTES

मीडिया : परिचय

मीडिया शब्द की उत्पत्ति मीडियम से हुई है, यह एक ऐसा माध्यम है जो एक व्यक्ति को दूसरे व्यक्ति से जोड़ता है। पत्र, चिट्ठी, ई-मेल, पब्लिक मीटिंग्स आदि मीडिया के विभिन्न रूप हैं। यह मास मीडिया भी है, जिसके द्वारा आप बड़ी संख्या में लोगों से जुड़ सकते हैं, इनमें टी.वी., समाचार, इन्टरनेट आदि शामिल हैं।

मीडिया (विलक्षण माध्यम) स्टोरेज, ट्रांसमिशन चैनल या उपकरण है जो सूचनाओं या डाटा को स्टोर या देने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। यह अक्सर मास मीडिया या समाचार मीडिया के साथ पर्याय के रूप में संदर्भित किया जाता है, लेकिन इसका एक एकल माध्यम के रूप में उल्लेख किया जा सकता है, तथा किसी भी उद्देश्य के लिए किसी भी संवाद को इसके द्वारा प्रयोग किया जा सकता है।

मीडिया में भाषा का प्रयोग

भाषा वक्याविन्यासी (syntactically) संकेतों की संगठित प्रणाली है जैसे की वाणी की आवाज़, संप्रतीक अंतराल, या लिखित (written) चिन्ह जो विचार या भाव संचारित करता है यदि एक भाषा संकेतों, वाणी, ध्वनि, भाव या लिखित चिन्हों के माध्यम से वार्तालाप को कहते हैं, तो क्या जानवर संचार एक भाषा के रुप मे जाना जा सकता है ? पशुओं के पास भाषा का कोई लिखित रूप नहीं होता, किंतु वार्तालाप के लिए भाषा का उपयोग करते हैं. इस मायने में, पशु भाषा को संचार कहा जा सकता है

मानवीय (Human) बोली एवं लिखित भाषा को संकेत (symbol) की प्रणाली कहा जाता है (कभी शब्दिम (lexeme) के नाम से प्रसिद्ध और व्याकरण नियम जो चिन्हों को प्रकलित करता है शब्द 'भाषा, भाषा के समान गुणधर्म को विचारार्थ करने में उपयोग होता है भाषा सीखने मानव बचपन में सामान्य है.अधिकतम मानविय भाषायें ध्वनि (sound) या भाव (gesture) का प्रयोग चिन्हों के लिए करते हैं जो अपने आस पास वालों से संचार में मदद देते हैं हजारों मानवीय भाषायें हैं, और उन में कई समानताएं हैं, हालांकि इन समानताओं में भी भिन्नता है.

मीडिया में भाषा का महत्व

समाचार और विचार विमर्श आपको सूचित करते है, रेडियो और टेलीविजन आपको शिक्षित कर सकते है, फिल्म और टेलीविजन के सीरियल और कार्यक्रम आपका मनोरंजन करते हैं।

सूचित, शिक्षित और मनोरंजन

मीडिया के इन कार्यों को और अधिक जान सकते है। वो व्यक्ति जो लिखते है, प्रत्यक्ष रूप से या बनाया हुआ कार्यक्रम जो लोगों को सन्देश देता है। एक उदाहरण के अनुसार रेडियो पर समाचार के किसी खबर रूपी आइटम सभी किसी न किसी प्रकार का सन्देश देते हैं। ये हमें किसी घटना का या घटित हो रही घटनाओं के बारे में सूचित करते है। एक नए राष्ट्रपति चुने गए" देश में एक नई मिसाइल विकसित की गई" भारत ने पाकिस्तान को मैच में पीटा" 25 लोग बम विस्फोट में मारे गए"। ये सभी हमें सूचित करते हैं। संचारको द्वारा इन्हें उचित रूप में डिजायन किया जाता या लिखा जा सकें। डॉक्टर द्वारा रेडियो या टेलीविजन पर बोला जाता है या समाचार पत्र में बीमारियों को रोकने के बारे में बताया जाता है। उसके द्वारा किसानों को शिक्षित किया जाता है। सभी व्यापारिक सिनेमा, टेलीविजन और संगीत कार्यक्रमों द्वारा मनोरंजन किया जाता है। चैनल वे माध्यम से जिनसे सन्देश भेजे जाते हैं। ये समाचार पत्र, फिल्में रेडियो, टेलीविजन या इन्टरनेट हो सकते हैं। जनसंचार अपने श्रोताओं, पाठकों और दृश्यकर्ताओं पर आश्चर्यजनक प्रभाव लाया है। लोग टेलीविजन पर विज्ञापन देखते है और उत्पाद खरीदते है। वे अपनी आवश्यकताओं को सन्तुष्ट करने के लिए उन वस्तुओं को खरीदने हेतु अभिप्रेरित होते हैं।

जब भारत स्वतंत्र कृषि प्रधान देश बना था उस समय पर विकसित नहीं था। हम अपने देशवासियों या लोगों के खाने के लिए पर्याप्त मात्रा में चावल या गेहूँ लोगों को नहीं दे पाते थे। हम खाना आयात करते है और जनसंख्या तीव्र गति से बढ़ती रही थी। वहाँ कई लोग खाने को थे। इसलिए सरकार ने मीडिया का प्रयोग किया, मुख्य रूप से रेडियो ने परिस्थिति को परिवर्तित कर दिया। किसान जो अनपढ़ थे सही

बीज, उर्वरक और खेती की नई-नई तकनीकें उपयोग करने लगे थे। यह प्रभाव उल्लेखनीय था हम कृषि क्षेत्र की क्रान्ति तक पहुँच गए जिसे हरित क्रान्ति" कहा जाता है। उसी प्रकार मीडिया ने छोटे परिवार की जरूरत पर बल दिया। अधिकतर लोग उसके अनुगामी बने, परिवार के आदर्श को समझा और दो या तीन बच्चों का होना निश्चित किया। उदाहरण के लिए पोलियो आन्दोलन, जनसंचार ने लोगों को पोलियो वैक्सीन और पोलियो उन्मूलन के बारे में शिक्षित किया। रचनात्मकता का प्रयोग करके सन्देश बनाए गए और फिल्म जगत के अभिनेताओं द्वारा उन्हें संचारित किया गया। दो बूँद जिन्दगी की" टेलीविजन पर इस सन्देश को कहते हुए आपने अमिताब बच्चन को देखा होगा जिसका अर्थ है जीवन की दो बूँदें अर्थात् पोलियो के उन्मूलन में बच्चे के जीवन की रक्षा इससे की जा सकती है।

फिल्में

इसके पिछले भाग में हमने फोटोग्राफी पर चर्चा की। चित्र या तस्वीरें जो कि कैमरे के उपयोग करके ली जाती थी उन्हें 'अचल चित्र' कहा जाता था क्योंकि ये स्थिर रहते है गतिविधी नहीं करते हैं। अचल चित्र से तार्किक विकास किया गया जिसे 'चल चित्र' या पिक्चर कहा जाता था। इस तकनीक में तेजी से फिल्मों में तस्वीरों को डाक स्क्रीन पर पेश किया गया था। इसके लिए उपयोग किया जाने वाले कैमरा फिल्म कैमरे के नाम से जाना जाता है। संयुक्त राज्य अमेरिका के थॉमस अल्व एडिसन और फ्रांस के लूमिइअर भाईयों ने चलचित्र की मशीनों का उपयोग करके फिल्मों को चलचित्रों के रूप में प्रक्षेपित करने का कार्य किया। वास्तव में लूमिइअर भाई भारत आए और मुम्बई में चलचित्रों को प्रदर्शित किया अमेरिका के हॉलीवुड में भी इसी तरह विकास हुआ, भारत में कला और तकनीकों से सम्बन्धी चलचित्रों का विकास हुआ। पहले ये शान्त रूप में थी और 1927 में वे बोलते रूप में आई भारत की पहली चलचित्र दादा साहब फाल्के द्वारा बनाई राजा हरिशचन्द्र थी और बोलती हुई पहली फिल्म (चलचित्र) आलमआरा थी।

बेतार संचार

जब हम जनसंचार के उद्भव प विचार विमर्श करते हैं तो दो आविष्कारों की व्याख्या की जाती है प्रथम शमूएल मोर्स द्वारा 1835 में कोड का उपयोग करके संदेश भेजने का प्रयास किया गया। उसके बाद 1851 में मोर्स ने अन्तर्राष्ट्रीय कोड विकसित किए। उसके बाद तक मोर्स ने महाद्वीपों के पार सन्देश भेजने के लिए इलेक्ट्रिक टेलीग्राफ का प्रयोग किया। समय के साथ अब बिना तार के भी संदेश भेजा जा सकता है। वर्तमान में उपयोग होने वाला सेलफोन बेतार संचार का एक अच्छा उदाहरण है।

फोटोग्राफी

आप सभी कैमरा और (फोटोग्राफ्स) तस्वीरों से नि:संदेह परिचित है। फोटोग्राफी में लाइट (प्रकाश) का प्रयोग करके तस्वीरें बनाई जाती है। 19 वीं सदी में फ्रांस के दो व्यक्तियों जिनका नाम नाइसफोर नीपस् और लुइस जैक्वस मांडे डागरे है उनके द्वारा फोटोग्राफी विकसित की गई। कुछ वर्षों पूर्व तक हम काले और सफेद (ब्लैक एण्ड व्हाइट) फोटोग्राफ लेते थे। उसके बाद पायस या मिश्रण का प्रयोग करके रंगीन तस्वीरें निकाली जा सकी। अखबार विज्ञापन में फोटोग्राफी का प्रयोग किया जाता है। 20वीं सदी के अन्त तक डिजिटल तकनीक फोटोग्राफरों द्वारा प्रयोग की जाने लगी, जिसने फोटोग्राफी को और कैमरा को आसान बना दिया और उपयोगकर्ता के अनुकूल बना दिया। यहाँ तक कि सेलफोन भी डिजिटल पंथ लाया है। आपके प्रिय फिल्मी सितारे कौन है? प्रारम्भ में भारत के चलचित्र पौराविक कथाओं पर आधारित थे और बाद में दिन-प्रतिदिन होने वाले सामाजिक मुद्दों को चलचित्रों में शामिल किया जाता है।

रेडियो

मात्र जिज्ञासा और तकनीकी अनुप्रयोगों से रेडियो जन संचार का शक्तिशाली और लोकप्रिय माध्यम बन गया है। बाद में यह पश्चिम में विकसित किया गया और 1920 में रेडियो द्वारा सुनना प्रारम्भ हुआ और देश का प्रथम रेडियो स्टेशन औपचारिक रूप से मुम्बई में प्रारम्भ हुआ। रेडियो के बारे में विस्तृत रूप से आप रेडियो मॉड्यूल से सीखेंगे।

NOTES

दूरदर्शन

20वीं सदी का एकमात्र तकनीकी आश्चर्य जिसे 1920 में बेयर्ड द्वारा टेलीविजन के रूप में विकसित किया था। भारत में प्रयोगात्मक आधार पर पहला टेलीविजन 1959 में प्रारम्भ किया गया था और टेलीविजन का प्रथम स्टेशन दिल्ली में स्थापित हुआ। इसकी शुरूआत मामूली और धीमी थी परन्तु धीरे-धीरे यह लोकप्रिय होने लगे और 1982 में रंगीन रूप में उपलब्ध हुए। वर्तमान में दूरदर्शन सबसे बड़ा टेलीविजन नेटवर्क है। 1990 के प्रारम्भ से उपग्रह टेलीविजन भारत आए और बाद में प्रत्यक्ष रूप से घरों में आ गए जिन्हें DTH (Direct To Home) कहा जाता है। आप टेलीविजन के बारे में इसके बाद के मॉड्यूल से सीखेंगे।

नया मीडिया

विकास और कम्प्यूटर के बढ़ते उपयोग ने तथा सूचना प्रौद्योगिकी के व्यापक उपयोग से परिणाम स्वरूप 'नया मीडिया' का उद्भव किया। यह कम्प्यूटर, सूचना तकनीकों, संचार नेटवर्क और डिजिटल मीडिया को शामिल करता है यह जन-संचार को अन्य प्रक्रिया का नेतृत्व करती है जिसे 'अभिसरण' या 'अभिमुख होना' कहा जाता है। अभिसरण का तात्पर्य संचार के अनेक रूपों को एक साथ लाना और अनेक प्रारूप में जैसे मुद्रित पाठ, फोटोग्राफ फिल्में, रिकार्ड किया गया संगीत, रेडियो, टेलीविजन इत्यादि। नए मीडिया से पुराने मीडिया को पृथक किया जाना मुश्किल है वर्ल्ड वाइड वेब या इंटरनेट ने हमारे द्वारा किए जाने वाले संचार के तरीकों को बदल दिया है बाद में आप इसके बारे में पढ़ेंगे।

परम्परागत मीडिया

परम्परागत मीडिया हमारे देश की समृद्ध विरासत का एक हिस्सा है। वे हमारे मजबूत मौखिक परम्परा का आधार है। वे हमारे अपने देश की धरा से सम्बन्धित है और हमारे संस्कृति की मूल जड़ है। वे जिस तरह हमारी संस्कृति में विविधता निहित है उसी प्रकार वे भी विविध है। भारत का जीवन कृषि और धर्मों द्वारा विशेष रूप से प्रभावित है और ऐसे मौसम भी वहाँ है। बहुत पहले से ही मेले और त्यौहारों को लोकगीत और परम्परागत नृत्यों से मनाया जाता है। ये गीत और नृत्य भी परम्परागत माध्यम से जो लोगों को सूचित, शिक्षित करने के साथ मनोरंजन भी करती है। मीडिया के तीव्र गति से आने वाले रूपों ने परम्परागत माध्यमों को प्रभावित किया है। हालांकि कलाकारों या संचारकों और परम्परागत मीडिया में दर्शकों रेडियो या टेलीविजन में एक-दूसरे के विपरीत माने जाते हैं। वातावरण में प्रदर्शन, प्राकृतिक, समझने योग्य और प्रयोग किए जाने वाली मुहावरे परिचित हो इसके विपरीत आधुनिक मीडिया लोगों को मिलाने में नहीं थकता उदाहरण के लिए पूरे उत्तर भारत में रामलीला मनाई जाती है। रामायण की कथा प्रत्येक व्यक्ति जानता है इसलिए उन्हें प्रदर्शित करते हैं। एक ही कहानी को प्रत्येक वर्ष दोहराते हैं। फिर भी बड़ी मात्रा में जनसंख्या उन्हें देखने आती है। लेकिन क्या आप एक साधारण हिन्दी फिल्म अनेको बार देख सकते हैं?

यहाँ हमारे देश में परम्परागत मीडिया के अनेक रूप है। जो प्रत्येक क्षेत्र में अलग-अलग नामों से जाने जाते है। परम्परागत मीडिया के कुछ सामान्य उदाहरण है कहानी का कहना, गलियों के थ्रेटर और कठपुतली नृत्य इत्यादि।

परम्परागत मीडिया के कुछ रूप जैसे परम्परागत गीत और पौराणिक कहानियों का उचित पाठ के रूप में लिखा जाना लेकिन लोकमीडिया के विभिन्न रूप स्वत: ही या मौके पर ही बन जाते हैं।

संचार : अर्थ और प्रकृति

अंग्रेजी शब्द 'कम्युनिकेशन' लेटिन संज्ञा 'कम्युनिस' और लेटिन क्रिया 'कम्युनिकेयर' से उत्पन्न हुआ है। वर्तमान में संचार एक अधिमूल्यांकित शब्द है जो विविध प्रकार के अनुभवों, कार्यों और घटनाओं को शामिल करने के साथ विविध प्रकार की घटनाओं, उनके अर्थ और विभिन्न तकनीकों को भी शामिल करता है। सभाएँ, सम्मेलन या जुलूस को भी संचार की घटना के रूप में माना जा सकता है समाचार पत्र और रेडियो, वीडियो और टेलीफोन सभी संचार के माध्यम है तथा पत्रकार, समाचार पाठक,

विज्ञापनदाता, सार्वजनिक सम्बन्ध स्थापित करने वाले प्रत्येक व्यक्ति और उसके साथ कैमरा समूह (फोटोग्राफर) ये सभी 'संचार के पेशेवर' व्यक्ति हैं।

साधारण अर्थ में कम्युनिकेशन या संचार दो या दो से अधिक व्यक्तियों को जो एक साथ साझा करे, या किसी त्यौहार या पारिवारिक आयोजन पर साथ हो उन्हे शामिल करता है। दिन-प्रतिदिन हम अनेक प्रकार के संचार जैसे किसी से बातचीत करने में, विचार विमर्श में बहस करना, न्यूज पेपर पढ़ना, टी. वी. देखना इत्यादि में हम व्यस्त रहते हैं। संचार स्वयं को प्रभु के साथ और प्रकृति के साथ हो सकता है या अपने आस-पास के वातावरण में रहने वाले लोगों के साथ हो सकता है। प्रभाव में आना, अदला-बदली करना, लेन-देन करना, विचारों को आदान-प्रदान करना सोच में आने वाली समानता को एक विचार में बदलते हुए, 'संचार' शब्दावली को परिभाषित किया जा सकता है।

संचार महत्वपूर्ण विचारों, सूचनाओं, ज्ञान, अनुभवों और भावनाओं को आदान-प्रदान करने की कला है। 'कम्युनिकेशन' शब्द लेटिन भाषा के 'कम्युनिस' से बना है जिसका तात्पर्य सामान्य बनाना, प्रसारित करना, प्रदान करना है। यह एक प्राकृतिक क्रिया है जिसमें सारे मनुष्य अपनी विचारधारा, सूचनाओं धारणाओं, भावनाओं और कल्पनाओं को अपनी शारीरिक भाषा या बोलने और लिखित रूप में या चिन्हों के द्वारा पहुँचाते हैं।

जॉन आदिर के अनुसार – ''सम्प्रेषण आवश्यक रूप से एक व्यक्ति के द्वारा दूसरे व्यक्ति के सम्पर्क में आने को, खुद को और दूसरों को समझने की कला है। यह अनेक प्रकार के संकेतों या चिन्हों के समूह द्वारा विभिन्न व्यक्तियों के मध्य अर्थों के आदान-प्रदान की प्रक्रिया है।''

अमेरिका प्रबन्धन संघ के अनुसार – ''सम्प्रेषण एक ऐसा व्यवहार जो परिणामस्वरूप अर्थों का आदान-प्रदान करें।''

जार्ज वर्द्धमान ने अपनी पुस्तक ''विचारों का प्रभावी संचार'' में बताया है। ''प्रभावी संप्रेषण सोद्देश्य आदान-प्रदान और व्यवहारिक समझ है जिसके परिणाम स्वरूप संदेश के प्राप्तकर्ता और प्रेषक के मध्य अनुबंध होता है।''

पीटर लिटिल के अनुसार – ''सम्प्रेषण एक एसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्तियों, संगठनों के मध्य सूचनाओं को संचारित करता है जिसके परिणाम स्वरूप प्रत्युत्तर को समझा जा सके।

एलन लुइस के अनुसार – सम्प्रेषण उन सभी तथ्यों का योग है जिसमें एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के मस्तिष्क में समझ पैदा करना चाहता है और एक व्यवस्थित व सतत् प्रक्रिया को सम्मिलित करता है।

संचार की प्रक्रिया में दो या अधिक व्यक्ति किसी माध्यम के द्वारा संदेश प्राप्तकर्ता और प्रेषक के मध्य किसी निश्चित उद्देश्य के लिए पारस्परिक समझ उत्पन्न करने के लिए भागीदारी निभाते हैं। यह प्रक्रिया किसी वांछित परिणाम को प्राप्त करने में नितृत्व प्रदान करती है उदाहरण के लिए किसी निर्देश को निष्पादित करना, रिपोर्ट बनाना टेलीफोन पर बातचीत का होना, ज्ञापन इत्यादि। निम्न तथ्यों को सम्प्रेषण के मुख्य बिन्दुओं के रूप में समझा जा सकता है।

Key Elements मुख्य तथ्य	Notes परिभाषा
1. Participants भागीदार	वह व्यक्ति जो संचार करते हुए एक दूसरे के सम्पर्क में रहें।
2. Medium or Common Language (माध्यम या सामान्य भाषा)	संचार के लिए दोनों पार्टियों को एक सामान्य भाषा या संचार का साधन का प्रयोग करना चाहिए।
3. Transmission of the information सूचना का प्रेषण	संदेश स्पष्ट रूप से प्रसारित होना चाहिए।
4. Decoding or understanding डीकोडिंग और समझना	संदेश को उचित रूप में प्राप्त किया जाए, समझा व व्याख्या की जाए।

NOTES

संचार व्यक्ति और समाज दोनों के लिए खाना, सोना और प्यार की उसी प्यार उसी तरह संचार भी बुनियादी जरूरत है। संचार हमारे भौतिक, जैविक और सामाजिक के पर्यावरण के साथ सक्रिय रूप से प्रभावित होता है।

संचार का कार्यक्षेत्र और विशिष्टता

संदेश का संचार बातचीत के द्वारा या लिखित शब्दों में, चित्रों द्वारा, और अन्य रूपों में हो सकता है। मौखिक सम्प्रेषण में प्रेषणकर्ता वक्ता के Voice Box के रूप में होते हैं। संदेश के प्राप्तकर्ता मनुष्य के कान हो सकते हैं, संदेश के प्राप्तकर्ता मनुष्य के कान हो सकते हैं। जो ध्वनि तरंगों को एक सुबोध रूप में परिवर्तित कर सकें जिसे मनुष्य का मस्तिष्क उसे पहचान सकें, समझ सकें। टेलीवीजन प्राप्तकर्ता विद्युत चुम्बकीय तरंगों को पहचानने योग्य दृश्य चित्रित करता है उसी प्रकार पाठक जो छपे हुए संदेश को उसकी भाषा को पहचानने योग्य दृश्य चित्रित करता है। उसी प्रकार पाठक जो छपे हुए संदेश को उसकी भाषा को पहचान सके और समझ सकें।

संचार की प्रक्रिया कुल कदमों की कार्य प्रणाली को शामिल करती है। सूचना स्रोत संवाद करना निश्चित करते हैं। और संदेश को सांकेतिक भाषा में परिवर्तित करके प्राप्तकर्ता को किसी माध्यम के द्वारा प्रेषित करता है, जिसको पुनः कूटानुवाद या डिकोड करके उस पर कार्य करता है। इसी पूरी कार्य प्रणाली में अनेक शोर और बाधाएँ होती है। संचार का मुख्य कार्य सूचनाएँ, शिक्षा, मनोरंजन, जानकारी देना, और प्रतिपादित करना है। इसलिए संचार प्रक्रिया इस तरह से डिजायन की जानी चाहिए कि जिससे प्राप्तकर्ता का ध्यान हासिल किया जा सके इसके लिए प्रयोग किए जाने वाले संकेत, प्रतीक चिन्ह और कोड ऐसे हो कि प्राप्तकर्ता आसानी से समझ सके और प्राप्तकर्ता की आवश्यकताओं को जगाकर उनको कुल ऐसे तरीके समझा सकें जो उनकी आवश्यकताओं को संतुष्ट कर सकें। जो उनकी आवश्यकताओं को संतुष्ट कर सकें। जिससे इच्छित प्रत्युत्तर को उत्पन्न किया जा सके। संचार को जन संचार के साथ शामिल करके भ्रमित नहीं होना चाहिए, संचार एक ऐसी क्रिया है जिसमें सूचनाओं को देना, आदान-प्रदान करना, बाँटना शामिल है जबकि जनसंचार एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें पेशेवर सम्प्रेषक संचार माध्यमों का प्रयोग करते हुए संदेशों को विस्तृत रूप में तीव्र गति से प्रसारित करते हैं और बड़े और विविध प्रकार के श्रोताओं, दर्शकों को उत्तेजित करने के लिए प्रभावी तरीकों को प्रयोग करते हैं। संगठन के प्रत्येक स्तर पर कुशल संचार की आवश्यकता होती है प्रभावी सम्प्रेषण वो है जिसमें व्यक्ति लगभग सभी प्रकार के संगठनों में काम कर सके चाहे वो सामाजिक, सरकारी, या वाणिज्यिकी हो, प्रत्येक संगठन में प्रभावी कार्यपद्धति प्रभावी सम्प्रेषण पर निर्भर करेगी।

स्वैच्छिक प्रतीक-चिन्हों के द्वारा संचार

सभ्यता मनुष्य के तीन अमूल्य सम्पत्तियों से परिलक्षित होती है प्रथम कि इंसान की सोचने की क्षमता, अन्य कि अपने अन्दर संवाद करने की क्षमता हो और तीसरा कि प्रजाति विशिष्ट अधिग्रहण और भाषा के कल्पित चिन्हों का प्रयोग। सभ्यता का उपहार और मनुष्य के ज्ञान की सभी शाखाओं का मूल यह है कि उनमें सोचने की क्षमता है और भाषा के चिन्हों द्वारा संवाद करने में सक्षम है। संचार के अन्य सभी माध्यमों के अलावा भाषा सबसे अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि ये इंसान के ज्ञान और रिश्तों को एकत्रित कर उन्हें स्पष्ट करती है। संचार की प्रक्रिया हमें अपने अनुभव को उपयोग और पुनः उपयोग करने की अनुमति देता है, तथा भूतकाल के ज्ञान को वर्तमान में लाने और संचार के प्रतीक चिन्हों की सहायता से संचार के लिए तैयार करता है जिनसे भविष्य में अमूर्त विचार बनाए जा सकें।

संचार द्वारा मनुष्य का प्रभावित होना

संचार एक ऐसा माध्यम है जिससे लोग एक दूसरे से आपस में जुड़ते हैं। सामान्यतया समाज में या किसी भी प्रकार के संगठन बिना मजबूत रिश्ते के नहीं रह सकते इन रिश्तों को संचार द्वारा ही मजबूत बनाया जा सकता है हम अपने जीवन में संचार की अनेक सहयोगियों को शामिल करते हैं- जब हम अपने सहयोगियों, मित्रों, सह अधिकारियों, वरिष्ठ अधिकारियों, विशेषज्ञों, अध्यापकों, विद्यार्थियों, पारिवारिक सदस्यों और उन सभी लोगों से जो हमारे जीवन में साथ चलते हैं, सभी लोगों से जो हमारे जीवन में

साथ चलते हैं, सभी से बात करते हैं, जब हम पढ़ते हैं या कुछ लिखते हैं पर्चे, पत्रिकाओं, विशेष, रिपोर्ट पत्रों, मेमो समाचारपत्र इत्यादि। जब हम सुनते है या भाषण देते है, रेडियो सुनते या टी. वी. देखते हैं, खरीदने या बेचने में उत्पाद या सेवाओं का प्रयोग करते हैं, जब हम व्यवसाय का प्रबंधन करते हैं या किसी भी क्रिया में शामिल होते हैं तो हम संचार की गतिविधियों में शामिल होते हैं।

संचार की तकनीकें और माध्यम -

जीवन के भी पहलुओं में सम्प्रेषण द्वारा मनुष्य के व्यवहार का इस सीमा तक प्रभुत्व है कि उसे 'सम्प्रेषण प्राणी' कह सकते हैं। मनुष्य ने अत्याधुनिक विज्ञान और तकनीकों का प्रयोग करके संचार व्यवस्था में आश्चर्यजनक विकास किया है। नाटकीय आविष्कार की सहायता से प्रिंटिंग प्रेस, टेलीफोन, टेलीग्राफ, रेडार, टेलीफोटो, रेडियो, टेलीविजन और अनेक ऐसे उपकरणों को बनाया जिससे आधुनिक समय में तात्कालिक और प्रभावी सम्प्रेषण संभव हो गया। द्रव्यमान और दूसर संचार की आधुनिक तकनीकों ने विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों के ध्यान को आकर्षित किया है। कलाकारों, कवियों, लेखकों, कारीगरों वास्तुकारों इत्यादि इस तकनीक के द्वारा विभिन्न विषयों पर स्वयं को प्रदर्शित कर रहे हैं, तथा उनकी सहायता से अनेक रचनात्मक विचार और संचार की अवधारणाओं का कुशलतापूर्वक उपयोग करते हुए मनोवैज्ञानिक मनुष्य के व्यवहार और चिकित्सा में आने वाली समस्याओं की जाँच करता है। राजनैतिक और सामाजिक परम्पराएँ मिथ्याएँ, रीति-रिवाज, जीवनशैली, नैतिकता इत्यादि एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाया जा रहा है या परिवर्तित किया जाता है या संचार माध्यमों द्वारा नष्ट किया जा रहा है। किसी भी व्यवसायिक व्यक्ति की सफलता उसके प्राप्ति और बाजार, उत्पाद सरकारी नियम, बैंकिंग, आधुनिक तकनीकों में नव प्रवर्तन इत्यादि सूचनाओं के प्रसारण पर निर्भर करता है। गणितज्ञ दवा की दुकानों, भौतिकविदों, इंजीनियरों इत्यादि के लिए सूचनाओं को प्राप्त करना, संग्रहीत करना, अनुवादित, विश्लेषण और जानकारी प्रदान करने में कम्प्यूटर एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

मीडिया में भाषा का प्रयोग

भाषा के प्रयोग पर विचार करते हुए कहा जा चुका है कि मीडिया में भाषा का प्रयोग होना चाहिए, आप जिस भाषा का प्रयोग कर रहे हैं, क्या वह दर्शकों को सही लगती है अथवा नहीं? आप जिस ढंग से दर्शकों तक अपनी बात पहुँचाना चाहते हैं, वह उस तरीके या माध्यम से दर्शकों तक पहुँचेगी? और क्या दर्शकों को संवाद पसन्द आएगा अथवा नहीं? इन सभी बातों को ध्यान में रखकर मीडिया में भाषा का प्रयोग किया जाना चाहिए।

मीडिया में वक्ता का महत्वपूर्ण स्थान होता है। वह खबर के कथानक के अनुसार अपनी बात कहता है। यदि कोई खबर शौक से सम्बन्धित है तो उसमें उसी प्रकार के शब्दों का प्रयोग उस प्रकार से शब्दों, वाक्यों और भाषा का प्रयोग होगा।

इस प्रकार से स्पष्ट है कि मीडिया में किसी भी खबर का विस्तारपूर्वक प्रसारण करने के उपरान्त खबर को जानना आवश्यक है। खबर में ऐसे संवादों का प्रयोग होना चाहिए जो किसी भी दर्शक के मन को ठेस न पहुँचाये तथा संवाद सरल, स्पष्ट होने चाहिए। शब्दों और वाक्यों का संगठन इस प्रकार का हो कि दर्शकों को स्पष्ट रूप में समझ आ सकें। भाषा इस प्रकार की होनी चाहिए कि उसमें गति हो, प्रवाहमयता हो। इसके अतिरिक्त संवादों में स्वाभाविकता होनी चाहिए। वे लयपूर्ण होने चाहिए। उनमें विविधता होनी चाहिए।

- मीडिया को भाषा का प्रयोग करते समय ध्यान रखने योग्य महत्वपूर्ण बातें -
- मीडिया में भाषा का प्रयोग करते समय विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिए कि भाषा के संवाद, अभद्र न हों।
- मीडिया में किसी भी खबर में अनावश्यक शब्दों को जोड़कर उसे बढ़ा-चढ़ाकर नहीं दिखाना चाहिए।

NOTES

- भाषा का प्रयोग करते समय ध्यान रखें कि यदि खबर किसी व्यक्ति विशेष से सम्बन्धित है तो, शब्दों और वाक्यों का प्रयोग ध्यान से इस प्रकार करें कि व्यक्ति को ठेस न पहुँचे।
- अनावश्यक रूप से किसी भी खबर को बढ़ा-चढ़ाकर न दिखाएँ तथा किसी भी खबर की पूर्ण जानकारी रखें।
- अधूरी जानकारी को टी.वी. चैनलों पर न दिखाया जाए।

मीडिया भाषा की प्रकृति व विशेषतायें

भाषा के सहज गुण-धर्म को भाषा की प्रकृति कहा जाता है। भाषा की प्रकृति को दो भागों में बाँटा जा सकता है। भाषा की प्रथम प्रकृति उसे कहते हैं, जो सभी भाषाओं के लिए मान्य होती है। दूसरे शब्दों में इसे भाषा की सर्वमान्य प्रकृति भी कह सकते हैं। भाषा की दूसरी प्रकृति उसे कहा जाता है जो किसी भाषा-विशेष में होती है। इसके द्वारा एक भाषा से दूसरी भाषा का पार्थक्य स्पष्ट देखा जा सकता है। इसे विशिष्ट भाषागत प्रकृति भी कहा जा सकता है।

मीडिया का उद्देश्य असंख्य श्रोता और दर्शक वर्ग तक पहुँचना होता है। इन लोगों में शिक्षित-अशिक्षित, बाल-वृद्ध, बालाएं-महिलाएँ, ग्रामीण-शहरी सभी प्रकार के लोग होते हैं। सभी का स्तर एक जैसा नहीं होता। इन सभी की प्रकृति भिन्न होती है। मीडिया इन भिन्न प्रकृति के लोगों की आवश्यकता की पूर्ति करते हैं। मनुष्य उस वस्तु को अपने शरीर में पचा सकता है जो उसकी प्रकृति के अनुकूल हो। असात्मय होने पर वह शरीर में रोग या विकार उत्पनन कर देती है। भाषा की भी इसी प्रकार की स्थिति है। वह भी पदार्थ या व्यक्ति की प्रकृति के अनुसार ही होती है। जिस प्रकार समाज में सरल स्वभाव और स्पष्ट भाषा बोलने वाले को पसन्द किया जाता है, उसी प्रकार दृश्य तथा श्रव्य माध्यमों में भी सरल, स्पष्ट और संक्षिप्त भाषा को पसंद किया जाता है। इन माध्यमों में प्रयुक्त की जाने वाली भाषा की प्रकृति सरलता, सहजता और स्वाभाविकता की ओर रहती है। यह भाषा कभी भी समास प्रधान नहीं होती, बल्कि व्यास प्रधान होती है। इसके वाक्य छोटे-छोटे होते हैं। लम्बे वाक्य को दो-तीन वाक्यों में बदलने का प्रयत्न किया जाता है। भाषा इन माध्यमों में ऐसी रखी जाती है जिनका व्यवहार मनुष्य अपने जीवन में करता है। मानव अपने दैनिक व्यवहार में छोटे-छोटे वाक्यों का और कम से कम शब्दों का प्रयोग करता है ताकि सामने वाला उसकी बात को सरलता से सुन और समझ लें। वह उतने ही शब्दों का प्रयोग करता है जितने एक श्वास में बोले जा सकें। वह मिश्रित और संयुक्त वाक्यों का प्रयोग प्राय: नहीं करता है। न ही वह सामान्य व्यवहार में जटिल और दुरुह वाक्यों का प्रयोग करता है। एक वाक्य में एक ही बात को कहने का प्रयास करता है। कम से कम शब्दों में अधिक भावों का सम्प्रेषण करता है।

मीडिया की भाषा की प्रकृति भी मानव-प्रकृति से भिनन नहीं है। मानव-प्रकृति को ध्यान में रखकर, उसके मनोविज्ञान का अध्ययन कर ऐसी भाषा का अपनी रचनाओं में या कार्यक्रमों में प्रयोग करते हैं जो सामान्यजन की भाषा के निकट होती है, व्यवहार में प्रयुक्त होती है, सरल तथा सुबोध होती है, सहज तथा स्वाभाविक होती है, जिसे सभी वर्ग और आयु के लोग समझ लेते हैं तथा जो सम्प्रेषणीय होती है। श्रव्य माध्यमों से सुना गया शब्द पुन: नहीं लौटता। वह रेडियो से प्रसारित होने के बाद वायुमण्डल में विलीन हो जाता है। यदि श्रोता का ध्यान कहीं और है तो उस शब्द का उसके लिए कोई अर्थ नहीं होता। वह शब्द उसके ऊपर से निकलता जाता है। इसके विपरीत दृश्य माध्यमों में श्रव्य के साथ दृश्य का समनवय होता है। चलते-फिरते दृश्य उसके साथ होते हैं। चित्रों का प्रभाव सुनी गयी बात से कई गुणा अधिक होता है। ऐसे में दर्शक का ध्यान यदि कहीं और भी है तो भी दृश्य उसकी स्मृति में बस जाते हैं। इसलिए मीडिया में ऐसी भाषा का प्रयोग किया जाता है जो श्रोता-दर्शक के ध्यान को बरबस आकर्षित करें। श्रव्य-माध्यमों में शब्दों पर और दृश्य माध्यमों में चित्रों पर विशेष बल दिया जाता है। कार्यक्रम-सम्पादकों का बल विशेष रूप से ऐसे शब्दों के प्रयोग की ओर अधिक होता है जो लोगों की समझ में तत्काल आ जाएँ और कार्यक्रम का संदेश तत्क्षण सम्प्रेषित हो जाए। फिल्म, टेलीविजन, वीडियो आदि श्रव्य के साथ-साथ दृश्य माध्यम भी हैं। चित्र या छायाकारी इन्हें और अधिक आकर्षक बनाते हैं। इन सभी माध्यमों का आधार भाषा होती है। भाषा के बिना ये सभी माध्यम गूंगे हैं। 1915 से पूर्व की

फिल्में इसका उदाहरण हैं। तब चित्र भागते-दौड़ते, क्रियाएँ करते दिखाई देते थे, परन्तु भाषा या आवाज नहीं थी। 'आलमआरा' के साथ फिल्में सवाक् हुईं, लोगों के आकर्षण का केन्द्र बनी और भारत के जन-जन पर प्रभाव डाला। इस प्रकार भाषा इन सभी का प्रमुख आधार है। इस भाषा की प्रकृति व्यास प्रधान, सरल, सरस, संक्षिप्त तथा बोलचाल की ओर झुकी हुई है। यही कारण है कि मीडिया की भाषा ने जन-जीवन को, जीवन-शैली को अत्यधिक प्रभावित किया है और इन दर्शकों की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है।

मीडिया की सामग्री (दृश्य एवं श्रव्य) का सामंजस्य

काव्य का वर्गीकरण करते हुए भारत के प्राचीन आचार्यों ने इसके दो भेद किए हैं, दृश्यकाव्य और श्रव्यकाव्य। नाटक तथा इसके भेदों को दृश्यकाव्य के अन्तर्गत रखा गया है और उपन्यास, कहानी, निबन्ध आदि को श्रव्य के अन्तर्गत। पहली विधा को नेत्रों से देखी जाने के कारण आँख की विधा और दूसरी विधाओं को कान से सुना जाने के कारण श्रवण-विधा कहा गया। इस प्रकार दृश्य-विधा का सम्बन्ध आँख से और श्रव्य-विधा को कान के साथ जोड़ा गया। आधुनिक माध्यम भी इन्हीं दोनों इन्द्रियों के साथ जुड़े हुए हैं। रेडियो माध्यम में कुछ दिखाई नहीं देता, बल्कि शब्द और संगीत सुनाई देता है। रेडियो-तरंगें हमारे कानों तक पहुँचकर संदेश प्रेषित करती हैं। संदेश या समाचार हम केवल सुनते हैं। रेडियो की सामग्री तथा इसके कार्यक्रम श्रव्य होते हैं। इसी प्रकार दूरभाषा से जो शब्द आते हैं, वे केवल श्रव्य होते हैं। हमारे सामने व्यक्ति नहीं होता, बल्कि उसकी आवाज और शब्द होते हैं। इन शब्दों से ही हम अपनी कल्पना में घटना या व्यक्ति का चित्र बनाते हैं।

दूसरी ओर टेलीविजन, सिनेमा और वीडियो आदि दृश्य-विधाएँ हैं। इन विधाओं में घटना का दृश्यांकन होता है। इन्हें हम आँखों से देखते हैं तथा कानों से सुनते हैं। इन विधाओं के कार्यक्रम देखे तथा सुने जाते हैं। टेलीविजन पर समाचार वाचक या वाचिका समाचार पढ़ रहे होते हैं। हम उनके हाव-भाव, मुद्रा, प्रत्येक गतिविधि को अपनी आँखों से देखते हैं। इनके साथ उसकी आवाज होती है जिसे हम सुनते हैं। इन दोनों के साथ छायाकारी का माध्यम भी आकर जुड़ गया है। किसी घटना का विवरण समाचार-वाचक पढ़कर दे रहा है। रेडियो पर इसी घटना का समाचार रेडियो-वाचक दे रहा है। एक वाचक को हम सुन रहे हैं, दूसरे को हम देख रहे हैं। छायाकारी के इसके साथ जुड़ने के कारण घटना के जीवन्त चित्र, घटना से सम्बद्ध व्यक्तियों से बातचीत, उनका साक्षात्कार भी टेलीविजन पर हमारे सामने आता है। इन तीनों का मेल सत्य को और अधिक विश्वसनीय बना देता है। इस प्रकार दृश्य माध्यमों में श्रव्य सामग्री का ठीक उसी प्रकार सामंजस्य हो जाता है, जैसे नाटक में हुआ करता है। नाटक में तो घटनाएँ केवल रंगमंच पर घटित होती दिखाई देती थी। अन्य घटना उसमें नहीं आ पाती थी, परन्तु टेलीविजन में दूरवर्ती देशों की घटनाएँ अपने सम्पूर्ण चित्रों और शब्दों के साथ साकार हो जाती हैं। इस नए दृश्य माध्यम ने अर्थात् टेलीविजन ने दृश्य और श्रव्य सामग्री का ही नहीं छायाकारी को भी अपने गर्भ में समेट लिया है।

टेलीविजन के लिए जिस आलेख को तैयार किया जाता है, उसमें पर्दे को सामने रखकर ही कार्य को आगे बढ़ाया जाता है। टेलीविजन के लिए लेखन कार्य करते हुए लेखन को शब्द, ध्वनि (श्रव्य) के साथ-साथ वीडियो-तकनीक, फिल्म-तकनीक आदि का भी ध्यान रखना होता है। इस कार्य को करते हुए पृष्ठ के दो भाग किये जाते हैं। एक भाग में दृश्य सामग्री के बारे में लिखा जाता है और दूसरे में श्रव्य के सम्बन्ध में। पहले ड्राफ्ट आलेख में ग्राफिक्स, साउण्ड आदि निर्देश दिया जाता है। बोली जाने वाली भाषा के बारे में बताया जाता है। ये सभी श्रव्य सामग्री का अंग हैं। संशोधित तथा अन्तिम आलेख में जो निर्देश लिखे जाते हैं, वे दृश्य और श्रव्य दोनों ही प्रकार के होते हैं।

इस प्रकार दूरदर्शन या टेलीविजन के लिए लिखते हुए दृश्य और श्रव्य सामग्रियों का ध्यान रखा जाता है। चाहे टेलीविजन के समाचार हों या साक्षात्कार, डॉक्यूमेंट्री हो या धारावाहिक, संगीत हो या फिल्म-कोई भी कार्यक्रम हो, इन सभी में दृश्य और श्रव्य सामग्री का उचित सामंजस्य करके उसे आकर्षक और प्रभावशाली बनाया जाता है। यह उचित सामंजस्य का ही परिणाम है कि टेलीविजन और सिनेमा आदि की लोकप्रियता निरन्तर बढ़ती ही जा रही है।

स्व प्रगति की जाँच करें:

1. जॉन कादिर के अनुसार सम्प्रेषण को परिभाषित करें।
2. स्वैच्छिक प्रतीक-चिह्नों द्वारा संचार किस प्रकार किया जाता है? स्पष्ट करें।

NOTES

पार्श्व-वाचन

फिल्मों के आगमन के साथ पार्श्व-गायन का आगमन हुआ, क्योंकि सभी फिल्मों में गीत होते थे और कलाकार या अभिनेता अच्छा अभिनय तो कर लेते थे, परन्तु उनकी आवाज इतनी मधुर और सुरीली नहीं होती थी कि वे दर्शकों पर अपना जादू चला सकें। कई ऐसे अभिनेता और अभिनेत्रियाँ भी थे जो स्वयं फिल्मों में गीत गाते थे। नूरजहाँ, सुरैया, मधुबाला, अशोक कुमार, के.एल. सहगल आदि फिल्मों में अभिनय के साथ-साथ पार्श्व गायन भी करते रहे। ये लोग दोनों ही क्षेत्रों में पूर्णत: सफल रहे। सभी अभिनेता अभिनय और गायन में पारंगत नहीं थे। ऐसे में पार्श्व-गायकों का आगमन हुआ। अभिनेताओं की बढ़ती व्यस्तता तथा कण्ठ में मधुरता की कमी इसके प्रमुख कारण रहे। पार्श्व-गायकों के आगमन से पार्श्व-गायन का प्रचलन बढ़ा। तलत महमूद, मुकेश, मुहम्मद रफी, किशोर कुमार, मन्ना डे, लता मंगेशकर, आशा भोंसले आदि ने इस क्षेत्र में आकर अपनी सफलता के ध्वज फहरा दिए। पार्श्व-गायन अत्यन्त प्रसिद्ध होता चला गया जो नये कलाकारों के इस क्षेत्र में आने पर भी उतना ही लोकप्रिय है जितना साठ-सत्तर वर्ष पूर्व था।

टेलीविजन का संसार में जन्म हुआ। इससने धीरे-धीरे संसार में और भारत में अपनी पैठ बनायी। इसके श्रव्य, दृश्य और चित्रात्मक गुणों ने संसार के घरों पर कब्जा जमाना प्रारम्भ किया। आज इसने पूरे संसार को अपने शिकंजे में जकड़ लिया है। जो जादू कभी रेडियो का था, आज उससे कहीं अधिक प्रभाव टेलीविजन का दर्शकों पर है। रेडियो केवल सुना जा सकता था, परन्तु यह प्रत्येक घटना को दिखाता है और दर्शक की विश्वसनीयता को बढ़ाता है।

इसके साथ ही एक टेक्नीक आयी जिसे पार्श्व-वाचन या वायस ओवर कहते हैं। इस टेक्नीक में वक्ता चाहे फ्रेंच में बोल रहा हो या अंग्रेजी में, रूसी में या जापानी के उसके होंठ हिलते हुए दिखाए जाते हैं या उसकी आवाज को धीमा कर दिया जाता है और पीछे से आवाज उस भाषा में चलती रहती है, जिस भाषा के दर्शक टेलीविजन देख रहे हैं। इसे दूसरे शब्दों में इस प्रकार कहा जा सकता है कि किसी एक व्यक्ति की आवाज के ऊपर दूसरे व्यक्ति की आवाज का आना, किसी दृश्य या घटना का वर्णन करना तथा उस भाषा के दर्शकों के समक्ष दृश्य को साकार और जीवन्त कर देना ही वायस ओवर या पार्श्व-वाचन है। जो व्यक्ति पार्श्व वाचन करता है, उसकी आवाज स्पष्ट और समझ में आने वाली होती है। उसकी आवाज दमदार होती है। इस आवाज को बच्चा-बूढ़ा, शिक्षित-अशिक्षित सभी समझ सकते हैं। जो घटना या दृश्य टेलीविजन पर प्रदर्शित किया जा रहा होता है, उसे जीवन्त और प्रभावशाली बनाने का यह पार्श्व-वाचन कार्य करता है। 'डिस्कवरी चैनल' तथा 'नैशनल ज्योग्राफिक चैनल' के अधिकतर धारावाहिकों में इस टेक्नीक का अत्यन्त आकर्षक और मनोहारी ढंग से प्रयोग किया गया है। यद्यपि किसी धारावाहिक की लोकप्रियता उसके लेखन पर निर्भर करती है, परन्तु लेखन को दमदार और प्रभावशाली बनाता है-पार्श्व-वाचन तथा पार्श्व-वाचक की स्पष्ट और गुरु-गम्भीर आवाज, इसमें आरोह-अवरोह। एक ही 'पिच' से निकली हुई आवाज दर्शक को प्रभावित नहीं करती। आवाज का उतार-चढ़ाव उस घटना या दृश्य को मोहक बना देता है। इसी प्रभाव को उत्पन्न करने के लिए आजकल टेलीविजन में वायस ओवर या पार्श्व-वाचक का सुन्दर उपयोग किया जाता है।

संचार की विशेषताएँ -

संचार की महत्ता के लिए निम्न कारकों को उत्तरदायी माना जा सकता है-

1. **संगठन का बड़ा आकार** : हम बड़े संगठनों के आकार के साथ रह रहे हैं। वर्तमान के संगठन गत वर्षों के उद्यमों की तुलना में आश्चर्यजनक विकसित हो रहे हैं। हजारों व्यक्ति एक ही इकाई में एक साथ काम कर रहे हैं। या विश्व में फैले हुए अनेक राज्यों की अनेक इकाइयों में अनेक व्यक्ति काम कर रहे हैं। इसका परिणाम यह हुआ कि ये स्तर पदानुक्रम के पाँच स्तर होते हैं। परन्तु अधिकतर परिस्थितियों में 13 से 15 स्तर होते हैं। यह एक बहुत जटिल काम हैं। कि जगन्नाथ को व्यवस्थित किया जाए जैसे एक विशाल संगठन को व्यवस्थित करना। लोगों से प्रत्यक्ष विशाल संगठन करने, पुनर्निवेशन करने में संचार की विशाल महत्ता है।

2. **व्यापारिक संघों का विकास:** विशेष रूप से प्रथम विश्व युद्ध के बाद कर्मचारियों का समूह एक शक्ति के रूप में उभरा कर्मचारियों के संघ को विश्वास में लिए बिना कोई भी प्रबन्ध कुशलतापूर्वक कार्य नहीं कर सकता प्रबन्धकों द्वारा कर्मचारियों के प्रतिनिधित्व कर्ता के साथ संगठन को प्रचलित परिस्थितियों में।

कर्मचारी पत्रिका :

पत्रिका ऐसे प्रवसर प्रस्तुत करती है जो विशेष मुद्दों से गहराई में जुड़े हों, संदर्भ से जुड़े तथ्यों को वर्णित करना, परिणामों को वर्णित करना या कहानी बताना। अधिकतर कर्मचारियों तक पहुँचने के अवसर है। यदि आप पत्रिका के व्यूहस्थानात्मक संदेश के विस्तृत आन्तरिक समझ रखते है तो पत्रिका एक अच्छे वाहन के रूप मं हो सकती हैं। उदाहरण के लिए आपके साक्षात्कार के सम्बन्ध में निबन्ध लिखना। इंटरानेट के संदर्भ में आपको आपने कर्मचारियों की सूचनाओं को पत्रिका में अनुवादित करना होता है आप स्वयं से पूछ सकते है। विशिष्ट निबन्ध में लिखी सामग्री का हमारे लिए महत्व की क्या सामग्री है।

एसएमएस (SMS) : टेक्सट संदेशों का फोन पर आना एक नए प्रकार के संचार का माध्यम है यह अधिक माध्यम के रूप में सिद्ध हो चुका है कुछ कम्पनियाँ अलर्ट सिस्टम की तरह अपयोग करती है उदाहरण क लिए प्रबन्धक को देने के लिए इसका प्रमुख तब आरम्भ करता है जबकि कुछ महत्वपूर्ण प्रकाशन इंटरानेट पर होगा। SMS के साथ यह लाभ है कि यह तीव्र है लेकिन यह एकमात्र उपयोग में आने वाला विरला माध्यम है। कुछ कम्पनियों अभिदान उपकरण की तरह उसे उपयोग करती हैं। उदाहरण के लिए प्रेस प्रकाशित करना।

सामाजिक माध्यम:

मीडिया सामाजिक सम्पर्कों द्वारा प्रचारित करने के लिए अधिक पहुँच वाले क्षेत्र और मापने योग्य प्रकाशित तकनीकों को शामिल करते हुए डिजाइन की गई है सामाजिक माध्यम सामाजिक सम्पर्क के लिए व्यक्तियों की आवश्यकता सुझाता है, इंटरनेट और वेब आधारित तकनीकों द्वारा एक से ज्यादा परिवर्तित करता है। सामाजिक माध्यम जैसे उपयोगकर्ता सामग्री या उपभोक्ता उत्पादित माध्यमों को निर्देशित करता है।

अधिक से अधिक कम्पनियाँ उनके बाहरी विपणन के लिए सामाजिक माध्यम का प्रयोग करती है। ट्विटर और फेसबुक खाते को सैट करना इत्यादि लेकिन ये माध्यम भी आन्तरिक कहलाते हैं। जहाँ प्रबन्धक अपने कर्मचारियों के साथ आन्तरिक रूप में मित्र बन जाते हैं या प्रबन्धक अपने लक्षित कर्मचारियों द्वारा ब्लाग का और ट्विटर का उपयोग किया जाता है।

धकेलना या खींचना:

आप अनेक प्रकार के संचार के माध्यमों को धक्का देना या खींचना इन माध्यमों में विभाजित किया जाता है धक्का देना माध्यम वो है जहाँ प्रेषक प्राप्तकर्ता को संदेश भेजता है। तात्पर्य यह है कि प्रेषक संचार पर नियंत्रण करता है।

- ई-मेल
- समाचार पत्र और पत्र (यदि भेजे गये तो)
- पत्रिकाएँ
- सभाएँ
- टेलीफोन
- SMS

दूसरी तरफ माध्यमों को खींचना जब प्राप्तकर्ता संदेश को प्रेषक से अपनी और खींचता है। यह प्राप्तकर्ता निर्भर करता है कि वह कब संदेश लेना चाहता है।

- इन्टरानेट
- बिलबोर्ड्स

- समाचार पत्र और पत्र (यदि नहीं भेजे गये तो)
- पत्रिकाएँ (यदि नहीं भेजी गई तो)

सामाजिक माध्यम :

NOTES

माध्यमों को धकेलना। उन्हें खींचने से अधिक विश्वसनीय है क्योंकि यह संचार में अत्यधिक सक्रिय है।

आन्तरिक और बाह्य संचार :

आन्तरिक संचार :

जब तक प्रबन्ध सम्मिलित है और संगठन का आधार वाक्य को समर्थन होना चाहिए कि उसे उच्च स्तर का संप्रेषण सम्मिलित करना होगा (जैसे व्यक्तियों को अधिक पानी की आवश्यकता का होना) संगठन के शेष भाग का आडम्बरी होना। अधिकतर प्रबन्ध संचार की आवश्यकता को इसके प्रत्युत्तर के अभाव में समझता है।

प्रभावी आन्तरिक सम्प्रेषण संचार की प्रभावी कुशलताओं से प्रारम्भ होता है सुनने की, बोलने की, प्रश्नोत्तरी और पुनर्निवेशन की आधारभूत कुशलताओं की भी इसमें सम्मिलित किया जाता है। इन्हें आयोजित कुछ पुनरीक्षण और अभ्यास से विकसित किया जा सकता है। शायद बहुत महत्वपूर्ण परिणाम इन कुशलताओं से प्राप्त किया जा सकता है जो कि दूसरों से आप सुनें और आपकी दूसरे ध्वनि या स्वर मिलान प्रबन्ध कुशल संचार को निश्चित करता है प्रभावी संचार के विकास में एक प्रमुख अवयव है कि प्रत्येक संगठन में व्यक्ति उत्तरदायित्व लेने का दावा करता है जबकि वे संचार को सही प्रकार से नहीं समझ पाते या तब उसे सहमत किया जाए कि कैसे किसी से प्रभावपूर्ण संचार किया जा सकता है। आन्तरिक संचार हमारी निम्न प्रकार से मदद करता है जैसे कर्मचारियों के मध्य या संगठन के प्रत्येक स्तर के हर विभाग के मध्य कैसे संचार किया जाता है। आन्तरिक संचार निगमीय संचा का एक रूप है जो औपचारिक या अनौपचारिक हो सकता है ऊर्ध्वगामी, अधोगामी या क्षैतिजाकार। यह अनेक रूप ले सकता है जैसे एक सूह का संक्षिप्त में बताना, सभाएँ कार्य विवरण, इंटरनेट, समाचार पत्र, दाखलताएँ और प्रतिवेदन।

बाह्य संचार :

एक संगठन और अन्य संगठनों के मध्य सूचनाओं और संदेशों को आदान प्रदान समूहों या प्रत्येक बाहर वाले के साथ एक औपचारिक संरचना में होना। बाहरी संचार का प्रमुख उद्देश्य समूहों के साथ सुविधाएँ प्रदान करना जैसे पूर्तिकर्ताओं विनियोजकों और अंशधारकों और संगठन की स्वीकारात्मक छवि और इसके उत्पाद और सेवाएँ जो कि वास्तविक उपभोक्ताओं और समाज को बड़े पैमाने पर सेवाएँ प्रदान करते है और मैंने 15 संगठन के नेताओं को उनके संगठनों के साथ चुनौतियों का सामना करने और उनके प्रत्युत्तर को 9 महत्वपूर्ण श्रेणियों में विश्लेषित करते हुए पहचाना जाता है।

1) **सारे कर्मचारियों को सूचित नहीं करना :** यह माना जाता है कि यह संचार का साधारण तरीका है प्रत्येक उन व्यक्तियों के पास सूचनाएँ भेजी जाए जिनको इन्हें जानने की आवश्यकता है। किस प्रकार से अधिकतर संगठनों में सूचनाएँ लोगों तक नहीं पहुँच पाती जो दैनिक आधार पर संचार के तरीके उपयोग नहीं करते हैं। (उदाहरण के लिए ई-मेल जो कि सामने की पंक्ति में हो)।

2) **कर्मचारियों द्वारा प्रबन्ध से सुसंगत संदेश प्राप्त न करना:** भिन्न-भिन्न पर्यवेक्षकों द्वारा भिन्न-भिन्न संदेश जिनकी प्राथमिकताओं के बारे में कभी-कभी विरोधाभास रहता है। इन कारणों से कर्मचारियों के मध्य सभ्रांति और अविश्वास रहता है।

3) **कर्मचारियों द्वारा समय पर संदेश प्राप्त न करना :** कर्मचारियों को जब आवश्यकता के समय पर उन्हें सूचनाएँ ना मिलें। बिना विशाल सूचनाओं के सही समय पर, सही स्थान पर निर्णय बनाने की प्रक्रिया का धीमा होना और अच्छे तरीके से समय पर परियोजना का पूरा होना इत्यादि शामिल हैं।

4) **सही सूचनाएँ सही व्यक्ति तक नहीं पहुँचना :** जटिल सूचनाएँ (उदाहरण के लिए बाजार के तथ्य) जो कि पणधारी के मध्य विभाजित नहीं की जाती है। उच्च प्रबन्ध ऐसी कर्मचारियों को जो संगठन के महत्वपूर्ण निर्णयों जो कि उपभोक्ताओं के सम्पर्क में चिंताकर्ष है। कर्मचारियों द्वारा प्रबन्ध को महत्वपूर्ण सूचनाएँ नहीं दी जा रही हैं।

5) **प्रत्याशाओं का स्पष्ट ना होना :** उच्च नेताओं द्वारा मध्यम स्तर के प्रबन्धकों के साथ अपनी प्रत्याशों के साथ विचार-विमर्श नहीं किया जाना। इसलिए वे समान प्रत्याशाओं के लिए व्यूह रचनात्मक उद्देश्यों तक पहुँचना शामिल करते हैं। क्योंकि कर्मचारियों द्वारा उद्देश्य स्पष्ट नहीं होते और उनकी प्रगति के लिए निशान मार्गदर्शक को बताएं जाते हैं।

6) **भविष्य की योजनाओं को नहीं जानना :** नेताओं द्वारा कर्मचारियों के साथ भविष्य के दृष्टिकोण को स्पष्ट नहीं किया जाता है। यहाँ विभाजित दिशाओं का उनकी और जो प्रत्येक प्रकार का संघर्ष कर रहे हैं। यह कर्मचारियों को उनके बेहतर कार्य करने के लिए प्रेरित नहीं करते हैं।

7) **कार्यात्मक क्षेत्र सहयोगी ना होना :** विभागों और इकाइयों द्वारा सूचनाओं को आपस में बाँटा नहीं जाता है वे सारे विभागों या इकाइयों के साधारण उद्देश्यों को प्राप्त करने में मदद करते हैं। वे सहयोगी होने की तुलना में प्रतिस्पर्धी होते हैं। यह संगठन की सीमा है कि उसकी क्षमता पूरे संगठन की योग्यता है।

8) **कर्मचारियों का एक-दूसरे के साथ खुला न होना:** कर्मचारियों द्वारा एक-दूसरे के साथ सूचनाओं को बाँटा नहीं जाता है। वे एक-दूसरे पर विश्वास नहीं करते हैं। वे एक-दूसरे पर विश्वास नहीं करते हैं। यह समझौता टीम की उत्पादकता विभागों/इकाइयों या संगठन का होता है।

9) **इकाइयों के मध्य दुरियों द्वारा संचार का अवरुद्ध होना:** विभागों/इकाइयों जो कि अलग-अलग क्षेत्रों के है आपस में अधिक संचार नहीं करते हैं और अधिकतर वो जो कि समीपस्थ है। यह दूरी आमने-सामने सभाओं द्वारा व्यवस्थित करना मुश्किल होता है और सहयोगी बनने में अधिक समय लगता है।

बाहरी सम्प्रेषण के लिए अनेक प्रकार के माध्यम प्रयोग किए जाते है जिसमें आमने-सामने सभाओं का होना, मुद्रण या प्रसारण माध्यम और इलैक्ट्रानिक संचार तकनीकों जैसे इंटरनेट इत्यादि। बाहरी संचार अनेक क्षेत्रों को सम्मिलित करता है जैसे मीडिया से सम्बन्धों बनाना, विज्ञापन और विपणन प्रबन्ध।

मीडिया की भाषा के विकार व समस्याऐं

अद्वितीय मानव मानव के पूरे इतिहास में किसी भी भाषा के शब्द को प्राथमिक शब्दों के रूप में माना जाता है। संस्कृत सबसे प्राचीन भाषा के रूप में माना जाता है, जो उनकी व्याकरण भाषा के अन्तर्गत सबसे जटिल माना जाता है।

स्वर्गीय लेविस थॉमस जो कि वैज्ञानिक और लम्बे के निदेशक और मंथन के कैन्सर केन्द्र में भिन्न रूप से कार्य किया जाता है। भाषा एक जटिल प्रश्न है जो कि स्वयं के लिए मुश्किल है। मानवीय संचार आश्चर्यजनक रूप से डिजायन किया गया था तथा यह संचार की भाषा ना केवल एक-दूसरे से संचार की बल्कि अपनी बातें बताने की योग्यता प्रदान करता है।

एक पत्र के शीर्षक सार्वभौमिक व्याकरण का मूल्यांकन जो कि जनवरी 2001 के विज्ञान में प्रदर्शित हुई, एम.ए. नॉवाक और उसके सहपाठियों ने मानव और प्राणियों को पृथक रूप से छूट दी गई। इस पेपर की निरन्तरता में 1999 को एक पेपर और प्रकाशित किया, जिसका शीर्षक भाषा का मूल्यांकन जिसमें व्याकरण के मूल्यांकन के लिए गणितीय गणना की जाती है। गणितीय मॉडल इन पेपर में प्रस्तुत किया जो कि यह बताता है।

जब तक कि नॉवाक और उसकी टीम सार्वभौमिक व्याकरण प्राकृतिक चयन के साथ मूल्यांकित की जा सकती है, आवश्यकता के अनुसार उत्तर देना। नावाक ने अपने पेपर में आवश्यकतानुसार सारी भाषाओं सम्बन्धी उत्तर दिए।

NOTES

इसके अतिरिक्त लिखी हुई भाषाओं में स्पष्टता का प्रदर्शित करना भी शामिल है। पुरानी भाषा को पुनः बनाया जाता है, वर्तमान के नव वातावरण के अनुसार उसे परिवर्तित किया जाता है। चामस्की ने इसे पूर्ण रूप में सारांशित करते हुए कहा-

मानवीय भाषा जो कि एक अद्वितीय कथन के रूप में जो कि प्राणी जगत में एनालॉग विशिष्ट संकेतों को प्रदर्शित करता है। चलते हुए साँस लेने में जो अतिरिक्त मूल्यांकित वृद्धि होती है, उसी आधार पर इसे माना जा सकता है।

मानवीय संचार में बाधाएँ

पूर्व भाग में कुछ महत्वपूर्ण तथ्य जिसमें संसार को अर्थ देता है और अन्य से संचार करने का अर्थ प्रदान करता है। इससे प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि मानवीय संचार में सुधार की आवश्यकता है क्या ?

प्रथम, मानव संचार एक पहेली के रूप में जो कि दिल से भरा और गलतफहमी और पूर्वनिर्धारित होते हैं। हम अनेक संकेतों जैसे पढ़ने और सह-अस्तित्व को पूर्ण प्रभावित करता है, लेकिन हम स्थिर रूप से गलत तरीके से" हम बताते हैं। अधिकतर प्रतिबन्धित करना गलत तरीके से या उनके दोष को इसमें शामिल किया जाता है।

वास्तव में सॉफ्टवेयर डिजायन करते समय रूपक, हम कह सकते हैं कि मानवीय संचार गंभीर रूप से प्रोग्रामिंग कीड़ों को शामिल करता है। हम मनुष्य के प्रारूप को जो तत्कालिक उद्देश्यों के तत्वों को विश्लेषित करता है। सबसे अधिक जटिल और भिन्न धारणाएँ सम्मिलित है।

हम ऐसे तरीके नियंत्रित करते हैं और लोगों से ऐसे सम्पर्क करते हैं, जो जोखिम की गलत रूप से व्याख्या करते हैं। हम अनेक तकनीकों के द्वारा प्रश्नों और तर्कों को जाँचते हुए प्रत्युत्तर देते हैं।

प्रथम प्रभाव के संतृप्त करने को जो कि पूर्वनिर्धारित है जो कि उपस्थिती से तर्कों द्वारा जो कि सांस्कृतिक प्रयास और सुस्पष्ट रूप से जो कि पृथक रूप से चुनौतियों के मानक रूप में प्रदर्शित करता है। शक्तिपूर्ण मिथ्याएँ जो कि व्यवहार का तरीका तथा अनुभवी व्यक्तियों के मध्य नहीं फैलाया जाता है। क्तप कार्टविर्थ के 1851 में प्रसिद्ध केस-सन्दर्भ पेटमनिया जो बीमारियों के गुलाम को दौड़ भागता है और अमेरिकन साइकेट्रिक संघ जो कि समलिंगकामी जिससे निदान करना और सांख्यिक जो कि 1994 का मानसिक अस्थिरता से सम्बन्धित है।

वे भिन्नता और अभद्रता जो कि सर्वाधिक संवीक्षण के अन्तर्गत कार्य करे और जो उनके कार्यों के आधार पर न्याय करता है।

संचार शरीर के मध्य भाषा और भावनाओं के मध्य संतुलन को शामिल करता है। मानव जो कि अपने वांछित अर्थों की ओर अपनी परियोजना में कठिनाई उत्पन्न करते हैं या उनकी कामनाओं को पूरा करना विश्वास की कमी, अत्यधिक विश्वास का होना। उसी प्रकार से बिना किसी भावार्थ स्वयं का गलत अभिप्राय लगाना और अन्य तरीके से अर्थों को उत्पन्न करना शामिल है। सोरन किरकगार्ड जो कि रंगपूर्ण चढ़ाव-उतार को शामिल करता है। हीरो जो कि हिरोइन के प्यार भरे प्रत्युत्तर प्राप्त करती है। प्रत्येक समय सफलता जो कि जीत के ऊपर है और उसके प्रति स्नेह को प्रदर्शित करता है।

डर और दोष अधिकतर स्वयं की तोड़-फोड़ एक बार पुनः करते जो थे। अनेक भावनाओं को सम्मिलित करता है, जिसका प्राथमिक कार्य के रूप में प्रदर्शित करता है। एक बार फिर ऐसा ही उदाहरण इसमें शामिल किया जाता है, जिसका प्राथमिक कार्य (डर स्वयं की सुरक्षा से सम्बन्धित और दोष सामाजिक व्यवहार से सम्बन्धित है) जो कि प्रत्येक बहुत सी ऐसी घटनाओं की छाया को प्रतिबिम्बत करता है, जहाँ कार्य के कीड़े या उनकी गलतियों या कृमि के रूप में उत्पन्न होता है। अधिकतर मानव अपने विश्वास से भयभीत अर्थात् जिन पर भरोसा उनसे भयभीत होना चाहिए क्योंकि ये पूर्व में बताए गए अनुचित न्याय को प्रदर्शित करता है। जबकि दोष नैतिक रूप से किसी कार्य का नेतृत्व करता है, जो असहाय या पीड़ित को धोखा जो कि उन्हें उनके लिए उत्तरदायी ठहरा सकता है, जैसे कि रेप और बच्चों के अपहरण सम्बन्धी होने वाले केस शामिल किए जा सकते हैं।

दूसरा कारण कि मानव जीवन में मानव और उसके मध्य आदर्श मानवीय संचार में सुधार की आवश्यकता क्यों है। यह स्थिति वर्तमान की आदर्शपूर्ण विचारधारा जो कि निरन्तर उसके पक्ष में है, को शामिल करता है। विकास द्वारा संचय और पहचान में स्थिरता को शामिल करता है क्योंकि हमारे समाज की छवि जो आदर्श को प्रभावित करती है तथा रूपक के साथ स्थित है, जैसे कि जीवन के चरण जीवन को दिशा, जीवन एक यात्रा है और वृद्धि के रूप में अनेक मशहूर रूपक भी शामिल किए जा सकते हैं। (अनुभव के द्वारा वृद्धि करना, मतों की वृद्धि इत्यादि)। उसी समय या समसामयिक औद्योगिक जीवन जो कि विरोधाभास के रूप में पहले से ही प्रारम्भ हो चुका है। अनेक पेशेवर उदाहरण के लिए पक्ष में कुशलता और अनुभवों के विपरीत नवप्रवर्तन जबकि क्रमबद्ध, वातावरणीय परिवर्तन होते हैं। क्रमबद्ध परिवर्तन तीव्रता से होने वाले परिवर्तनों में डिजिटल युग की प्रत्यक्ष पहुँच इत्यादि में परिवर्तित हो गया है।

वर्तमान की आदर्श विचारधारा के अनुसार जो कि अवधारणापूर्व ढाँचे और रूपक सम्बन्धी प्रतिबन्ध को शामिल करता है जो कि इन परिवर्तनों को प्रतिबन्धित करता है और समसामयिक को रोक सकता है, पूर्व और पश्चात् मानव को सृजनात्मकतापूर्वक बाधित कर पाता है। वास्तव में सांकेतिक रूप को जो कि न्याय संगत रूप से समसामयिक जीवन में हो कभी-कभी होने वाले पाखण्ड को बढ़ावा देता है। ऐसा प्रतीत होता है कि मानव अवधारणापूर्वक और प्रस्तुतीकरण नियमों जैसे भाषा परिवर्तनशील और अपनाने योग्य है। मानव मूल्यांकन के समय महापरिवर्तन युग था, जब सामाजिक भावनाएँ मानवीय मूल्यांकन के रूप में परिवर्तित हुई। इस प्रकार यह एक तर्कणीय विचारधारा बन गई है।

मानव के सोच में 'कमी या संचार में कमी जो कि पूर्व में विस्तार से बताई गई है, आवश्यकता है कि अधिक शोध किया जाए। कृत्रिम बुद्धिमता जो कि सम्पूर्ण मानव की बुद्धिमता को प्रदर्शित करता है, जो अस्पष्ट ना होना चाहिए, कृत्रिम डिजायन को भी मानव डिजायन के जैसे खराब दोष सहित बनाया जा सकता है। कृत्रिम जीवन मानव जीवन से अधिक बुद्धिमान और अधिक शक्तिशाली होता है, लेकिन मानव द्वारा जो कि पूर्व निर्धारित होता है। इसके विरूद्ध हमें मार्गदर्शन करना होता है। वास्तव में यह परिस्थिति विज्ञान के अपच जैसे कार्य को प्रदर्शित करता है जो कि एक सुखद वातावरण नहीं देता। उसी समय मनुष्य के कैसे मनोभाव या उच्च भावनाएँ उन्हें प्रस्तुत करने की योग्यता संकेत उत्पन्न करने की या बनाने की योग्यता, हँसना, व्यक्तित्व, योग्यताएँ जो कि भिन्न-भिन्न भूमिका निभाती है और अनेक हास्य वार्ता या चुटकुले जो कि भिन्न-भिन्न भूमिका निभाती है जो कि उनकी प्रवृत्तियाँ जो गलतफहमियों से जुड़ी है, बाह्य आवरण जैसी धोखेपूर्व या धोखे देने वाली बन सकती है। इस तथ्य को समझना होगा कि हम किस प्रकार सृजनात्मक अवधारणा को पूर्वनिर्धारित तथ्यों के आधार पर बिना पुराने तथ्यों को जोर दिए मानव का एक महान सकारात्मक परिवर्तन की तरफ उछाल है।

इसी प्रयत्न में कलाकारों, कहानीकारों और विद्वान है। एक विज्ञानी के रूप में महान भूमिका निभाने की उसी सन्दर्भ में विज्ञानी, मानवीय विचारधाराएँ और कलाकारों का विश्लेषण शामिल है जो पृथक रूप से विश्लेषित करते हैं और चिन्तन करते हैं, जो सांख्यकी रूप से उन्हें नजरअंदाज प्रदर्शित करता है तथा नियमों के अपवाद समझाता है, जो कि उन्हें एक चुनौती देता है और पूर्व स्थापित श्रेणी के अन्तर्गत आसानी से फिट नहीं होता है। ये उन्हें अभिव्यक्त और संकेतों को संसार में व्याख्या करते हैं, जहाँ हम अर्थों को ढूँढ़ने के नए रास्ते खोजते हैं और नए अर्थ बनाते हैं। इस प्रकार हम भाषा द्वारा इन शब्दों का प्रयोग और वास्तविकता बनाने के लिए शब्दों का प्रयोग और चिन्हों को नए प्रकार से या भिन्न-भिन्न प्रकार से प्रदर्शित करते हुए हमें स्वयं का और दूसरों के साथ हमारे सम्बन्ध को प्रत्यक्ष रूप प्रदान करता है।

निष्कर्ष

इस तथ्य का निष्कर्ष यह है कि आवश्यक तत्वों को इसमें शामिल किया जाना चाहिए।

इसलिए ज्ञान के अभाव में किसी भी भाषा के उद्भव के समय संचार का हस्तान्तरित रूप काम आएगा। संचार का हस्तान्तरित रूप काम आएगा। इसलिए मानव के मध्य संचार की योग्यताएँ और प्राणियों और जानवरों के साथ बातें करने की क्षमता भी शामिल की जाती है।

NOTES

जैसा कि विदित है या जैसा कि लिखा गया है-

छः वर्ष की उम्र में औसतन रूप से बच्चे 13000 शब्द समझने लगते हैं। 18 वर्ष में यह शब्दावली 60,000 शब्दों की हो जाती है, अर्थात् प्रथम जन्मदिन से दस गुना तक वह समझने लगता है और अपने निरन्तर जीवन में हर 10 मिनट में एक नया शब्द सीखता है।

डेकन ने बताया कि इसलिए यह वास्तविक पहेली है, जिसमें इन शब्दों को खोना शामिल है। अन्य प्रजातियों के मध्य कोई विशिष्ट भाषा प्रयोग नहीं की जाती है या संचार के अन्य प्रारूप इसमें शामिल हो सकते हैं और इसमें समस्या यह है कि यह अत्यधिक गिनने योग्य जो कि अधिकतर ये अन्य प्रजातियों के मध्य भिन्न-भिन्न भाषाओं को समझने में मुश्किल उत्पन्न करें।

वास्तविक तथ्य यह है कि मानव और जानवरों द्वारा जो कि कथन के गुण और दोष के ऊपर उच्चतम रूप में कार्य करता है, जो कि मानव और जानवरों के मध्य इस अन्तर को कम करते हैं।

अन्तर की आवश्यकता है। मानव मनुष्य की भाषाओं का उपयोग करते हुए उन्हें समझने की योग्यता रखता हैं बाइबल भी इस बात का प्रस्ताव रखती है कि केवल मानव भाषाओं के उद्गम को वर्णित करे, जब इसे रिकॉर्ड किया जाए। तब भगवान ने कहा हमारी छवि में मनुष्य को शामिल किया जाता है, उसमें मानव और स्त्रियों को जिनको भगवान द्वारा बनाया गया है, शामिल किया जाता है।

विज्ञापनों में भाषा का प्रयोग

विज्ञापन संप्रेषण का एक तरीका है जिसका इस्तेमाल एक आडियंस (दर्शकगण), पाठक, या श्रोताओं को संप्रेषण से जुड़े रहने या कोई नई कार्यवाही के लिए प्रोत्साहित या प्रेरित करने के लिए किया जाता है। सामान्यतया, इसका वांछित परिणाम किसी वाणिज्यिक प्रस्ताव के संदर्भ में उपभोक्ता के व्यवहार को संचालित करता है, हालांकि राजनीतिक और सिद्धान्तपरक (वैचारिक) विज्ञापन भी आम हैं। विज्ञापन हका उद्देश्य कर्मचारियों या शेयरधारकों को इस बारे में आश्वस्त करना भी हो सकता है कि एक कम्पनी में दम है या कि वह एक सफल कम्पनी है। विज्ञापन संदेश का मूल्य आम तौर से स्पांसर्स द्वारा चुकाया जाता है और इसे अनेक पारंपरिक माध्यमों (मीडिया) के जरिए देखा जाता है: इसमें सम्मिलित हैं – मास मीडिया, जैसे कि समाचार पत्र, पत्रिकाएं, टेलीवीजन कमर्सियल्स, रेडियो विज्ञापन, आउटडोर विज्ञापन या डायरेक्ट मेल; या नवीन मीडिया, जैसे कि वेबसाइटें और टेक्ट मैसेजेज।

कमर्सियल विज्ञापन अक्सर 'ब्रांडिंग' के जरिए अपने उत्पादों या सेवाओं के उपभोग को बढ़ाने का प्रयास करते हैं, जिसके तहत ब्रांड के कुछेक गुणों को उपभोक्ताओं के दिलो-दिमाग बिठाने के लिए किसी इमेज या उत्पाद के नाम को बार-बार दोहराया जाता है। ऐसे गैर -वाणिज्यिक विज्ञापन जो किसी उपभोक्ता उत्पाद या सेवा से इतर चीजों का विज्ञापन करने के लिए धन खर्च करते हैं। उनमें शामिल हैं -राजनीतिक पार्टियां, हित समूह, धार्मिक संगठन, और सरकारी एजेंसियां। गैर-लाभ कारी संगठन लोगों को प्रेरित करने लिए नि:शुल्क पद्धतियों का आश्रय ले सकती हैं, जैसे सार्वजनिक सेवा की घोषणा (पै)।

19वीं शताब्दी के आखिरी और 20वीं सदी के शुरूआती दशकों में व्यापक पैमाने पर उत्पादन के आधार के साथ ही आधुनिक विज्ञापन का विकास हुआ।

वर्ष 2010 में विज्ञापन पर किए जा रहे खर्च को यूनाइटेड स्टेट्स के संदर्भ में 300 बिलियन डालर और शेष विश्व के संदर्भ में 500 डालर आंका गया था।

अंतर्राष्ट्रीय रूप से सबसे बृहद समूह ('बिग फोर') ये हैं –ईंटर पब्लिक, ओमनीकॉम, पब्लिसिस और WPPA

परिभाषा

1. किसी पहचाने गए स्पांसर द्वारा विविध मीडिया के जरिए उत्पादों (वस्तुएं एवं सेवाएं) या विचार के बारे में किया गया सूचना गैर-वैयक्तिक संप्रेषण जिसके लिए आमतौर पर कीमत चुकाई जाती है और जो आम तौर पर अपनी प्रकृति में उत्प्रेरक होता है। (एरेंस, वेई गोल्ड, एरेंस, 2010)।

2. किसी पहचाने गए स्पांसर द्वारा किसी संगठन, उत्पाद, सेवा या विचार के बाबत किया गया कोई गैर-वैयक्तिक संप्रेषण, जिसका मूल्य चुकाया जाता है। (ब्लेक एंड ब्लेक, 1998)

3. किसी आडियंस को प्रेरित या प्रभावित करने के लिए किसी पहचाने गए स्पांसर द्वारा मास मीडिया के जरिए किया गया गैर-वैयक्तिक संप्रेषण जिसके लिए वह मूल्य चुकाता है। (वेलस, बर्नेट और मोरैटी, 1998)

4. मिले जुले विपणन संप्रेषण का वह तत्व जो गैर वैयक्तिक होता है और जिसके लिए पहचाना गया स्पांसर मूल्य चुकाता तथा जिसे वस्तुओं, सेवाओं, व्यक्ति या विचार के अंगीकरण को प्रवर्तित करने के लिए जन संचार के विविध चैनलों के जरिए संवितरित किया जाता है। (बोयर्डन इनग्राम और लाफोर्ज, 1998)

5. एक सूचनात्मक या प्रेरक संदेश जिसका एक गैर-वैयक्तिक माध्यम के जरिए विस्तार किया जाता है और जिसकी लागत एक पहचाना गया स्पांसर करता है जिसके उत्पाद को किसी रूप में पहचाना जाता हो। (जिकमंड और डी एमिको, 1999)

विज्ञापनों में भाषा-प्रयोग बड़े चमत्कारिक आकर्षक, प्रभावोत्पादक, हृदय स्पर्शी एवं सार-गर्भित होते हैं। आज के व्यावसायिक कार्यशैली में सटीक भाषा-प्रयोग ने विज्ञापनों को जानदार, वजनी और लोक-लुभावन बनाने में बड़ी अहम् भूमिका निभायी है। कुछ चटपटी तस्वीरें, कुछ मुग्ध कर देने वाले आरेख और कुछ पल के लिए ध्यान खींचने वाले दृश्यों को प्रभावोत्पादक भाषा-प्रयोग से पाठकों को मुग्ध कर दिया जाता है। नजरें विज्ञापनों पर चिपक सी जाती हैं, और विज्ञापनदाताओं के काम पूरे हो जाते हैं- उद्देश्य सफल हो जाते हैं। भाषा का प्रयोग बड़े सोच-समझ कर किया जाता है। इस विद्या के माहिर लोगों ने व्यावसायिकता के माध्यम से भाषा को लोक-लुभावन बनाने में कई तरह के फेर-बदल करने में भी कोई कोर-कसर नहीं छोड़ते। अक्सर सस्ते और निरर्थक व्यावसायिक उत्पादों के विज्ञापनों को सजीली उत्तेजक तस्वीरों के साथ निरे झूठे फायदों को बढ़ा-चढ़ाकर छापते हैं। केवल तस्वीरों को देखकर मन को मंत्र मुग्ध कर दिया जाता है। भाषा के चमत्कारिक प्रयोग से और तस्वीरों के प्रभावी माध्यम से आमतौर पर दिमाग को सोचने-समझने से रोक दिया जाता है अथवा मन्द कर दिया जाता है। भावनाओं को तीव्र कर दिया जाता है और हो जाता है, मुग्ध हो जाने का फैसला। चाहे कपड़ों की बिक्री बढ़ाने की हो या जूतों की, आपको इसमें इस तरह व्यापित कर दिया जाता है कि आप मॉडलों से अपने को जोड़ने लगते हैं, भले ही आप फिसड्डी क्यों न हों। अन्तःपरिधान के कपड़े हों या सौन्दर्य प्रसाधन की सामग्रियाँ हों, कारें हों या बाइक, सिगरेट हों या वाइन या फास्ट फूड के उत्पाद हों या सैर-सपाटों की, हर जगह भाषा-प्रयोग का चमत्कार मिष्ठानों को जैसे चाशनी में सराबोर कर दिया जाता है और हमारे मुँह से लार और पानी टपकने लगते हैं। ठीक इसी तरह भद्दी-भौंदे और फिसड्डी उत्पादों को आकर्षक और मंत्र-मुग्ध कर देने वाले भाषा प्रयोग के चमत्कार से उत्पादों की बिक्री बढ़ा दी जाती है और ग्राहकों की संख्या अनगिनत हो जाती है। मोबाइल कम्पनियों के विज्ञापनों की कल्पना करें। कुछ पाठ्य-पुस्तकों की बिक्री बढ़ाने के लिए भाषा-प्रयोग का कमाल देखिए कि पुस्तक हाथ लगाते ही आप फर्राटेदार अंग्रेजी बोलने लगेंगे, चाहे पूरी उम्र क्यों न समाप्त हो जाए, फर्राटेदार अंग्रेजी आप तब तक नहीं बोल पाएंगे, जब तक अभ्यास न करें। लेकिन विज्ञापन की भाषा अपना कमाल तो दिखाएगी ही।

विज्ञापन-भाषा का रूप

यह भाषा तीन रूपों में प्रयुक्त होती है-लिखित, वाचिक तथा मौखिक-लिखित रूप में। इस भाषा का प्रमुख रूप लिखित होता है तथा माध्यम प्रेस होता है। विज्ञापन में लिखित भाशा साभिप्राय होती है। इसका उद्देश्य विज्ञापन को स्मरणीय, पठनीय, आकर्षक और क्रेता-प्रेरक बनाना होता है। इसके लिए उचित शब्दों का प्रयोग किया जाता है।

विज्ञापन की भाषा का दूसरा रूप वाचिक या स्पोकन होता है। इस रूप को आकाशवाणी पर प्रचारित होने वाले विज्ञापनों में प्रयुक्त किया जाता है। इसे भाषा का श्रव्य रूप भी कह सकते हैं। इस रूप के अन्तर्गत शब्दों की ध्वनि का आरोह-अवरोह, पात्रानुकूलता, संगीतमयता आदि का समन्वय होता है जो विज्ञान को कर्णप्रिय, मोहक और आकर्षक बनाते हैं।

NOTES

उपर्युक्त दोनों भाषाओं का मिश्रित रूप विज्ञापन की भाषा का तीसरा रूप है। इसमें दृश्य-श्रव्य का समन्वय होता है। रेडियो पर विज्ञापन की भाषा केवल सुनाई देती है और समाचार-पत्रों में दिखाई देती है। दूरदर्शन या वीडियो पर यह सुनाई-दिखाई के साथ चित्रित रूप में आती है। विज्ञापन में चलचित्र होते हैं, अतः यहाँ पर लिखित और वाचिक दो स्तर भी मिलते हैं। चित्र प्रस्तुत होता है, सम्वाद के प्रयोग से संदेश उच्चरित होता है तथा उसी क्रम में लिखित संदेश भी उभरता है। चलचित्रों में भी भाषा के इसी रूप का प्रयोग होता है। ये शब्द आड़े-तिरछे, छोटे-बड़े-कई रूपों में उभरते हैं।

विज्ञापन की भाषा को सामान्यतः काव्यभाषा की कोटि में रखा जाता है, क्योंकि इसमें विशिष्ट भाव और विचार प्रस्तुत किये जाते हैं। इसकी भाषा की संरचना भी काव्यभाषा की भाँति स्वच्छन्दता लिए होती है। विज्ञापन की भाषा व्याकरण के नियमों से समान स्थिति में भी भाषा समरूप नहीं होती। यह भाषा व्याकरण के समस्त नियमों से मुक्त और काव्य-गुण-दोषों से युक्त विशिष्ट भाषा होती है। इसमें नाटकीयता का गुण भी विद्यमान रहता है।

भाषा की संरचना– विज्ञापन की विषय-वस्तु के अनुकूल ही भाषा का निर्णय लिया जाता है। इसमें तीन आयामों-विज्ञापन-क्षेत्र, विज्ञापन प्रकार, विज्ञापन शैली को दृष्टिपथ में रखकर शब्दावली का चुनाव किया जाता है। क्षेत्र के अन्तर्गत जनसमुदाय, जन-स्वास्थ्य, विज्ञान आदि को रखा जाता है। जैसा क्षेत्र होता है, वैसा ही भाषा का आयाम हो जाता है। व्यापार-क्षेत्र में भाषा का रूप होगा-सोना लुढ़का, चांदी सुस्त, गेहूँ में उछाला, चीनी कड़वी आदि। विज्ञापन-प्रकार के अन्तर्गत समाचार, रेडियो, दूरदर्शन आदि आते हैं। समाचार-पत्र के लिए विज्ञापन में लिखित रूप की विशेषताएँ होंगी। रेडियो के विज्ञापन में शब्द पर विशेष बल होगा और दूरदर्शन या चलचित्र पर चलने वाले विज्ञापन में भाषा त्रिआयामी अर्थात् वाचिक, लिखित के साथ दृश्यात्मक होगी। अन्तिम दो रूपों में भाषा संवादिक, अभिनेय और भावोद्घाटक होगी। शैली के अन्तर्गत-अभिधा, लक्षणा, व्यंजना का प्रयोग किया जाता है। सीधी, सपाट भाषा में अभिधा शैली होती है। 'बिजली बचत का अर्थ है- बिजली उत्पादन' जैसे प्रयोग में लक्षणा का प्रयोग होता है। तीसरा आयाम व्यंजना का है, यथा- 'मर्जी है आपकी, आखिर सिर है आपका ..... सुरक्षा के लिए हेलमेट पहनिए', लिखित में शब्द की अर्थवत्ता को, वाचिक में भाषा के उतार-चढ़ाव को तथा मिश्रित में व्यंजनार्थक आयाम को महत्व दिया जाता है। विज्ञापन की भाषा की शैली अनौपचारिक होती है जो उपभोक्ता को आकर्षित करती है।

भाषा के गुण– विज्ञापन की भाषा विशेष होती है। विशेष भाषा में अर्थ-विशेष को अभिव्यक्त करने की क्षमता और सामर्थ विकसित हो जाते हैं। विज्ञापन की भाषा में जो गुण होने चाहिए वे कॉपीराइटर की योग्यता और शब्द भण्डार पर निर्भर करते हैं। भाषा का पहला गुण ध्यानाकर्षण की क्षमता है। सन्देश को ऐसी आकर्षक भाषा में रखा जाता है कि उपभोक्ता का ध्यान उस संदेश की ओर बरबस आकर्षित होता है। दूसरा गुण स्मरणीयता है। विज्ञापन पाठक/दर्शक को याद हो जाना चाहिए। वह उसकी स्मरणशक्ति को जागृत रखे। विज्ञापन का पठनीय होना तीसरा गुण है। वह हर वर्ग, आयु की समझ में आ सके। चौथा गुण भाषा की प्रभावोत्पादकता है। पाठक दर्शक यदि विज्ञापन को पुनः पढ़ता है तो इस गुण की सृष्टि होती है। विक्रयशीलता पांचवां गुण है। यदि उपभोक्ता विज्ञापन से आकर्षित व प्रभावित होकर वस्तु को खरीदने के लिए तैयार हो जाता है तो यह गुण स्वयंमेव आ जाता है। छठे गुण के रूप में विश्वसनीयता को लिया जाता है। उत्पाद के विषय में उपभोक्ता में विश्वास पैदा हो जाए। विशिष्ट भाषा-प्रयोगों से यह गुण उभरता है। सातवां गुण भाषा की स्वच्छंदता का है। भाषा में व्याकरण के नियमों का कोई बन्धन न होने से भाषा में स्वच्छंदता आती है। उच्चरित माध्यम में यह गुण विशेष प्रभावी होता है। आठवां गुण परम्परा मुक्ति का है। भाषा कभी काव्यात्मक, कभी संवादात्मक, कभी गद्यात्मक होने पर इस प्रकार की हो जाती है जिसमें नये वाक्य, नये पदबन्ध की रचना की जाती है। नौवां गुण प्रयोजनपरकता है। जब उपभोक्ता को यह बताने का प्रयास किया जाता है कि इस वस्तु के बिना उसका काम नहीं चल सकता तो यह गुण आ जाता है। भाषा में जीवन्तता दसवां गुण है। विज्ञापन की भाषा रूढ़, व्याकरणबद्ध, यांत्रिक नहीं होती, बल्कि जीवन्त होती है, तभी वह उपभोक्ता को लुभाती है।

स्व प्रगति की जाँच करें:

3. संचार की महत्ता के लिए किन कारकों को उत्तरदायी माना जाता है?
4. बाह्य संचार से आप क्या समझते हैं ?
5. विज्ञापन की भाषा के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए।

विज्ञापन की भाषा में कभी साधारण, कभी मिश्र और कभी संयुक्त वाक्यों का प्रयोग किया जाता है। कभी केवल उपवाक्यों, विशेषणपरक वाक्यों तथा क्रिया-विशेषण परक वाक्यों से ही काम चला लिया जाता

है। इसके अतिरिक्त विज्ञापन की भाषा काव्य-भाषा जैसी ही होती है। इसमें यथासम्भव तुकबन्दी का प्रयोग किया जाता है। कभी मुहावरेदार भी हो जाती है। कहीं तुलनात्मक हो जाती है तो कहीं सूत्रात्मक, कहीं यह संकर भाषा भी हो जाती है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि विज्ञापन में उसके कथ्य के साथ भाषा का विशेष महत्व है। इस भाषा में उपर्युक्त गुण होने चाहिए।

स्व-प्रगति की जाँच के उत्तर

1. **जॉन आदिर के अनुसार** - "सम्प्रेषण आवश्यक रूप से एक व्यक्ति के द्वारा दूसरे व्यक्ति के सम्पर्क में आने को, खुद को और दूसरों को समझने की कला है। यह अनेक प्रकार के संकेतों या चिन्हों के समूह द्वारा विभिन्न व्यक्तियों के मध्य अर्थों के आदान-प्रदान की प्रक्रिया है।"

2. **स्वैच्छिक प्रतीक-चिन्हों के द्वारा संचार–** सभ्यता मनुष्य के तीन अमूल्य सम्पत्तियों से परिलक्षित होती है प्रथम कि इंसान की सोचने की क्षमता, अन्य कि अपने अन्दर संवाद करने की क्षमता हो और तीसरा कि प्रजाति विशिष्ट अधिग्रहण और भाषा के कल्पित चिन्हों का प्रयोग। सभ्यता का उपहार और मनुष्य के ज्ञान की सभी शाखाओं का मूल यह है कि उनमें सोचने की क्षमता है और भाषा के चिन्हों द्वारा संवाद करने में सक्षम है। संचार के अन्य सभी माध्यमों के अलावा भाषा सबसे अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि ये इंसान के ज्ञान और रिश्तों को एकत्रित कर उन्हें स्पष्ट करती है। संचार की प्रक्रिया हमें अपने अनुभव को उपयोग और पुनः उपयोग करने की अनुमति देता है, तथा भूतकाल के ज्ञान को वर्तमान में लाने और संचार के प्रतीक चिन्हों की सहायता से संचार के लिए तैयार करता है जिनसे भविष्य में अमूर्त विचार बनाए जा सकें।

3. संचार की महत्ता के लिए निम्न कारकों को उत्तरदायी माना जा सकता है–

   (a) **संगठन का बड़ा आकार :** हम बड़े संगठनों के आकार के साथ रह रहे हैं। वर्तमान के संगठन गत वर्षों के उद्यमों की तुलना में आश्चर्यजनक विकसित हो रहे हैं। हजारों व्यक्ति एक ही इकाई में एक साथ काम कर रहे हैं। या विश्व में फैले हुए अनेक राज्यों की अनेक इकाइयों में अनेक व्यक्ति काम कर रहे हैं। इसका परिणाम यह हुआ कि ये स्तर पदानुक्रम के पाँच स्तर होते हैं। परन्तु अधिकतर परिस्थितियों में 13 से 15 स्तर होते हैं। यह एक बहुत जटिल काम हैं। कि जगन्नाथ को व्यवस्थित किया जाए जैसे एक विशाल संगठन को व्यवस्थित करना। लोगों से प्रत्यक्ष विशाल संगठन करने, पुनर्निवेशन करने में संचार की विशाल महत्ता है।

   (b) **व्यापारिक संघों का विकास:** विशेष रूप से प्रथम विश्व युद्ध के बाद कर्मचारियों का समूह एक शक्ति के रूप में उभरा कर्मचारियों के संघ को विश्वास में लिए बिना कोई भी प्रबन्ध कुशलतापूर्वक कार्य नहीं कर सकता प्रबन्धकों द्वारा कर्मचारियों के प्रतिनिधित्व कर्ता के साथ संगठन को प्रचलित परिस्थितियों में।

4. **बाह्य संचार :** एक संगठन और अन्य संगठनों के मध्य सूचनाओं और संदेशों को आदान प्रदान समूहों या प्रत्येक बाहर वाले के साथ एक औपचारिक संरचना मे होना। बाहरी संचार का प्रमुख उद्देश्य समूहों के साथ सुविधाएँ प्रदान करना जैसे पूर्तिकर्ताओं विनियोजकों और अंशधारकों और संगठन की स्वीकारात्मक छवि और इसके उत्पाद और सेवाएँ जो कि वास्तविक उपभोक्ताओं और समाज को बड़े पैमाने पर सेवाएँ प्रदान करते है और मैने 15 संगठन के नेताओं को उनके संगठनों के साथ चुनौतियों का सामना करने और उनके प्रत्युत्तर को 9 महत्वपूर्ण श्रेणियों में विश्लेषित करते हुए पहचाना जाता है।

5. **विज्ञापन-भाषा का रूप–** यह भाषा तीन रूपों में प्रयुक्त होती है–लिखित, वाचिक तथा मौखिक-लिखित रूप में। इस भाषा का प्रमुख रूप लिखित होता है तथा माध्यम प्रेस होता है। विज्ञापन में लिखित भाशा साभिप्राय होती है। इसका उद्देश्य विज्ञापन को स्मरणीय, पठनीय, आकर्षक और क्रेता-प्रेरक बनाना होता है। इसके लिए उचित शब्दों का प्रयोग किया जाता है।

NOTES

विज्ञापन की भाषा का दूसरा रूप वाचिक या स्पोकन होता है। इस रूप को आकाशवाणी पर प्रचारित होने वाले विज्ञापनों में प्रयुक्त किया जाता है। इसे भाषा का श्रव्य रूप भी कह सकते हैं। इस रूप के अन्तर्गत शब्दों की ध्वनि का आरोह-अवरोह, पात्रानुकूलता, संगीतमयता आदि का समन्वय होता है जो विज्ञान को कर्णप्रिय, मोहक और आकर्षक बनाते हैं।

अभ्यास-प्रश्न

1. मीडिया में भाषा के प्रयोग तथा महत्व पर प्रकाश डालिए
2. संचार का अर्थ स्पष्ट करते हुए इसके कार्यक्षेत्र का वर्णन कीजिए।
3. संचार की क्या विशेषताएँ हैं ? समझाइए।
4. मीडिया की भाषा के विकार व समस्याओं का संक्षिप्त विवरण दें।
5. विज्ञापनों में भाषा के प्रयोग को समझाते हुए इसे परिभाषित करें।

इकाई - I

NOTES

प्रयोजनमूलक हिन्दी : अभिप्राय एवं स्वरूप

इकाई में शामिल है:

- प्रयोजनमूलक हिन्दी का अर्थ, परिभाषा एवं स्वरूप
- हिन्दी भाषा की प्रकृति एवं विशेषताएँ
- मातृभाषा
- मातृभाषा : हिन्दी
- संचार भाषा
- राजभाषा के रूप में हिन्दी

अध्ययन के उद्देश्य :

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात्, आप निम्न बिन्दुओं को समझने में सक्षम होंगे -

- प्रयोजनमूलक हिन्दी का अभिप्राय
- हिन्दी भाषा की प्रकृति एवं विशेषताएँ
- मातृभाषा
- संचार भाषा का अभिप्राय
- राजभाषा के रूप में हिन्दी

NOTES

प्रयोजनमूलक हिन्दी का अभिप्राय

प्रयोजनमूलक हिन्दी को अंग्रेजी में फंक्शनल हिन्दी (Functional Hindi)- कहा जाता है तथा इसका अभिप्राय उस हिन्दी से लिया जाता है जो विभिन्न क्षेत्रों यथा- जनसंचार, पत्रकारिता, मीडिया लेखन, कार्यालयी पत्रव्यवहार, अनुवाद आदि में प्रयुक्त की जाती है।

स्पष्ट है कि हिन्दी का यह स्वरूप विशिष्ट का यह स्वरूप विशिष्ट है तथा सामान्य भाषा से कुछ अलग है। सामान्य बोलचाल में जिस हिन्दी भाषी क्षेत्र का कोई व्यक्ति बोल सकता है किन्तु प्रयोजनमूलक हिन्दी का ज्ञान शिक्षित होकर ही प्राप्त किया जा सकता है तथा विविध क्षेत्रों में उसमें दक्षता प्राप्त करनी पड़ती है।

प्रयोजनमूलक हिन्दी का अभिप्राय उस हिन्दी से है जो विविध क्षेत्रों में सेवा माध्यम (Service Tool) के रूप में प्रयुक्त होती है। यदि हिन्दी को एक समर्थ भाषा बनाना है तथा अंग्रेजी के समकक्ष खड़ा करना है तो उसे प्रयोजनमूलक बनाना आवश्यक है। तभी वह रोजी-रोटी के साधन के रूप में विकसित हो सकेगी तथा उसकी उपयोगिता बढ़ेगी। विविध प्रकार के पत्राचार, भाषा कम्प्यूटिंग, पत्रकारिता, मीडिया लेखन एवं अनुवाद के क्षेत्रों में प्रयुक्त होने वाली हिन्दी को प्रयोजनमूलक हिन्दी कहा जाता सकता है।

डॉ. भोलानाथ तिवारी ने प्रयोजनमूलक हिन्दी के विविध रूप मोटे तौर से इस प्रकार बताये हैं-

1. व्यापारिक हिन्दी
2. कार्यालयी हिन्दी
3. शास्त्री हिन्दी
4. वैज्ञानिक तथा तकनीकी हिन्दी
5. प्रशासनिक हिन्दी
6. जनसंचार माध्यमों की हिन्दी।

व्यापारिक हिन्दी से उनका अभिप्राय हिन्दी के उस रूप से है जो व्यापारिक मण्डियों की भाषा है, शेयर मार्केट में प्रयुक्त होती है, सर्राफा बाजार के दलालों की भाषा है। यह सामान्य भाषा से कुछ अलग होती है।

कार्यालयी हिन्दी का प्रयोग विभिन्न सरकारी, स्वायत्तशासी एवं गैर-सरकारी कार्यालयों में विभिन्न रूपों में होता है। कार्यालयी पत्राचार इसी हिन्दी में लिखा जाता है। यह हिन्दी भी बोलचाल की साधारण हिन्दी से अलग होती है तथा इसमें प्रयुक्त शब्दावली भी विशिष्ट प्रकार की होती है। कार्यालयी पत्र भी विविध प्रकार के होते हैं तथा एक निश्चित प्रारूप में उन्हें लिखा जाता है।

शास्त्रीय हिन्दी का तात्पर्य उस हिन्दी से है जो कि विशेष या विषय की अभिव्यक्ति हेतु प्रयुक्त होती है। उदाहरण के लिए काव्यशास्त्र, दर्शनशास्त्र, भाषा शास्त्र या संगीत शास्त्र में प्रयुक्त होने वाली हिन्दी की शब्दावली एक जैसी न होकर अलग-अलग होती है तथा पारिभाषिक होती है।

तकनीकी हिन्दी का तात्पर्य विज्ञान एवं तकनीक के क्षेत्र में प्रयुक्त होने वाली हिन्दी से है। विविध ट्रेड (व्यवसाय) बढ़ईगीरी, लुहारगीरी, प्रेस, भारी उद्योग, कारखानों में प्रयुक्त हिन्दी का स्वरूप भी अलग-अलग ढंग का होता है। उदाहरण के लिए फीरोजाबाद के काँच-चूड़ी उद्योग की शब्दावली आगरा के जूता उद्योग में प्रयुक्त शब्दावली से नितान्त भिन्न होगी। वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली का प्रयोग विज्ञान, तकनीक, चिकित्सा, इंजीनियरिंग, कृषि अनुसंधान, आदि क्षेत्रों में अलग-अलग रूप में होता हैं।

प्रशासनिक हिन्दी को कुछ लोग कार्यालयी हिन्दी भी कहते हैं। इसका प्रयोग प्रशासनिक कार्यों में किया जाता है। जनसंचार माध्यमों में प्रयुक्त होने वाली हिन्दी का सम्बन्ध पत्रकारिता, रेडियो, टी.वी. की भाषा से हैं। विज्ञापनों की भाषा भी इसी के अन्तर्गत आती है।

प्रयोजनमूलक हिन्दी की उपयोगिता

आज हिन्दी भाषा का बहुमुखी विकास हो रहा है। वर्तमान समय में हिन्दी की लोकप्रियता दिनों दिन बढ़ रही हैं इसका सबसे बड़ा प्रमाण है टेलीविजन पर बढ़ते हिन्दी चैलन। मीडिया को जनता की नब्ज कहा जा सकता हैं। प्रारम्भ में टी.वी. पर अंग्रेजी चैनलों का बोलबाला था किन्तु हिन्दी भाषी दर्शकों की संख्या को देखकर अंग्रेजी समर्थक मीडिया ने ही हिन्दी चैनलों का सहारा लिया। आज हिन्दी के जितने न्यूज चैलन हैं, उतने अंग्रेजी के नहीं। इन न्यूज चैनलों पर दिखाये जाने वाले विज्ञापनों में भी हिन्दी का ही अधिकाधिक प्रयोग हो रहा है। इससे स्पष्ट है कि हिन्दी की विविध क्षेत्रों में आवश्यकता पड़ रही हैं

प्रयोजनमूलक हिन्दी का तात्पर्य है- वह हिन्दी जिसका प्रयोग हम संचार, विज्ञापन, पत्रकारिता, मीडिया लेखन आदि विविध क्षेत्रों में करते हैं। मीडिया लेखन के अन्तर्गत रेडियों नाटक, फीचर, पटकथा लेखन, उद्घोषणा लेखन आदि अनेक विषय आते हैं। इन सबकी अलग तकनीक है, अलग विधि है। आज का युग विज्ञापन का युग है। विज्ञापन की भाषा की अलग विशेषताएँ होती हैं। वह इस प्रकार का होना चाहिए जो हमारे दिलो-दिमाग पर छा जाये और हमें उस वस्तु-विशेष की ओर आकृष्ट कर दे।

इसी प्रकार रिपोर्ताज, फीचर, रूपक, डाक्यूमेंट्री लेखन की विधियाँ भी अलग-अलग हैं। समाचार लेखन, सम्पादकीय लेखन, शीर्षक लेखन आदि पत्रकारिता से जुड़ी हुई चीजें हैं वस्तुतः आज हिन्दी की उपयोगिता विविध क्षेत्रों में है। अतः आवश्यकता इस बात की है कि विद्यार्थी हिन्दी के इस रूप से भी परिचित हों जो उन्हें व्यवसायिक क्षेत्र में जीविका उपार्जित करने में सहायक हो। प्रयोजनमूलक हिन्दी, भाषा का वह रूप है जो विविध क्षेत्रों में प्रयुक्त होता है तथा व्यक्ति को उन क्षेत्रों में जीविका खोजने में सहायक हो सकता है।

प्रयोजनमूलक हिन्दी : सिद्धान्त एवं प्रविधि

विश्व में मानव सभ्यता, संस्कृति और ज्ञान-विज्ञान की उन्नत धरोहर को अक्षुण्ण रखने में भारतवर्ष का जो योगदान रहा है उसमें भाषिक दायित्वों के निर्वाहस्वरूप भारतीय भाषाओं की समन्वयक हिन्दी भाषा की अहम् भूमिका है। हिन्दी एक मात्र ऐसी भाषा है जिसने भारतीय साहित्य, कला, ज्ञान तथा संस्कृति को न केवल सघन सार्थक अभिव्यक्ति प्रदान की है बल्कि उनकी अनुरक्षा करते हुए उन्हें नित्य गत्यात्मक भी बनाए रखा है। आंतरिक संरचना की सौन्दर्यशीलता, भाव-भंगिमाओं की गहनता, अभिव्यक्ति की तीव्रता एवं शैलियों की विविधता को समेटे हिन्दी साहित्य अनेक उन्नत रूपों में प्रवाहमान है परन्तु आधुनिक युग में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के अभूतपूर्व प्रस्फुटित एवं फैलाव के कारण हिन्दी भाषा की उपादेयता और प्रयोजनमूलकता अनेक नये क्षेत्रों में स्वयंसिद्ध होने के फलस्वरूप उसके नये प्रयुक्ति रूप भी उभरकर सामने आये हैं जिनमें 'प्रयोजनमूलक हिन्दी' सर्वोपरि माना जा सकता है।

प्रयोजनमूलक हिन्दी की आवश्यकता

भारतवर्ष में समृद्धतम साहित्यिक हिन्दी की पार्श्वभूमि पर प्रयोजनमूलक हिन्दी की आवश्यकता वस्तुतः तब महसूस की गई जब हिन्दी राजभाषा के पद पर आसीन हुई। विश्व में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के तेजी से फैले प्रसार के साथ भारत में भी इस नवीनतम ज्ञान-विज्ञान और टेक्नोलॉजी की आँधी उमड़ पड़ी। इसके फलस्वरूप हिन्दी को नये महत्वपूर्ण भाषिक दायित्वों और अभिव्यक्ति के सर्वथा नवीनतम क्षेत्रों से गुजरना पड़ा। आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक तथा वैज्ञानिक संदर्भों के बदलाव के साथ बदलती हुई स्थितियों की जरूरत के प्रयोजन-विशेष के संदर्भ में हिन्दी के एक ऐसे रूप की तीव्र आवश्यकता पड़ी जो प्रशासन और ज्ञान-विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों को अभिव्यक्ति कर सक्षमता से रूपायित कर सके।

राजभाषा के पद पर आसीन होने से पूर्व हिन्दी सरकारी कामकाज तथा प्रशासन आदि की भाषा कभी नहीं रही थी। मुसलमान शासकों के शासन की भाषा उर्दू और अरबी-फारसी रही। अंग्रेजों के शासनकाल में उनके प्रशासन की भाषा अनिवार्यतः अंग्रेजी ही रही। अतः भारत की राजभाषा बनने के बाद हिन्दी को सरकारी कामकाज तथा प्रशासन के सर्वथा नये अनछुए क्षेत्र से गुजरना पड़ा और तब ऐसी हिन्दी की

आवश्यकता पड़ी जो पारिभाषिक शब्दावली, भाषिक गठन, वस्तुनिष्ठ एकार्थता, अभिव्यक्ति की स्पष्टता आदि से युक्त हो ताकि सरकारी कामकाज के लिए माध्यम के रूप में उसका इस्तेमाल किया जा सके।

NOTES

भारत में विज्ञान और टेक्नोलॉजी के प्रस्फुटन और फैलाव के कारण भी इनको अभिव्यक्त करने के माध्यम के रूप में हिन्दी को अपने आपको सर्वथा नवीनतम रूप में ढालने की सख्त जरूरत महसूस हुई। ऐसा नया रूप जो विज्ञान और टेक्नोलॉजी के गुणसूत्रों, सिद्धान्तों, नवीनतम प्रयोग विधियों तथा भाषिक संरचना को वैज्ञानिक रूप में यथास्थिति, मनोविज्ञान, ज्योतिष, गणित तथा अन्य सामाजिक शास्त्र आदि ज्ञान-विज्ञान क्षेत्रों की चिन्तन परम्परा की अभिव्यक्ति संस्कृत एवं हिन्दी भाषाओं द्वारा सहज सम्भव थी किन्तु इन क्षेत्रों तथा पश्चिम से आयी टेक्नोलॉजी एवं भौतिकशास्त्र, रसायन, कम्प्यूटर, इंजीनियरी, अंतरिक्ष विज्ञान, इलेक्ट्रॉनिक, दूरसंचार आदि अनेक अनछुए विज्ञान के क्षेत्रों से सम्बद्ध तकनीकी एवं प्रयोजनमूलक शब्दावली के निर्माण एवं प्रयोग की आवश्यकता हिन्दी भाषा के लिए अनिवार्य रूप में सामने आयी। इसी के साथ, प्रशासन, विधि, दूरसंचार, व्यवसाय, वाणिज्य, खेलकूद, पत्रकारिता आदि से सम्बोधित पारिभाषिक शब्दावली, पदावली तथा संकल्पनाओं के पुनः स्थापन, पुनः नियोजन एवं पुनरुत्थान हिन्दी भाषा के लिए एक अहम् जरूरत बनकर उभरी। फलतः हिन्दी का एक विशिष्ट प्रयुक्तिपरक रूप उभरकर सामने आया है। वस्तुतः जीवन और जगत की विविध स्थितियों तथा आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रयोग में लाया जाने वाला यही भाषा-रूप 'प्रयोजनमूलक हिन्दी' कहलाता है।

प्रयोजनमूलक हिन्दी बनाम व्यावहारिक हिन्दी

प्रयोजनमूलक हिन्दी और व्यावहारिक हिन्दी को प्रायः एक ही मानकर बहुत बड़ी गलती की जाती है। वस्तुतः दोनों में स्पष्ट अन्तर और भेद है। व्यावहारिक हिन्दी का सीधा मुख्यतः बोलचाल तथा जीवन के सामान्य व्यवहार आदि से है। इन क्षेत्रों में सामान्यतः आपसी बातचीत, दैनंदिन व्यवहार, यातायात, सब्जी-मण्डी, बाजार, पर्यटन, सामाजिक एवं राजनीतिक व्यवहार, व्यापार तथा साहित्य के अनेकविध अंग आदि का समावेश किया जा सकता है। अतः व्यावहारिक हिन्दी से स्पष्ट तात्पर्य है कि रोजमर्रा के दैनिक जीवन और जगत की कार्य-सिद्धि हेतु माध्यम के रूप में प्रयुक्त ऐसी हिन्दी जिसमें विशिष्ट भाषिक संगठन और प्रयुक्ति-स्तर की अपेक्षा उसके व्यावहारिक प्रयोग पर ही अधिक बल रहता है। व्यावहारिक हिन्दी का प्रयोग क्षेत्र सीमित है और साथ-ही-साथ उसमें भाषा की वैज्ञानिकता संदिग्ध बनी रहती है।

इसके विपरीत, प्रयोजनमूलक हिन्दी का प्रयुक्ति-क्षेत्र तथा व्याप्ति प्रशासन परिचालन, प्रौद्योगिकी तथा ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्रों तक फैली हुई है। प्रयोजनमूलक हिन्दी की संकल्पन उसके अनुप्रयुक्त रूप को विशिष्ट भाषिक संरचना, पारिभाषिक शब्दावली तथा सामाजिक संदर्भों के परिप्रेक्ष्य में वैज्ञानिकता प्रदान करती है। प्रयोजनमूलक हिन्दी भाषा के समस्त मानक (Standard) रूपों को अपने में समेटे हुए होती है जिसमें अनिवार्यतः स्पष्टतया, एकरूपता, सुनिश्चितता एवं औचित्य का निर्वहन किया जाता है। प्रयोजन मूलक हिन्दी की अपनी विशिष्ट प्रयोजनपरक तकनीकी शब्दावली तथा पदावली होती है जो सरकारी कार्यालय, मानविकी, तंत्र ज्ञान, विज्ञान, अंतरिक्ष विज्ञान तथा कम्प्यूटर आदि सभी ज्ञान एवं विधा शाखाओं को सार्थक अभिव्यक्ति प्रदान करती है। अतः स्पष्ट है कि व्यावहारिक हिन्दी की अपेक्षा प्रयोजनमूलक हिन्दी अधिक प्रयोजनीय, तर्क-संगत, वैज्ञानिक तथा सार्थक मानी जा सकती है। इसीलिए, उसकी व्याप्ति, अर्थवत्ता तथा मूल्यवत्ता स्वयंसिद्ध है।

प्रयोजनमूलक हिन्दी : स्वरूप और व्याख्या

'प्रयोजनमूलक हिन्दी' भाषा विज्ञान की महत्वपूर्ण शाखा अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान (Applied Linguistics) के अन्तर्गत विकसित अत्याधुनिक बहुआयामी तथा बहुउपयोगी शाखा है। 'प्रयोजनमूलक' विशेषण हिन्दी भाषा के प्रयोगिक Applied तथा व्यावहारिक Functional पक्ष को अत्यधिक स्पष्ट करने के उद्देश्य से किया जाता है क्योंकि परम्परागत साहित्य तथा ज्ञान-विज्ञान एवं प्रशासन आदि के लिए प्रयुक्त साहित्य में अन्तर रखते हुए उनसे प्रयुक्ति के आधार पर जुड़े भाषा-भेदों या भाषा-रूपों को स्पष्टतः अलग करना बहुत आवश्यक होता है। विभिन्न ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्रों एवं सरकारी प्रशासन, जन-संचार विधि, खेलकूद आदि के कार्य-विधियों के सूक्ष्मतम अर्थों को व्यापक स्तर पर अभिव्यक्त करने हेतु हिन्दी भाषा की

अन्तर्बाह्य-वृत्तियों, प्रवृत्तियों, प्रयुक्तियों तथा प्रायोगिक स्तरों में आमूलचूल परिवर्तन की युगीन आवश्यकता महसूस की गई, जिसके तहत हिन्दी का नया भाषिक संरचना का रूप उभरकर सामने आया। आधुनिक समाज-जीवन, सरकारी प्रशासन, वाणिज्य और ज्ञान-विज्ञान एवं टेक्नोलॉजी की अनेकविध स्थितियों तथा आवश्यकताओं की प्रायोगिक प्रतिपूर्ति हेतु प्रयुक्त हिन्दी भाषा के इसी प्रयुक्तिपरक रूप को 'प्रयोजनमूलक Applied अथवा Functional कहते हैं।

प्रयोजनमूलक हिन्दी की चर्चा के संदर्भ में सवाल उठाये गये हैं कि क्या कोई हिन्दी 'निष्प्रयोजन' भी हो सकती है? किन्तु यह प्रश्न उन तथाकथित हिन्दी विद्वानों ने उठाया है जिनका बादरायण सम्बंध भी प्रयोजनमूलक हिन्दी के अध्ययन आदि से नहीं है। वस्तुत: निष्प्रयोजन हिन्दी की कल्पना इनके दिवालिया सोच की उपज कही जा सकती है। हिन्दी का कोई भी पक्ष या रूप निष्प्रयोजन न कभी था न कभी होगा। हिन्दी भाषा के लिए प्रयोजनमूलक विशेषण उसके प्रयुक्तिपरक अथवा प्रायोगिक पक्ष को स्पष्ट करने के लिए प्रयुक्त किया जाता है। 'प्रयोजनमूलक' व्यावहारिक या सामान्य शब्द नहीं किन्तु एक पारिभाषिक शब्द है जिसका स्पष्ट और परिभाषित अर्थ है "एक ऐसी विशिष्ट भाषिक संरचना से युक्त हिन्दी जिसका प्रयोग किसी विशेष प्रयोजन के लिए ही किया गया हो।" प्रयोजनमूलक हिन्दी के रूप का उद्‌भव और आधुनिक ज्ञान-विज्ञान के उत्पादन और उनके व्यावहारिक वितरण एवं प्रयोग से सम्बंधित माना जा सकता है। अत: प्रयोजनमूलक हिन्दी का प्रयोग सभी प्रकार के अत्याधुनिक विज्ञान तथा टेक्नोलॉजी के क्षेत्रों के साथ, सभी सरकारी प्रशासनिक कार्यों, कार्यालयीन, प्रविधि, साहित्य, दूरसंचार, जनसंचार के माध्यम, विधिसाहित्य, बैंक, कम्पनियाँ, खेलकूद, पत्रकरिता, अंतरिक्ष विज्ञान, कम्प्यूटर तथा समाज एवं राजनीति शास्त्र आदि में अपेक्षित है।

प्रयोजनमूलक हिन्दी पर विचार करने पर हिन्दी के मुख्यत: तीन रूप सामने आते हैं-बोलचाल की हिन्दी, साहित्यिक हिन्दी तथा प्रायोगिक अर्थात् प्रयोजनमूलक हिन्दी। 'प्रयोजनमूलक हिन्दी' संकल्पना के अन्तर्गत 'प्रयोजनमूलक' शब्द अंग्रेजी के फंक्शनल (Functional) के पर्यायवाची शब्द के रूप में प्रयुक्त किया जा रहा है। कोश ग्रन्थों के अनुसार Functional से तात्पर्य है कार्यात्मक, क्रियाशील अथवा वृत्तिमूलक। अत: स्पष्ट नहीं हो पाती है। इसके विपरीत व्यावहारिक, प्रयुक्त, अनुप्रयुक्त अथवा प्रायोगिक-प्रकारान्तर से प्रयोजनमूलक संकल्पना को अंग्रेजी शब्द अप्लाइड (Applied) सर्वाधिक स्पष्टत: सटिक बैठता है और 'प्रयोजनकूलक' संकल्पना को सार्थकता से रूपायित करता है। अत: प्रयोजनमूलक हिन्दी संकल्पना को अंग्रेजी के Functional Hindi की बजाय Applied Hindi के पर्याय के रूप में ग्रहण किया जाना सर्वथा उचित और अत्यधिक उपयोगी होगा।

प्रयोजनमूलक हिन्दी को 'व्यावहारिक हिन्दी' कहने की बहुत बड़ी भूल कुछ तथाकथित हिन्दी विद्वान और विश्वविद्यालयों के कुछेक प्राध्यापकगण करते दिखाई देते हैं। भाषा का व्यावहारिक रूप उसके सीमित व्यवहार क्षेत्र को उजागर करता है और जिसमें पारिभाषिक शब्दावली, विशिष्ट पद-विन्यास तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी को अभिव्यक्त करने के लिए माध्यम बनने की कोई बात स्पष्टत: नहीं दिखाई देती। इसके विपरीत भाषा का प्रयोजनमूलक रूप उसकी प्रायोगिक तथा अनुपयुक्त क्षमता को स्पष्ट रूप से दर्शाता है और जिसमें पारिभाषिक शब्दावली, भाषिक संरचना एवं अनुप्रयुक्तता और ज्ञान-विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के सर्वकप तकनीकी क्षेत्रों को रूपायित करने की प्रयोजनयता दृष्टिगत होती है। वस्तुत: हिन्दी के प्रयोजनमलक रूप को व्यावहारिक कहना उसके प्रयोग क्षेत्र और व्याप्ति को संकुचित अर्थों में ग्रहण करना है। अत: प्रयोजनमूलक हिन्दी को व्यावहारिक हिन्दी कहना निरर्थक तथा अनुपयुक्त होगा। इसीलिए Functional अथवा Applied हिन्दी के पर्याय के रूप में 'प्रयोजनमूल हिन्दी' ही सर्वथा उचित एवं उपयोगी होगा।

पहले कहा जा चुका है कि 'प्रयोजनमूलक हिन्दी' भाषाविज्ञान (Linguistics) की महत्वपूर्ण शाखा अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान (Applied Linguistics) के अन्तर्गत एक अत्याधुनिक उप-शाखा के रूप में विकसित हुई है। 'प्रयोजनमूलक' एवं पारिभाषिक शब्द है जो भाषा की अनुप्रयुक्तता और प्रायोगिकता के निश्चित अर्थ में प्रयुक्त किया गया है।

NOTES

प्रयोजनमूलक हिन्दी के संदर्भ में 'प्रयोजन' विशेषण में 'मूलक' उपसर्ग लगने से 'प्रयोजनमूलक' पद बना है। 'प्रयोजन' से तात्पर्य है उद्देश्य अथवा प्रयुक्त (Purpose of use) । 'प्रयोजन' का सम्बंध भाषा में उसकी प्रयोजनीयता (Applicability) से जुड़ा हुआ है तथा 'मूलक' उपसर्ग से तात्पर्य है–आधारित ('Based on' or 'Depending on')। अत: प्रयोजनमूलक भाषा से तात्पर्य हुआ किसी विशिष्ट उद्देश्य के अनुसार प्रयुक्त भाषा। इसी संदर्भ में प्रयोजनमूलक से तात्पर्य हुआ किसी विशिष्ट उद्देश्य के अनुसार प्रयुक्त भाषा। इसी संदर्भ में प्रयोजनमूलक हिन्दी का अर्थ हुआ : ऐसी विशिष्ट हिन्दी जिसका प्रयोग किसी विशिष्ट प्रयोजन (उद्देश्य) के लिए किया जाता है। प्रयोजनमूलक हिन्दी संकल्पना में प्रयुक्ति के स्तर, विषय-वस्तु, संदर्भ आदि के अनुरूप पारिभाषिक शब्दावली तथा विशिष्ट भाषिक संरचना समादृत है। इस दृष्टि से प्रयोजनमूलक हिन्दी की व्याख्या होगी–

"प्रयोजन मूलक हिन्दी से तात्पर्य है, हिन्दी का वह प्रयुक्तिपरक विशिष्ट रूप जो विषयगत, भूमिकागत तथा संदर्भगत प्रयोजन के लिए विशिष्ट भाषिक संरचना द्वारा प्रयुक्त किया जाता है और जो सरकारी प्रशासन तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के अनेकाविध क्षेत्रों को अभिव्यक्ति प्रदान करने में सक्षम सिद्ध होता है।"

प्रयोजनमूलक हिन्दी : विशेषताएँ

प्रयोजनमूलक हिन्दी की संरचना, संचेतना एवं संकल्पना के विश्लेषण से उसमें अन्तर्निहित कुछ महत्वपूर्ण विशेषताएँ उद्घटित होकर सामने आती हैं, जिनमें प्रमुख हैं–

(a) अनुप्रयुक्तता (b) वैज्ञानिकता

(c) सामाजिकता (d) भाषिक विशिष्टता

(a) **अनुप्रयुक्तता**–प्रयोजनमूलक हिन्दी का सबसे बड़ा गुण या विशेषता है, उसकी अनुप्रयुक्तता (Appliedness) अर्थात् प्रयोजनीयता। जीवन के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में हिन्दी का विशिष्ट रूप विशिष्ट प्रयोजन के अनुसार अनुप्रयुक्त होता है। विश्व भर में बहुत सारी भाषाएँ ऐसी हैं जिनका अस्तित्व व्यवहार तथा साहित्य के क्षेत्र से ही बना हुआ है। प्रशासन, प्रचालन तथा विज्ञान-प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों को अभिव्यक्त करने की उनकी क्षमता उचित मात्रा में विकसित नहीं हो पाती है। अर्थात् उन भाषाओं का अनुपयुक्त पक्ष अत्यधिक कमजोर होता है। ऐसी भाषाओं के नवीनीकरण तथा आधुनिकीकरण की प्रक्रिया कालान्तर में लगभग समाप्त-सी हो जाती है। फलत: उनका बहुमुखी सर्वांगीण विकास नहीं हो पाता। हिन्दी के प्रयोजनमूलक रूप का सर्वांगीण विकास इसीलिए सम्भव हो सका है कि उसमें अनुप्रयुक्तता की महत्तम विशेषता विद्यमान रही है। अनुप्रयुक्तता की दृष्टि से हिन्दी के प्रयोजनमूलक रूपों में राजभाषा, कार्यालयी, वाणिज्यिक, व्यावसायिक, वैज्ञानिक तथा प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में प्रयुक्त हिन्दी का समावेश होता है।

(b) **वैज्ञानिकता**–प्रयोजनमूलक हिन्दी की दूसरी अहम् विशेषता है उसकी वैज्ञानिकता। स्पष्ट किया जा चुका है कि प्रयोजनमूलक हिन्दी प्रायोगिक या अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान (Applied Linguistics) के अन्तर्गत एक विशिष्ट अध्ययन क्षेत्र है। किसी भी विषय के तर्क-संगत, कार्य-कारण, भाव से युक्त विशिष्ट ज्ञान पर आश्रित प्रवृत्ति को वैज्ञानिक कहा जा सकता है। इस दृष्टि से प्रयोजनमूलक हिन्दी सम्बंधित विषय-वस्तु को विशिष्ट तर्क एवं कार्यकारण सम्बंधों पर आश्रित नियमों के अनुसार विश्लेषित कर रूपायित करती है। प्रयोजनमूलक हिन्दी की अध्ययन तथा विश्लेषण की प्रक्रिया विज्ञान की विश्लेषण एवं अध्ययन प्रक्रिया से भी अत्यधिक निकटता रखती है। प्रयोजनमूलक हिन्दी का मुख्य आधार पारिभाषिक शब्दावली और तकनीकी प्रवृत्ति है जिन्हें विज्ञान के नियमों के अनुसार सार्वकालिक सार्वभौमिक कहा जा सकता है। इसी के साथ-साथ प्रयोजनमूलक हिन्दी के सिद्धान्तों एवं प्रयुक्ति में कार्य-कारण भाव की नित्यता भी दृष्टिगत होती है जिसे किसी भी विज्ञान का सबसे प्रमुख आधार माना जाता है। विज्ञान की भाषा तथा शब्दावली के अनुसार ही प्रयोजनमूलक हिन्दी की भाषा तथा शब्दावली में स्पष्टता, तटस्थता, विषय-निष्ठता तथा तर्क-संगतता विद्यमान है। अत:

NOTES

प्रयोजनमूलक हिन्दी का विकास — हिन्दी भाषा — अनुप्रयुक्त भाषा-विज्ञान — प्रयोजनमूलक हिन्दी

- 1. मुख्य तत्व
- 2. मुख्य प्रयुक्तियाँ
  - साहित्यिक
  - वाणिज्यिक
  - कार्यालयी
  - राजभाषा
  - विज्ञापन भाषा
  - विधि एवं कानूनी भाषा
  - वैज्ञानिक एवं तकनीकी भाषा
- 3. मुख्य शैलियाँ
  - बोलचाल
  - संवाद
  - भावात्मक
  - सामाजिक
  - पत्रलेखन
  - प्रशासनिक
- 4. मुख्य विशेषताएँ
  - अनुप्रयुक्त
  - वैज्ञानिकता
  - सामाजिक
  - भाषिक विशिष्टता
- 5. मुख्य रूप-भेद
  - साहित्यिक हिन्दी
  - कार्यालयी हिन्दी
  - सामाजिक हिन्दी
  - व्यावसायिक हिन्दी
  - विधि एवं कानून के कार्य से सम्बंधित हिन्दी
  - जन संचार के माध्यम के लिए प्रयुक्त हिन्दी
  - वैज्ञानिक और तकनीकी हिन्दी

स्व प्रगति की जाँच करें:

1. प्रयोजनमूलक हिन्दी से आपका क्या तात्पर्य है? स्पष्ट करें।
2. प्रयोजनमूलक हिन्दी की क्या विशेषताएं हैं? किसी एक का वर्णन करें।

NOTES

स्पष्ट है कि प्रयोजनमूलक हिन्दी अपनी अन्तर्वृत्ति, प्रवृत्ति, प्रयुक्ति, भाषिक संरचना और विषय विश्लेषण आदि सभी स्तरों पर वैज्ञानिकता से युक्त है।

(c) **सामाजिकता**–हिन्दी की प्रयोजनमूलकता मूलत: सामाजिक गुण या विशेषता है। सामाजिकता का सम्बंध मानविकी से है। अत: प्रकारान्तर से प्रयोजनमूलक हिन्दी का अभिन्न सम्बंध मानविकी से माना जा सकता है। प्रयोजनमूलक हिन्दी के निर्माण एवं परिचालन का सम्बंध समाज तथा उससे जुड़ी विभिन्न ज्ञान-शाखाओं से है। सामाजिक परिस्थिति, सामाजिक भूमिका तथा सामाजिक स्तर के अनुरूप प्रयोजन- मूलक हिन्दी के प्रयुक्ति-स्तर तथा भाषा-रूप प्रयोग में आते हैं। इतना ही नहीं, सामाजिक विज्ञान की तरह प्रयोजनमूलक हिन्दी में अन्तर्निहित सिद्धान्त और प्रयुक्त-ज्ञान मनुष्य के सामाजिक प्रयुक्तिपरक क्रिया कलापों का कार्य-कारण सम्बंध से तर्क-निष्ठ अध्ययन एवं विश्लेषण किया जाता है। अत: प्रयोजनमूलक हिन्दी में सामाजिकता के तत्व एवं विशिष्टता अनिवार्यत: विद्यमान देखे जा सकते हैं।

(d) **भाषिक विशिष्टता**–यह वह विशेषता है जो प्रयोजनमूलक हिन्दी की स्वतंत्र सत्ता और महत्ता को रूपायित कर उसे सामान्य या साहित्यिक हिन्दी से अलग करती है। अपनी शब्द-ग्रहण करने की अद्भुत शक्ति के कारण प्रयोजनमूलक हिन्दी ने अनेक भारतीय तथा पश्चिमी भाषाओं के शब्द-भंडार को आवश्यकतानुसार ग्रहण कर अपनी शब्द-सम्पदा को वृद्धिगत किया है। प्रयोजनमूलक हिन्दी में तकनीकी एवं पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग अनिवार्य रूप से विद्यमान रहता है जो उसकी भाषिक विशिष्टता को रेखांकित करता है। प्रयोजनमूलक हिन्दी की भाषा सटिक, सुस्पष्ट, गम्भीर, वाच्यार्थ प्रधान, सरल तथा एकार्थक होती है और इसमें कहावतें, मुहावरे, अलंकार तथा उक्तियाँ आदि का बिल्कुल प्रयोग नहीं किया जाता है। इसकी भाषा-संरचना में तटस्थता, स्पष्टता तथा निवैयक्तिकता स्पष्ट रूप से विद्यमान रहती है और कर्मवाच्य प्रयोग का बाहुल्य दिखाई देता है। इसी प्रकार, प्रयोजनमूलक हिन्दी में जो भाषिक विशिष्टता तथा रचना धर्मिता दृष्टिगत होती है, वह बोलचाल की हिन्दी तथा साहित्यिक हिन्दी में दिखाई नहीं देती। यह उसकी विशेषता है।

प्रयोजनमूलक हिन्दी के विविध रूप

भाषा प्रयोग और व्यवहार की सामाजिक वस्तु है। भाषा के अनुप्रयुक्त तथा व्यवहार-क्षेत्र की सीमा उसकी प्रयोजनमूलक शैलियों को नियंत्रित करती है।

आधुनिक युग में सामाजिक-जीवन के अनेक क्षेत्रों में प्रयोग में लायी जाने वाली भाषा प्रयोजनमूलक भाषा कहलाती है और भाषा प्रकार्य के अनुसार उसके अनेक रूप-भेद होते हैं। प्रयोजनमूलक हिन्दी के मुख्य रूप से सात रूप-भेद माने जा सकते हैं : ये हैं–

1. साहित्यिक हिन्दी
2. कार्यलयी हिन्दी
3. सामाजिक हिन्दी
4. व्यावसायिक हिन्दी
5. विधि एवं कानून कार्य सम्बद्ध हिन्दी
6. जनसंचार के माध्यम के लिए प्रयुक्त हिन्दी
7. विज्ञान और तकनीकी हिन्दी

उक्त सभी रूप-भेदों की विस्तृत चर्चा संदर्भानुसार इस ग्रंथ में अन्यत्र की गई है।

प्रयोजनमूलक हिन्दी : सीमाएँ और सम्भावनाएँ

प्रयोजनमूलक हिन्दी का अध्ययन एवं विश्लेषण की प्रक्रिया में उसके प्रयुक्ति-स्तर, रूप-भेद, भाषिक गठन तथा प्रचलन आदि स्तरों पर कुछ दोष और समस्याएँ भी दृष्टिगत होती हैं। इन दोष और समस्याओं को संक्षेप में निम्नानुसार रेखांकित किया जा सकता है–

1. प्रयोजनमूलक हिन्दी की सबसे बड़ी समस्या है : विज्ञान और तकनीकी से सम्बंधित अत्यंत दुरूह पारिभाषिक शब्दावली। वास्तव में कोई शब्द सरल या कठिन नहीं होता। शब्द या तो परिचित होता है या अपरिचित। परिचित शब्द (प्रचलित शब्द) आसान या सरल लगता है, इसके विपरीत अपरिचित शब्द कठिन या दुरूह लगता है। भौतिक, रसायन, गणित, विधि, अंतरिक्ष, कम्प्यूटर तथा मानविकी से सम्बंधित लाखों नये शब्दों का निर्माण वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग ने किया है किन्तु समस्या उनके प्रचलन की है। विशुद्ध विज्ञान और टेक्नोलॉजी से सम्बंधित ये पारिभाषिक शब्द प्रचलित नहीं थे इसलिए दुरूह या कठिन लगते हैं और उचित मात्रा में प्रचलित नहीं हो पा रहे हैं। अत: विज्ञान और टेक्नोलॉजी से सम्बंधित पारिभाषिक शब्दावली को विषय-वस्तु एवं संदर्भानुसार अधिक मात्रा में प्रचलित करने के लिए सघन प्रयास किए जाने की आवश्यकता है।
2. प्रयोजनमूलक हिन्दी की दूसरी प्रमुख समस्या है : अनुवादी-रूप के कारण उसकी संरचना की क्लिष्टता तथा अटपटापन। अनुवाद प्रयोजनमूलक हिन्दी का प्रमुख तत्व है। विज्ञान एवं टेक्नोलॉजी का प्रस्फुटन एवं विकास पश्चिमी देन है जो आयातीत होकर भारत में आई। इन ज्ञान क्षेत्रों से सम्बंधित ग्रंथ यूरोप की भाषाओं में विद्यमान थे जो परिस्थितिजन्य तथा युगीन आवश्यकता के रूप में हिन्दी में अनुवाद के रूप में लाये गये थे। इसी के साथ, भारत की राजभाषा के पद पर आसीन होने के बाद हिन्दी सरकारी प्रशासन की भाषा बनी और उन दायित्वों से गुजरी जिससे पहले वह कभी नहीं गुजरी थी। भारतवर्ष में हिन्दी पहले कभी भी राजकाज की भाषा नहीं थी। मुगलों के काल में उर्दू तथा अरबी-फारसी प्रशासन की भाषा रही। ब्रिटिश शासनकाल में लगभग डेढ़ सौ वर्षों तक अंग्रेजी ही प्रशासन की भाषा रही। ऐसी स्थिति में हिन्दी कार्यालय तथा प्रशासन की भाषा बनी। अत: उसे प्रशासनिक स्तर पर अभिव्यक्ति तथा प्रयुक्ति के लिए अनुवाद का ही एकमात्र सहारा लेना पड़ा। 'राजभाषा अधिनियम 1963' ने तो लगभग हिन्दी को पूर्णत: अनुवादाश्रित कर दिया। वस्तुत: प्रशासनिक कार्यों, मैन्युअलों, करारों, प्रतिवेदनों तथा अन्य प्रविधि साहित्य का अनुवाद वे लोग (अनुवादक) करने लगे जिन्हें इन क्षेत्रों की विधियों का सूक्ष्म ज्ञान एवं अनुभव नहीं था। परिणाम स्वरूप पुस्तकीय अनुवाद के क्लिष्ट तथा अटपटे नमूने उभरने लगे जिसके कारण प्रयोजनमूलक हिन्दी को जबर्दस्त आघात पहुँचा और कुछ हद तक उसे हास्यास्पद स्थिति में भी पहुँचा दिया।

NOTES

विधि, भौतिक, रसायन, गणित, अंतरिक्ष, दूरसंचार, कम्प्यूटर, प्रौद्योगिकी तथा कुछ मानविकी ग्रंथों के अंग्रेजी से हिन्दी में किये गये अनुवाद के कारण उसकी भाषिक संरचना में काफी क्लिष्टता तथा दुरूहता आई है। फलतः प्रयोजनमूलक हिन्दी पर आरोप लगाया जाता है कि उसमें विशुद्ध वैज्ञानिक तथा प्रौद्योगिकी के ज्ञान-क्षेत्रों को अभिव्यक्त करने की क्षमता नहीं है। वस्तुतः यह आरोप बिल्कुल गलत और तर्काधारित है तथा अनुवादी-रूप के कारण भाषा-गठन एवं शब्दावली प्रयुक्ति में अत्यधिक क्लिष्टता और अटपटापन आने की वजह से वैसा दिखाई देता है।

अतः उक्त समस्या के निराकरण के लिए आवश्यकता इस बात की है कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी से सम्बंधित ग्रंथों का निर्माण ही मूलतः हिन्दी में किया जाना चाहिए ताकि मूल सोच हिन्दी में होने के कारण उसकी अभिव्यक्ति भी स्वतः प्रवाही एवं सरल होगी और भाषायी अटपटापन दूर होगा। यदि ऐसे ग्रन्थों का अनुवाद करना पड़े तो भाषा की संरचना हिन्दी की प्रकृति के अनुसार हो तथा विज्ञान के सूत्रों आदि का अनुवाद करने के बजाय उन्हें मूल रूप में लिप्यंतरण के साथ प्रस्तुत किया जाना चाहिए। जहाँ तक कार्यालयी कामकाज का प्रश्न है मूल सोच और विचार हिन्दी में हो। अनुवाद की स्थिति में सरल भाषा का प्रयोग किया जाए तथा हिन्दी भाषा की प्रकृति के अनुसार छोटे वाक्यों का प्रयोग किया जाना चाहिए।

3. प्रयोजनमूलक हिन्दी की तीसरी समस्या उसकी नयी पारिभाषिक शब्दावली निर्माण तथा नयी प्रयुक्तियाँ (Register) बनाने सम्बंधी है। प्रयोजनमूलक हिन्दी की प्रवृत्ति प्रयोगशील तथा प्रक्रिया विकासशील है। इसकी अनुप्रयुक्ति तथा विकास प्रक्रिया में विषय, संदर्भ तथा आवश्यकतानुसार नयी पारिभाषिक शब्दावली का निर्माण यथाशीघ्र किया जाना अत्यन्त आवश्यक है। किन्तु ऐसी शब्दावली को केवल कोश-ग्रंथों तक ही सीमित न रखकर उसके प्रचलन एवं परिचालन हेतु नियोजनबद्ध पद्धति से प्रयास किये जाने चाहिए।

प्रयोजनमूलक हिन्दी विकासमान स्थिति में है। जीवन के सामाजिक मानविकी, तंत्र-ज्ञान, कम्प्यूटर एवं अंतरिक्ष विज्ञान से सम्बंधित अभी भी ऐसे अनेक अत्याधुनिक ज्ञान-क्षेत्र मौजूद हैं जिनके प्रयोग के लिए 'प्रयुक्त' (Register) निर्मित होने बाकी हैं। अतः विषयगत स्थिति, संदर्भ एवं जरूरत के अनुसार ऐसे 'रजिस्टर' तैयार करके उन्हें व्यवहार-योग बनाया जाना चाहिए।

मातृभाषा

भारतीय मातृ-प्रधान संस्कृति के ही समान भाषा को विशेष महत्व देने के लिए मातृभाषा नाम दिया गया है। भाषा मानव की उन्नति का सर्व प्रधान और महत्वपूर्ण माध्यम है। भाषा के आधार पर समाज का विकास हुआ है और समाज के आधार पर भाषा का विकसित रूप सामने आया है। प्रत्येक व्यक्ति किसी भाषा से आत्मीय रूप से जुड़ा होता है। इस भाषा के माध्यम से ही उस व्यक्ति का व्यक्तित्व विकसित होता है। और उसके जीवन को गतिशीलता मिलती है। व्यक्ति ऐसी ही भाषा के माध्यम से परिवार और समाज में अपना स्थान बनाता है। भक्ति में सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक और दार्शनिक आदि भाव ऐसी भाषा के ही आधार पर ही विकसित होते हैं।

कुछ विद्वानों का कथन है कि जन्म के पश्चात बालक जिस भाषायी परिवेश में रहकर प्रारंभिक भाव का आदान प्रदान करता है, उसे उसकी मातृभाषा की संज्ञा देनी चाहिए। माना एक बालक हरियाणवी क्षेत्र में रह कर बड़ा होता है। तो उसकी प्रारंभिक अभिव्यक्ति की भाषा हरियाणवी होगी। यह सच है कि हरियाणवी देश की राष्ट्रभाषा हिन्दी की एक महत्वपूर्ण बोली है। इसे दृष्टिगत कर कहा जा सकता है कि उस बालक की मातृभाषा हरियाणवी नहीं हिन्दी है।

इस पर गंभीर रूप से विचार करते हैं तो ज्ञात होता है कि हरियाणवी भाषी बालक जैसे-जैसे बड़ा होता है।, वैसे-वैसे इस भाषा में भावाभिव्यक्ति करने लगता है। इसका प्रयोग बोलचाल या सामान्य व्यवहार में प्रभावी रूप में होता है। जब वह विद्यालय में जाने के योग्य होता है, तो मुख्यतः हिन्दी भाषा ही सीखता है। हरियाणवी हरियाणा प्रान्त में प्रयुक्त जनपदीय भाषा है। पश्चिमी हिन्दी की एक प्रमुख बोली है। हिन्दी

की बोली होने के कारण हरियाणवी क्षेत्र का बालक हिन्दी की संरचना का सरलता से ग्रहण रहने के लिए हिन्दी भाषा को भी अपनाता है। ऐसी प्रक्रिया भाषा और बोली के सहज सम्बन्धों के कारण होती है। यही बात हिन्दी या किसी भी भाषा की विभिन्न बोलियों के संदर्भ में हैं।

इस प्रकार जिस भाषा के मुनष्य अपने जीवन में गतिशील रहने के लिए जिस मूल या प्रारंभिक भाषा को अपनाता है।, उसे मातृभाषा कहते हैं। यहाँ यह भी ध्यातव्य है कि यदि कोई हिन्दी भाषा-भाषी परवर्ती समय में अंग्रेजी या जर्मन भाषा सीखकर अपने जीवन में विशेष उन्नति कर ले, तो उसकी मातृ भाषा अंग्रेजी या जर्मन न होकर हिन्दी ही होगी।

यह भी निर्विवाद सत्य है कि मातृभाषा में भावाभिव्यक्ति सरल और अधिक प्रभावशाली होती है। मातृभाषा के उत्तम ज्ञान के पश्चात किसी भी अन्य भाषा का शिक्षण सरल होता है। आधुनिक हिन्दी साहित्य के जनक भारतेनदु हरिशचन्द्र ने हिंदी को मातृभाषा के रूप में याद करते हुए इसे 'निजभाषा' की संज्ञा दी है -

''निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के मिटे न हिय के शूल॥

इस प्रकार समस्त भाषाओं में मातृभाषा को विशेष महत्व है जिसके आधार पर मनुष्य पर बहुमुखी उन्नति कर सकता है।

मातृभाषा : हिन्दी

हिन्दी संवैधानिक रूप से भारत की प्रथम राजभाषा और भारत की सबसे अधिक बोली और समझी जानेवाली भाषा है। चीनी के बाद यह विश्व में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा भी है।

हिन्दी और इसकी बोलियाँ उत्तर एवं मध्य भारत के विविध राज्यों में बोली जाती हैं । भारत और अन्य देशों में करोड़ों से अधिक लोग हिन्दी बोलते, पढ़ते और लिखते हैं। फिजी, मॉरिशस, गयाना, सूरीनाम की अधिकतर और नेपाल की कुछ जनता हिन्दी बोलती है।

हिन्दी राष्ट्रभाषा, राजभाषा, सम्पर्क भाषा, जनभाषा के सोपानों को पार कर विश्वभाषा बनने की ओर अग्रसर है। भाषा विकास क्षेत्र से जुड़े वैज्ञानिकों की भविष्यवाणी हिन्दी प्रेमियों के लिए बड़ी सन्तोषजनक है कि आने वाले समय में विश्वस्तर पर अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व की जो चन्द भाषाएँ होंगी उनमें हिन्दी भी प्रमुख होगी।

हिन्दी शब्द की व्युत्पत्ति

हिन्दी शब्द का सम्बन्ध संस्कृत शब्द सिन्धु से माना जाता है। 'सिन्धु सिन्ध नदी को कहते थे और उसी आधार पर उसके आस-पास की भूमि को सिन्धु कहने लगे। यह सिन्धु शब्द ईरानी में जाकर 'हिन्दू', हिन्दी और फिर 'हिन्द' हो गया। बाद में ईरानी धीरे-धीरे भारत के अधिक भागों से परिचित होते गए और इस शब्द के अर्थ में विस्तार होता गया तथा हिन्द शब्द पूरे भारत का वाचक हो गया। इसी में ईरानी का ईक प्रत्यय लगने से (हिन्द ईक) 'हिन्दीक' बना जिसका अर्थ है 'हिन्द का'। यूनानी शब्द 'इन्दिका' या अंगरेजी शब्द 'इण्डिया' आदि इस 'हिन्दीक' के ही विकसित रूप हैं। हिन्दी भाषा के लिए इस शब्द का प्राचीनतम प्रयोग शरफुद्दीन यजदी' के 'जफरनामा' में मिलता है।

प्रोफ़ेसर महावीर सरन जैन ने अपने (हिन्दी एवँ उर्दू का अद्वैत) शीर्षक आलेख में हिन्दी की व्युत्पत्ति पर विचार करते हुए कहा है कि ईरान की प्राचीन भाषा अवेस्ता में 'स' ध्वनि नहीं बोली जाती थी। 'स' को 'ह' रूप में बोला जाता था। जैसे संस्कृत के 'असुर' शब्द को वहाँ 'अहुर' कहा जाता था। अफ़ग़ानिस्तान के बाद सिन्धु नदी के इस पार हिन्दुस्तान के पूरे इलाके को प्राचीन फ़ारसी साहित्य में भी 'हिन्द', -हिन्दुश' के नामों से पुकारा गया है तथा यहाँ की किसी भी वस्तु, भाषा, विचार को 'एडजेक्टिव' के रूप में 'हिन्दीक' कहा गया है जिसका मतलब है 'हिन्द का'। यही 'हिन्दीक' शब्द

NOTES

अरबी से होता हुआ ग्रीक में 'इन्दिके', 'इन्दिका', लैटिन में 'इन्दिया' तथा अंगरेज़ी में 'इण्डिया' बन गया। अरबी एवं फ़ारसी साहित्य में हिन्दी में बोली जाने वाली भाषाओं के लिए 'ज़बान-ए-हिन्दी', पद का उपयोग हुआ है। भारत आने के बाद मुसलमानों ने 'ज़बान-ए-हिन्दी', 'हिन्दी ज़ुबान' अथवा 'हिन्दी' का प्रयोग दिल्ली-आगरा के चारों ओर बोली जाने वाली भाषा के अर्थ में किया। भारत के गैर-मुस्लिम लोग तो इस क्षेत्र में बोले जाने वाले भाषा-रूप को 'भाखा' नाम से पुकारते थे, 'हिन्दी' नाम से नहीं।

हिन्दी एवं उर्दू

भाषाविद हिन्दी एवं उर्दू को एक ही भाषा समझते हैं । हिन्दी देवनागरी लिपि में लिखी जाती है और शब्दावली के स्तर पर अधिकांशत: संस्कृत के शब्दों का प्रयोग करती है। उर्दू, फ़ारसी लिपि में लिखी जाती है और शब्दावली के स्तर पर उस पर फ़ारसी और अरबी भाषाओं का प्रभाव अधिक है। व्याकरणिक रूप से उर्दू और हिन्दी में लगभग शत-प्रतिशत समानता है – केवल कुछ विशेष क्षेत्रों में शब्दावली (जैसा कि ऊपर लिखा गया है) में अंतर होता है। कुछ विशेष ध्वनियाँ उर्दू में अरबी और फ़ारसी से ली गयी हैं और इसी प्रकार फ़ारसी और अरबी की कुछ विशेष व्याकरणिक संरचना भी प्रयोग की जाती है। उर्दू और हिन्दी को खड़ी बोली की दो शैलियाँ कहा जा सकता है।

परिवार

हिन्दी हिन्द-यूरोपीय भाषा-परिवार परिवार के अन्दर आती है । ये हिन्द ईरानी शाखा की हिन्द आर्य उपशाखा के अन्तर्गत वर्गीकृत है। हिन्द-आर्य भाषाएँ वो भाषाएँ हैं जो संस्कृत से उत्पन्न हुई हैं। उर्दू, कश्मीरी, बंगाली, उड़िया, पंजाबी, रोमानी, मराठी नेपाली जैसी भाषाएँ भी हिन्द-आर्य भाषाएँ हैं।

हिन्दी का निर्माण-काल

अपभ्रंश की समाप्ति और आधुनिक भारतीय भाषाओं के जन्मकाल के समय को संक्रांतिकाल कहा जा सकता है। हिन्दी का स्वरूप शौरसेनी और अर्धमागधी अपभ्रंशों से विकसित हुआ है। ई. के आसपास इसकी स्वतंत्र सत्ता का परिचय मिलने लगा था, जब अपभ्रंश भाषाएँ साहित्यिक संदर्भों में प्रयोग में आ रही थीं। यही भाषाएँ बाद में विकसित होकर आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं के रूप में अभिहित हुईं। अपभ्रंश का जो भी कथ्य रुप था – वही आधुनिक बोलियों में विकसित हुआ।

अपभ्रंश के संबंध में 'देशी' शब्द की भी बहुधा चर्चा की जाती है। वास्तव में 'देशी' से देशी शब्द एवं देशी भाषा दोनों का बोध होता है। प्रश्न यह कि देशीय शब्द किस भाषा के थे? भरत मुनि ने नाट्यशास्त्र में उन शब्दों को 'देशी' कहा है 'जो संस्कृत के तत्सम एवं तद्भव रूपों से भिन्न हैं। ये 'देशी' शब्द जनभाषा के प्रचलित शब्द थे, जो स्वभावतया अप्रभंश में भी चले आए थे। जनभाषा व्याकरण के नियमों का अनुसरण नहीं करती, परंतु व्याकरण को जनभाषा की प्रवृत्तियों का विश्लेषण करना पड़ता है, प्राकृत-व्याकरणों ने संस्कृत के ढाँचे पर व्याकरण लिखे और संस्कृत को ही प्राकृत आदि की प्रकृति माना। अत: जो शब्द उनके नियमों की पकड़ में न आ सके, उनको देशी संज्ञा दी गई।

इतिहास क्रम

हिन्दी की विशेषताएँ एवं शक्ति

हिंदी भाषा के उज्ज्वल स्वरूप का भान कराने के लिए यह आवश्यक है कि उसकी गुणवत्ता, क्षमता, शिल्प-कौशल और सौंदर्य का सही-सही आकलन किया जाए। यदि ऐसा किया जा सके तो सहज ही सब की समझ में यह आ जाएगा कि –

1. संसार की उन्नत भाषाओं में हिंदी सबसे अधिक व्यवस्थित भाषा है
2. वह सबसे अधिक सरल भाषा है
3. वह सबसे अधिक लचीली भाषा है

4. वह एक मात्र ऐसी भाषा है जिसके अधिकतर नियम अपवादविहीन हैं तथा
5. वह सच्चे अर्थों में विश्व भाषा बनने की पूर्ण अधिकारी है
6. हिन्दी लिखने के लिये प्रयुक्त देवनागरी लिपि अत्यन्त वैज्ञानिक है।
7. हिन्दी को संस्कृत शब्दसंपदा एवं नवीन शब्द रचना सामर्थ्य विरासत में मिली है। वह देशी भाषाओं एवं अपनी बोलियों आदि से शब्द लेने में संकोच नहीं करती। अंगरेजी के मूल शब्द लगभग हैं, जबकि हिन्दी के मूल शब्दों की संख्या ढाई लाख से भी अधिक है।
8. हिन्दी बोलने एवं समझने वाली जनता पचास करोड़ से भी अधिक हैं।
9. हिन्दी का साहित्य सभी दृष्टियों से समृद्ध है।
10. हिन्दी आम जनता से जुड़ी भाषा है तथा आम जनता हिन्दी से जुड़ी हुई है। हिन्दी कभी राजाश्रय की मुहताज नहीं रही।
11. भारत के स्वतंत्रता-संग्राम की वाहिका और वर्तमान में देशप्रेम का अमूर्त-वाहन
12. भारत की सम्पर्क भाषा
13. भारत की राजभाषा

हिन्दी के विकास की अन्य विशेषताएँ

- हिन्दी पत्रकारिता का आरम्भ भारत के उन क्षेत्रों से हुआ जो हिन्दी-भाषी नहीं थे/हैं (कोलकाता, लाहौर आदि।
- हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने का आन्दोलन हिन्दी भाषियों (महात्मा गांधी, दयानन्द सरस्वती आदि) ने आरम्भ किया।
- हिन्दी पत्रकारिता की कहानी भारतीय राष्ट्रीयता की कहानी है।
- हिन्दी के विकास में राजाश्रय का कोई स्थान नहीं है; इसके विपरीत, हिन्दी का सबसे तेज विकास उस दौर में हुआ जब हिन्दी अंगरेजी-शासन का मुखर विरोध कर रही थी। जब-जब हिन्दी पर दबाव पड़ा, वह अधिक शक्तिशाली होकर उभरी है।
- जब बंगाल, उड़ीसा, गुजरात तथा महाराष्ट्र में उनकी अपनी भाषाएँ राजकाज तथा न्यायालयों की भाषा बन चुकी थी उस समय भी संयुक्त प्रान्त (वर्तमान उत्तर प्रदेश) की भाषा हिन्दुस्तानी थी (और उर्दू को ही हिन्दुस्तानी माना जाता था जो फारसी लिपि में लिखी जाती थी)।
- 18वीं शताब्दी तक उत्तर प्रदेश की राजभाषा के रूप में हिन्दी का कोई स्थान नहीं था। परन्तु 18 वीं सदी के मध्यकाल तक वह भारत की राष्ट्रभाषा बन गई।
- हिन्दी के विकास में पहले साधु-संत एवं धार्मिक नेताओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा। उसके बाद हिन्दी पत्रकारिता एवं स्वतंत्रता संग्राम से बहुत मदद मिली; फिर बंबइया फिल्मों से सहायता मिली और अब इलेक्ट्रॉनिक मीडिया (टीवी) के कारण हिन्दी समझने-बोलने वालों की संख्या में बहुत अधिक वृद्धि हुई है।

हिन्दी का मानकीकरण

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से हिन्दी और देवनागरी के मानकीकरण की दिशा में निम्नलिखित क्षेत्रों में प्रयास हुए हैं :-

- हिन्दी व्याकरण का मानकीकरण

NOTES

- वर्तनी का मानकीकरण
- शिक्षा मंत्रालय के निर्देश पर केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय द्वारा देवनागरी का मानकीकरण
- वैज्ञानिक ढंग से देवनागरी लिखने के लिये एकरूपता के प्रयास
- यूनिकोड का विकास
- हिन्दी की शैलियाँ

भाषाविदों के अनुसार हिन्दी के चार प्रमुख रूप या शैलियाँ हैं :

(1) उच्च हिन्दी - हिन्दी का मानकीकृत रूप, जिसकी लिपि देवनागरी है। इसमें संस्कृत भाषा के कई शब्द है, जिन्होंने फ़ारसी और अरबी के कई शब्दों की जगह ले ली है। इसे शुद्ध हिन्दी भी कहते हैं। आजकल इसमें अंग्रेज़ी के भी कई शब्द आ गये हैं (ख़ास तौर पर बोलचाल की भाषा में)। यह खड़ीबोली पर आधारित है, जो दिल्ली और उसके आस-पास के क्षेत्रों में बोली जाती थी।

(2) दक्खिनी - हिन्दी का वह रूप जो हैदराबाद और उसके आसपास की जगहों में बोला जाता है। इसमें फ़ारसी-अरबी के शब्द उर्दू की अपेक्षा कम होते हैं।

(3) रेख़्ता - उर्दू का वह रूप जो शायरी में प्रयुक्त होता है।

(4) उर्दू - हिन्दी का वह रूप जो देवनागरी लिपि के बजाय फ़ारसी-अरबी लिपि में लिखा जाता है। इसमें संस्कृत के शब्द कम होते हैं,और फ़ारसी-अरबी के शब्द अधिक। यह भी खड़ीबोली पर ही आधारित है।

हिन्दी और उर्दू दोनों को मिलाकर हिन्दुस्तानी भाषा कहा जाता है । हिन्दुस्तानी मानकीकृत हिन्दी और मानकीकृत उर्दू के बोलचाल की भाषा है । इसमें शुद्ध संस्कृत और शुद्ध फ़ारसी-अरबी दोनों के शब्द कम होते हैं और तद्भव शब्द अधिक । उच्च हिन्दी भारतीय संघ की राजभाषा है (अनुच्छेद , भारतीय संविधान) । यह इन भारतीय राज्यों की भी राजभाषा है : उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड, मध्य प्रदेश, उत्तरांचल, हिमाचल प्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान, हरियाणा, और दिल्ली। इन राज्यों के अतिरिक्त महाराष्ट्र, गुजरात, पश्चिम बंगाल, पंजाब, और हिन्दी भाषी राज्यों से लगते अन्य राज्यों में भी हिन्दी बोलने वालों की अच्छी संख्या है। उर्दू पाकिस्तान की और भारतीय राज्य जम्मू और कश्मीर की राजभाषा है। यह लगभग सभी ऐसे राज्यों की सह-राजभाषा है; जिनकी मुख्य राजभाषा हिन्दी है। दुर्भाग्यवश हिन्दुस्तानी को कहीं भी संवैधानिक दर्जा नहीं मिला हुआ है ।

हिन्दी की बोलियाँ

शब्दावली

हिन्दी शब्दावली में मुख्यत: दो वर्ग हैं-

- **तत्सम शब्द**- ये वो शब्द हैं जिनको संस्कृत से बिना कोई रूप बदले ले लिया गया है। जैसे अग्नि, दुग्ध दन्त, मुख ।
- **तद्भव शब्द**- ये वो शब्द हैं जिनका जन्म संस्कृत या प्राकृत में हुआ था, लेकिन उनमें काफ़ी ऐतिहासिक बदलाव आया है। जैसे-- आग, दूध, दाँत , मुँह ।

इसके अतिरिक्त हिन्दी में कुछ देशज शब्द भी प्रयुक्त होते हैं। देशज का अर्थ है - 'जो देश में ही उपजा या बना हो । जो न तो विदेशी हो और न किसी दूसरी भाषा के शब्द से बना है। ऐसा शब्द जो न संस्कृत हो, न संस्कृत का अपभ्रंश हो और न किसी दूसरी भाषा के शब्द से बना हो, बल्कि किसी प्रदेश के लोगों ने बोल-चाल में जों ही बना लिया हो। जैसे- खटिया, लुटिया

इसके अलावा हिन्दी में कई शब्द अरबी, फ़ारसी, तुर्की, अंग्रेज़ी आदि से भी आए हैं। इन्हें विदेशी शब्द कह सकते हैं।

जिस हिन्दी में अरबी, फ़ारसी और अंग्रेज़ी के शब्द लगभग पूरी तरह से हटा कर तत्सम शब्दों को ही प्रयोग में लाया जाता है, उसे शुद्ध हिन्दी कहते हैं ।

व्याकरण

हिंदी मे दो लिंग होते हैं - पुल्लिंग और स्त्रीलिंग। संज्ञा में तीन शब्द-रूप हो सकते हैं -- प्रत्यक्ष रूप, अप्रत्यक्ष रूप और संबोधन रूप। सर्वनाम में कर्म रूप और सम्बन्ध रूप भी होते हैं, पर सम्बोधन रूप नहीं होता। संज्ञा और आकारन्त विशेषण में प्रत्यय द्वारा रूप बदला जाता है। सर्वनाम में लिंग-भेद नहीं होता। क्रिया के भी कई रूप होते हैं, जो प्रत्यय और सहायक क्रियाओं द्वारा बदले जाते हैं। क्रिया के रूप से उसके विषय संज्ञा या सर्वनाम के लिंग और वचन का भी पता चल जात है। हिन्दी में दो वचन होते हैं-- एकवचन और बहुवचन । किसी शब्द की वाक्य में जगह बताने के लिये कई कारक होते हैं, जो शब्द के बाद आते हैं ( )। यदि संज्ञा को कारक के साथ ठीक से रखा जाये तो वाक्य में शब्द-क्रम काफ़ी मुक्त होता है।

हिन्दी और कम्प्यूटर

- हिन्दी कम्प्यूटरी
- हिन्दी टाइपिंग
- कम्प्यूटर और हिन्दी
- हिन्दी कम्प्यूटिंग का इतिहास
- मोबाइल फोन में हिन्दी समर्थन
- अन्तरजाल पर हिन्दी के उपकरण (सॉफ्टवेयर)

कम्प्यूटर और इन्टरनेट ने पिछले वर्षों मे विश्व मे सूचना क्रांति ला दी है । आज कोई भी भाषा कम्प्यूटर (तथा कम्प्यूटर सदृश अन्य उपकरणों) से दूर रहकर लोगों से जुड़ी नहीं रह सकती। कम्प्यूटर के विकास के आरम्भिक काल में अंगरेजी को छोडकर विश्व की अन्य भाषाओं के कम्प्यूटर पर प्रयोग की दिशा में बहुत कम ध्यान दिया गया जिससे कारण सामान्य लोगों में यह गलत धारणा फैल गयी कि कम्प्यूटर अंगरेजी के सिवा किसी दूसरी भाषा(लिपि) में काम ही नही कर सकता। किन्तु यूनिकोड( ) के पदार्पण के बाद स्थिति बहुत तेजी से बदल गयी।

इस समय हिन्दी में सजाल (websites), चिट्ठे (Blogs), विपत्र (emails), गपशप (chat), खोज (web-search), सरल मोबाइल सन्देश (SMS) तथा अन्य हिन्दी सामग्री उपलब्ध हैं। इस समय अन्तरजाल पर हिन्दी में संगणन के संसाधनों की भी भरमार है और नित नये कम्प्यूटिंग उपकरण आते जा रहे हैं। लोगों मे इनके बारे में जानकारी देकर जागरूकता पैदा करने की जरूरत है ताकि अधिकाधिक लोग कम्प्यूटर पर हिन्दी का प्रयोग करते हुए अपना, हिन्दी का और पूरे हिन्दी समाज का विकास करें।

हिन्दी और जनसंचार

- हिन्दी के संचार माध्यम (हिन्दी मीडिया)
- हिन्दी सिनेमा

हिन्दी सिनेमा का उल्लेख किये बिना हिन्दी का कोई भी लेख अधूरा होगा। मुम्बई में स्थित बॉलीवुड हिन्दी फिल्म उद्योग पर भारत के करोड़ लोगों की धड़कनें टिकी रहती हैं। हर चलचित्र में कई गाने होते हैं । हिन्दी और उर्दू (खड़ीबोली) के साथ साथ अवधी, बम्बइया हिन्दी, भोजपुरी, राजस्थानी जैसी

स्व प्रगति की जाँच करें:

3. हिन्दी एवं उर्दू भाषा पर टिप्पणी लिखें।
4. भाषाविदों के अनुसार हिन्दी के कितने रूप या शैलियाँ हैं ?

NOTES

बोलियाँ भी संवाद और गानों मे उपयुक्त होती हैं । प्यार, देशभक्ति, परिवार, अपराध, भय, इत्यादि मुख्य विषय होते हैं । अधिकतर गाने उर्दू शायरी पर आधारित होते हैं । कुछ लोकप्रिय चलचित्र हैं: महल (1941), श्री 420 (1955), मदर इंडिया (1957), मुग़ल-ए-आज़म (1960), गाइड (1965), पाकीज़ा (1973), बॉबी (1973), ज़ंजीर (1973), यादों की बारात (1973), दीवार (1975), शोले (1975), मिस्टर इंडिया (1987), क़यामत से क़यामत तक (1988), मैंने प्यार किया (1991), जो जीता वही सिकन्दर (1991), हम आपके हैं कौन (1994), दिलवाले दुल्हनिया ले जायेंगे (1995), दिल तो पागल है (1997), कुछ कुछ होता है (1998), ताल (1999), कहो ना प्यार है (2000), लगान (2001), दिल चाहता है (2001), कभी खुशी कभी ग़म (2001), देवदास (2002), साथिया (2002), मुन्ना भाई एमबीबीएस (2003), कल हो ना हो (2003), धूम (2004), वीर-ज़ारा (2004), स्वदेस (2004), सलाम नमस्ते (2005), रंग दे बसंती (2006) इत्यादि।

हिन्दी का वैश्विक प्रसार

सन 1998 के पूर्व, मातृभाषियों की संख्या की दृष्टि से विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं के जो आँकड़े मिलते थे, उनमें हिन्दी को तीसरा स्थान दिया जाता था। सन् 1997 में सैन्सस ऑफ़ इंडिया का भारतीय भाषाओं के विश्लेषण का ग्रन्थ प्रकाशित होने तथा संसार की भाषाओं की रिपोर्ट तैयार करने के लिए यूनेस्को द्वारा सन् 1998 में भेजी गई यूनेस्को प्रश्नावली के आधार पर उन्हें भारत सरकार के केन्द्रीय हिन्दी संस्थान के तत्कालीन निदेशक प्रोफ़ेसर महावीर सरन जैन द्वारा भेजी गई विस्तृत रिपोर्ट के बाद अब विश्व स्तर पर यह स्वीकृत है कि मातृभाषियों की संख्या की दृष्टि से संसार की भाषाओं में चीनी भाषा के बाद हिन्दी का दूसरा स्थान है। चीनी भाषा के बोलने वालों की संख्या हिन्दी भाषा से अधिक है किन्तु चीनी भाषा का प्रयोग क्षेत्र हिन्दी की अपेक्षा सीमित है। अँग्रेज़ी भाषा का प्रयोग क्षेत्र हिन्दी की अपेक्षा अधिक है किन्तु मातृभाषियों की संख्या अँगरेज़ी भाषियों से अधिक है।

विश्व के लगभग बीसवीं शती के अंतिम दो दशकों में हिंदी का अंतर्राष्ट्रीय विकास बहुत तेजी से हुआ है। वेब, विज्ञापन, संगीत, सिनेमा और बाजार के क्षेत्र में हिंदी की मांग जिस तेजी से बढ़ी है वैसी किसी और भाषा में नहीं। विश्व के लगभग 150 विश्वविद्यालयों तथा सैंकडों छोटे-बडे केन्द्रों में विश्वविद्यालय स्तर से लेकर शोध स्तर तक हिंदी के अध्ययन-अध्यापन की व्यवस्था हुई है। विदेशों से 25 से अधिक पत्र-पत्रिकाएं लगभग नियमित रूप से हिंदी में प्रकाशित हो रही हैं। यूएई के हम एफ-एम सहित अनेक देश हिंदी कार्यक्रम प्रसारित कर रहे हैं, जिनमें बीबीसी, जर्मनी के डॉयचे वेले, जापान के एनएचके वर्ल्ड और चीन के चाइना रेडियो इंटरनेशनल की हिंदी सेवा विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

संचार भाषा

भावों का संचार या संप्रेषण मुख्यत: भाषिक और भाषिकेत्तर दो रूपों में होता है भाषिक रूप मुख्यत: लिखित और उच्चरित दो रूप लिपिबद्ध होने के स्थान और समय की दूरी पार कर लेता है। वर्तमान युग को कंप्यूटर या संचार का युग माना गया है। संचार माध्यम से आज हम एक स्थान पर बैठे हुए विश्व के कोने-कोने की जानकारी पा लेते हैं। समाचार पत्र, आकाशवाणी और दूरदर्शन संसार के प्रमुख संचार माध्यम हैं। इन वैज्ञानिक आधारों पर भाषा संचार का माध्यम बनती है। ऐसी भाषा की संज्ञा दी जाती है। हिंदी भारतवर्ष के अधिकांश लोगों द्वारा समझी और प्रयोग की जाने वाली भाषा है। इसका प्रयोग भारतवर्ष से बाहर गयाना, सूरीनाम, फिजी, ट्रिनीडाड, टुबैगो, कनाडा और अमेरिका जैसे देशों में होता है।

विभिन्न संचार माध्यमों में हिन्दी अभिव्यक्ति का साधन है। इलेक्ट्रोनिक संचार माध्यमों का आधार पाकर हिंदी दिक्-काल की सीमा पार कर वैश्विक धरातल को अपना चुकी है। संचार माध्यमों-आकाशवाणी, दूरदर्शन, दूर संचार और कम्प्यूटर में हिन्दी के बढ़ते प्रयोग और प्रवृत्तियों को देख सकते हैं।

(क) आकाशवाणी और हिन्दी : श्रव्य संचार माध्यमों में आकाशवाणी सर्वाधिक लोकप्रिय है। हिन्दी का प्रयोग भारतवर्ष के अतिरिक्त विदेश में भी किया जाता है। बी.बी. लंदन से हिंदी की आकर्षक

प्रयोग सुनाई देता है। ऐसी भाषा में उच्चारण की शुद्धता पर विशेष बल दिया जाता है। व्याकरण -सम्मत रूप होने के साथ बलाघात, विराम, मात्रा और आरोह-अवरोह पर विशेष ध्यान देना होता है।

आकाशवाणी का समाचार पठन या प्रसारण जन सामान्य के लिए होता है। इसलिए विज्ञान, खेलकूद, चिकित्सा, कृषि और स्वास्थ्य आदि सभी विषयों की भाषा यथासाध्य सरल रखी जाती है।

आकाशवाणी के माध्यम से हिन्दी में वार्ता, परिसंवाद, नाटक और गीत आदि प्रस्तुत किए जाते हैं। आकाशवाणी के प्रारंभिक चरण में हिन्दी में हिन्दी की प्रस्तुति प्राय: ऐसी होती है-

''यह आकाशवाणी का ..... का केन्द्र है
अब आप ..... से समाचार सुनिए।''

(ख) दूरदर्शन और हिंदी - वर्तमान समय में दूरदर्शन सर्वाधिक लोकप्रिय दृश्य-श्रव्य माध्यम है भारतवर्ष की अधिकांश जनसंख्या के द्वारा हिन्दी का प्रयोग किया जाता है। उपभोक्ता संस्कृति के प्रसार-प्रचार के कारण दूरदर्शन पर हिंदी को गंभीरता से अपनाया जा रहा है। दूरदर्शन पर आने वाले हिंदी सीरियलों की प्रतिस्पर्धा हिंदी के महत्व का उजागर करती है। प्रचार-प्रसार की दृष्टि से विज्ञापन में हिंदी के बढ़ते प्रयोग से हिंदी का उज्ज्वल भविष्य सामने आ रहा है। दृश्य श्रव्य माध्यम होने के कारण प्रयोक्ता को पर्याप्त अभ्यास करना होता है। दूरदर्शन की की हिन्दी भाषा की विविधता विभिन्न चैनलों और उनके कार्यक्रमों में देख सकते हैं। सीरियलों में परिमार्जित, व्यंग्य प्रधान और खिचड़ी भाषा उनके प्रारूप के अनुसार मिलती है। विज्ञापनों की हिन्दी का अपना ही रूप होता है। चलचित्र जगत के अदाकारों मुख्यत: अभिनेत्रियों की अंग्रेजी मिश्रित हिन्दी को अपना ही रूप होता है; यथा - मैं चूलूँगी बट जल्दी आ जाऊँगी।''

दूरदर्शन कार्यक्रम के अन्त में अभिवादन - 'नमस्कार' ऐसे शब्दों का प्रयोग करना विशेष प्रभाव छोड़ता है।

(ग) दूरसंचार और हिंदी - दूरसंचार के माध्यमों में टेलीवीजन, टेलीग्राफ, टेलीफोन, फैक्स आदि विशेष उपयोगी सिद्ध हो रहे हैं। त्वरित गति से लेखन, छपाई के साथ सामग्री का स्थाई संसाधन संभव है। इंटरनेट पर दूर देश से E-mail के माध्यम से समाचार आदान-प्रदान संभव हो गया है। इंटरनेट पर दूर देश के पुस्तकालय की किसी भी पुस्तक की सामग्री उपलब्ध कर सकते हैं। चिकित्सा के लिए हर देश के डाक्टर से सलाह ले सकते हैं। यह श्रेष्ठतम संचार माध्यम है।

(घ) कम्प्यूटर इंटरनेट और हिन्दी - वर्तमान युग में कंप्यूटर मानव के प्रत्येक दिशा में गति देने वाला लोकप्रिय यंत्र है। कम्प्यूटर पर हिंदी के सभी कार्य सी। है और हो रहे हैं। त्वरित गति से लेखन, छपाई के साथ सामग्री का स्थाई संसाधन संभव है। इंटरनेट दूर देश से E-mail (ईमेल) के माध्यम से समाचार आदान-प्रदान संभव हो गया है। इंटरनेट पर दूर देश के पुस्तालय की किसी भी पुस्तक की सामग्री उपलब्ध कर सकते हैं। चिकित्सा के लिए हर देश के डाक्टर से सलाह ले सकते हैं। यह श्रेष्ठतम संचार माध्यम है।

(ङ) राष्ट्रभाषा (National Language) - किसी देश के अधिकांश लोगों द्वारा समझी तथा प्रयुक्त की जाने वाली भाषा राष्ट्रभाषा होती है। यदि किसी राष्ट्र में एकाधिक राष्ट्रीय भाषाओं का प्रयोग होता हो या वहाँ के संविधान में मान्यता प्राप्त हो, तो उनमें से ही सर्वाधिक रूप में प्रयुक्त भाषा को राष्ट्रभाषा का स्थान प्राप्त होता है। राष्ट्रभाषा का सम्मान देश को गरिमा और गौरव प्रदान करता है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने राष्ट्रीय भावना से आन्दोलित होकर लिखा है-

''निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल,
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटे न हिय को सूल॥''

NOTES

हिन्दी भारतवर्ष की राष्ट्रभाषा है। हिंदी का प्रयोग भारतवर्ष के विस्तीर्ण भौगोलिक भाग-हरियाणा, उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश, राजस्थान, हिमांचल प्रदेश, उत्तरांचल प्रदेशी, दिल्ली में होता है। इस भाग को हिंदी भाषी प्रदेश की संज्ञा दी जाती है। इसके साथ भारत के विभिन्न प्रदेशों में हिंदी के विशेष रूप प्रयुक्त होते हैं; यथा मुम्बईया हिंदी, कोलकातिया हिंदी आदि हिंदी के विविधरूप राष्ट्र भाषा के आधार स्वरूप हैं। राष्ट्रभाषा के लिए सँविधान में मान्यता की अपेक्षा नहीं होती है। राष्ट्रभाषा के विविध रूपों का व्याकरण सम्मत रूप या उनमें एकरूपता की अपेक्षा नहीं होती है। विभिन्न अहिंदी भाषी लोग अपनी भाषा के साथ हिंदी का प्रयोग करते रहते हैं। उनकी हिंदी में उनकी अपनी भाषा की छाया होना स्वाभाविक है। राष्ट्रभाषा के विस्तार और स्वरूप की विशेषता है। राष्ट्रभाषा की विधिता में का मूल मंत्र होता है। राष्ट्रभाषा देश को भावात्मक एकता को आधार प्रदान करती है। भारत एक लंबे समय तक विदेशी शासकों के आधिपत्य में रहा है। यहाँ मुस्लिम और अंग्रेजी शासन की राजभाषा क्रमशः फारसी और अंग्रेजी रही है। किन्तु यहां राष्ट्रभाषा सदा से ही हिंदी रही है। राष्ट्रभाषा में साहित्य-सृजन की परंपरा, लोकसाहित्य इसके प्रबल पक्ष हैं। स्वतंत्रता आन्दोलन में 'वन्दे मातृरम' 'जिन्दाबाद' के नारे हिंदी की गरिमा को प्रमाणित करते रहे।

(ई) राजभाषा (Official Languagr) - राजभाषा के लिए अंग्रेजी Official Language पर्याय रूप में प्रयुक्त होता है। इसी आधार पर इसे 'कार्यालयी भाषा' शब्द 'राजभाषा' के समानार्थी नहीं है। किसी देश या प्रदेश का राज-काज जिस भाषा में होता है, उसे देश-प्रदेश की राजभाषा कहते हैं। राजभाषा का क्षेत्र मुख्यतः शासन प्रशासन, विधान-कार्यपालिका और विधि-न्यायालय है। सामान्यतः देश की राष्ट्रभाषा को ही राजभाषा का स्थान दिया जाता है। सामान्य व्यक्ति राष्ट्रभाषा से जुड़ा होता है, इसलिए उसे राजभाषा बनाने और उसने कार्य संचालन सरल होता है। विदेशी शासन में यह संभावना बहुत कम होती है। विदेशी शासक मनचाही शासन व्यवस्था हेतु अपनी भाषा को राजभाषा बनाता है। ऐसे में जनसामान्य और शासक की भाषा भिन्न होती है।

भारतवर्ष की गुलामी के समय यहाँ राजभाषा विदेशी ही थी। मुस्लिम शासन काल में यहाँ की राजभाषा फारसी थी तो अंग्रेजी काल में अंग्रेजी थी। 15 अगस्त 1947 को भारत स्वतंत्र हुआ और यहाँ की राष्ट्रभाषा हिंदी को 14 सितम्बर, 1949 को राजभाषा का गरिमामय पद दिया।

सँविधान के अनुसार हिंदी भारतवर्ष की राजभाषा है। सँविधान में हिंदी-प्रयोग के उपयोगी प्रावधान हैं। हिंदी प्रयोग की स्थिति विचारणीय है। अपेक्षा है, अपेक्षा है प्रावधानों पर व्यक्तिगत और प्रशासनिक रूप में गंभीरता से कार्य करने की। राष्ट्रीय गरिमा के लिए राजभाषा हिंदी के अनुकूल सम्मान मिलना चाहिए।

भाषा सामान्य व्यवहार के माध्यम के साथ विविध ज्ञान-विज्ञान के ज्ञानार्जन का माध्यम है। हिन्दी साहित्य-सृजन का माध्यम हिन्दी भाषा है। हिन्दी भाषा के अभाव में हिन्दी साहित्य की कल्पना भी असंभव है जिस प्रकार हिन्दी-भाषी समाज के भावादान-प्रदान की भाषा हिन्दी भाषा है। उसी प्रकार सभी भाषाओं के माध्यम से उनसे संबंधित भाषा-भाषी समाज विविध क्षेत्रों में उन्नति करता है।

हिंदी भारत वर्ष की राजभाषा, जनभाषा, राष्ट्रभाषा और राजभाषा भी है। वर्तमान समय में विभिन्न विषयों का अध्ययन-अध्यापन हिन्दी माध्यम से होने लगा है। हिन्दी भाषी क्षेत्र में वाणिज्य, समाज विज्ञान ही नहीं; विज्ञान विषयों का अध्यापन हिन्दी माध्यम से विशेष रूप से होने लगा है। विविध शिक्षा संस्थाओं, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों में परीक्षा के उत्तर हिन्दी माध्यम से लिखने की छूट है अनेक प्रतियोगी परीक्षाओं में भी हिन्दी प्रयोग का ऐसा ही अवसर दिया गया है। राजभाषा के नियमानुसार न्यायापालिका और कार्यपालिका और कार्यपालिका की गतिविधियों का माध्यम हिन्दी होना चाहिए।

हिन्दी को विविध विषयों के चिंतन-मनन, अध्ययन-अध्यापन को दिशा प्रदान करने के लिए अनेक विषयों की पारिभाषिक शब्दावलियाँ तैयार की गई हैं। इन शब्दकोशों के अनुसरण से हिन्दीभाषिक शब्दों में एकरूपता और स्पष्टता बनी रहती है।

भारत शताब्दियों तक विदेशी शासन में साँस लेता रहा है। अंग्रेजी शासन का प्रभाव आज भी सुस्पष्ट रूप में दिखाई देता है। शिक्षा और विविध कार्य-क्षेत्रों में अंग्रेजी का प्रभाव आज भी दिखाई देता है। यह हमारी भ्रमित मानसिकता है कि ज्ञान-विज्ञान की शिक्षा अंग्रेजी माध्यम से ही संभव है। अंग्रेजी विदेशी भाषा है यह निर्विवाद सत्य है कि कोई भी व्यक्ति किसी भी विषय का ज्ञान जितनी सहजता, सरलता और व्यावहारिकता से अपनी भाषा में सीखता है, उतनी गति से किसी भी विदेशी भाषा को माध्यम बनाकर नहीं सीख सकता। प्रत्येक व्यक्ति का चिंतन-मनन और विचार सर्वप्रथम अपनी भाषा के माध्यम से होता है, उसके पश्चात अन्य भाषा में अनूदित कर अभिव्यक्ति का अवसर मिलता है।

अपनी भाषा के माध्यम बनाकर की जाने वाली भावाभिव्यक्ति सुस्पष्ट और मौलिक होती हैं। इसमें जहाँ भाषा का अपना संरचनात्मक रूप होता है। वहीं विषय, भाव और जीवन के गतिशील पथ पर अपनी पहचान छोड़ती है।

हिंदी का प्रयोग भारतवर्ष के बहुसंख्यक लोक करते हैं। इस प्रकार यदि शिक्षा का माध्यम हिंदी बनाया जाए तो देश को दिशा मिलेंगी। इस विषय में शासन, शिक्षा संस्थाओं और व्यक्तिगत रूप से भी प्रयास किए जा रहे हैं। विज्ञान, विधि, वाणिज्य, पर्यावरण आदि विषयों में हिंदी को माध्यम बनाने के लिए शासन द्वारा पुस्तकें लिखवाई जा रही हैं, साथ ही ऐसे उत्साही लेखकों को प्रतिवर्ष पुरस्कृत करने की भी योजना चल रही है।

भारत की राजभाषा के रूप में हिन्दी

हिन्दी को भारत की राजभाषा के रूप में सितम्बर, सन् 1949 को स्वीकार किया गया। इसके बाद संविधान में राजभाषा के सम्बन्ध में धारा 343 से 352 तक की व्यवस्था की गयी। इसकी स्मृति को ताजा रखने के लिये 14 सितम्बर का दिन प्रतिवर्ष हिन्दी दिवस के रूप में मनाया जाता है।

धारा 343(1) के अनुसार भारतीय संघ की राजभाषा हिन्दी एवं लिपि देवनागरी होगी। संघ के राजकीय प्रयोजनों के लिये प्रयुक्त अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय स्वरूप (अर्थात 1, 2 , 3 आदि) होगा।

संसद का कार्य हिंदी में या अंगरेजी में किया जा सकता है। परन्तु राज्यसभा के सभापति महोदय या लोकसभा के अध्यक्ष महोदय विशेष परिस्थिति में सदन के किसी सदस्य को अपनी मातृभाषा में सदन को संबोधित करने की अनुमति दे सकते हैं । संविधान का अनुच्छेद 120 किन प्रयोजनों के लिए केवल हिंदी का प्रयोग किया जाना है, किन के लिए हिंदी और अंगरेजी दोनों भाषाओं का प्रयोग आवश्यक है और किन कार्यों के लिए अंगरेजी भाषा का प्रयोग किया जाना है, यह राजभाषा अधिनियम 1963, राजभाषा नियम 1976 और उनके अंतर्गत समय समय पर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय की ओर से जारी किए गए निर्देशों द्वारा निर्धारित किया गया है।

हिन्दी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किये जाने का औचित्य

हिन्दी को राजभाषा का सम्मान कृपापूर्वक नहीं दिया गया, बल्कि यह उसका अधिकार है। यहां अधिक विस्तार में जाने की आवश्यकता नहीं है, केवल राष्ट्रपिता महात्मा गांधी द्वारा बताये गये निम्नलिखित लक्षणों पर दृष्टि डाल लेना ही पर्याप्त रहेगा, जो उन्होंने एक 'राष्ट्रीय भाषा' (राष्ट्रीय भाषा से अभिप्राय राजभाषा से ही है) के लिए बताये थे-

(1) अमलदारों के लिए वह भाषा सरल होनी चाहिए।

(2) उस भाषा के द्वारा भारतवर्ष का आपसी धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक व्यवहार हो सकना चाहिए।

(3) यह जरूरी है कि भारतवर्ष के बहुत से लोग उस भाषा को बोलते हों।

(4) राष्ट्र के लिए वह भाषा आसान होनी चाहिए।

(5) उस भाषा का विचार करते समय किसी क्षणिक या अल्प स्थायी स्थिति पर जोर नहीं देना चाहिए।

इन लक्षणों पर हिन्दी भाषा बिल्कुल खरी उतरती है।

NOTES

अनुच्छेद 343. संघ की राजभाषा

1. संघ की राजभाषा हिंदी और लिपि देवनागरी होगी, संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग होने वाले अंकों का रूप भारतीय अंकों का अंतर्राष्ट्रीय रूप होगा।

2. खंड (1) में किसी बात के होते हुए भी, इस संविधान के प्रारंभ से पंद्रह वर्ष की अवधि तक संघ के उन सभी शासकीय प्रयोजनों के लिए अंगरेजी भाषा का प्रयोग किया जाता रहेगा जिनके लिए उसका ऐसे प्रारंभ से ठीक पहले प्रयोग किया जा रहा था :

परन्तु राष्ट्रपति उक्त अवधि के दौरान, आदेश द्वारा, संघ के शासकीय प्रयोजनों में से किसी के लिए अंगरेजी भाषा के अतिरिक्त हिंदी भाषा का और भारतीय अंकों के अंतर्राष्ट्रीय रूप के अतिरिक्त देवनागरी रूप का प्रयोग प्राधिकृत कर सकेगा।

1. इस अनुच्छेद में किसी बात के होते हुए भी, संसद् उक्त पन्दरह वर्ष की अवधि के पश्चात् विधि द्वारा

   (क) अंगरेजी भाषा का, या

   (ख) अंकों के देवनागरी रूप का,

ऐसे प्रयोजनों के लिए प्रयोग उपबंधित कर सकेगी जो ऐसी विधि में विनिर्दिष्ट किए जाएं।

अनुच्छेद 351. हिंदी भाषा के विकास के लिए निर्देश

संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिंदी भाषा का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे जिससे वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिन्दुस्तानी में और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहां आवश्यक या वांछनीय हो वहां उसके शब्द-भंडार के लिए मुख्यत: संस्कृत से और गौणत: अन्य भाषाओं से शब्द गरहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।

राजभाषा हिन्दी की विकास-यात्रा

स्वतंत्रता पूर्व

1833-86 : गुजराती के महान कविश्री नर्मद (1833-86) ने हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने का विचार रखा।

1872 : आर्य समाज के संस्थापक महार्षि दयानंद सरस्वती जी कलकत्ता में केशवचन्दर सेन से मिले तो उन्होंने स्वामी जी को यह सलाह दे डाली कि आप संस्कृत छोड़कर हिन्दी बोलना आरम्भ कर दें तो भारत का असीम कल्याण हो। तभी से स्वामी जी के व्याख्यानों की भाषा हिन्दी हो गयी और शायद इसी कारण स्वामी जी ने सत्यार्थ प्रकाश की भाषा भी हिन्दी ही रखी। (देखें, आर्यसमाज की हिन्दी-सेवा)

1873: महेन्दर भट्टाचार्य द्वारा हिन्दी में पदार्थ विज्ञान ( ) की रचना

1877 : श्रद्धाराम फिल्लौरी ने भाग्यवती नामक हिन्दी उपन्यास की रचना की।

1893 : काशी नागरीप्रचारिणी सभा की स्थापना

1918 : मराठी भाषी लोकमान्य बालगंगाधर तिलक ने कांगरेस अध्यक्ष की हैसियत से घोषित किया कि हिन्दी भारत की राजभाषा होगी।

1918 : महात्मा गांधी द्वारा दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा की स्थापना

1930 का दशक : हिन्दी टाइपराइटर का विकास (शैलेन्दर मेहता)

1935 : मदरास राज्य के मुख्यमंत्री रूप में सी राजगोपालाचारी ने हिन्दी शिक्षा को अनिवार्य कर दिया।

स्वतंत्रता के बाद

14.9.1949

संविधान सभा ने हिन्दी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया । इस दिन को अब हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है ।

26.1.1950

संविधान लागू हुआ। तदनुसार उसमें किए गए भाषाई प्रावधान(अनुच्छेद 120, 210 तथा 343 से 351) लागू हुए ।

1952

शिक्षा मंत्रालय द्वारा हिन्दी भाषा का प्रशिक्षण ऐच्छिक तौर पर प्रारम्भ किया गया ।

27.5.1952

राज्यपालों/उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीशों तथा उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों की नियुक्तियों में अंगरेजी भाषा के अतिरिक्त हिन्दी भाषा व भारतीय अंकों के अन्तर्राष्ट्रीय स्वरूप के अतिरिक्त अंकों के देवनागरी स्वरूप का प्रयोग प्राधिकृत किया गया ।

जुलाई, 1955

हिन्दी शिक्षण योजना की स्थापना । केन्द्र सरकार के मंत्रालयों, विभागों, संबद्ध व अधीनस्थ कर्मचारियों को सेवाकालीन प्रशिक्षण ।

7.6.1955

बी.जी. खेर आयोग का गठन (संवधान के अनुच्छेद 344 (1) के अन्तर्गत)

अक्तूबर,1955

गृह मंत्रालय के अन्तर्गत हिन्दी शिक्षण योजना प्रारम्भ की गई ।

3.12.1955

संविधान के अनुच्छेद 343 (2) के परन्तुक द्वारा दी गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए संघ के कुछ कार्यों के लिए अंगरेजी भाषा के अतिरिक्त हिंदी भाषा का प्रयोग किए जाने के आदेश जारी किए गए।

31.7.1956

खेर आयोग की रिपोर्ट राष्ट्रपति जी को प्रस्तुत की गई ।

1957

खेर आयोग की रिपोर्ट पर विचार हेतु तत्कालीन गृह मंत्रीश्री गोविन्द वल्लभ पंत की अध्यक्षता में संसदीय समिति का गठन ।

8.2.1959

संविधान के अनुच्छेद 344 (4) के अन्तर्गत संसदीय समिति की रिपोर्ट राष्ट्रपति जी को प्रस्तुत की गई।

स्व प्रगति की जाँच करें:

5. हिन्दी शब्दावली में मुख्यत: कितने वर्ग हैं ?
6. "दूरदर्शन और हिन्दी" पर लघु नोट लिखें।

NOTES

सितम्बर, 1959

संसदीय समिति की रिपोर्ट पर संसद में बहस तत्कालीन प्रधान मंत्रीश्री जवाहर लाल नेहरू द्वारा आश्वासन दिया गया कि अंग्रेजी को सह-भाषा के रूप में प्रयोग में लाए जाने हेतु कोई व्यवधान उत्पन्न नहीं किया जाएगा और न ही इसके लिए कोई समय-सीमा ही निर्धारित की जाएगी। भारत की सभी भाषाएँ समान रूप से आदरणीय हैं और ये हमारी राष्ट्रभाषाएं हैं ।

1960

हिन्दी टंकण, हिन्दी आशुलिपि का अनिवार्य प्रशिक्षण आरम्भ किया गया ।

27.4.1960

संसदीय समिति की रिपोर्ट पर राष्ट्रपति के आदेश जारी किए गए जिनमें हिन्दी शब्दावलियों का निर्माण, संहिताओं व कार्यविधिक साहित्य का हिंदी अनुवाद, कर्मचारियों को हिंदी का प्रशिक्षण, हिंदी प्रचार, विधेयकों की भाषा, उच्चतम न्यायालय व उच्च न्यायालयों की भाषा आदि मुद्दे हैं ।

10.5.1963

अनुच्छेद 343(3) के प्रावधान श्री जवाहर लाल नेहरू के आवासन को ध्यान में रखते हुए राजभाषा अधिनयम बनाया गया । इसके अनुसार हिन्दी संघ की राजभाषा व अंग्रेजी सह-राजभाषा के रूप में प्रयोग में लाई गई ।

5.9.1967

प्रधान मंत्री की अध्यक्षता में केन्द्रीय हिन्दी समिति का गठन किया गया। यह समिति सरकार की राजभाषा नीति के संबंध में महत्वपूर्ण दिशा-निदेश देने वाली सर्वोच्च समिति है। इस समिति में प्रधानमंत्री जी के अलावा नामित केन्द्रीय मंत्री, कुछ राज्यों के मुख्यमंत्री, सांसद तथा हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं के विद्वान सदस्य के रूप में शामिल किए जाते हैं ।

16.12.1967

संसद के दोनों सदनों द्वारा राजभाषा संकल्प पारित किया गया जिसमें हिन्दी के राजकीय प्रयोजनों हेतु उत्तरोत्तर प्रयोग के लिए अधिक गहन और व्यापक कार्यक्रम तैयार करने, प्रगति की समीक्षा के लिए वार्षिक मूल्यांकन रिपोर्ट तैयार करने, हिन्दी के साथ -साथ 8वीं अनुसूची की अन्य भाषाओं के समन्वित विकास के लिए कार्यक्रम तैयार करने, त्रिभाषा सूत्र का अपनाये जाने, संघ सेवाओं के लिए भर्ती के समय हिन्दी व अंगरेजी में से किसी एक के ज्ञान की आवश्यकता अपेक्षित होने तथा संघ लोक सेवा आयोग द्वारा उचित समय पर परीक्षा के लिए संविधान की 8वीं अनुसूची में सम्मिलित सभी भाषाओं तथा अंग्रेजी को वैकल्पिक माध्यम के रूप में रखने की बात कही गई है । (संकल्प 18.8,1968 को प्रकाशित हुआ)

1967

सिंधी भाषा संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित की गई ।

8.1.1968

राजभाषा अधिनियम, 1963 में संशोधन कए गए । तदनुसार धारा 3 (4) में यह प्रावधान कया गया कि हिंदी में या अंग्रेजी भाषा में प्रवीण संघ सरकार के कर्मचारी प्रभावी रूप से अपना काम कर सकें तथा केवल इस आधार पर कि वे दोनों ही भाषाओं में प्रवीण नहीं हैं, उनका कोई अहित न हो। धारा 3 (5) के अनुसार संघ के राजकीय प्रयोजनों में अंगरेजी भाषा का प्रयोग समाप्त कर देने के लिए आवयक है कि सभी राज्यों के विधान मण्डलों द्वारा(जिनकी राजभाषा हिंदी नहीं है) ऐसे संकल्प पारित होक जाएं तथा उन संकल्पों पर विचार करने के पश्चात अंग्रेजी भाषा का प्रयोग समाप्त करने के लिए संसद के प्रत्येक सदन द्वारा संकल्प पारित किया जाए ।

1968

राजभाषा संकल्प 1968 में किए गए प्रावधान के अनुसार वर्ष 1968-69 से राजभाषा हिन्दी में कार्य करने के लिए विभिन्न मदों के लक्ष्य निर्धारित किए गए तथा इसके लिए वार्षिक कार्यक्रम तैयार किया गया।

1.3.1971

केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो का गठन ।

1973

केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो के दिल्ली स्थित मुख्यालय में एक प्रशिक्षण केन्द्र की स्थापना ।

1974

तीसरी श्रेणी के नीचे के कर्मचारियों, औद्योगिक प्रतिष्ठानों के कर्मचारियों तथा कार्य प्रभारित कर्मचारियों को छोड़कर केन्द्र सरकार के कर्मचारियों के साथ-साथ केन्द्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रणाधीन निगमों, उपक्रमों, बैंकों आदि के कर्मचारियों व अधिकारियों के लिए हिन्दी भाषा, टंकण एवं आशुलिपि का अनिवार्य प्रशिक्षण ।

जून, 1975

राजभाषा से संबंधित संवैधानिक, विधिक उपबंधों के कार्यान्वयन हेतु राजभाषा विभाग का गठन किया गया ।

1976

राजभाषा नियम बनाए गए ।

1976

संसदीय राजभाषा समिति का गठन । तब से अब तक समिति ने अपनी रिपोर्ट के 8 भाग प्रस्तुत किए हैं जिनमें से प्रथम 7 पर राष्ट्रपति के आदेश जारी हो गए हैं। आठवें खण्ड में की गई संस्तुतियों पर मंत्रालयों व राज्य सरकारों की टिप्पणी प्राप्त की जा रही है।

1977

श्री अटल बिहारी वाजपेयी, तत्कालीन विदेश मंत्री ने पहली बार संयुक्त राष्ट्र की आम सभा को हिंदी में संबोधित किया ।

1981

केन्द्रीय सचिवालय राजभाषा सेवा संवर्ग का गठन किया गया।

25.10.1983

केन्द्रीय सरकार के मंत्रालयों, विभागों, सरकारी उपक्रमों, राष्ट्रीयकृत बैंकों में यांत्रिक और इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों द्वारा हिन्दी में कार्य को बढ़ावा देने तथा उपलब्ध द्विभाषी उपकरणों के प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से राजभाषा विभाग में तकनीकी कक्ष की स्थापना की गई ।

21.8.1985

केन्द्रीय हिन्दी प्रशिक्षण संस्थान का गठन कर्मचारियों/अधिकारियों को हिन्दी भाषा, हिन्दी टंकण और हिन्दी आशुलिपि के पूर्णकालिक गहन प्रशिक्षण सुविधा उपलब्ध कराने के लिए किया गया ।

NOTES

1986

कोठारी शिक्षा आयोग की रिपोर्ट। 1968 में पहले ही यह सिफारिश की जा चुकी थी कि भारत में शिक्षा का माध्यम भारतीय भाषाएँ होनी चाहिए । उच्च शिक्षा के माध्यम के संबंध में नई शिक्षा नीति (1986) के कार्यान्वयन - कार्यक्रम में कहा गया- स्कूल स्तर पर आधुनिक भारतीय भाषाएं पहले ही शिक्षण माध्यम के रूप में प्रयुक्त हो रही हैं । आवश्यकता इस बात की है क विश्वविद्यालय के स्तर पर भी इन्हें उत्तरोत्तर माध्यम के रूप में अपना लया जाए। इसके लिए अपेक्षा यह है कि राज्य सरकारें, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से परामर्श करके, सभी विषयों में और सभी स्तरों पर शिक्षण माध्यम के रूप में उत्तरोत्तर आधुनिक भारतीय भाषाओं को अपनाएँ।

1986-87

इंदिरा गाँधी राजभाषा पुरस्कार प्रारम्भ किए गए।

9.10.1987

राजभाषा नियम, 1976 में संशोधन किए गए।

1988

विदेश मंत्री के रूप में संयुक्त राष्ट्र की जनरल असेम्बली में तत्कालीन विदेश मंत्री श्री नरसिंह राव जी हिंदी में बोले।

1992

कोंकणी, मणिपुरी व नेपाली भाषाएँ संविधान की आठवीं अनुसूची में सम्मिलित की गई ।

14.9.1999

संघ की राजभाषा हिंदी की स्वर्ण जयंती मनाई गई ।

24.1.2000

राजभाषा विभाग का पोर्टल का लोकार्पण माननीय गृह मंत्री जी द्वारा किया गया जिसमें विभाग से संबंधित विभिन्न जानकारियाँ द्विभाषिक रूप में उपलब्ध कराई गई ।

20.10.2000

राष्ट्रीय ज्ञान विज्ञान मौलिक पुस्तक लेखन पुरस्कार वर्ष 2001-02 से आरंभ करने की घोषणा की गई जिसमें निम्न पुरस्कार राशियां हैं :-

(1) प्रथम प्ररस्कार - 100000 रुपये

(2) द्वतीय प्ररस्कार - 75000 रुपये

(3) तृतीय पुरस्कार - 50000 रुपये

(4) 10 सांत्वना पुरस्कार - 100000 रुपये

2.9.2003

डॉ. सीता कान्त महापात्र की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया गया जो संविधान की आठवीं अनुसूची में अन्य भाषाओं को सम्मिलित किए जाने तथा आठवीं अनुसूची में सभी भाषाओं को संघ की राजभाषा घोषित किए जाने की साध्यता परखने पर विचार करेगी । समिति ने 14.6.2004 को अपनी रिपोर्ट सरकार को प्रस्तुत की ।

11.9.2003

मंत्रिमंडल ने एन.डी.ए. तथा सी.डी.एस. की परीक्षाओं में प्रश्न पत्रों को हिंदी में भी तैयार करने का निर्णय लिया ।

14.9.2003

कंप्यूटर की सहायता से प्रबोध, प्रवीण तथा प्राज्ञ स्तर की हिंदी स्वयं सीखने के लिए राजभाषा विभाग ने कंप्यूटर प्रोग्राम (लीला हिंदी प्रबोध, लीला हिंदी प्रवीण, लीला हिंदी प्राज्ञ) तैयार करवा कर सर्व साधारण द्वारा उसका निशुल्क प्रयोग के लिए उसे राजभाषा विभाग की वैब साइट पर उपलब्ध करा दिया है।

8.1.2004

बोडो, डोगरी, मैथिली तथा संथाली भाषाओं को संविधान की आठवीं अनुसूची में रखा ।

22.7.2004

केन्द्रीय सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन /कार्यान्वयन के लिए न्यूनतम हिन्दी पदों के मानक पुन निर्धारित ।

6.9.2004

मातृभाषा विकास परिषद् द्वारा दायर एक जनहित याचिका पर उच्चतम न्यायालय ने यह पाया कि वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग के गठन का उद्देश्य हिंदी एवं अन्य आधुनिक भाषाओं के लिए तकनीकी शब्दावली में एकरूपता अपनाया जाना है। यह एकरूपता तकनीकी शब्दावली के प्रयोग के लिए आवश्यक है । उच्चतम न्यायालय ने निदेश दिया कि आयोग द्वारा बनाई गई तकनीकी शब्दावली भारत सरकार के अंतर्गत एन.सी.ई.आर.टी तथा इसी प्रकार की अन्य संस्थाओं द्वारा तैयार की जा रही पाठय पुस्तकों में प्रयोग में लाई जाए ।

14.9.2004

कम्प्यूटर की सहायता से तमिल, तेलुगू, मलयालम तथा कन्नड़ भाषाओं के माध्यम से प्रबोध, प्रवीण तथा प्राज्ञ स्तर की हिंदी स्वयं सीखने के लिए कम्प्यूटर प्रोग्राम तैयार करवा कर उसके नि:शुल्क प्रयोग के लिए उसे राजभाषा विभाग की वैब साइट पर उपलब्ध करा दिया।

20.6.2005

525 हिंदी फॉंट, फॉंट कोड कनवर्टर, अंग्रेजी - हिंदी शब्दकोश, हिंदी स्पेल चेकर को नि:शुल्क प्रयोग के लए वेब साइट पर उपलब्ध करा दिया गया । इन्हें ://. ://../ से डाउनलोड किया जा सकता है ।

8.8.2005

राष्ट्रीय ज्ञान-विज्ञान मौलिक पुस्तक लेखन पुरस्कार का नाम बदल कर राजीव गांधी राष्ट्रीय ज्ञान-विज्ञान मौलिक पुस्तक लेखन पुरस्कार कर दिया गया तथा पुरस्कार राशि बढ़ा कर निम्न प्रकार कर दी गई :-

प्रथम पुरस्कार - रू 2 लाख

द्वितीय पुरस्कार - रू 1.25 लाख

तृतीय पुरस्कार - रू 0.75 लाख

सांत्वना पुरस्कार (10) - रू 10 हजार प्रत्येक को

यह योजना वर्ष 2004-95 में प्रकाशित पुस्तकों से लागू होगी ।

NOTES

14.9.2005

कंप्यूटर की सहायता से बांगला भाषा के माध्यम से प्रबोध, प्रवीण तथा प्राज्ञ स्तर की हिंदी स्वयं सीखने के लिए प्रोग्राम तैयार करवा कर राजभाषा विभाग की वैब साइट पर उपलब्ध करा दिया गया ।

मंत्र-राजभाषा अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद सॉफ्टवेयर प्रशासनिक एवं वित्तिय क्षेत्रों के लिए प्रयोग एवं डाउनलोड हेतु राजभाषा विभाग की वैब साइट पर उपलब्ध करा दिया ।

14.9.2006

कंप्यूटर की सहायता से उड़िया, असमी, मणिपुरी तथा मराठी भाषा के माध्यम से प्रबोध, प्रवीण तथा प्राज्ञ स्तर की हिंदी स्वयं सीखने के लिए प्रोग्राम तैयार करवा कर राजभाषा विभाग की वैब साइट पर उपलब्ध करा दिया ।

मंत्र-राजभाषा अंगरेजी से हिंदी अनुवाद सॉफ्टवेयर लघु उद्योग एवं कृषि क्षेत्रों के लिए प्रयोग एवं डाउनलोड हेतु राजभाषा विभाग की वैब साइट पर उपलब्ध करा दिया ।

14.9.2007

कंप्यूटर की सहायता से नेपाली, पंजाबी, कश्मीरी तथा गुजराती भाषा के माध्यम से प्रबोध, प्रवीण तथा प्राज्ञ स्तर की हिंदी स्वयं सीखने के लिए प्योगराम तैयार करवा कर राजभाषा विभाग की वैब साइट पर उपलब्ध करा दिया ।

मंत्र-राजभाषा अंगरेजी से हिंदी अनुवाद सॉफ्टवेयर सूचना-प्रौद्योगिकी एवं स्वास्थ्य सुरक्षा क्षेत्रों के लिए प्रयोग एवं डाउनलोड हेतु राजभाषा विभाग की वैब साइट पर उपलब्ध करा दिया ।

श्रुतलेखन-राजभाषा (हिंदी स्पीच से हिंदी टेक्सट) अंतिम वर्जन जन-प्रयोग के लिए मार्किट में बिक्री के लिए उपलब्ध है।

स्व-प्रगति की जाँच के उत्तर

1. प्रयोजनमूलक हिन्दी का तात्पर्य है- वह हिन्दी जिसका प्रयोग हम संचार, विज्ञापन, पत्रकारिता, मीडिया लेखन आदि विविध क्षेत्रों में करते हैं। मीडिया लेखन के अन्तर्गत रेडियो नाटक, फीचर, पटकथा लेखन, उद्घोषणा लेखन आदि अनेक विषय आते हैं। इन सबकी अलग तकनीक है, अलग विधि है। आज का युग विज्ञापन का युग है। विज्ञापन की भाषा की अलग विशेषताएँ होती हैं। वह इस प्रकार का होना चाहिए जो हमारे दिलो-दिमाग पर छा जाये और हमें उस वस्तु-विशेष की ओर आकृष्ट कर दे।

   इसी प्रकार रिपोर्ताज, फीचर, रूपक, डाक्युमेंट्री लेखन की विधियाँ भी अलग-अलग हैं। समाचार लेखन, सम्पादकीय लेखन, शीर्षक लेखन आदि पत्रकारिता से जुड़ी हुई चीजें हैं वस्तुत: आज हिन्दी की उपयोगिता विविध क्षेत्रों में है। अत: आवश्यकता इस बात की है कि विद्यार्थी हिन्दी के इस रूप से भी परिचित हों जो उन्हें व्यवसायिक क्षेत्र में जीविका उपार्जित करने में सहायक हो। प्रयोजनमूलक हिन्दी, भाषा का वह रूप है जो विविध क्षेत्रों में प्रयुक्त होता है तथा व्यक्ति को उन क्षेत्रों में जीविका खोजने में सहायक हो सकता है।

2. **प्रयोजनमूलक हिन्दी : विशेषताएँ–** प्रयोजनमूलक हिन्दी की संरचना, संचेतना एवं संकल्पना के विश्लेषण से उसमें अन्तर्निहित कुछ महत्वपूर्ण विशेषताएँ उद्घटित होकर सामने आती हैं, जिनमें प्रमुख हैं–

   (a) अनुप्रयुक्तता
   (b) वैज्ञानिकता
   (c) सामाजिकता
   (d) भाषिक विशिष्टता

(a) **अनुप्रयुक्तता**–प्रयोजनमूलक हिन्दी का सबसे बड़ा गुण या विशेषता है, उसकी अनुप्रयुक्तता (Appliedness) अर्थात् प्रयोजनीयता। जीवन के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में हिन्दी का विशिष्ट रूप विशिष्ट प्रयोजन के अनुसार अनुप्रयुक्त होता है। विश्व भर में बहुत सारी भाषाएँ ऐसी हैं जिनका अस्तित्व व्यवहार तथा साहित्य के क्षेत्र से ही बना हुआ है। प्रशासन, प्रचालन तथा विज्ञान-प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों को अभिव्यक्त करने की उनकी क्षमता उचित मात्रा में विकसित नहीं हो पाती है। अर्थात् उन भाषाओं का अनुपयुक्त पक्ष अत्यधिक कमजोर होता है। ऐसी भाषाओं के नवीनीकरण तथा आधुनिकीकरण की प्रक्रिया कालान्तर में लगभग समाप्त-सी हो जाती है। फलत: उनका बहुमुखी सर्वांगीण विकास नहीं हो पाता। हिन्दी के प्रयोजनमूलक रूप का सर्वांगीण विकास इसीलिए सम्भव हो सका है कि उसमें अनुप्रयुक्तता की महत्तम विशेषता विद्यमान रही है। अनुप्रयुक्तता की दृष्टि से हिन्दी के प्रयोजनमूलक रूपों में राजभाषा, कार्यालयी, वाणिज्यिक, व्यावसायिक, वैज्ञानिक तथा प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में प्रयुक्त हिन्दी का समावेश होता है।

3. **हिन्दी एवं उर्दू**– भाषाविद हिन्दी एवं उर्दू को एक ही भाषा समझते हैं । हिन्दी देवनागरी लिपि में लिखी जाती है और शब्दावली के स्तर पर अधिकांशत: संस्कृत के शब्दों का प्रयोग करती है। उर्दू, फ़ारसी लिपि में लिखी जाती है और शब्दावली के स्तर पर उस पर फ़ारसी और अरबी भाषाओं का प्रभाव अधिक है। व्याकरणिक रुप से उर्दू और हिन्दी में लगभग शत-प्रतिशत समानता है – केवल कुछ विशेष क्षेत्रों में शब्दावली (जैसा कि ऊपर लिखा गया है) में अंतर होता है। कुछ विशेष ध्वनियाँ उर्दू में अरबी और फ़ारसी से ली गयी हैं और इसी प्रकार फ़ारसी और अरबी की कुछ विशेष व्याकरणिक संरचना भी प्रयोग की जाती है। उर्दू और हिन्दी को खड़ी बोली की दो शैलियाँ कहा जा सकता है।

4. भाषाविदों के अनुसार हिन्दी के चार प्रमुख रूप या शैलियाँ हैं :

   (1) उच्च हिन्दी – हिन्दी का मानकीकृत रूप, जिसकी लिपि देवनागरी है। इसमें संस्कृत भाषा के कई शब्द है, जिन्होंने फ़ारसी और अरबी के कई शब्दों की जगह ले ली है। इसे शुद्ध हिन्दी भी कहते हैं। आजकल इसमें अंग्रेज़ी के भी कई शब्द आ गये हैं (ख़ास तौर पर बोलचाल की भाषा में)। यह खड़ीबोली पर आधारित है, जो दिल्ली और उसके आस-पास के क्षेत्रों में बोली जाती थी।

   (2) दक्खिनी – हिन्दी का वह रूप जो हैदराबाद और उसके आसपास की जगहों में बोला जाता है। इसमें फ़ारसी-अरबी के शब्द उर्दू की अपेक्षा कम होते हैं।

   (3) रेख़्ता – उर्दू का वह रूप जो शायरी में प्रयुक्त होता है।

   (4) उर्दू – हिन्दी का वह रूप जो देवनागरी लिपि के बजाय फ़ारसी-अरबी लिपि में लिखा जाता है। इसमें संस्कृत के शब्द कम होते हैं और फ़ारसी-अरबी के शब्द अधिक। यह भी खड़ीबोली पर ही आधारित है।

5. हिन्दी शब्दावली में मुख्यत: दो वर्ग हैं-

   - **तत्सम शब्द**- ये वो शब्द हैं जिनको संस्कृत से बिना कोई रूप बदले ले लिया गया है। जैसे अग्नि, दुग्ध दन्त, मुख ।
   - **तद्भव शब्द**- ये वो शब्द हैं जिनका जन्म संस्कृत या प्राकृत में हुआ था, लेकिन उनमें काफ़ी ऐतिहासिक बदलाव आया है। जैसे–– आग, दूध, दाँत , मुँह ।

6. **दूरदर्शन और हिंदी** – वर्तमान समय में दूरदर्शन सर्वाधिक लोकप्रिय दृश्य-श्रव्य माध्यम है भारतवर्ष की अधिकांश जनसंख्या के द्वारा हिन्दी का प्रयोग किया जाता है। उपभोक्ता संस्कृति के प्रसार-प्रचार के कारण दूरदर्शन पर हिंदी को गंभीरता से अपनाया जा रहा है। दूरदर्शन पर आने वाले हिंदी सीरियलों की प्रतिस्पर्धा हिंदी के महत्व का उजागर करती है। प्रचार-प्रसार की दृष्टि से विज्ञापन में हिंदी

NOTES

के बढ़ते प्रयोग से हिंदी का उज्ज्वल भविष्य सामने आ रहा है। दृश्य श्रव्य माध्यम होने के कारण प्रयोक्ता को पर्याप्त अभ्यास करना होता है। दूरदर्शन की की हिन्दी भाषा की विविधता विभिन्न चैनलों और उनके कार्यक्रमों में देख सकते हैं। सीरियलों में परिमार्जित, व्यंग्य प्रधान और खिचड़ी भाषा उनके प्रारूप के अनुसार मिलती है। विज्ञापनों की हिन्दी का अपना ही रूप होता है। चलचित्र जगत के अदाकारों मुख्यत: अभिनेत्रियों की अंग्रेजी मिश्रित हिन्दी को अपना ही रूप होता है; यथा – मैं चूलूँगी बट जल्दी आ जाऊँगी।''

दूरदर्शन कार्यक्रम के अन्त में अभिवादन – 'नमस्कार' ऐसे शब्दों का प्रयोग करना विशेष प्रभाव छोड़ता है।

अभ्यास-प्रश्न

1. प्रयोजनमूलक हिन्दी का अभिप्राय स्पष्ट करते हुए इसकी उपयोगिता पर प्रकाश डालिए।
2. प्रयोजनमूलक हिन्दी की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।
3. मातृभाषा : हिन्दी से आप क्या समझते हैं ? संक्षिप्त टिप्पणी लिखें।
4. भारत की राजभाषा के रूप में हिन्दी के महत्व पर प्रकाश डालिए।
5. राजभाषा हिन्दी की विकास यात्रा का वर्णन कीजिए।

इकाई - II

NOTES

प्रेस नोट तथा प्रेस विज्ञप्ति

इकाई में शामिल है:

- प्रेस नोट की परिभाषा और स्वरूप
- प्रेस विज्ञप्ति की परिभाषा और स्वरूप
- प्रूफ-संशोधन

अध्ययन के उद्देश्य :

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप निम्न बिन्दुओं को जानने में सक्षम होंगे -

- प्रेस नोट का अभिप्राय, परिभाषा और स्वरूप
- प्रेस विज्ञप्ति की परिभाषा, स्वरूप
- प्रूफ-संशोधन का अभिप्राय

NOTES

प्रेस नोट

एक प्रेस नोट औद्योगिक नीति विभाग, संवर्धन (DIPP), वाणिज्य मंत्रालय और उद्योग द्वारा तैयार एक नीति और जारी दस्तावेज है। 1991 के आर्थिक सुधारों के पहले, DIPPs की भूमिका मुख्य रूप से औद्योगिक क्षेत्र को विनियमित करने के लिए थी। आज यह निवेश और प्रौद्योगिकी प्रवाह को सुविधाजनक बनाने और उदारीकृत वातावरण में औद्योगिक विकास की निगरानी के लिए जिम्मेदार है। इनके मुख्य कार्यों में से एक प्रत्यक्ष विदेशी निवेश नीति (एफडीआई नीति) तैयार करने, अनुमोदन करने और देश में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश नीति को तैयार करने की सुविधा है। इसके कार्यों के अभ्यास में है कि DIPP प्रेस नोट्स को जारी करता है। वे (प्रेस नोट) एक तदर्थ आधार पर जारी किए जाते हैं और जब DIPP मौजूदा नीति में संशोधन की जरूरत महसूस करता है, वह संशोधन करता है, इनके एक बार जारी किए जाने पर, वे कानून के बल का अधिग्रहण करते हैं।

प्रति के रूप में, भारत सरकार (कार्य आवंटन) नियम, 1961 के भारत के राष्ट्रपति द्वारा बनाए गए, संविधान के अनुच्छेद 77(3) के तहत राष्ट्रपति को प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग किया जाता है, DIPP संवैधानिक रूप से प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) पर इस तरह के कार्यकारी नीति फ्रेम सशक्त है।

क्या प्रेस नोट की कानून का बल प्राप्त है?
(Whether Press Note have the force of Law)

हालाँकि प्रेस नोट देश के कानून के रूप में स्वीकार किया जाता है, यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि वे कानून बनाने की विधायी प्रक्रिया के माध्यम से नहीं जाना जा सकता है, और न ही वे देश के विधायी अंग अर्थात् संसद के सक्षम रखा जाता है। संविधान का अधिनियम 245, बताता है कि संसद को पूरे या भारत के किसी भी हिस्से के लिए कानून बनाने का अधिकार है। यह एक वैधानिक प्राधिकार है। प्रेस नोट तथापि, गैर-विधायी राज्य कार्यों और कार्यकारी कार्यों का गठन है।

सभी गैर-विधायी राज्य की कार्रवाई, प्रेस नोट, काम के रूप में कानून आमतौर पर इन दो श्रेणियों में से एक में होना चाहिए :

- प्रत्यायोजित विधान, या
- कार्यकारी कार्रवाई

क्या सरकार अने सभी कार्यकारी कार्यों के लिए प्रेस नोट जारी कर सकते हैं?
(Whether Government Can Issue Press Notes for all its Executive Action)

क्षेत्राधिकार का सिद्धान्त है कि कार्यकारी कार्रवाई के सभी क्षेत्रों का विस्तार कर सकते हैं, जहाँ संसद के विधायी शक्ति के अलावा फैली है :

1. अधिकृत क्षेत्र मामलों में अर्थात् जहाँ एक पूर्व कानून पर विषय मामले मौजूद हैं और कार्यकारी कार्रवाई ऐसे कानून का उल्लंघन करती है। ऐसे एक मामले कानून को प्रबल कार्यकारी कार्रवाई को स्ट्रक डाउन किया जाएगा।
2. जहाँ संविधान का प्रावधान है कि ऐसी कार्रवाई को कानून के माध्यम से ही लिया जा सकता है। किसी भी अधिकारी द्वारा की गई कार्रवाई आरम्भत: शून्य, असंवैधानिक हो सकती है।

क्या प्रेस नोट न्यायिक समीक्षा के अधीन है ?
(Whether Press Notes are subject to Judical Review)

कार्यकारी कार्यों की कानूनी शक्ति है, वे एक ही परीक्षण है जो तर्कसंगतता, मनमानापन, मौलिक अधिकारों का उल्लंघन और अधिकातीत के सिद्धान्त के रूप में एक कानून के अधीन हैं। सभी कार्यकारी कार्य न्यायिक समीक्षा के अधीन है, लेकिन सीमित आधार पर है। यह मुश्किल होगा, लेकिन प्रेस नोट

NOTES

की वैधता को केवल भूमि आधार पर ही चुनौती दी जा सकती है, हालांकि यह विधायी प्रभाव में है। वे संसद द्वारा पुष्टि नहीं करते हैं। संविधान का अधिनियम 73 ऐसा कोई तर्क नहीं मानते हैं।

एक प्रेस रिलीज़ क्या है?

एक प्रेस रिलीज़ एक लिखित कम्यूनिकेशन है जो किसी आयोजन, परिस्थिति या अन्य घटनाओं जो कि एक व्यवसाय या संघ से मूलत: बँधी होती है, के बारे में निर्धारित, परन्तु संक्षिप्त जानकारी रिपोर्ट करती है।

प्रेस रिलीज़ हमेशा तृतीय व्यक्ति के फॉर्म में लिखा जाना चाहिए। प्रेस रिलीज़ अर्थों की एक भिन्नता के ज़रिए मीडिया को प्रदान की जाती है, परन्तु हमेशा न्यूज़ मीडिया द्वारा अधिग्रहित की जाती हैं, फिर भी यदि आप किस्मतदार हैं, वे ब्लॉगर्स, ट्विटरर्स और अन्यों द्वारा चुनी जा सकती हैं जो इसे पढ़ते हैं और पाते हैं कि यह उनके अपने सामाजिक नेटवर्क पर प्रमोट करने की कुव्वत रखती है।

दो मूल प्रकार की प्रेस रिलीज़

कुछ प्रेस रिलीज़ "इम्मिडिएट रिलीज़" के लिए उपलब्ध हैं। इसका अर्थ है कोई भी जानकारी को रिपीट कर सकता है, जैसे ही रिलीज़ को सार्वजनिक किया जाए। अन्य प्रेस रिलीज़ की टाइम लिमिट हो सकती है जो सिर्फ निश्चित मीडिया स्रोतों को उनहें तुरन्त रिपीट करने की अनुमति देती हैं, और एक बाद के समय में मुख्य प्रकाशन के लिए अन्य न्यूज़ सर्विसेज़ या वेबसाइट्स, ब्लॉग ऑनर्स इत्यादि को ऑफर किया जाता है।

एक प्रेस रिलीज़ का मुख्य उद्देश्य

यहाँ "न्यूज़" और "प्रेस रिलीज़" के मध्य एक अंतर है। भले हि अंतर उस प्रकार स्पष्ट नहीं हैं जैसे कि पूर्व-इंटरनेट दिनों में थीं, मीडिया व्यावसायिक अंतर में समझ सकते हैं।

सभी प्रेस रिलीज़ का मुख्य उद्देश्य कुछ निर्धारित को प्रमोट करता है, जैसे कोई आयोजन, उपलब्धि या महत्वपूर्ण परिवर्तन या घटनाएँ।

एक प्रेस रिलीज़ तीन मार्केटिंग और प्रमोशनल उद्देश्यों को पूरा करती है – मीडिया के किसी आयोजन की जानकारी देना (आशा में कि संबंधित सूचना पास की जाएगी);

मीडिया को आपके व्यवसाय के बारे में जानकारी देना इस आशा में कि रिपोर्ट आपके प्रेस रिलीज़ में एक स्टोरी देखेगी और एक वास्तविक न्यूज़ आर्टिकल लिखेगी; और

आपके व्यवसाय ए की दिखावट को इंटरनेट पर प्रमोट करने में मदद करना (प्रत्यक्ष पाठक प्रचार), ब्लॉग्स, वेबसाइट्स, सोशल नेटवर्क्स, इत्यादि के ज़रिए।

एक प्रेस रिलीज़ क्या नहीं है ?

एक प्रेस रिलीज़ कोई तथ्य-पूर्ण न्यूज़ आर्टिकल नहीं है। वास्तव में, प्रेस रिलीज़ को किसी प्रकार के न्यूज़ आर्टिकल या फीचर की तरह नहीं लिखा जाना चाहिए। एक प्रेस रिलीज़ कोई मार्केटिंग टूल नहीं है। अन्य शब्दों में, सिर्फ क्योंकि आपने एक प्रेस रिलीज़ का निर्माण किया है, मत आशा कीजिए कि यह हमेशा चुना जाएगा और मुख्य धारा मीडिया स्रोतों द्वारा साथ ही साथ प्रसारित किया जाएगा।

प्रेस विज्ञप्ति : परिचय

आपके प्रेस रिलीज़ लिखना शुरू करने से पूर्व, यह महत्वपूर्ण है कि आप समझें कि एक प्रेस रिलीज़ क्या है और उद्देश्य जो एक प्रेस रिलीज़ पूरी करती है।

प्रेस विज्ञप्ति वह प्राथमिक तरीका है जिससे आप अपनी कम्पनी के समाचारों का मीडिया में संचार कर सकते हैं। संवाददाता, संपादक और निर्माता समाचारों के भूखे होते हैं और आमतौर पर वे नए और असमान्य

NOTES

उत्पादों, कम्पनी रूझानों, सुझावों और संकेतों और दुसरी प्रगति के समाचारों के लिए विज्ञप्तियों पर निर्भर होते हैं। वास्तव में ज्यादातर तों जो आप समाचार पत्रों, पत्रिकाओं या व्यापार प्रकाशनों में पढ़ते हैं, रेडियो पर सुनते हैं या टेलीविजन पर देखते हैं, वे प्रेस विज्ञप्ति के रूप में उत्पन्न होती हैं। दुर्भाग्य से औसत संपादक हर सप्ताह सैकड़ों प्रेस विज्ञप्तियाँ प्राप्त करते हैं, जिनमें से ज्यादा का अन्त "फाइल" देने के रूप में होता है।

एक प्रेस रिलीज़ एक स्टैंडर्ड बॉयलर प्लेट मीडिया पीस है, जिसका प्रयोग मीडिया को किसी आयोजन, लॉन्च या न्यूज़ आइटम की सूचना देने के लिए किया जाता है। यह एक अपेक्षाकृत सिम्पल फॉरमेट में आती है, परन्तु विभिन्न लोगों द्वारा अधिक अटेंशन और रिपोर्टिंग की कोशिश में विभिन्न तरीकों में बदली की जाती है।

प्रेस रिलीज़ नए फ्रीलांसर्स के लिए एक सॉलिड फर्स्ट पीस के तौर पर रोल अदा करता है, जैसे वे एक स्टैंडर्ड फॉरमेट में आए जिसके पास वार्ता या परिवर्तन के लिए छोटा रूम है। इसके अतिरिक्त वे एक संबंधित तौर पर छोटे पीस हैं, और सामानयत: कम मूल्य हैं। कम्पनीज़ की प्राय: इच्छा होती है कि एक नए या अन्जान लेखक पर एक जुआ खेला जाय जिसका कारण तीव्र टर्न अराउण्ड और इस परियोजना की एक कीमत हैं।

प्रेस रिलीज़ प्रोजेक्ट एक ऑफिशियल प्रेस रिलीज़ निर्मित करती है और इसे साइट्स को सबमिट करती है, जैसे कि फ्री प्रेस, फ्री प्रेस इंडेक्स, PR विण्डो और रिलीज़ नोट्स/प्रेस रिलीज़ प्रोजेक्ट महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे आपकी साइट या सर्विस को विश्वसनीयता देते हैं। यदि वे सही से की जाती हैं तो वे आपकी साइट या सर्विस के लिए रूचि और अतिरिक्त राजस्व पैदा करने में समर्थ होंगी।

एक प्रेस रिलीज़, न्यूज़ रिलीज़, मीडिया रिलीज़, प्रेस स्टेटमेंट या वीडियो रिलीज़ एक लिखित या रिकॉर्डिड कम्यूनिकेशन है जो कुछ निर्दिष्ट न्यूज़ के लायक घोषणा करने के उद्देश्य के लिए न्यूज़ मीडिया के सदस्यों को निर्देशित किया जाता है। मूलत: वे न्यूज़पेपर्स, मैगज़ीन्स, रेडियो स्टेशन्स, टेलिविजन स्टेशन्स, या टेलिविज़न नेटवर्क्स पर असाइनमेंट एडिटर्स को मेल, फैक्स या ई-मेल की जाती हैं।

वेबसाइट्स ने प्रेस रिलीज़ सबमिट किए जाने के तरीके को बदल दिया है। कॉमर्शियल, फ्री-आधारित प्रेस रिलीज़ वितरण सेवाएं, जैसे कि न्यूज़ वायर सर्विसेज़ या फ्री वेबसाइट सर्विसेज़ कॉ-एग्ज़िस्ट, न्यूज़ डिस्ट्रिब्यूशन को ऐसी एकोर्डेबल बनाने और लघु व्यावसायों के लिए एक स्तर प्लेइंग फील्ड। ऐसी वेबसाइट्स प्रेस रिलीज़ की एक रिपॉज़िटरी ग्राहक करती है और एक कंपनी की न्यूज़ को वेब पर अधिक प्रोमिनेंट व मुख्य सर्च इंज़न्स के ज़रिए सर्चेबल बनाने का दावा करती हैं।

परिभाषाएँ

"एक जन संबंध घोषणा जो न्यूज़ मीडिया और अन्य लक्ष्यित प्रकाशनों को ज़ारी की जाती है जिसका उद्देश्य कंपनी विकास की जानकारी जनता को देना होता है।"

"एक प्रेस रिलीज़, न्यूज़ रिलीज़, मीडिया रिलीज़, प्रेस स्टेटमेंट या वीडिया रिलीज़ एक लिखित या रिकॉर्डिंग कम्यूनिकेशन है जो कुछ निर्दिष्ट न्यूज़ के लायक घोषणा करने के उद्देश्य की पूर्ति के लिए मीडिया सदस्यों को निर्देशित किया जाता है।"

"खास प्रकार की मैसेज़ या ऑब्जेक्ट जिसे इंफॉर्मेशन कम्यूनिकेट करने के लिए सर्व किया जाता है। उदाहरण के लिए, एक व्यवसाय विक्रेता सड़क पर अपने सुपरवाइजर से एक संक्षिप्त वक्तव्य प्राप्त कर सकता है, जिसमें बिक्री बंद करने के क्रम में एक निश्चित कीमत के नीचे जानें के विपरीत सलाह दी गई हो।"

"खास प्रकार की मैसेज़ या ऑब्जेक्ट जिसे इंफॉर्मेशन कम्यूनिकेट करने के लिए सर्व किया जाता है। उदाहरण के लिए, एक व्यवसाय विक्रेता सड़क पर अपने सुपरवाइज़र से एक संक्षिप्त वक्तत्व प्राप्त कर सकता है जिसमें बिक्री बाद करने के क्रम में एक निश्चित कीमत के नीचे जाने के विपरीत सलाह दी गई हो।"

"एक कटेंट प्रोजेक्ट या रुचि के आइटम पर पब्लिक को अपडेट करने के क्रम एक कंपनी या कॉरपोरेशन द्वारा ज़ारी किया गया संक्षिप्त रिपोर्ट या मैसेज़। इस समझ में, एक वक्तव्य एक प्रेस रिलीज़ के समान्तर है।"

ये सभी परिभाषाएँ तकनीकी रूप से वास्तविक हैं, परन्तु उनके बारे में क्या रूचिकर है, वह क्रम ऊनी प्रतिबिम्बित किया गया है, संकेतात्मक है कि कैसे प्रेस रिलीज़ चेंज़ किया गया। न्यूज़ मीडिया पर निर्देशित एक कम्यूनिकेशन माध्यम से अन्य टूल तक कंटेनट मार्केटिंग के लिए जैसे PR न्यूज़, PR इण्डस्ट्री के लिए एक ट्रेड पब्लिकेशन लिखा गया।

इन सामान्य संरचनात्मक तत्वों में से कुछ शामिल हैं –

- हैडलाइन– पत्रकारों का ध्यान आकर्षित करने के लिये प्रयोग की जाती है और संक्षिप्त रूप से न्यूज़ को सारांशित करती है।
- डेडलाइन– में रिलीज़ तारीख और प्राय: प्रेस रिलीज़ की मूल सिटी शामिल की जाती हैं। यदि मीडिया को वास्तविकता भेजे गए इंफॉर्मेशन की तारीख के बाद की तारीख अंकित की गई है, तो भेजने वाला एक न्यूज़ प्रतिरोध की प्रार्थना कर रहा है, जिससे पत्रकार सम्मान के लिए किसी बाध्यता के अंतर्गत् नहीं हैं।
- इंट्रोडक्शन– एक प्रेस रिलीज़ में पहला पैराग्राफ, जो कि सामान्यत: कौन, क्या, कब, कहाँ और क्यों के प्रश्नों के मल उत्तर देता है।
- बॉडी– न्यूज़ से संबंधित अतिरिक्त व्याख्या, सांख्यिकी, भूमिका या अन्य जानकारी।
- बॉयलर प्लेट– सामान्यत: एक छोटा 'बारे में' विभाग, ज़ारीकर्ता कंपनी, संघ या व्यक्ति विशेष पर स्वतंत्र भूमिका प्रदान करता है।
- क्लोज़– नॉर्थ अमेरिका में, परम्परागत तौर पर बॉयलर प्लेट या बॉडी के बाद और मीडिया कॉन्टेक्ट इंफॉर्मेशन से पूर्व सिम्बॉल "30" दिखाई देता है, मीडिया को संकेत करता है कि रिलीज़ समाप्त हो गई। एक अधिक आधुनिक समकक्ष के पास '###' सिम्बाल्ल-होता है। अन्य देशों में, रिलीज़ के समाप्ति को संकेत करने वाले अन्य अभिप्राय भी प्रयोग किए जा सकते हैं, जैसे कि शब्द "ends"।
- मीडिया कॉन्टेक्ट इंफॉर्मेशन– PR या अन्य मीडिया संबंधित सम्पर्क व्यक्ति के लिए नाम, फोन नंबर, ई-मेल एड्रेस, डाक एड्रेस या अन्य सम्पर्क सूचना।

जिस प्रकार न्यूज़ साइकिल में इंटरनेट ने वृद्धि, प्रबुद्धता को ग्रहण किया है, प्रेस रिलीज़ लेखन शैली आवश्यक रूप से उन्नत हुई है। उदाहरण के लिए, ऑनलाइन न्यूज़लेटर्स के एडिटर्स को प्राय: की कमी होती है ताकि परम्परागत प्रेस रिलीज़ अनुच्छेद को अधिक पठनीय, प्रिंट रैडी कॉपी में तब्दील कर सकें। आज की प्रेस रिलीज़ इस प्रकार प्राय: परिपूर्ण आर्टिकल की तरह लिखी जाती है जो कि सिर्फ संबंधित तथ्यों के अतिरिक्त अधिक कुछ प्रदान करती है। एक स्टायलिश, जर्नलिस्टिक फॉरमेट के साथ कदाचित एक प्रोवोकेटिव स्टोरी लाइन तथा सिद्धांतों से विचार इंटरनेट, पर व्यापक वितरण को सुनिश्चित कर सकते हैं, ऐसा पब्लिकेशन है जो यथोचित सामग्री देखता है।

प्रेस रिलीज़ की फॉरमेट

एक प्रेस रिलीज़ की फॉरमैट में एक स्टैंडर्ड आर्टिकल से थोड़ी भिन्नता होती है। आपको दस्तावेज़ के शीर्ष पर "फॉर इम्मिडिएट रिलीज़" लिखकर शुरू करना चाहिए, तब अपनी सम्पर्क सूचना जोड़ें, तत्पश्चात् एक हेडलाइन और फिर प्रेस रिलीज़ की बॉडी।

यहाँ विभिन्न फिल तरीके हैं, परन्तु कई लोग एक प्रश्न पूछने के साथ प्रारम्भ करेंगे, और तब इसे हल करेंगे। यह भी संभव होगा कि एक वक्तव्य के साथ शुरू करें। अंत में आपको एक निष्कर्ष अनुच्छेद लिखना चाहिए, और एक लेखक परिचय तले के दाहिने ओर लिखना चाहिए।

चाहे कई प्रेस रिलीज़ साइट्स एक स्टैंडर्ड आर्टिकल ग्रहण करेंगी, आप इसे सही रूप से फॉरमेट करके एक अधिक बेहतर सफलता दर पा सकेंगे। यह सुनिश्चित करेगा कि प्रेस रिलीज़ साइट् पर जितना अधिक देर संभव हो सके बनी रहेगी।

NOTES

जब आप स्पिनर वैरिएन्शन्स जोड़ते हैं तो आपको सैम्पल आर्टिकल चेक करना चाहिए ताकि देख सकें कि वे कैसे दिख रहे हैं। आप स्मॉल प्लस बटन को क्लिक करके नई URL सूचियाँ और नई RSS सूचियाँ निर्मित कर सकते हैं। ऑटो सलेक्ट कैटेगरीज़ बटन प्रयोग करके कैटेगरीज़ चुनना एक सरलतम तरीका है।

एक प्रेस रिलीज़ को पब्लिसिटी के लिए अपने टिकट की तरह सोचिए – एक जो आपकी कंपनी कवरेज़ को पब्लिकेशन्स में या TV और रेडियो स्टेशन्स पर पाती हैं। एडिटर्स और रिपोर्टर्स एक दिन में हज़ारों प्रेस रिलीज़ पाते हैं। अतः आप अपने आपको कैसे बनाए रख पाएंगे ?

प्रथम, सुनिश्चित कीजिए कि आपके पास प्रेस रिलीज़ भेजने के लिए एक कारण है। एक ग्राण्ड ओपनिंग, एक प्रॉडक्ट या एक स्पेशल आयोजन सभी अच्छे कारण हैं।

द्वितीय, सुनिश्चित कीजिए कि आपकी प्रेस रिलीज़ आपके द्वारा भेजए गए पब्लिकेशन या ब्रॉडकास्ट के लिए लक्ष्यित है। शेड तथा ट्रैक के एडिटर आपके द्वारा आयोजित बेबी पैसिफर में रुचि नहीं दिखाएंगे। यह बिल्कुल साइज़ करती है, परन्तु कई प्रायोजक बिना पब्लिकेशन की ऑडिशंस का निर्धारण किए प्रेस रिलीज़ भेजने की भूल करते हैं।

पठनीयता सुनिश्चित करने के लिए, आपकी प्रेस रिलीज़ को स्टैंडर्ड फॉरमैट फॉलो करना चाहिए – टाइप किया, डबल-स्पेस, सफेद लेटरहैड पर साथ ही एक कॉन्टैक्ट पर्सन का नाम, टाइटल, कंपनी, ऊपर-दाहिने तथा कोने में एड्रेस और फोन नम्बर। इस सूचना से नीचे, एक संक्षिप्त, आँख-खींचने वाली हैडलाइन बोल्ड टाइप के जैसे, रिलीज़ की पहली वाक्य के अंडर नेतृत्व करती है।

अपनी प्रेस रिलीज़ को ज्यादा से ज्यादा एक या दो पेज़ेज में सीमित कीजिए। यह सिर्फ इतना लम्बा होना चाहिए कि छः मूल तत्वों को कवर करें, कौन, क्या, कब, कहाँ, क्यों और कैसे। इन छः प्रश्नों के उत्तर स्टोरी के लिए उनके महत्व के क्रम में अंकित किया होना चाहिए।

इंफॉर्मेशन को एम्बोलिशन या हाइप नहीं कीजिए। ध्यान रहे, आप आर्टिकल नहीं लिखा रहे हैं; आप सिर्फ इंफॉर्मेशन प्रेज़ेंट कर रहे हैं और दिखा रहे हैं कि क्यों यह उस पब्लिकेशन से संबंधित है। इस आशा में वे इसके बारे में लिखेंगे। ग्रामर और स्पेलिंग को बारीकी ध्यान दीजिए। प्रतिस्पर्धा बहुत है, और टाइपोस से पूर्ण एक प्रेस रिलीज़ को एक तरफ उछाल देने की संभावना होती है।

कुछ व्यवसाय स्वामी अपनी प्रेस रिलीज़ को नोटिस करने के लिए ग्रिमिक का प्रयोग करते हैं। अधिकतर केसेज़ में, यह धन की बर्बादी है। यदि आपने बढ़िया और संबंधित लिखा है, तो आपको किसी गुनगुनाते टेलिग्राम की आवश्यकता नहीं होता कि आपका संदेश पहुँच गया है।

यदि आपके पास निवेश के लिए धन है, तो आपको एक प्रेस किट भेजना चाहिए, एक फोल्डर जिसमें कवर लेटर, प्रेस रिलीज़, आपका बिजनेस कार्ड फोटो शामिल हो। आप कोई अन्य इंफॉर्मेशन भी शामिल कर सकते हैं जो कि रिपोर्टर्स को प्रेरित करेगा कि आपका व्यवसाय न्यूज़ सक्षम है – आपके व्यवसाय के बारे में लिखे गए किसी अन्य पब्लिकेशन्स के आर्टिकल को पुनः प्रिन्ट कीजिए, जो कि कंपनी पर प्रॉडक्ट रिव्यूज़ या बैकग्राउण्ड इंफॉर्मेशन और इसके सिद्धांतों पर आधारित हों। यदि आप एक प्रेस किट भेजते हैं, तो सुनिश्चित कीजिए कि यह तीक्ष्ण और प्रोफेशनल-लुक वला है और आपकी कंपनी को लोगो व इमेज़ सहित सभी ग्राफिक तत्व जुड़े हुए हैं।

प्रेस रिलीज़ को कंपनी लेटरहैड पर प्रिंट किया जाना चाहिए। यदि यह संभव नहीं है, तो कंपनी लोगो जोड़ना आवश्यक है। कंपनी का नाम, वेबसाइट, एड्रेस और फोन नम्बर पेज़ के शीर्ष पर स्पष्ट रूप से प्रिंट किया जाना चाहिए। प्रेस रिलीज़ को स्पेल किया जाना चाहिए और कैपिटल लेटर का प्रयोग होना

चाहिए तथा सेंटर बोल्ड होना चाहिए। इसके अंतर्गत कॉन्टेक्ट पर्सन का नाम और कॉन्टैक्ट इंफॉर्मेशन (ई-मैल और फोन नम्बर) शामिल किया जाना चाहिए।

प्रेस रिलीज़ कैसे लिखें

NOTES

पहली चीज़ जो आपको पता लगाना चाहिए, वह है कि प्रेस रिलीज़ कैसे लिखें। आपको अपनी स्टोरी का पता लगाना चहिए। या तो कुछ न्यूज़लायक, स्ट्रैंड या सिर्फ प्लेन बजट पता लगाइए। जब रिलीज़ लिख रहे हों तो सुनिश्चित कीजिए कि आप फॉरमेट फॉलो करें, टिप्स के लिए कुछ न्यूज़पेपर पढ़ें और फॉरमेट के बारे में सलाह लें।

प्रेस रिलीज़ को प्रूफ रीड कीजिए क्योंकि यह महत्वपूर्ण है कि कंटेंट समझने लायक हो और हाई क्वालिटी विद्यमान हो। यह भी सुनिश्चित करें कि सभी सम्पर्क सूचना सही है। यह महत्वपूर्ण है कि एक रूचिपूर्ण विषय चुनें जो कि पाठक के ध्यान को बाँधे रखे। कुछ उदाहरण शामिल हैं –

- आपका व्यवसाय एक चैरिटी एवेंट स्पॉन्सर कर रहा है,
- आप एक नया प्रॉडक्ट निर्धारण या विकसित करते हैं जिसे एड्रेसिंग की जरूरत है
- नया अनूठा व्यवसाय उपक्रम
- अन्य कंपनी के साथ विलय करना
- एक चिर-परिचित कंपनी के साथ एक बड़ा अनुबंध प्राप्त करना
- रिसर्च का परिणाम
- अवार्ड्स
- कुछ स्ट्रैंड

ध्यान रखिए कि आप रिलीज को दोनों ओर सर्च ईंज़न के लिए लिख रहे हैं। फॉरमेट किसी एड और आर्टिकल के मध्य एक क्रॉस है।

अपनी प्रेस रिलीज़ को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए आपको एक कंपनी रिप्रेजेंटिव, स्टैटिक्स और कैसे, क्या, कब, कहाँ और क्यों से संबंधित सूचना से एक वक्तव्य शामिल करना चाहिए।

यहाँ प्रेस रिलीज़ करने के लिए मेथडॉलॉजी हैं। आप प्रश्न पद्धति का प्रयोग कर सकते हैं या न्यूज़ पद्धति को कवर कर सकते हैं।

प्रेस रिलीज़ को परिवर्तित कैसे किया जाता है ?

एक फ्रेज़ में – प्रेस रिलीज़ सिर्फ मीडिया के लिए और अधिक नहीं है। ट्रैडिशनल डेफिनिशन्स और प्रैक्टिस के अंतर्गत, प्रेस रिलीज़ को मीडिया के ज़रिए पब्लिक को कम्यूनिकेट करने के लिए डिज़ाइन किया गया एक फॉरमल डॉक्यमेंट है। रिलीज़ पब्लिक द्वारा बहुत कम दिखाई देती है – बजाय इसके प्रेस रिलीज़ का आऊटपुट न्यूज़ कवरेज़ के तौर पर दिखाई देता है।

भले ही यहाँ निरन्तर पुराने स्कूल PR प्रॉस एक संख्या में बने हुए हैं जो प्रेस रिलीज़ को मेल या फैक्स करना ध्यान रख सकते हैं, अधिकतर हिस्से के लिए, वेब ने परिदृश्य बदल दिया है। वेब पर पब्लिश प्रेस रिलीज़ संघों को अनुमति देती हैं कि वे प्रत्यक्षत: अपने ऑडियंस, वह उपभोक्ता बने, अन्य व्यवसायों या निवेशकों को कम्यूनिकेट करें।

वास्तव में, PR वेब इस आइडिया पर तीव्र था, और ट्रैडिशनल प्रेस रिलीज़ डिस्ट्रिब्यूशन सर्विसेज़ से डिफरेंट करने का एक मुख्य बिंदु है कि PR वेब को वेब के लिए डिज़ाइन किया गय, बजाय इसके कि यह एक प्रॉपराइट नेटवर्क पर बनाया गया एक न्यूज़ रूम को न्यूज़ डिलिवर करने के लिए डिज़ाइन किया गया। PR वेब डायरेक्ट-टू-कन्ज्यूमर न्यूज़ की कंसेप्ट को पायोनीयर करता है।

स्व प्रगति की जाँच करें:

1. प्रेस रिलीज क्या है ?
2. प्रेस विज्ञप्ति की दो परिभाषाऐं दीजिए।

NOTES

जैसे वेब पब्लिशिंग के लिए तकनीकी में वृद्धि हुई, तो एक प्रेस रिलीज़ के साथ मल्टिमीडिया कंटेंट को शामिल करने की एबिलिटी उन्नत हुई। अब प्रेस रिलीज़ में सिर्फ स्टैटिक शब्द ही होते, बल्कि रिलीज़ में पिक्चर्स द्वारा प्राइमरी रिसर्च ऐसी रिलीज़ को इंडिकेट करता है। वास्तव में, PR वेब द्वारा प्राइमरी रिसर्च ऐसी रिलीज़ को इंडिकेट करता है जो मल्टिमीडिया को शामिल करता है, वह पेज़ पर 30 सेकेण्ड्स तक समय को बढ़ा सकता है – जो कि वेब पर समय की आश्चर्यजनक अवधि है।

प्रेस रिलीज़ की समाप्ति पर डिबेट

पब्लिक रिलेशन सर्कल के अंतर्गत, प्रेस रिलीज़ एक फेरि डिबेट इग्नाइट कर सकता है। PR प्रॉस मौसम पर एक मजबूत दृश्य देने को बद्ध होता है। इसे एक प्रेस रिलीज़ कहा जाना चहिए, उदाहरण के लिए, एक न्यूज़ रिलीज़ या एक मीडिया रिलीज़।

उसने एडवेंट किया कि सोशल मीडिया लेक्सिमॉन के अंडर एक नए टर्म में प्रवेश कर रही है – सोशल मीडिया रिलीज़, जो फॉरमेटिंग के लिए एक नई विवरण के साथ आती है। नए फॉरमेट ने कुछ वर्ष पहले बहुत-सा बज़ अर्पित किया, परन्तु उस इनिशियल बर्स्ट के पीछे ट्रैक्शन प्राप्ति करना नहीं दिखाई पड़ता।

प्रेस के बजाय मीडिया या न्यूज़ शब्द का प्रयोग करना, आलोचक कहते हैं, एक आधुनिक दस्तावेज़ का अधिक वास्तविक प्रतिबिमब है। प्रेस शब्द का साहित्यक अर्थ है प्रिंट, जैसे कि प्रिंटिंग प्रेस में, और मॉडर्न रिपोर्टर प्रिंटिड फॉर्म से अलग माध्यम की एक मित्रता प्रयोग कर सकते हैं तो न्यूज़ या मीडिया बेहतर पसंद हैं।

फिर भी, यह भी तर्क दिया जा सकता है कि चूँकि रिलीज़ सिर्फ मीडिया के लिए और अधिक नहीं है। इस एडजेक्टिव वर्क का कोई भी। यह हो सकता है कि सिर्फ रिलीज़, या वेब रिलीज़ या PR वेब रिलीज़ काफी हद तक समान है। PR सर्कल्स के आउटसाइड जो हम कहते हैं, वह हमारे लिए कम मैटर करता है, एक कॉमन टर्म के प्रयोग को छोड़कर जो हमारे कस्टमर्स और प्रॉस्पेक्ट्स समझ सकते हैं। परिणामस्वरूप, हम बद्ध हैं कि फ्रेज़ेज प्रेस रिलीज़ और न्यूज़ रिलीज़ को PR वेब की स्वयं की पब्लिशिंग प्लैटफॉर्म प अन्तर्वेज़ करते हुए प्रयोग करें। वास्तव में, हम संबंधित ईजन कैप्चर करने के क्रम में एक मिमिरत डेलिबेरेटली प्रयोग करते हैं।

एक प्रेस रिलीज़ की अति महत्वपूर्ण फैक्टर्स क्या हैं ?

यहाँ PR वेब के लर्निंग सेंटर पर बहुत सारे स्रोत हैं, जिसमें हमारे ग्राहकों के लिए एक प्रेस रिलीज़ ग्रेडर शामिल हैं। फिर भी, अति महत्वपूर्ण तथ्यों को प्रयोगी संरचना के लिए निम्न दिया गया है –

1. अच्छी, स्वच्छ लेखनी पर जोर/पठनीयता के लिए स्पष्टता के साथ लिखना लिस्ट में शीर्ष पर है। जहाँ रिलिज़ के लिए लिखने के बारे में बहुत सारी ऑनलाइन एडवाइज़ हैं, जैसे कि कैसे फॉर्मल और इनफॉर्मल डॉक्यूमेंट को पढ़ना चाहिए, परन्तु समय और समय पुनः, रिलीज़ेज़ को अच्छे ढंग से लिखा जाना चाहिए जिसके कि पाठक आसानी से समझ सकें।

2. हैडलाइन और सबहैड मुद्दे हैं। प्रेस रिलीज़ के लिए हेडलाइन, कुछ हद लाइन एडिट को ऐसे ड्रॉ करें कि वे पढ़ने को विवश हो जाएँ। एक सामान्य प्रश्न होना चाहिए कि हम हेडलाइन को सर्च ईंजन या जानता के लिए लिख रहे हैं ? उत्तर है – जनता। जनता प्रतिबद्ध मौखिक हैं, सर्च ईंजन का अभिप्राय उन्हें अपनी सामग्री पाने में सहायता करने से है। यदि यह संदर्भ में समझ बनाती है, सुनिश्चित तौर पर अपने मुख्य शब्दों को हैडलाइन से जोड़ें, परन्तु कभी भी ऐसी हैडलाइन नहीं लिखें जो सिर्फ आपके की-वर्ड्स में फिर हो जाए।

प्रेस रिलीज़ सैम्पल (नमूना)

प्रेस रिलीज़ (न्यूज़ रिलीज़ के तौर पर भी रेफर किया जाता है) विश्व के लिए कुछ घोषणा करने का एक तरीका हैं, जो आप महत्वपूर्ण महसूस करते हैं। परिभाषा के अनुसार, वे मीडिया द्वारा व्यापक संभव पिक-अप और वितरण के लिए उद्देश्यपूर्ण हैं।

सामानयत:, एक प्रेस रिलीज़ को लंबाई में एक पेज़ से ज्यादा नहीं होना चाहिए और आपके द्वारा की गई घोषणा की सभी आवश्यक जानकारी शामिल होनी चाहिए। कुछ स्थितियों में, यदि आवश्यक है, एक या दो पेज़ "बैक ग्राउण्डर" एक प्रेस रिलीज़ के साथ अतिरिक्त संबंधित सूचना सहित अटैच किया जाना चाहिए।

प्राइमरी ऑडियंस जो कि एक प्रेस रिलीज़ के लक्ष्य पर होती है, सामान्य रूप से मीडिया है। न्यूज़ रिलीज़ की सामानयत: वितरण कॉमर्शिअल मीडिया डिस्ट्रिब्यूशन सर्विसेज़ द्वारा किया जाता है। कई पत्रकार और मीडिया सेंटर इन प्रकार की सर्विसेज़ द्वारा किया जाता है। कई पत्रकार और मीडिया सेंटर इन प्रकार की सर्विसेज़ को अपने प्राइमरी न्यूज़ स्रोत के तौर पर प्रयोग करते हैं। इस प्रकार यह महत्वपूर्ण है कि प्रेस रिलीज़ को बिल्कुल उसी स्टाइल में लिखना चाहिए, जिसे पत्रकार प्रयोग करते हैं, ताकि आपको प्रेस रिलीज़ उनके लिए चुनने और दुबारा छापने में तीव्र और आसान रहे।

नीचे दिए गए प्रेस रिलीज़ सैम्पल MS-Word में सेटअप किए गए हों और एक वास्तविक-जीवन परिस्थिति के लिए लिखे गए थे। यह उन सभी मुख्य सूचना तत्वों को शामिल करते हैं, जो आपको शामिल करना चाहिए, जब आप अपनी न्यूज़ रिलीज़ तैयार कर रहे हों।

प्रूफ शोधन

कम्पोज किए गए मैटर (सामग्री) को देखना कि सामग्री शुद्ध है अथवा नहीं और कम्पोजिंग करते हुए उसमें कहां-कहां अशुद्धियां रह गई हैं तथा उसमें किस प्रकार की शुद्धि आवश्यक है।, इसे प्रूफ-संशोधन कहा जाता है।

'प्रूफ के मेज पर आते ही प्रूफ शोधक का कार्य आरम्भ होता है। यह कार्य यद्यपि नीरस और शुष्क है, परन्तु दायित्वपूर्ण है। समाचार पत्र का कार्य अत्यन्त तेजी से चलता है अत: कई बार अनेक अशुद्धियां मुद्रित हो ही जाती हैं। इससे कई बार अर्थ का अनर्थ हो जाता है। प्रूफ शोधक लेखक और प्रेस के मध्य एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में कड़ी के रूप में कार्य करता है। संपादकीय विभाग में 'प्रेस-कापी' अथवा पाण्डुलिपि प्राप्त होने से लेकर छपने तक सम्पूर्ण दायित्व उसका ही होता है। इसलिए उसे इन बातों का ध्यान रखना चाहिए-

प्रूफ-शोधक के गुण

1. प्रूफ-शोधक को प्रूफ की भाषा का अच्छा ज्ञान होना चाहिए।
2. प्रूफ-शोधक को व्याकरण, वर्ण-विन्यास तथा विराम चिन्हों की पूरी जानकारी होनी चाहिए।
3. उसे कम्पोजिंग तथा छपाई की साधारण बातों का ज्ञान होना चाहिए।
4. वह जिस लेख के प्रूफ का शोधन करे, उसे समझ लेने की उसमें बौद्धिक क्षमता होनी चाहिए।
5. प्रूफ शोधक के पास छिद्रान्वेषिणी शक्ति, दृष्टि की तीव्रता, धैर्य, सतर्कता और श्रमशीलता होनी चाहिए।

प्रूफ के प्रकार

प्रूफ के छ: प्रकार माने जाते हैं परन्तु प्राय: तीन प्रकारों का ही बहुधा प्रयोग होता है-

1. गैली प्रूफ (Gally Proof)
2. मेक-अप प्रूफ (Make&Up Proof)
3. प्रथम प्रूफ या पेज प्रूफ (Ist Proof or Page proof)
4. दूसरा प्रूफ या मशीन प्रूफ (IInd Proof)

5. अन्तिम प्रूफ या तीसरा प्रूफ (IIIrd Proof)
6. प्रिंट आर्डर प्रूफ (Print order of Final Proof)

   1. **गैली प्रूफ** - सामग्री कम्पोज होने के बाद कंपोजिटर सबसे पहले जिस प्रूफ को उठाता है उसे गैली प्रूफ को उठाता है उसे गैलीप्रूफ कहा जाता है इसकी लम्बाई तथा कालम अलग-अलग होते हैं। कंपोजिटर जितनी सामग्री कंपोज करता है। इसका प्रूफ निकाल कर भेजता रहता है। प्रूफ संशोधक इसका संशोधन करके वापिस भेजता रहता है। इस प्रूफ सामग्री को गैलियों गैलियों में रखा जाता है। अत: इसे गैली प्रूफ कहते हैं।

   2. **पृष्ठ प्रूफ** - के संशोधन के बाद सामग्री को पृष्ठों के आकार का बना कर बांधा है। इसे पृष्ठ प्रूफ या Page Proof कहा जाता है।

   3. **मशीन प्रूफ** - पृष्ठ प्रूफ के बाद आने वाले प्रूफ को तीसरा प्रूफ, क्लीन प्रूफ आदि नाम दिये गये हैं।

यद्यपि प्रूफ-वाचन का कोई निश्चित नियम नहीं है फिर भी गैली प्रूफ को प्रूफ वाचक, पृष्ठ प्रूफ, संपादक तथा मशीन प्रूफ को दोनों ही संशोधित करते हैं।

कापी होल्डर - प्राय: देखा जाता है कि प्रूफ शोधक मूल प्रति से प्रूफ को मिलाते जाते हैं। जहां कहीं समाचार या पाठ में कोई गड़बड़ी दिखाई देती है, वहाँ पर मूल प्रति को देख लेते हैं। इससे समय अधिक लगता है और अशुद्धि रह जाने की संभावना भी बनी रहती है। इसीलिए प्रूफ शोधक के पास एक सहायक रखा जाता है। जिसे 'कापी-होल्डर कहते हैं। इसका कार्य है मूल प्रति को ऊंचे स्वर में पढ़ना ताकि प्रूफ-शोध क मिलान करके प्रूफ में सुधार करता जाए। प्रूफ संशोधन करते हुए सावधानियां रखनी चाहिए।

प्रूफ-शोधक के लिए सावधानियाँ

1. प्रूफ स्वच्छ हो। यदि भद्दा या विकृत हो तो उसे पुन: मंगवाना चाहिए।
2. साधारणत: प्रूफ को तीन बार देखना चाहिए।
3. प्रूफ को पढ़ने से पूर्व तिथि, क्रम संख्या, शीर्षक आदि देखने चाहिए।
4. सांकेतिक चिन्हों को मार्जिन के बाई ओर बनाना चाहिए प्रत्यैक चिन्ह के बाद एक खड़ी रेखा खींच कर अगले संकेत से उसे अलग देना चाहिए। बाई और के मार्जिन के भर जाने के बाद दाई ओर के मार्जिन का प्रयोग करना चाहिए।
5. कम्पोजिटर प्राय: मार्जिन में बने चिन्हों को ही देखता है अत: सांकेतिक चिन्हों को मार्जिन में ही बनाना चाहिए।
6. शोधन के लिए पैंसिल का प्रयोग कभी नहीं करना चाहिए। इस कार्य के लिए लाल स्याही का प्रयोग करना चाहिए।
7. जिस शब्द, अक्षर या विराम को हटाना या बदलना होता है। उसे काटते हुए एक खड़ी रेखा खींच देनी चाहिए। जहाँ कुछ बढ़ाना हो वहां काक पद् का चिन्ह (H) बना देना चाहिए। नया पैरा आरम्भ करने की स्थिति में बड़े कोष्ठक (NP) के चिन्हों को बना देना चाहिए।
8. पहले कटे हुए वाक्य को यदि रखना अभीष्ट हो तो उसके नीचे (......) इस संकेत को बना देना चाहिए।
9. अस्पष्ट अक्षरों को इस चिन्ह (**x**) से काट देना चाहिए ।
10. अवतरण, विराम तथा स्वर चिन्हों के संकेत मार्जिन में लिखने चाहिए। आकार का चिन्ह (1) यह बनाएं न कि यह (I) मात्रा के लिए (`), हलन्त के लिए (,), अवतरण चिन्ह के लिए (') या (') विराम के लिए (,) उकार के लिए (ु) या(ू), अनुस्वार के लिए (ं) बनाना चाहिए।

NOTES

11. पाण्डुलिपि में किसी प्रकार के परिवर्तन का अधिकार प्रूफ शोधक को नहीं है। संदेह की स्थिति में उसे स्थान पर यह संकेत (–) बनाकर मार्जिन में तीन प्रश्नवाचक (???) बना देने चाहिए। संदेह निवारण हेतु प्रूफ पाण्डुलिपि सहित लेखक के पास भेज देना चाहिए।
12. 'करेक्शन' होने के बाद जो प्रूफ दूसरी बार 'रिवीजन' के लिए आता है। उसे भी पुनः देख लेना चाहिए क्योंकि कई बार टाइप बदल भी जाते हैं।
13. प्रथम दो प्रूफों का संशोधन कर लेने के पश्चात ही तीसरा प्रूफ संपादक के पास भेजना चाहिए।
14. कई बार छपाई में मात्राएं टूट जाती हैं या अक्षर निकल जाते हैं, प्रूफ-शोधक को इनका भी ध्यान रखना चाहिए।
15. पहला प्रूफ भेजते समय 'संशोधन करो' लिखकर नीचे हस्ताक्षर करने चाहिए। दूसरे प्रूफ में संशोधन और मेक-अप' लिखना होता है तथा तीसरे प्रूफ में मशीन-प्रूफ' लिखना चाहिए।
16. सामग्री में लेड ठीक ढंग से डाली गई है अथवा नहीं, इसे भी प्रूफ-शोधक को देख लेना चाहिए।

भारतीय मानक संस्था ने प्रूफ मानक के अनुसार भारत सरकार द्वारा नियुक्त वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग ने इनका हिन्दी में रूपान्तर किया है। अंग्रेजी-हिन्दी के चिन्ह इस प्रकार हैं –

प्रूफ संशोधन के चिन्ह एवं व्याख्या

चिन्ह	अर्थ
D	मिटा या हटा दीजिए
#	स्पेस डाले या स्थान करें
#	उल्टा लगा है सीधा करें।
#	दूर दूर छपे अक्षर मिलाएं
=	एक पंक्ति में करें।
L	दो शब्दों के बीच का स्थान कम करें।
LC	छोटे अक्षरों का प्रयोग करें।
NP	नया पैरा बनाएं
Stat	करे अक्षरों को यथावत छापे
tr	स्थानान्तरित करें।
x	टूटे अक्षर बदलें
—	शब्द ऊपर उठाएं
:—	चिन्ह दें
	शब्द नीचे खिसकाएं
?	प्रश्नवाचक
Ital	इटैलिक टाइप लगाएं
(	दो पंक्तियों के बीच
(.)	अनुस्वार
:	विसर्ग

स्व प्रगति की जाँच करें:

3. एक प्रेस रिलीज के अति महत्वपूर्ण फैक्टर्स क्या है?
4. प्रूफ शोधक के गुणों को बताइए।
4. प्रूफ-शोधक के लिए क्या सावधानियाँ होनी चाहिए?

NOTES

w,f,	विजातीय टाइप बदलें
( )	कोष्ठक
[ ]	लघु कोष्ठक लगाएँ
[	बायीं और खिसकाएँ
]	दायीं और खिसकाएं
^	छूटे अक्षर जोड़े
C	बड़े अक्षरों का प्रयोग करें
DPr	अधिक काला अक्षर छापें
" "	उद्धरण चिन्ह दें
-	योजक चिन्ह लगाएं
cm	एक बड़ा डैश लगाएं
,	अर्द्ध विराम लगाएं
cn	एक छोटा डैश लगाएं
&	एण्ड का चिन्ह दें
lek	पूर्ण विराम लगाएं
पा	अनुच्छेद आरम्भ करें
d.l	लेड हटाए
*	तारांकित करें
???	क्वेरी उठाएं
See copy	मूल प्रति देखें

प्रूफ-संशोधक को उपर्युक्त चिन्हों का प्रयोग करते प्रूफ का संशोधन करना चाहिए। ये चिन्ह अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अंग्रेजी में और भारत में हिन्दी के लिए स्वीकृति हैं। हिन्दी के लिए नए चिन्ह भी बने हैं जिनका प्रूफ शोधक को आवश्यकतानुसार प्रयोग करना चाहिए।

स्व-प्रगति की जाँच के उत्तर

1. एक प्रेस रिलीज़ एक लिखित कम्यूनिकेशन है जो किसी आयोजन, परिस्थिति या अन्य घटनाओं जो कि एक व्यवसाय या संघ से मूलत: बँधी होती है, के बारे में निर्धारित, परन्तु संक्षिप्त जानकारी रिपोर्ट करती है।

   प्रेस रिलीज़ हमेशा तृतीय व्यक्ति के फॉर्म में लिखा जाना चाहिए। प्रेस रिलीज़ अर्थों की एक भिन्नता के ज़रिए मीडिया को प्रदान की जाती है, परन्तु हमेशा न्यूज़ मीडिया द्वारा अधिग्रहित की जाती हैं, फिर भी यदि आप किस्मतदार हैं, वे ब्लॉगर्स, ट्विटर्स और अन्यों द्वारा चुनी जा सकती हैं जो इसे पढ़ते हैं और पाते हैं कि यह उनके अपने सामाजिक नेटवर्क पर प्रमोट करने की कुव्वत रखती है।

2. परिभाषाएँ– "एक जन संबंध घोषणा जो न्यूज़ मीडिया और अन्य लक्षित प्रकाशनों को ज़ारी की जाती है जिसका उद्देश्य कंपनी विकास की जानकारी जनता को देना होता है।"

   "एक प्रेस रिलीज़, न्यूज़ रिलीज़, मीडिया रिलीज़, प्रेस स्टेटमैंट या बीडिया रिलीज़ एक लिखित या रिकॉर्डिंग कम्यूनिकेशन है जो कुछ निर्दिष्ट न्यूज़ के लायक घोषणा करने के उद्देश्य की पूर्ति के लिए मीडिया सदस्यों को निर्देशित किया जाता है।"

3. यहाँ PR वेब के लर्निंग सेंटर पर बहुत सारे स्रोत हैं, जिसमें हमारे ग्राहकों के लिए एक प्रेस रिलीज़ ग्रेडर शामिल हैं। फिर भी, अति महत्वपूर्ण तथ्यों को प्रयोगी संरचना के लिए निम्न दिया गया है –

   1. अच्छी, स्वच्छ लेखनी पर जोर/पठनीयता के लिए स्पष्टता के साथ लिखना लिस्ट में शीर्ष पर है। जहाँ रिलिज़ के लिए लिखने के बारे में बहुत सारी ऑनलाइन एडवाइज़ हैं, जैसे कि कैसे फॉर्मल और इनफॉर्मल डॉक्यूमेंट को पढ़ना चाहिए, परन्तु समय और समय पुनः, रिलीज़ेज़ को अच्छे ढंग से लिखा जाना चाहिए जिसके कि पाठक आसानी से समझ सकें।
   2. हैडलाइन और सबहैड मुद्दे हैं। प्रेस रिलीज़ के लिए हेडलाइन, कुछ हद लाइन एडिट को ऐसे ड्रॉ करें कि वे पढ़ने को विवश हो जाएँ। एक सामान्य प्रश्न होना चाहिए कि हम हेडलाइन को सर्च ईंजन या जानता के लिए लिख रहे हैं ? उत्तर है – जनता। जनता प्रतिबद्ध मौखिक हैं, सर्च ईंज़न का अभिप्राय उन्हें अपनी सामग्री पाने में सहायता करने से है। यदि यह संदर्भ में समझ बनाती है, सुनिश्चित तौर पर अपने मुख्य शब्दों को हैडलाइन से जोड़ें, परन्तु कभी भी ऐसी हैडलाइन नहीं लिखें जो सिर्फ आपके की-वर्ड्स में फिर हो जाए।

4. **प्रूफ-शोधक के गुण**

   1. प्रूफ-शोधक को प्रूफ की भाषा का अच्छा ज्ञान होना चाहिए।
   2. प्रूफ-शोधक को व्याकरण, वर्ण-विन्यास तथा विराम चिन्हों की पूरी जानकारी होनी चाहिए।
   3. उसे कम्पोजिंग तथा छपाई की साधारण बातों का ज्ञान होना चाहिए।
   4. वह जिस लेख के प्रूफ का शोधन करे, उसे समझ लेने की उसमें बौद्धिक क्षमता होनी चाहिए।
   5. प्रूफ शोधक के पास छिद्रान्वेषिणी शक्ति, दृष्टि की तीव्रता, धैर्य, सतर्कता और श्रमशीलता होनी चाहिए।

5. **प्रूफ-शोधक के लिए सावधानियां**

   1. प्रूफ स्वच्छ हो। यदि भद्दा या विकृत हो तो उसे पुनः मंगवाना चाहिए।
   2. साधारणतः प्रूफ को तीन बार देखना चाहिए।
   3. प्रूफ को पढ़ने से पूर्व तिथि, क्रम संख्या, शीर्षक आदि देखने चाहिए।
   4. सांकेतिक चिन्हों को मार्जिन के बाई और बनाना चाहिए प्रत्येक चिन्ह के बाद एक खड़ी रेखा खींच कर अगले संकेत से उसे अलग देना चाहिए। बाई और के मार्जिन के भर जाने के बाद दाई ओर के मार्जिन का प्रयोग करना चाहिए।
   5. कम्पोजिटर प्रायः मार्जिन में बने चिन्हों को ही देखता है अतः सांकेतिक चिन्हों को मार्जिन में ही बनाना चाहिए।
   6. शोधन के लिए पैंसिल का प्रयोग कभी नहीं करना चाहिए। इस कार्य के लिए लाल स्याही का प्रयोग करना चाहिए।
   7. जिस शब्द, अक्षर या विराम को हटाना या बदलना होता है। उसे काटते हुए एक खड़ी रेखा खींच देनी चाहिए। जहाँ कुछ बढ़ाना हो वहां काक पद का चिन्ह (H) बना देना चाहिए। नया पैरा आरम्भ करने की स्थिति में बड़े कोष्ठक (NP) के चिन्हों को बना देना चाहिए।
   8. पहले कटे हुए वाक्य को यदि रखना अभीष्ट हो तो उसके नीचे (.....) इस संकेत को बना देना चाहिए।

NOTES

9. अस्पष्ट अक्षरों को इस चिन्ह **(x)** से काट देना चाहिए ।
10. अवतरण, विराम तथा स्वर चिन्हों के संकेत मार्जिन में लिखने चाहिए। आकार का चिन्ह (1) यह बनाएं न कि यह (ı) मात्रा के लिए (ˋ), हलन्त के लिए (.), अवतरण चिन्ह के लिए (') या (') विराम के लिए (,) उकार के लिए (ु) या(ू), अनुस्वार के लिए (ं) बनाना चाहिए।

अभ्यास-प्रश्न

1. प्रेस नोट के स्वरूप का संक्षिप्त विवरण दें।
2. प्रेस विज्ञप्ति का अभिप्राय स्पष्ट करते हुए इसे परिभाषित करें।
3. प्रूफ शोधन से आप क्या समझते हैं ?
4. निम्न पर छोटा नोट लिखें :
   (a) गैली प्रूफ
   (b) कापी होल्डर

NOTES

इकाई - III

पारिभाषिक शब्दावली एवं शब्दकोष

इकाई में शामिल है:

- पारिभाषिक शब्दावली (पत्रकारिता से सम्बन्धित 100 शब्द)
- पारिभाषिक शब्दावली की परिभाषा एवं स्वरूप
- पारिभाषिक शब्दावली का महत्व
- शब्दकोष का अर्थ, प्रकार
- विश्वकोष की परिभाषा एवं उपयोगिता

अध्ययन के उद्देश्य :

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप निम्न बिन्दुओं को जानने में सक्षम होंगे –

- पारिभाषिक शब्दावली का अर्थ, परिभाषाएँ एवं स्वरूप
- पारिभाषिक शब्दावली का महत्व
- पारिभाषिक शब्दावली : निर्माण-प्रक्रिया
- शब्दकोष तथा विश्वकोष का अर्थ व प्रकार

NOTES

प्रयोजनमूलक हिन्दी के मुख्य तत्त्व

प्रयोजनमूलक हिन्दी के अध्ययन, अनुशीलन तथा विश्लेषण के पश्चात् उसमें अन्तर्निहित तीन मुख्य तत्व उभरकर सामने आते हैं। वे हैं–

क) पारिभाषिक शब्दावली

ख) अनुवाद-प्रक्रिया

ग) भाषिक संरचना

उपर्युक्त तत्वों के समामेलन से प्रयोजनमूलक हिन्दी की विशिष्टता, अनुप्रयुक्तता तथा गत्यात्मकता बरकरार रही है। अत: इन तत्वों के अंगों एवं उपांगों की सर्वंकष चर्चा इस सम्बंध में आवश्यक हो जाती है।

पारिभाषिक शब्दावली

प्रयोजनमूलक हिन्दी में पारिभाषिक शब्दावली (Technical Terminology) की महत्तम तथा अनिवार्य भूमिका उपस्थित रहती है। पारिभाषिक शब्दावली किसी ज्ञान (Disciplene) विशेष के क्षेत्र में एक निश्चित अर्थ में प्रयुक्त होती है। पारिभाषिक शब्द परिभाषित (Defined) होते हैं। इसकी विस्तृत चर्चा आगे की जा रही है।

शब्द के रूप

भाषा सार्थक शब्दों की एक सुगठित एवं व्यवस्थित इकाई है। लेखक की भाषा में शब्दों की ओर विशेष ध्यान देकर उनका विषयगत तथा संदर्भगत सुचारू ढंग से संयोजन करना पड़ता है। शब्दों की सार्थक प्रयुक्ति (अथवा प्रयोग) पर ही विषय-वस्तु तथा भाषा की अभिव्यक्ति सम्भव होती है। प्रयुक्ति अथवा प्रयोग के आधार पर 'शब्द' के एक ओर से बहुप्रयुक्त, अल्पप्रयुक्त तथा अप्रयुक्त आदि भेद किये जा सकते हैं, तथा दूसरी ओर सामान्य, अर्ध-पारिभाषिक तथा पारिभाषिक। परन्तु इस संदर्भ में मुख्यत: शब्दों के तीन प्रमुख प्रकार या रूप माने जा सकते हैं–

1. सामान्य शब्द
2. अर्धपारिभाषिक शब्द
3. पारिभाषिक शब्द

1. **सामान्य शब्द**–सामान्य शब्दों का सम्बंध जीवन और जगत् के दैनंदिन या सामान्य व्यवहार तथा बोलचाल आदि से है। अर्थात् ऐसे शब्दों का प्रयोग रोजमर्रा के सामान्य व्यवहार विषयक बातों की सहज अभिव्यक्ति के लिए किया जाता है। प्रत्येक भाषा की सर्वसामान्य अभिव्यंजना के मूलाधार ऐसे सामान्य शब्द ही माने जाते हैं और उनमें सम्बंधित भाषा के सर्वनाम तथा सामान्य जीवन व जगत से सम्बंधित बहुप्रयुक्त क्रिया, संज्ञा, विशेषण तथा क्रिया विशेषण आदि का समावेश रहता है। ऐसे सामान्य शब्दों के आधार पर ही कोई व्यक्ति भाषा सीखता है और उनका नित्य प्रति के व्यवहार में उपयोग भी करता है। बच्चा भी जब मातृभाषा सीखता है तब सर्वप्रथम सामान्य शब्दों को ही सीखता है। खाना, पीना, चलना, चाचा, माँ, पिता, आना, जाना, ठंडा, गरम, रोटी, पानी, कलम, मेज, कुर्सी जैसे शब्द सामान्य शब्द की श्रेणी में आयेंगे। बोलचाल, वार्तालाप या संवाद तथा ललित साहित्य आदि में ऐसे शब्दों का प्रयोग होता है। सरलता, भावुकता, लक्षणा-व्यंजनाश्रितता तथा सहजता आदि गुण सामान्य शब्दों में देखे जा सकते हैं। सामान्य शब्द पारिभाषिक शब्द के रूप में कभी प्रयोग में नहीं आते।
2. **अर्धपारिभाषिक शब्द**–सामान्य शब्दों के अलावा कुछ ऐसे शब्द है जो सामान्य तथा पारिभाषिक दोनों रूपों में प्रयोग में लाये जाते हैं। अर्थात् कुछ ऐसे शब्द होते हैं। जिनका प्रयोग स्थिति, विषय-वस्तु तथा संदर्भ के अनुसार कभी तो सामान्य शब्दों के रूप में होता है, और कभी पारिभाषिक शब्दों के रूप में।

सामान्य शब्द को आसानी से पहचाना जा सकता है किन्तु अर्ध-पारिभाषिक शब्द को उसकी विशिष्टताओं तथा विशेष ज्ञान की स्पष्टताओं के द्वारा पहचाना जा सकता है। माया, विपदा, वेदना, क्रिया, सृजन, आपत्ति, रस, अर्थ आदि ऐसे अनेक शब्द हैं जो अर्ध-पारिभाषिक शब्द-वर्ग में आते हैं। विश्व की भाषाओं में इस प्रकार के शब्दों की संख्या काफी मात्रा में विद्यमान रहती है।

3. **पारिभाषिक शब्द**–पारिभाषिक शब्द को 'तकनीकी' शब्द भी कहा जाता है। वस्तुत: 'टेक्निक टर्मिनालॉजी' के पर्याय के रूप में हिन्दी में 'पारिभाषिक शब्दावली अथवा 'तकनीकी शब्दावली' का प्रयोग एक ही अर्थ में किया जाता है। विख्यात कोशकार डॉ० रघुवीर ने 'कम्प्रेहेन्सिव डिक्शनरी ऑफ इंग्लिश-हिन्दी' में पारिभाषिक शब्द की व्याख्या देते हुए लिखा है–"पारिभाषिक शब्द किसको कहते हैं, जिसकी परिभाषा की गई। पारिभाषिक शब्द का अर्थ है जिसकी सीमाएँ बाँध दी गई हों। जिन शब्दों की सीमा बाँध दी जाती है वे पारिभाषिक शब्द हो जाते हैं और जिनकी सीमा नहीं बाँधी जाती है। वे साधारण शब्द होते हैं।" पारिभाषिक शब्दों का सम्बंध ज्ञान-विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों से है और उनकी परिधि निश्चित अर्थात् परिभाषित (Defined) रहती है तथा विषय-पल्लवन की प्रक्रिया में इनक विशिष्टता स्थान रहता है। ज्ञान विशेष में इन शब्दों का अर्थ होता है। अत: विषय-विशेष में इन शब्दों की सहायता से स्पष्ट तथा एकार्थक अभिव्यक्ति सम्भव होती है। अधिकांश पारिभाषिक शब्द अर्थ-संकोच से बनाये जाते हैं जो जटिल विचारों को सांकेतिक रूप में अभिव्यक्ति प्रदान करते हैं। विभिन्न प्रकार के विज्ञानी शास्त्रीय सिद्धान्तों का निरूपण करते हैं जिन्हें सर्वसामान्य बोलचाल की भाषा में व्यक्त नहीं किया जा सकता। फलत: इस प्रकार की शास्त्रीय सिद्धान्तों की अभिव्यक्ति हेतु विशिष्ट 'मानक' (Standard) शब्दों का प्रयोग अनिवार्य हो जाता है। यही पारिभाषिक शब्द हैं और यही से पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण की प्रक्रिया शुरू हो जाती है। पारिभाषिक शब्दों के अन्तर्गत मानविकी, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, कार्यालयी, प्रशासन, अंतरिक्ष, कम्प्यूटर तथा दूरसंचार आदि क्षेत्र आते हैं।

परिभाषिक शब्दावली : परिभाषा

पारिभाषिक शब्द अंग्रेजी के 'टेक्निकल' (Technical) शब्द का हिन्दी पर्याय है। मूल अंग्रेजी Technical शब्द ग्रीक भाषा के अर्थात् 'Of Art' (कला का या कला विषयक) से अपनाया गया है। 'Techne' से तात्पर्य है–कला तथा शिल्प। ग्रीक भाषा में 'Tekton' शब्द का अर्थ निर्माण करने वाला (निर्माता) अथवा 'बढ़ई' के अर्थ में प्रयुक्त हाता है। लैटिन भाषा में 'Texere' शब्द का अर्थ है 'बुनना' या 'बनाना'। इस संदर्भ में अर्थ हुआ तकनीकी शब्द वह वह शब्द है जो किसी निर्मित अथवा खोजी गई वस्तु अथवा विचार को व्यक्त करता हो।

कोश-ग्रन्थें के अनुसार 'Technical' का अर्थ है–'Of a particular Art, Science, Craft or about Art' अर्थात् विशिष्ट कला विज्ञान तथा शिल्प विषयक अथवा विशिष्ट कला के बारे में। इससे तात्पर्य हुआ–"पारिभाषिक शबद वह है जो किसी ज्ञान-विज्ञान के विशेष क्षेत्र में एक विशिष्ट तथा निश्चित अर्थ में प्रयुक्त किया जाता है।"

चैम्बर्स टेक्निकल डिक्शनरी (Chembers Technical Dictionary) में पारिभाषिक शब्द को इस प्रकार स्पष्ट किया है–"Technical terms in symbalo adopted or inverted by special and technical to facilitate the precise recording ideas" अर्थात् पारिभाषिक शब्दावली विशेषज्ञों तथा तकनीशियनों के उनके अपने विशिष्ट विचारों को लिपिबद्ध करने हेतु ग्रहण, अनुकूल और निर्माण द्वारा तैयार किये जाने वाले प्रतीक मात्र हैं।

उक्त संकल्पना से मिलती-जुलती परिभाषा रैण्डम हाउस ने 'दि रैण्डम हाउस डिक्शनरी ऑफ दी इंग्लिश लैंग्वेज' में कुछ इस प्रकार दी है–Technical—"A world of phrase used in definite or precise sencse in some particular subject as a science or art a Technical empression (More fully term or art)" अर्थात् विज्ञान अथवा कला जैसे विशिष्ट विषयों की तकनीकी अभिव्यक्ति हेतु किसी निश्चित अथवा विशिष्ट अर्थ में प्रयुक्त शब्द (अधिक रूप से कला की संकल्पना या शब्द)।

NOTES

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर पारिभाषिक शब्द की परिभाषा इस प्रकार दी जा सकती है–

"जो शब्द सामान्य व्यवहार की भाषा में प्रयुक्त न होकर ज्ञान-विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में विषय एवं संदर्भ के अनुसार विशिष्ट किन्तु निश्चित अर्थ में प्रयुक्त होते हैं, उन्हें पारिभाषिक शब्द कहते हैं।"

इस प्रकार ऐसे पारिभाषिक शब्दों के समूह को 'पारिभाषिक शब्दावली' अथवा 'तकनीकी शब्दावली' (Technical Terminology) कहा जा सकता है। भौतिकी, रसायन, प्राणि-विज्ञान, वनस्पति-विज्ञान, गणित, ज्यामिति, अंतरिक्ष-विज्ञान, कम्प्यूटर, इंजीनियरी, मानविकी, दूर-संचार तथा प्रौद्योगिकी आदि क्षेत्रों की अभिव्यक्ति और व्यवहार में विशिष्ट अर्थ को लेकर पारिभाषिक शब्द प्रयुक्त होते हैं।

पारिभाषिक शब्दावली की विशेषताएँ

उक्त विवेचन के अनुसरण में पारिभाषिक शब्दों की कुछ प्रमुख विशेषताएँ उभरकर सामने आती हैं। वे हैं–

अ) पारिभाषिक शब्द 'परिभाषित' (Defined) होता है। अर्थात् ऐसे शब्दों को उनकी संकल्पना के अनुसार परिभाषा या व्याख्या देकर समझाया जाता है। अथवा समझना पड़ता है। जैसे घनत्व, वोल्ट, कुंडली, सॉफ्टवेयर, गुणांक आदि।

आ) पारिभाषिक शब्द में प्रमुख विचार, भाव अथवा किसी विशिष्ट संकल्पना का समावेश रहता है। अतः पारिभाषिक शब्द को जब पहले पहल प्रयोग में लाया जाता है तब उसके अर्थ को व्याख्या या परिभाषा देकर स्पष्ट कर देना उचित समझा जाता है ताकि उसके प्रयोग में संदिग्धता न हो। जैसे, बुर्जुआ, प्रव्रज्या, अंतरिक्ष (स्पेस), तापीय (थर्मल), नाभिकीय (न्यूक्लियर), कम्पोज, एंटेना, सॉफ्ट वेयर, हार्डवेयर आदि।

इ) पारिभाषिक शब्द की अन्य विशेषता है उसकी असामान्यता। अर्थात् ऐसे शब्द से सम्बद्ध विचार, भाव या संकल्पना आदि सामान्य व्यवहार में प्रयुक्त नहीं होते। जैसे कर्षण (ट्रक्शन), प्रतिभू, ईंडा, पिंगला, त्वरन, रक्ताणु, कार्बनिक, उर्ध्वपातन आदि।

ई) पारिभाषिक शब्दों की एक विशेषता यह भी है कि ये शब्द विशिष्ट क्षेत्र में विशिष्ट किन्तु अलग अर्थ में प्रयुक्त होते हैं, जैसे–'कल्चर' शब्द मानविकी में संस्कृति के अर्थ में प्रयुक्त होता है किन्तु कृषि-विज्ञान में 'कल्चर' से तात्पर्य 'कृषि' से है : उदारणार्थ अक्वा-कल्चर (जल-कृषि), सीरी-कल्चर (रेशमकीट पालन) आदि। इसी प्रकार, सैन्य-विज्ञान में 'सेक्युरिटी' शब्द का अर्थ है–सुरक्षा किन्तु बैंकिंग में 'सेक्युरिटी' शब्द 'प्रतिभूति' (जमानत) के अर्थ में प्रयुक्त होता है।

उ) पारिभाषिक शब्द की एक अन्य विशेषता है–दुरूहता। अर्थात् कुछ पारिभाषिक शब्दों में ऐसा आशय छिपा रहता है जो शब्द के विश्लेषण से स्पष्ट नहीं होता तथा उसे जानने के बाद भी परम्परा और प्रयोग द्वारा ही समझा जा सकता है। जैसे काव्य-शास्त्र का 'चित्र-तुरग न्याय' नाट्य-शास्त्र का रंग-कर्मी, दर्शन-शास्त्र का ब्रह्म, माया अथवा कुंडलिनी एवं अद्वैत आदि शब्द इसी श्रेणी में आते हैं।

ऊ) पारिभाषिक शब्द की सबसे बड़ी विशेषता है दो संकल्पनाओं अथवा विचारों को सूक्ष्मता को सटीक अभिव्यक्ति देना। अर्थात् भिन्न विचारों अथवा भावों को सूक्ष्मता से सही अर्थ में प्रकट करना। जैसे प्रतिभूति (सिक्युरिटी), ताप (हीट) एवं तापमान (टेम्प्रेचर), गति (स्पीड) तथा वेग (वेलोसिटी) आदि। इस प्रकार ऐसे शब्दों की अर्थ-सूक्ष्मता को सहजता से नहीं जाना जा सकता।

ए) पारिभाषिक शब्द की एक और विशेषता है, अपर्यायीता। अर्थात् किसी एक ज्ञान के क्षेत्र के पारिभाषिक शब्द के लिए दूसरा कोई भी पर्यायी शब्द प्रयुक्त नहीं किया जा सकता। इससे तात्पर्य यह है कि विशिष्ट ज्ञान-क्षेत्र के विशिष्ट पारिभाषिक शब्द का स्थान अन्य कोई दूसरा शब्द नहीं ले सकता। जैसे–प्रशासन में प्रयुक्त 'इश्यू' (जारी करने के अर्थ में), विधि के क्षेत्र में प्रयुक्त 'प्रोक्लेमेशन', 'नोटिफिकेशन', अंतरिक्ष का 'इनसेट' और गणित, भौतिकी, रसायन, कम्प्यूटर, एवं अंतरिक्ष-विज्ञान में प्रयुक्त गुण-सूत्र, प्रतीक-चिह्न, द्विपदनाम, यौगिकों के नाम आदि के पर्याय या पर्यायी पारिभाषिक शब्द नहीं दिए जा सकते।

NOTES

ऐ) पारिभाषिक शब्दों की और एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि उनका कृत्रिम निर्माण किया जाता है। नये विज्ञानों के प्रस्फुटन तथा निर्माण के साथ ही उनकी अभिव्यक्ति तथा विषय-वस्तु निरूपण के लिए नई संकल्पनाओं के अनुरूप नये शब्दों का निर्माण आवश्यक हो जाता है। अत: विषय, संदर्भ तथा स्थिति के अनुसार नये कृत्रिम शब्दों का निर्माण किया जाता है। अत: इस प्रक्रिया में प्रतीकों एवं खोजकर्ता वैज्ञानिकों के नाम पर भी कृत्रिम पारिभाषिक शब्द गढ़े जाते हैं। जैसे–लेम्बडा, पाई, म्यू, जूल, डार्विननिज्म, मार्क्सिजम, फासीस्ट, गेल्वानीकरण, आदि।

पारिभाषिक शब्दावली के अपेक्षित गुण

किसी भी भाषा के पारिभाषिक शब्द के लिए निम्नलिखित गुणों का होना आवश्यक माना जाता है–

1. पारिभाषिक शब्द का अर्थ निश्चित, नियम तथा स्पष्ट होना चाहिए। अर्थात् इन्हें अर्थ-विस्तार तथा अर्थ-संकोच दोष से मुक्त होना चाहिए।
2. पारिभाषिक शब्द उच्चारण की दृष्टि से सरल तथा सुबोध होने चाहिए ताकि प्रयोक्ता के लिए सुविधा हो।
3. पारिभाषिक शब्द के नियम अर्थ में प्रत्यय, उपसर्ग या अन्य उपयुक्त शब्द जोड़कर परिवर्तन किये जाने की गुंजाइश रहनी चाहिए। जैसे Sectratary शब्द के लिए इसमें 'सचिव' प्रयुक्त होता है किन्तु उससे पहले Under शब्द जुड जाने से Under Secratary हो जाएगा और हिन्दी में 'अवर सचिव'।
4. समान पारिभाषिक शब्दों में एकरूपता होनी चाहिए।
5. पारिभाषिक शब्द विषय-वस्तु या ज्ञान-क्षेत्र से सम्बद्ध 'संकल्पनाओं' तथा वस्तुओं के लिए सम्बद्ध (अनुरूप) होने चाहिए।
6. किसी अन्य भाषा से कोई पारिभाषिक शब्द यदि अपना लिया जाए तो उसे अनुकूलन की प्रक्रिया से अपनी भाषा की प्रकृति एवं प्रवृत्ति के अनुसार ढाल लेना चाहिए।
7. प्रत्येक पारिभाषिक शब्द की स्वतंत्र सत्ता तथा अर्थवत्ता होनी चाहिए। अर्थात् प्रत्येक पारिभाषिक शब्द एक-दूसरे से सर्वथा अलग होना चाहिए।
8. पारिभाषिक शब्द का निर्माण यथासम्भव एवं यथास्थिति एक ही मूल शब्द से किया जाना चाहिए ताकि उसमें सुबोधता, स्पष्टतया तथा अर्थ की निश्चितता विद्यमान रहे।
9. पारिभाषिक शब्द का रूप यथासम्भव लघु होना आवश्यक है ताकि बार-बार प्रयोग करने में प्रयोक्ता को असुविधा न हो।

पारिभाषिक शब्दावली : निर्माण-प्रक्रिया

पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण के बारे में विद्वानों में मतभेद पाए जाते हैं। विद्वानों का एक वर्ग जो 'राष्ट्रीयतावादी' कहलाता है–उनका मत है कि पारिभाषिक शब्द संस्कृत के धातु रूपों से ही बनाए जा सकते हैं। डॉ० रघुवीर इस वर्ग के प्रमुख समर्थक माने जाते हैं। इसके अनुसार–संस्कृत भाषा धातु, प्रत्यय, उपसर्ग तथा समास-शक्ति के कारण अत्यन्त उर्वरा है और बड़ी सरलता से उसके आधार पर नये शब्द बनाए जा सकते है। इसके विपरीत, कुछ विद्वानों का मत है कि संस्कृत धातुओं के बल पर तैयार किये जाने वाले शब्द कठिन होते हैं। फलत: अंग्रेजी अथवा अंतर्राष्ट्रीय शब्दावली को अपनाया जाना चाहिए। इस विरुद्ध धारणा के उत्तर में कहा गया है कि अन्य भाषा से लिया गया शब्द उर्वर नहीं होता। जैसे अंग्रेजी 'Therm' से लगभग पचास शब्द बनते हैं, ऐसे में प्रत्येक शब्द को हिन्दी में नहीं अपनाया जा सकता। अत: 'Therm' के लिए संस्कृत का आधार पर Thermal तापीय, Thermation तापायन धारणा तथा Thermal power तापीय शक्ति, Thermal capacity तापयी धारणा तथा Thermal belt तापीय कटिबंध आदि अनेक पारिभाषिक शब्दों का निर्माण किया जा सकता है। अधीक्षक, कार्यालय, मंत्रालय, महाविद्यालय, निदेशालय, विश्वविद्यालय, कुल सचिव, रूपग्राम, सम्पादक, आदि अनेक शब्द इसी पद्धति के हैं।

स्व प्रगति की जाँच करें:

1. पारिभाषिक शब्दावली से आप क्या समझते हैं ?
2. रूपों में अर्धपारिभाषिक शब्द क्या हैं ? समझाइए।

NOTES

पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण में योगदान देने वाले विद्वानों का दूसरा वर्ग, जो अंतर्राष्ट्रीयतावादी कहलाता है, इस वर्ग का मत है कि हिन्दी की पारिभाषिक शब्दावली के लिए अंग्रेजी तथा अन्तर्राष्ट्रीय शब्दावली को यथास्थिति अपना लिया जाए। इस वर्ग में मुख्यत: विज्ञानी तथा पश्चिमी परम्परा के समर्थ लोग आते हैं। उनकी मान्यता है कि अंग्रेजी एवं अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में प्रयुक्त होने वाली सर्वमान्य शब्दावली को अपनाकर हिन्दी भाषा को भी समृद्ध किया जाना चाहिए। नई वैज्ञानिक खोज के अनुसार नए शब्द भी साथ में बनते हैं, ऐसी स्थिति में प्रत्येक बार देशज शब्दों को बनाना पड़ेगा जो असंगत होगा। अत: ऐसी शब्दावली को यथास्थिति अपनाया जाना चाहिए। नाइट्रोजन, हाईड्रोजन, फ्रिज, इंटेरियम, कम्प्यूटर, शटल, एकेडमी, आदि अनेक शब्दों को ज्यों का त्यों अपना लेना उचित होगा।

विद्वानों का तीसरा वर्ग समन्यवादी कहलाता है। इस वर्ग के मतानुसार हिन्दी भाषा की प्रकृति तथा प्रवृत्ति तथा प्रवृत्ति को ध्यान में रखते हुए संस्कृत, प्राकृत, आधुनिक भाषाएँ, अंग्रेजी तथा अंतर्राष्ट्रीय प्रयोग आदि के शब्दों को आवश्यकतानुसार ग्रहण करना चाहिए और इनकी मदद से नवीन शब्दों का निर्माण भी किया जाना चाहिए। भारत सरकार द्वारा स्थापित वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग ने भी इसी प्रकार की विचारधारा को अपनाने की कोशिश की है। मोटर, बम, रेडियो, मशीन, टेबल, राडार, रेलवे स्टेशन, लाइसेंस, थर्मामीटर, रॉयलटी, इंटरकॉम, कम्प्यूटर, टेलीफोन, ऑपरेशन, डॉक्टर आदि अनेक शटद इसी श्रेणी में आते हैं। हिन्दी भाषा के विकास तथा आधुनिकीकरण के साथ उसे अंतर्राष्ट्रीय स्थान प्रदान करने की प्रक्रिया स्वरूप अंतर्राष्ट्रीय पारिभाषिक शब्दावली के साथ देश-विदेश की अनेक भाषाओं की शब्दावली को भी अपनाया जाना बहुत आवश्यक है।

पारिभाषिक शब्दावली निर्माण के रूप

हिन्दी में पारिभाषिक शब्दावली निर्माण के अनेक रूप दृष्टिगत होते हैं, जिनमें प्रमुख इस प्रकार हैं :

1. **संस्कृत संधिगत पारिभाषिक शब्द :**

   पद + अधिकारी = पदाधिकारी। पद + उन्नति = पदोन्नति। देश + अंतर = देशांतर। हस्त + अंतरण = हस्तांतरण। सम् + स्तुति = संस्तुति। निदेश + आलय = निदेशालय। भवेत् + इयम् = भवदीय। स्थान + अंतरण = स्थानांतरण।

2. **उपसर्ग और प्रत्ययों से निर्मित शब्द :**

   आ + लोचक = आलोचक। अ + वैतनिक = अवैतनिक। अधि + सूचना = अधिसूचना। अभि + यंता = अभियंता। अनु + दान = अनुदान। उप + भोक्ता = उपभोक्ता। प्र + शिक्षण = प्रशिक्षण। प्र + भारी = प्रभारी। सं + स्तुत = संस्तुत। आ + वर्ती = आवर्ती। वि + केन्द्रित = विकेन्द्रित। अनु + बंध = अनुबंध।

3. **प्रत्यय से निर्मित पारिभाषिक शब्द :**

   भौतिक + ई = भौतिकी। निदेश + क = निदेशक। सहकार + ई = सहकारी। अंतर्राष्ट्र + ईय = अंतर्राष्ट्रीय। लिपि + क = लिपिक। चाल + क = चालक। वरिष्ट + तम = वरिष्ठतम। चित्र + इत = चित्रित।

4. **अंग्रेजी तथा अंतर्राष्ट्रीय पारिभाषिक शब्द :**

   तत्त्वों के लिए : ऑरम, सल्फर, अर्जेन्टम आदि।

   तोल-माप के लिए : मीटर, ग्राम, वाट, वोल्ट, लिटर, कैलरी, एम्पियर आदि।

   दूरसंचार के लिए : टेलीफोन, इंटरकॉम, टेलीविजन, रेडियो, टेलेक्स आदि।

   खेलकूद के लिए : गोल्फ, बैट, रैकेट, रेसकोर्स, बॉल, क्रिकेट, फुटबॉल, कैरम, फालोऑन, रबर, अम्पायर आदि।

   रासायनिक यौगिकों के लिए : फेनल, ब्रोमाइड, क्लोराइड, सल्फर आदि।

इसी प्रकार कैलरी, ब्यूरो, टैथस्कोप, फारनहाइट, विटामिन, प्रोटीन, ग्लूकोज, कम्यूनिकेशन, ट्रैक्टर, पम्पसेट, इंजेक्शन आदि अनेक शब्द हैं जिनका उपयोग किया जा रहा है।

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली का सम्बंध अधिकांश रूप में अंग्रेजी और अंतर्राष्ट्रीय शब्दावली से ही है। अंतर्राष्ट्रीय शब्दावली में विभिन्न तत्त्वों तथा उनके यौगिकों के प्रतीक, गणित में काम आने वाले अनेकविध, चिह्न माप-ताप की इकाइयाँ, ज्ञान-विज्ञान के सूत्र, वनस्पति एवं प्राणियों की द्वि-नामावली और वैज्ञानिकों आदि के व्यक्तिगत नामों पर आधारित शब्दों का समावेश रहता है। तकनीकी एवं वैज्ञानिक क्षेत्र में उनकी प्रगति के लिए शोध व अनुसंधान की प्रक्रिया अविरत चलती रहती है और उनकी सेवाओं का विस्तार सामान्य व्यक्तियों तक होता है। ऐसे तकनीकी तथा वैज्ञानिक क्षेत्र में समान स्तर पर विचार-विमर्श और सामान्य जन के स्तर पर अभिव्यक्ति के लिए विशिष्ट एवं निश्चित अर्थ में जो शब्द प्रयुक्त किए जाते हैं, उन्हें तकनीकी शब्द कहा जाता है। भाषाओं की रचना प्रक्रिया के अनुसार तकनीकी शब्दों में अत्यल्प परिवर्तन आदि भी देखने को मिलता है। कभी-कभी अंग्रेजी भाषा की तकनीकी शब्दावली को ही अंतर्राष्ट्रीय शब्दावली मान लेने की गलती की जाती है। वस्तुत: अंतर्राष्ट्रीय शब्दावली में अंग्रेजी, रूसी, फ्रेंच, जापानी, तुर्की, फारसी, जर्मन, लैटिन आदि विविध भाषाओं के शब्दों का समावेश रहता है।

हिन्दी में तकनीकी शब्दावली का विकास

हिन्दी में तकनीकी और वैज्ञानिक शब्दावली विगत दो-तीन दशकों से प्रचलित है। केन्द्रीय शिक्षा सलाहकार समिति ने सन् 1940 में हुए पाँचवें अधिवेशन में तकनीकी तथा वैज्ञानिक शब्दावली पर विचार-विमर्श करते हुए सिफारिश की थी कि जहाँ तक सम्भव हो अन्तर्राष्ट्रीय शब्दावली को भारतीय (अर्थात् हिन्दी) वैज्ञानिक शब्दावली में सम्मिलित कर लेना चाहिए। इस सिफारिश को स्वीकार कर लिया गया था। तदुपरांत 1948 में "अखिल भारतीय शिक्षा परिषद" ने निर्णय लिया कि–

अ) अंतर्राष्ट्रीय क्षेत्र में प्रयुक्त होने वाले शब्द, यथासम्भव ग्रहण किए जाएँ, किन्तु जो शब्दावली अंतर्राष्ट्रीय नहीं हैं, उनके लिए भारतीय भाषाओं के शब्द अपनाए जाएँ।

आ) सभी आधुनिक भारतीय भाषाओं की वैज्ञानिक शब्दावली का कोश बनाने के लिए केन्द्रीय सरकार एक बोर्ड का गठन करे। उसमें भाषाशास्त्री तथा वैज्ञानिकों को लिया जाए।

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली के बारे में जो अनेक प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न हुई थीं, उन पर डॉ० राधाकृष्णन की अध्यक्षता में "विश्वविद्यालय आयोग", जो 1948 में स्थापित हुआ था, ने भी विचार-विमर्श करते हुए निम्नलिखित सिफारिशें की थीं :

क) अंतर्राष्ट्रीय पारिभाषिक और वैज्ञानिक शब्दावली को अपना लिया जाए; दूसरी भाषाओं से आए हुए शब्द आत्मसात कर लिए जाएँ; उन्हें भारतीय भाषाओं की ध्वनि प्रणाली के अनुरूप बना लिया जाए और उनका वर्ग-विन्यास भारतीय लिपियों के ध्वनि-संकेतों के अनुसार निश्चित कर लिया जाए।

ख) राजभाषा और प्रादेशिक भाषाओं को विकसित करने के लिए तत्काल कार्यवाही की जाए।

इन सिफारिशों तथा किए गए संकल्पों आदि को दृष्टिगत रखते हुए वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली के निर्माण के लिए भारत सरकार ने शिक्षा मंत्रालय के आधीन सन् 1950 में "वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली बोर्ड" की स्थापना की थी। इस बोर्ड के तत्त्वावधान में तकनीकी शब्दावली के बारे में बहुत ठोस कार्य प्रारम्भ किये गये।

हिन्दी में वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली निर्माण के लिए सन् 1960 का वर्ष एक युग के निर्माण का वर्ष साबित हुआ। 1955 में गठित "संसदीय राजभाषा समिति" की सिफारिशों को मानते हुए भारत के राष्ट्रपति ने सन् 1960 में एक आदेश निकाला। इसके अनुसार भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के अधीन 1961 में "वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग" की स्थापना की गई। इस आयोग को निम्नांकित कार्यभार सौंपा गया–

NOTES

अ) राष्ट्रपति के 1960 में आदेश में उल्लिखित सिद्धान्तों के आधार पर वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली के क्षेत्र में तब तक किए गए कार्य का पुनर्निरीक्षण;

आ) हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं की वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली के समेकन और निर्माण से सम्बंधित सिद्धान्तों का प्रतिपादन;

इ) विभिन्न राज्यों की सहमति से या उनके निर्देश पर राज्यों के विभिन्न अभिकरणों द्वारा वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली के क्षेत्र में किए गए कार्यों का समन्वय। सम्बंधित अभिकरणों द्वारा प्रस्तुत हिन्दी अथवा अन्य भारतीय भाषाओं की शब्दावलियों के प्रयोग-व्यवहार के लिए अनुमोदन;

ई) आयोग द्वारा निर्मित या अनुमोदित शब्दावली के आधार पर मानक पाठ्यपुस्तकों का लेख, वैज्ञानिक और तकनीकी कोशों का संकलन तथा विदेशी भाषाओं में उपलब्ध वैज्ञानिक पुस्तकों का भारतीय भाषाओं में अनुवाद।

इन उद्देश्यों की पूर्ति में वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग अत्यंत सफल रहा है। इस आयोग में विभिन्न आधुनिक भारतीय भाषाओं के भाषाविदों के अतिरिक्त लब्धप्रतिष्ठ विद्वान, यूरोपीय भाषाओं के भाषाविज्ञान, प्राध्यापक आदि सम्मिलित किए गए थे। हिन्दी मानक वर्तनी आदि के साथ पारिभाषिक तथा तकनीकी शब्दावली के भाषा वैज्ञानिक स्वरूप पर विचार-विमर्श करने के लिए अलग संगोष्ठी का भी आयोजन किया गया था। तात्पर्य यह कि वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग की स्थापना से हिन्दी की मानक तकनीकी व वैज्ञानिक शब्दावली के समुचित विकास के द्वार खुल गए। हिन्दी भाषा के स्तर के साथ उसमें निहित पारिभाषिक शब्दावली के तत्वों का भी उद्घाटन सम्भव हुआ। अपना कार्य प्रारम्भ करने के बाद अर्थात् अक्टूबर, 1961 के पश्चात् इस आयोग ने अपने उद्देश्यों की परिपूर्ति के रूप में अन्य अभी अत्यावश्यक कार्यों के अलावा अनेक तकनीकी एवं वैज्ञानिक शब्दकोशों तथा शब्दावलियों का निर्माण और प्रकाशन किया। हिन्दी भाषा की प्रारम्भिक स्थिति को देखते हुए यह कार्य अत्यन्त जटिल और कठिन था, परन्तु आयोग ने पूरी कर्तव्यनिष्ठा, भगीरथ प्रयास एवं ध्येयवाद का परिचय देते हुए उसे सफलतापूर्वक किया। अब तक भौतिकी, प्राणि-विज्ञान, गणित, भूगोल, भूविज्ञान, वनस्पति विज्ञान, रसायन, अनुप्रयुक्त विज्ञान, मानविकी, अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, समाजविज्ञान, आदि के साथ प्रशासनिक तथा विभागीय शब्दावलियों का निर्माण और प्रकाशन इस आयोग के द्वारा किया गया है। इतना ही नहीं, विविध विषयों से सम्बंधित "बृहत् पारिभाषिक शब्द-संग्रह" के अनेक खंड भी प्रकाशित किए गए हैं।

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली के निर्माण के सिद्धान्त

भारत के राष्ट्रपति के अप्रैल, 1960 के आदेश के अनुसार अन्यान्य कार्यों के अलावा हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं की वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली के समेकन और निर्माण से सम्बंधित सिद्धान्तों के प्रतिपादन आदि हेतु "वैज्ञानिक तथा शब्दावली आयोग" की स्थापना अक्टूबर, 1961 में की गई। इस आयोग द्वारा वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली के निर्माण के लिए कुछ महत्वपूर्ण मार्गदर्शी सिद्धान्त अपनाये गये हैं, जो इस प्रकार हैं :

1. अन्तर्राष्ट्रीय शब्दों को यथासम्भव उनके प्रचलित अंग्रेजी रूपों में ही अपनाना चाहिए और हिन्दी व अन्य भारतीय भाषाओं की प्रकृति के अनुसार ही उनका लिप्यंतरण करना चाहिए। अन्तर्राष्ट्रीय शब्दावली के अन्तर्गत निम्नलिखित उदाहरण दिए जा सकते हैं :
   क) तत्वों और यौगिकों के नाम जैसे हाइड्रोजन, कार्बन, कार्बन-डायऑक्साइड आदि।
   ख) तोल और माप की इकाइयाँ और भौतिकी परिमाण की इकाइयाँ, जैसे–डाइन, कैलारी, ऐम्पियर आदि।
   ग) ऐसे शब्द जो व्यक्तियों के नाम पर बनाए गए हैं, जैसे–फारेनहाइट के नाम पर फारेनहाइट तापक्रम, वोल्टा के नाम पर वोल्टामीटर और ऐम्पियर के नाम पर ऐम्पियर आदि।
   घ) वनस्पति विज्ञान, प्राणिविज्ञान, भूविज्ञान आदि की द्विपदी नामावली।
   ङ) स्थिरांक जैसे π δ आदि।

च) ऐसे अन्य शब्द जिनका आमतौर पर सारे संसार में व्यवहार हो रहा है, जैसे–रेडियो, पेट्रोल, रेडार, इलेक्ट्रॉन, प्रोटॉन, न्यूट्रॉन आदि।

छ) गणित और विज्ञान की अन्य शाखाओं के संख्यांक, प्रतीक, चिह्न और सूत्र जैसे साइन, कोसाइन, टेन्जेन्ट, लॉग आदि (गणितीय संक्रियाओं में प्रयुक्त अक्षर रोमन या ग्रीक वर्णमाला के होने चाहिए)।

2. प्रतीक रोमन लिपि में अन्तर्राष्ट्रीय रूप में ही रखे जायेंगे परन्तु संक्षिप्त रूप नागरी और मानक रूपों में भी, विशेषत: साधारण तौल और माप में लिखे जा सकते हैं, जैसे सेंटीमीटर का प्रतीक cm हिन्दी में भी ऐसे ही प्रयुक्त होगा परन्तु इसका नागरी संक्षिप्त रूप सेमी० हो सकता है। यह सिद्धान्त बाल-साहित्य और लोकप्रिय पुस्तकों में अपनाया जाएगा परन्तु विज्ञान और शिल्पविज्ञान की मानक पुस्तकों में केवल अन्तर्राष्ट्रीय प्रतीक cm ही प्रयुक्त करना चाहिए।

3. ज्यामितीय आकृतियों में भारतीय लिपियों में अक्षर प्रयुक्त किए जा सकते हैं, जैसे–

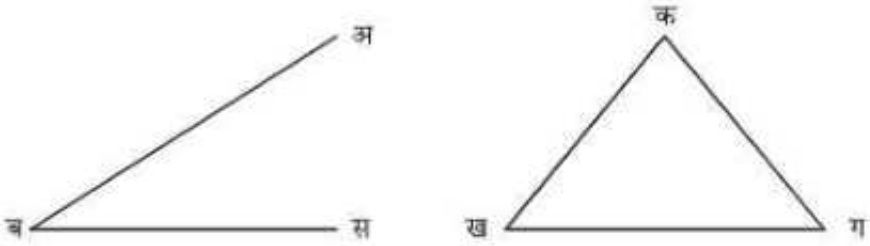

परन्तु त्रिकोणमितीय सम्बंधों में केवल रोमन अथवा ग्रीक अक्षर ही प्रयुक्त करने चाहिए, जैसे–A साइन क्रॉस B आदि।

4. संकल्पनाओं को व्यक्त करने वाले शब्दों का सामान्यत: अनुवाद किया जाना चाहिए।

5. हिन्दी पर्यायों का चुनाव करते समय सरलता, अर्थ की परिशुद्धता और सुबोधता का विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए। सुधार-विरोधी और विशुद्धिवादी प्रवृत्तियों से बचना चाहिए।

6. सभी भारतीय भाषाओं के शब्दों में यथासम्भव अधिकाधिक एकरूपता लाना ही उसका उद्देश्य होना चाहिए और इसके लिए ऐसे शब्द अपनाने चाहिए, जो–

क) अधिक से अधिक प्रादेशिक भाषाओं में प्रयुक्त होते हों, और

ख) संस्कृत धातुओं पर आधारित हों।

7. ऐसे देशी शब्द जो सामान्य प्रयोग के वैज्ञानिक शब्दों के स्थान पर हमारी भाषाओं में प्रचलित हो गए हैं, जैसे telegraph, telegram के लिए तार, continent के लिए महाद्वीप, atom के लिए परमाणु आदि; ये सब इसी रूप में व्यवहार किये जाने चाहिए।

8. अंग्रेजी, पुर्तगाली, फ्रांसीसी आदि भाषाओं के ऐसे विदेशी शब्द जो भारतीय भाषाओं में प्रचलित हो गये हैं जैसे इंजन, मशीन, लावा, मीटर, लीटर, प्रिन्स, टॉर्च आदि इसी रूप में अपनाए जाने चाहिए।

9. अन्तर्राष्ट्रीय शब्दों का देवनागरी लिपि में लिप्यंतरण : अंग्रेजी शब्दों का लिप्यंतरण इतना जटिल नहीं होना चाहिए कि उसके कारण वर्तमान देवनागरी वर्णों में नए चिह्न व प्रतीक शामिल करने की आवश्यकता पड़े। अंग्रेजी शब्दों का देवनागरीकरण करते समय लक्ष्य यह होना चाहिए कि वे मानक अंग्रेजी उच्चारण के अधिकाधिक अनुरूप हों और उनमें ऐसे परिवर्तन किए जाएं जो भारत के शिक्षित वर्ग में प्रचलित हों।

10. लिंग : हिन्दी में अपनाए गए अन्तर्राष्ट्रीय शब्दों को, अन्यथा कारण न होने पर पुल्लिंग रूप में ही प्रयुक्त करना चाहिए।

11. संकर शब्द : वैज्ञानिक शब्दावली में संकर शब्द जैसे ionization के लिए आयनीकरण, voltage के वोल्टता, ringstand के लिए चलयस्टैंड, saponifier के लिए साबुनीकारक आदि के रूप सामान्य और प्राकृतिक भाषाशास्त्रीय क्रिया के अनुसार बनाए गए हैं और ऐसे शब्द रूपों को वैज्ञानिक

NOTES

शब्दावली की आवश्यकताओं, यथा सुबोधन, उपयोगिता और संक्षिप्तता का ध्यान रखते हुए व्यवहार में लाना चाहिए।

12. वैज्ञानिक शब्दों में संधि और समास : कठिन संधियों का यथासम्भव कम से कम प्रयोग करना चाहिए और संयुक्त शब्दों के लिए दो शब्दों के बीच हाइफन लगा देना चाहिए। इससे नई शब्द रचनाओं को सरलता और शीघ्रता से समझने में सहायता मिलेगी। जहाँ तक संस्कृत पर आधारित "आदिवृद्धि" का सम्बंध है, "व्यावहारिक", "लाक्षणिक" आदि प्रचलित संस्कृत शब्दों में आदिवृद्धि का प्रयोग ही अपेक्षित है परन्तु नवनिर्मित शब्दों में इससे बचा जा सकता है।
13. हलंत : नए अपनाए हुए शब्दों में आवश्यकतानुसार हलंत का प्रयोग करके उन्हें सही रूप में लिखना चाहिए।
14. पंचम वर्ण का प्रयोग : पंचम वर्ण के स्थान पर अनुस्वार का प्रयोग करना चाहिए, परन्तु Lence| Patent आदि शब्दों का लिप्यंतरण लेंस, पेटेंट न करके लैंस, पैटेंट ही किया जाना चाहिए।

इस प्रकार उपर्युक्त सिद्धान्तों के आधार पर वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली का निर्माण किया जाना आवश्यक है।

पारिभाषिक शब्दावली एवं प्रयोजनमूलक हिन्दी

पारिभाषिक शब्दावली का सम्बंध प्रयोजनमूलक हिन्दी से अनिवार्यत: जुड़ा हुआ है। वस्तुत: प्रयोजनमूलक हिन्दी के अंगभूत अनिवार्य तत्व के रूप में पारिभाषिक शब्दावली की महत्ता अक्षुण्ण बनी हुई है। हमारे देश में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के उदय एवं विकास के साथ उसकी सटीक तथा सार्थक अभिव्यक्ति हेतु हिन्दी के प्रयोजनमूलक रूप में उसकी तकनीकी शब्दावली की नितान्त जरूरत महसूस की गई। फलत: हिन्दी में प्रशासन, विधि, विज्ञान एवं टेक्नोलॉजी से सम्बंधित पारिभाषिक शब्दावली का निर्माण एवं प्रचलन हुआ। इस प्रकार वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली के निर्माण के कारण विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हिन्दी अनुप्रयोग को अत्यधिक गति मिल गई है। अत: पारिभाषिक शब्दावली की अनुप्रयुक्तता प्रयोजनमूलक हिन्दी में एक अनिवार्य तथा अत्यन्त उपादेय तत्व के रूप में सिद्ध हुई है। इस अर्थ में प्रयोजनमूलक हिन्दी के प्रशासन, विधि, दूरसंचार, मानविकी विज्ञान, अंतरिक्ष, कम्प्यूटर तथा प्रौद्योगिकी आदि क्षेत्रों में प्रयुक्ति के उपकरण के रूप में पारिभाषिक शब्दावली की महत्ता अक्षुण्ण है।

पारिभाषिक शब्दों की पहचान

पारिभाषिक हिन्दी शब्दों की अपनी स्वतंत्र सत्ता है। हिन्दी भाषा का मूल संस्कृत है किन्तु कार्यालयीन कामकाज हेतु अन्तर्राष्ट्रीय पारिभाषिक शब्दावली को भी हिन्दी ने आत्मसात कर लिया है। फलत: हिन्दी के कुछ कूल शब्द उपसर्ग, प्रत्यय अथवा अन्य अर्थ बदल देने वाले शब्दों से एक ही शब्द के विविध शब्द भी बन गए हैं। जिन्हें आसानी से ग्रहण करने में कठिनाई होती है। ऐसे समान रूप वाले किन्तु भिन्न अर्थछटा रखने वालो शब्दों की अंतरंग पहचान आवश्यक है। इस प्रकार के कुछ महत्वपूर्ण शब्दों को अंग्रेजी शब्दों के परिप्रेक्ष्य में परखना आवश्यक जान पड़ता है। यथा–

1.	अंकन	Marking
	पर्यांकन	Endorsement
	पृष्ठांकन	Endorsement
	रेखांकन	Underlining
	सीमांकन	Demarcation
2.	अन्तर	Distance
	अंतरण	Transfer
	रूपान्तरण	Transformation
	लिप्यंतरण	Transliteration
	स्थानान्तरण	Transfer

NOTES

	भाषांतरण	Translastion
	डाक अंतरण	Mail transfer
	तार अंतरण	Telegraphic transfer
3.	अधिकारी	Officer
	प्राधिकारी	Authority
	हिताधिकारी	Beneficiary
	स्वत्वाधिकारी	Proprietor
	सर्वाधिकारी	Plenipotentiary
4.	अधीन	Under
	विचाराधीन	Under consideration
	पराधीन	Subjugated
	अधीनस्थ	Subordinate
	स्वाधीन	Independent
5.	आवेदन	Application
	पुनरावेदन	Appeal
	अभ्यावेदन	Representation
	प्रतिवेदन	Reporting
	आवेदक	Applicant
	संवेदन	Sensation
6.	आधान	To establish
	समाधान	Reconciliation
	कराधान	Taxition
	अभ्याधान	Beginning
7.	आदेश	Order
	निर्देश	Guide
	अनुदेश	Instruction
	निदेश	Direction
	अध्यादेश	Ordinance
	समादेश	Writ
	धनादेश	Money-order
8.	कर्ता	Doer
	अभिकर्ता	Agent
	ऋणकर्ता	Loanee
	उधारकर्ता	Borrower
	जमाकर्ता	Depositor
	जाँचकर्ता	Checked by
	तैयारकर्ता	Prepared by
	अनुमोदनकर्ता	Approved by
	प्रस्तुतकर्ता	Presented by
9.	कर्म	Activity
	कर्मचारी	Employee
	कार्मिक	Personnel

NOTES

	कर्मठ	Diligent
10.	करण	Doing
	अधिकरण	Agency
	प्राधिकरण	Authority/Authorisation
	एकीकरण	Ingegration
	एकत्रीकरण	Accumulation
	प्रलेखीकरण	Documentation
	प्रकरण	Chapter/Context
	अनुकरण	Imitation
11.	कथन	Statement
	प्राक्कथन	Foreword
	अभिकथन	Allegation
12.	कलन	Counting
	संकलन	Compliation
	समाकलन	Credit balance
	परिकलन	Calculation
	आकलन	Assessement
13.	कार्य	Duty/Work
	कायकारी	Acting
	कार्यभार	Duty
	कार्यक्षमता	Efficiency
	कार्यपालक	Executive
	कार्यवृत्त	Minutes/Proceedings
	कार्यान्वयन	Implementation
	कार्यात्मक	Functioning
	कार्य समिति	Working Committee
	कार्यपालक समिति/परिषद	Executive Council
	कार्यालय	Office
14.	कार	Deor
	साकर	Accepting of a bill
	आकार	Figure
	प्रकार	Kind
	साहूकार	Moneylender
	लेखाकार	Accountant
	नकार	Refusal
	सरकार	Government
15.	क्रिया	Action
	प्रक्रिया	Process
	क्रियाविधि	Procedure
	क्रियाकलाप	Activities
	क्रियाशील	Active

16.	ग्रहण	Taking
	अधिग्रहण	Acquisition
	पुनर्ग्रहण	Again taking
	परिग्रहण	Seizure
17.	तथ्य	Fact
	तथ्यहीन	Baseless
	तथ्यात्मक	Factual
	तथ्यत:	De facto
18.	तुलना	Comparative
	तुलन-पत्र	Balance sheet
	संतुलन	Balancing
	तुलनात्मक	Comparative
	अतुलनीय	Non-comparisionable
19.	तिथि	Date
	अतिथि	Guest
	अतिथि-गृह	Guest House
	आथित्य	Hospitality
	नियत तिथि	Due date
	तिथिवार	Datewise
	निर्गम तिथि	Date of issue
20.	दशम	Tenth
	दशमलव	Decimal
	दशा	Condition
21.	दर्श	Sight
	आदर्श	Ideal
	प्रतिदर्श	Model
	दर्शनी	At sight
	दर्शनी हुंडी	Bill at sight
	मार्गदर्शन	Guidence
	तदर्थ	Ad hoc
22.	दान	Donation
	उपदान	Subsidy
	अंशदान	Contribution
	अनुग्रहदान	Gratuity
	अनुदान	Grant
	दाता	Doner
	आदाता	Receiving
	प्रदाता	Paying
23.	द्वि	Two
	द्विभाषिक	Bilingual
	द्वितीय	Second
	द्विपक्षीय	Bilateral/Bipartite

NOTES

24.	नामा	Deed
	करारनामा	Agreement
	मुख्तारनामा	Power of attorney
	हलफनामा	Affidavit
	वसीयतनाम	Will
	राजीनामा	Agreement
25.	नाम	Name
	नामजदगी	Nomination
	नामांकित	Well-known
	सर्वनाम	Pronoun
26.	निवेश	Investment
	पुनर्निवेश	Re-investment
	पूँजीनिवेश	Capital Investment
27.	नियम	Rule
	नियमन	To regulate
	अधिनियम	Act
	नियमानुसार	According to rule
	नियमावली	Rules and regulations
	नियम-बाह्य	Against rule
28.	पत्र	Letter
	विपत्र	Bill
	प्रपत्र	Form
	परिपत्र	Circular
	अधिकार-पत्र	Authority letter
	माँग-पत्र	Indent
	साख-पत्र	Letter of credit
	प्रतिज्ञा-पत्र	Pledge
	अनुज्ञा-पत्र	Licence
	आवेदन-पत्र	Application
	पूँजी	Capital
29.	कार्यकारी पूँजी	Working capital
	पूँजीगत परिव्यय	Capital outlay
	अंश पूँजी	Share capital
	पूँजीगत लागत	Capital cost
	पूँजीपति	Capitalist
30.	बन्ध	Bond
	बन्धक	Mortgage
	अनुबंध	Annexture
	प्रबन्ध	Management
	निर्बन्ध	Clean
	निर्बन्ध ऋण	Clean lone
	प्रतिबंध	Restrictions

31. बही	Ledger/Book
दैनिक बही	Day book
बही पन्ना	Ledger folio
बही प्रविष्टि	Ledger entry
लेखा बही	Book of accounts
32. मूल्य	Value/Price
मूल्य-ह्रास	Depraciation
मूल्य-वृद्धि	Appreciation
मूल्यवर्ग	Denomination
मूल्यन	Valuation
मूल्यांकन	Valuation
बाजार मूल्य	Market value
मौलिक	Original/Valuable
33. योग	Total
प्रयोग	Experiment
अभियोग	Prosecution
विनियोग	Investment
योगदान	Contribution
दुरुपयोग	Misuse
34. योजन	Joining
समायोजन	Adjustment
सेवायोजन	Employment
संयोजन	To organise
नियोजन	Planning
35. योजना	Plan/Scheme
परियोजना	Project
आयोजना	Planning
36. रूप	Form
प्रारूप	Draft
स्वरूप	Nature
प्रतिरूप	Counterpart
रूपरेखा	Outline
अनुरूप	According to
37. लेख	Article
प्रलेख	Document
विलेख	Deed
आलेख	Graph
अभिलेख	Record
38. व्यय	Expenditure
अपव्यय	Extravagance
मितव्यय	Economy
अव्यय	Injuction

NOTES

	मितव्यय-पत्र	Savingram
	परिव्यय	Outlay
39.	वहन	Transportation
	परिवहन	Transport
	नौवहन	Shipping
	संवहन	Conduction
	पारवहन	Transmission
	वाहन	Conveyance
40.	वाद	Suit/Plaint
	प्रतिवाद	Respondent
	विवाद	Controversy
	संवाद	Dailogue
	अनुवाद	Translation
	वाद-विवाद	Debating
41.	विकास	Development
	विकसित	Developed
	विकासशील	Developing
	अर्द्धविकसित	Semi-developed
	सुविकसित	Well developed
	विकासोन्मुख	Development oriented
42.	भाग	Part
	विभाग	Department
	अनुभाग	Section
	प्रभाग	Division
	उपविभाग	Sub-division
43.	विधि	Law
	प्रविधि	Technique
	संविधि	Statute
	विधिक	Legal
	कार्यविधि	Procedure
	विधिवत	Judicialy
	वैधानिक	Statutory
44.	वितरण	Distribution/Delivery
	संवितरण	Disbursement
	अवितरण	Non-delivery
45.	शोध	Search
	शोधन	Purification
	संशोधन	Amendment/Modification
	परिशोधन	Revision
	प्रशोधन	Processing
	समाशोधन	Clearing
46.	शिक्षण	Education

प्रशिक्षण	Training
निरीक्षण	Inspection
आरक्षण	Reservation
प्रक्षेपण	Telecast
47. सेवा	Service
स्वयंसेवा	Self-service
सेवाकालीन	In service
सेवाकालीन प्रशिक्षण	In service training
सेवाकाल	Service period
सेवा-निवृत्ति	Retirement
48. हस्त	Hand
हस्तलिखित	Manuscript
हस्तकला	Handicraft
हस्ताक्षर	Signature
हस्तांतरण	Transference
हस्तकौशल	Manual skill
हस्तक्षेप	Interference
49. क्षेत्र	Area/Region
प्रक्षेत्र	Area/Zone
क्षेत्रीय	Regional/Territorial
क्षेत्राधिकार	Jurisdiction
क्षेत्रफल	Area
क्षेत्रिक	Territorial
क्षेपण	Interpolation
60. ज्ञान	Knowledge
विज्ञान	Science
अभिज्ञान	Identfication/Anagnorisis
अज्ञान	Ignorance
परिज्ञान	Thorough Knowledge
ज्ञापन	Memorandum

अँग्रेजी-हिन्दी

1. Agree	सहमत
Agriculture	कृषि
Agronomy	सस्य विज्ञान
Sericulture	रेशम कीट पालन
Acquaculture	जल-कृषि
Apiculture	मधुमक्खी पालन
Horticulture	बागवानी
Agragrain	भूमि सम्बंधी
2. Cast	पटकना
Caste	जाति

NOTES

	Cost	लागत
	Costal	तटिय
	Crystal	स्फटिक
3.	Able	योग्य
	Ample	विस्तृत
	Eligible	निर्वाच्य, वांछनीय
	Negligible	उपेक्षणीय
4.	Word	शब्द
	Ward	रोगीकक्ष
	Inward	आवक
	Outward	जावक
	Foreward	प्रस्ताव
	Forward	अग्रेषण
5.	Port	बंदरगाह
	Import	आयात
	Export	निर्यात
	Transport	परिवहन
	Passport	पारपत्र
	Airport	हवाई अड्डा, विमान पत्तन
6.	Co-opration	सहकारी
	Corporation	निगम
	Co-ordination	समन्वयन
	Combination	संयोग
7.	Flow	प्रवाह
	Fallow	परती भूमि
	Follow	अनुसरण
	Fellow	सदस्य, फेलो
8.	Bond	बंधपत्र
	Mortgage	गिरवी
	Pledge	रेहन
	Hypothecation	दृष्टि बंधन
9.	Fire	आग
	Fare	भाड़ा
	Fear	भय
	Fair	स्पष्ट, सुन्दर
	Fever	ज्वर
	Fevour	अनुग्रह
	Figure	रूप, आकार
10.	Fight	लड़ाई
	Right	अधिकार
	Might	पतंग
	Bright	तेजस्वी

NOTES

	Freight	भाड़ा
11.	Action	कार्रवाई
	Auction	नीलामी
	Acting	कार्यकारी
12.	Tear	अश्रु
	Tire	थकना
	Retire	निवृत्त
	Satire	प्रहसन
	Modify	परिवर्तन करना
	Clerify	स्पष्ट करना
	Certify	प्रमाणित करना
	Simplify	सरल करना
13.	Note	ध्यान देना, नोट करना
	Noting	टिप्पणी
	Notice	सूचना
	Notification	अधिसूचना
14.	Allay	शान्त
	Ailey	गली, पगडंडी
	Alloy	मिश्रधातु
	Ally	सन्धिबद्ध राष्ट्र
15.	Convince	स्वीकार कराना
	Conveyance	वाहन
	Convenience	सुविधा
	Convenance	औचित्य
16.	Direction	निर्देशन
	Distinction	श्रेष्ठता
	Destination	गंतव्य
	Deputation	प्रतिनियुक्ति
	Delegation	शिष्टमण्डल
	Dedication	कर्मठता
	Devotation	समर्पण
	Deduction	कटौती
17.	Doer	कर्त्ता
	Door	दरवाजा
	Dear	प्रिय
	Deer	हरिण
	Dare	हिम्मत
	Dearness	महँगाई
18.	Expert	विशेषज्ञ
	Expect	प्रत्याशा, प्रतीक्षा
	Expept	के सिवाय
	Accept	स्वीकार करना

स्व प्रगति की जाँच करें:

3. किसी भी भाषा के पारिभाषिक शब्द के लिए किन गुणों का होना आवश्यक माना जाता है।
4. पारिभाषिक शब्दावली एवं प्रयोजनमूलक हिन्दी पर छोटा नोट लिखें।

NOTES

19.	Safety	सुरक्षा
	Surity	जमानत
	Security	प्रतिभूति
	Sincerity	ईमानदारी
	Seniority	वरीयता
20.	Parcel	पार्सल
	Partial	आंशिक
	Personal	व्यक्तिगत, निजी
	Personnel	कार्मिक
21.	Bell	घंटा
	Bail	जमानत
	Bill	बिल
	Bull	तेजड़िया
	Bale	गठरी
22.	Grant	स्वीकृत
	Grand	भव्य/विशाल
	Great	महान
	Grade	श्रेणी
	Grate	पिसना
23.	Pain	दर्द
	Plain	समतल
	Plane	विमान/वायुयान
	Plan	योजना
	Plant	संयंत्र
24.	Farm	खेत
	Form	प्रपत्र
	From	प्रेषक
	Firm	दुकान
	Firm	अटल
25.	Here	यहाँ
	Hear	सुनना
	Hire	किराये पर
	Hair	केश
	Heir	वारिस
	Higher	उच्च

पत्रकारिता से सम्बन्धित 100 शब्द : पत्रकारिता की भूमिका

1920 के दशक में, जैसा कि आधुनिक पत्रकारिता स्वरूपित हो रही थी, लेखक वाल्टर लिपमैन तथा अमेरिकी दार्शनिक जॉन डेवेई ने लोकतंत्र में पत्रकारिता की भूमिका पर चर्चा की। उनके भिन्नकारी दर्शन अभी भी राष्ट्र तथा समाज में पत्रकारिता की भूमिका के संदर्भ में एक चर्चा को विशेषित करते हैं। लिपमैन ने समझा कि उस समय पत्रकारिता की भूमिका, नीति नियंता कुलीन वर्गों तथा आम जनता के मध्य अनुवादक या मध्यस्थ की है। पत्रकार मध्यस्थ बन गया। जब कुलीन वर्ग बोलता था, पत्रकार सूचना

को सुनते तथा रिकॉर्ड करते थे। सूचना का अर्क निष्कर्षण करने के उपरान्त, उसे उपभोग हेतु जनता के समक्ष भेज देते थे। इसके पीछे उनका तर्क था कि जनता आधुनिक समाज में विद्यमान सूचना की हड़बड़ी की जटिलता तथा उसके विकास को ध्वस्त करने की स्थिति में नहीं थी और इसलिए जनता हेतु समाचार शोधान के लिए मध्यस्थ की आवश्यकता थी। लिपमैन ने इसको इस प्रकार रखा : जनता जटिल राजनैतिक मुद्दों को समझने हेतु पर्याप्त समझदार नहीं है। इसके आगे, जनता अपने दैनिक जीवन में इतनी व्यस्त थी कि उसे जननीति की सुधा लेने की फुर्सत नहीं थी। अत: जनता को, सूचना सरल तथा साधारण बनाने हेतु और उच्चवर्ग के निर्णयों तथा चिंताओं को समझाने हेतु किसी की आवश्यकता थी। लिपमैन का मानना था कि जनता अपने वोट के माध्यम से उच्चवर्ग के निर्णय लेने के अधिकार को प्रभावित करेगी। इसी समय, संभ्रात वर्ग (अर्थात् राजनीतिज्ञ, नीतिनियंता, नौकरशाह, वैज्ञानिक इत्यादि) सत्ता के व्यापार को चलाते रहे होंगे। लिपमैन के शब्दों में, पत्रकार की भूमिका होती है कि वह जनता को उच्चवर्ग के क्रियाकलापों के बारे में सूचित करें। उसका कार्य उच्च वर्ग पर निगरानी रखने का भी है, जैसा कि जनता वोटों के माध्यम से अपनी अन्तिम बात कहती थी। इसने प्रभावी रूप से जनता को सत्ता की अन्तिम कड़ी पर रखा, जो विशेषज्ञों/कुलीन वर्गों द्वारा हस्तांतरित सूचना के प्रवाह को प्राप्त करती थी। लिपमैन के संभ्रान्तवाद के ऐसे परिणाम आये, जिस पर उसने शोक प्रकट किया। इतिहासवाद तथा विज्ञानवाद के दूत, लिपमैन लोकतांत्रिक सरकार को समस्याग्रस्त अभ्यास नहीं मानते थे परन्तु हर प्रकार की सभी राजनैतिक शक्तियों या समुदायों के लिए सटीक सूचना तथा मायूस निर्णय हेतु श्रेष्ठ साझेदारी द्वारा मार्गदर्शन की आश्यकता को महत्वपूर्ण मानते थे। "लिबर्टी एण्ड द न्यूज (1919)" तथा "पब्लिक ओपीनियन (1921)" में, लिपमैन ने आशा जतायी थी कि वैज्ञानिक तथा ऐतिहासिक संभावनाओं के लिए स्वतंत्रता को पुन: परिभाषित किया जा सकेगा तथा जनभावना को सरकार के भीतर तथा बाहर के खुफिया तंत्र द्वारा प्रबन्धित किया जा सकेगा। अत: पत्रकार की स्वतंत्रता, सत्यापित हेतु संभव तथ्यों के एकत्रण के प्रति समर्पित थी जबकि उनके जैसे टिप्पणीकार समाचार को व्यापक संभावनाओं में रखते होंगे। लिपमैन ने शक्तिशाली समाचार पत्र प्रकाशकों के प्रभाव पर शोक व्यक्त किया तथा "विज्ञान के संयमी तथा निर्भीक" व्यक्तियों के निर्णयों को वरीयता दी। ऐसा करने में, उसने न सिर्फ बाहुलता की भावना को आहत किया परन्तु शक्तिशालियों तथा प्रभावशालियों की भावनाओं को ठेस पहुँचायी। गणतांत्रिक सरकार के प्रारूप में, प्रतिनिधियों का चयन जनता करती है और उनके साथ शासन के मौलिक सिद्धान्तों तथा राजनैतिक संस्थाओं के प्रति समर्पण को साझा करती है। लिपमैन का झगड़ा उन्हीं सिद्धान्तों तथा संस्थाओं के साथ था, उसके लिए यह पूर्व वैज्ञानिक तथा पूर्व ऐतिहासिक दृष्टिकोणों के उत्पाद थे तथा उसके प्रति यह आधारहीन प्राकृतिक अधिकार दर्शन था। परन्तु लिपमैन, स्वयं द्वारा कहे जाने वाले उन्नतिशील आन्दोलन के "एकत्रणता" के विरूद्ध खड़ा हुआ। उसने सरकार तथा अमेरिकी राजनीति के आधारों पर जोर नहीं देकर प्रोत्साहित किया तथा अन्त में एक पुस्तक "द पब्लिक फिलॉस्फी (1955)" की रचना की, जो अमेरिकी संस्थापकों के सिद्धान्तों की वापसी के काफी समीप आ गयी थी। वहीं दूसरी तरफ, देवेई का मानना था कि जनता न सिर्फ उच्च वर्ग द्वारा निर्मित मुद्दों को समझने में सक्षम है, निर्णयों की चर्चा तथा बहस के उपरान्त सार्वजनिक मंच पर निष्पादित करना चाहिए। जब मुद्दों पर सघन चिंतन होगा, तब सर्वोत्तम विचार सतह पर प्रस्फुटित होंगे। डेवेई का विश्वास था कि पत्रकारों को सूचनाओं के आदान प्रदान तक सीमित नहीं रहना चाहिए। उसका मानना था कि उसको वर्तमान में चल रही राजनीति के परिणामों का आंकलन करना चाहिए। कालान्तर में, उसके विचार को विभिन्न सीमा तक क्रियान्वित किया गया और उसे आम तौर पर कम्युनिटी जर्नलिस्म (सामुदायिक पत्रकारिता) के नाम से जाना जाने लगा। सामुदायिक पत्रकारिता का यह सिद्धान्त पत्रकारिता में नये विकासों के केन्द्र में है। इस नये प्रतिरूप में, पत्रकार सामग्री के उत्पादन तथा साध्य में लोगों तथा विशेषज्ञों/उच्च वर्गों को संलग्न करने में समर्थ हैं। उल्लेख महत्वपूर्ण है कि जबकि समानता की परिकलपना है, डेवेई फिर भी विशेषज्ञता से लाभान्वित/आनन्दित होता है।

डेवेई के ढाँचे में विशेषज्ञों तथा विद्वानों का स्वागत है परन्तु पत्रकारिता तथा समाज की लिपमैन समझ में उत्तराधिकार का ढाँचा मौजूद नहीं है। डेवेई के अनुसार, संवाद, चर्चा तथा बातचीत जनतंत्र के हृदय में मौजूद रहती है। जबकि लिपमैन का पत्रकारीय दर्शन सरकारी नेताओं को ज्यादा स्वीकार्य हो सकता

NOTES

है, डेबेई का दृष्टिकोण कि समाज में कितने पत्रकार अपनी भूमिका को देखते हैं, अधिक उत्तम वर्णन है और उत्तर में, समाज कितने पत्रकारों को कार्य करते देखना चाहता है। उदाहरण के लिए, अमेरिकी पत्रकारों द्वारा वायदा किये गये कुछ अधिकताओं की आलोचना कर सकते हैं परन्तु वह पत्रकारों से सरकार, व्यापार तथा अभिनेताओं की निगरानी की अपेक्षा करते हैं और आशा करते हैं कि वह समय पर मामलों पर निर्णय लेने में सूचनाएँ प्रदान करें।

शब्दकोश

शब्दकोश (पारम्परिक वर्तनी:शब्दकोष) एक बडी सूची होती है जिसमें शब्दों के साथ उनके अर्थ व व्याख्या लिखी होती है। शब्दकोश एकभाषीय हो सकते हैं, द्विभाषिक हो सकते हैं या बहुभाषिक हो सकते हैं। अधिकतर शब्दकोशों में शब्दों के उच्चारण के लिये भी व्यवस्था होती है, जैसे - अन्तर्राष्ट्रीय ध्वन्यात्मक लिपि में, देवनागरी में या आडियो सूँचिका के रूप में। कुछ शब्दकोशों में चित्रों का सहारा भी लिया जाता है। अलग-अलग कार्य-क्षेत्रों के लिये अलग-अलग शब्दकोश हो सकते हैं; जैसे - विज्ञान शब्दकोश, चिकित्सा शब्दकोश, विधिक (कानूनी) शब्दकोश, गणित का शब्दकोश आदि।

सभ्यता और संस्कृति के उदय से ही मानव जान गया था कि भाव के सही संप्रेषण के लिए सही अभिव्यक्ति आवश्यक है। सही अभिव्यक्ति के लिए सही शब्द का चयन आवश्यक है। सही शब्द के चयन के लिए शब्दों के संकलन आवश्यक हैं। शब्दों और भाषा के मानकीकरण की आवश्यकता समझ कर आरंभिक लिपियों के उदय से बहुत पहले ही आदमी ने शब्दों का लेखा-जोखा रखना शुरू कर दिया था। इस के लिए उस ने कोश बनाना शुरू किया। कोश में शब्दों को इकट्ठा किया जाता है।

इतिहास

सबसे पहले शब्द संकलन भारत में बने। हमारी यह शानदार परंपरा वेदों में कम से कम पाँच हज़ार सालपुरानी है। प्रजापति कश्यप का निघंटु संसार का प्राचीनतम शब्द संकलन है। इस में 18 सौ वैदिक शब्दों को इकट्ठा किया गया है। निघंटु पर महर्षि यास्क की व्याख्या निरुक्त संसार का पहला शब्दार्थ कोश (डिक्शनरी) एवं विश्वकोष (ऐनसाइक्लोपीडिया) है। इस महान शृंखला की सशक्त कड़ी है छठी या सातवीं सदी में लिखा अमर सिंह कृत नाम लिंगानुशासन या त्रिकांड जिसे सारा संसार अमरकोश के नाम से जानता है। अमरकोश को विश्व का सर्वप्रथम समान्तर कोश (थेसेरस) कहा जा सकता है।

भारत के बाहर संसार में शब्द संकलन का एक प्राचीन प्रयास अक्कादियाई संस्कृति की शब्द सूची है। यह शायद ईसा पूर्व सातवीं सदी की रचना है। ईसा से तीसरी सदी पहले की चीनी भाषा का कोश है इत्यादि।

आधुनिक कोषों की नीवँ डाली इंग्लैंड में 1755 में सैमुएल जानसन ने। उन की डिक्शनरी सैमुएल जॉन्संस डिक्शनरी ऑफ़ इँग्लिश लैंग्वेज ने कोशकारिता को नए आयाम दिए। इस में परिभाषाएँ भी दी गई थीं। असली आधुनिक कोश आया इक्यावन साल बाद 1806 में अमरीका में नोहा वैब्स्टर्स की नोहा वैब्स्टर्स ए कंपैंडियस डिक्शनरी आफ़ इँग्लिश लैंग्वेज प्रकाशित हुई। इस ने जो स्तर स्थापित किया वह पहले कभी नहीं हुआ था। साहित्यिक शब्दावली के साथ साथ कला और विज्ञान क्षेत्रों को स्थान दिया गया था। कोश को सफल होना ही था, हुआ। वैब्स्टर के बाद अंग्रेजी कोषों के संशोधन और नए कोशों के प्रकाशन का व्यवसाय तेज़ी से बढ़ने लगा। आज छोटे बड़े हर शहर में, किताबों की दुकानें हैं। हर दुकान पर कई कोश मिलते हैं। हर साल कोशों में नए शब्द सम्मिलित किए जाते हैं।

आधुनिक कोश की विधाएँ

आधुनिक कोश रचना के विविध प्रकारों की सौक्षिप्त चर्चा यहाँ अनावश्यक न होगी । वर्तमान युग ने कोशविद्या को अत्यंत व्यापक परिवेश में विकसित किया । सामान्य रूप से उसकी दो मोटी-मोटी विधाएँ कही जा सकती हैं - (1) शब्दकोश और (2) ज्ञानकोश । शब्दकोश के स्वरूप का बहुमुखी प्रवाह निरंतर प्रौढ़ता की ओर बढ़ता लक्षित होता रहा है। आज की कोशविद्या का विकसित स्वरूप भाषा विज्ञान,

व्याकरणशास्त्र, साहित्य, अर्थविज्ञान, शब्दप्रयोगीय, ऐतिहासिक विकास, संदर्भ सापेक्ष अर्थविकास और नाना शासकों तथा विज्ञानों में प्रयुक्त विशिष्ट अर्थों के बौद्धिक और जागरूक शब्दार्थ संकलन का पुंजीकृत परिणाम है ।

हमारे परिचित भाषाओं के कोशों में ऑक्सफोर्ड-इंग्लिश-डिक्शनरी के परिशीलन में उपर्युक्त समस्त प्रवृत्तियों का उत्कृष्ट निदर्शन देखा जा सकता है। उसमें शब्दों के सही उच्चारण का संकेत-चिन्हों से विशुद्ध और परिनिष्ठित बोध भी कराया है। यूरोप के उन्नत और समृद्ध देशों की प्राय: सभी भाषाओं में विकसित स्तर की कोशविद्या के आधार पर उत्कृष्ट, विशाल, प्रमाणिक और संपन्न कोशों का निर्माण हो चुका है और उन दोषों में कोशनिर्माण के लिये ऐसे स्थायी संस्थान प्रतिष्ठापित किए जा चुके हैं जिनमें अबाध गति से सर्वदा कार्य चलता रहता है। लब्धप्रतिष्ठा और बड़े-बड़े विद्वानों का सहयोग तो उन संस्थानों को मिलता ही है, जागरूक जनता भी सहयोग देती है। अंग्रेजी डिक्शनरी तथा अन्य भाषाओं में निर्मित कोशकारों के रचना-विधान-मूलक वैशिष्ट्यों का अध्ययन करने से अद्यतन कोशों में निम्ननिर्दिष्ट बातों का अनुयोग आवश्यक लगता है

(क) उच्चारण सूचक संकेत चिन्हों के माध्यम से शब्दों के स्वरों व्यंजनों का पूर्णत: शुद्ध और परिनिष्ठित उच्चारण स्वरूप बताना और स्वराघात बलाघात का निर्देश करते हुए यथासंभव उच्चार्य अंश के अक्षरों की बद्धता और अबद्धता का परिचय देना;

(ख) व्याकरण संबंद्ध उपयोगी और आवश्यक निर्देश देना;

(ग) शब्दों की इतिहास- संबंद्ध वैज्ञानिकव्युत्पत्ति प्रदर्शित करना;

(घ) परिवार संबंद्ध अथवा परिवारमुक्त निकट या दूर के शब्दों के साथ शब्दरूप और अर्थरूप का तुलनात्मक पक्ष उपस्थित करना;

(ङ) शब्दों के विभिन्न और पृथक्कृत नाना अर्थों को अधिकाधिक प्रयोग क्रमानुसार सूचित करना;

(च) अप्रयुक्त-शब्दो अथवा शब्दप्रयोगों की विलोपसूचना देना;

(छ) शब्दों के पर्याय बताना; और

(ज) संगत अर्थों के समानार्थ उदाहरण देना;

(झ) चित्रों, रेखाचित्रों, मानचित्रों आदि के द्वारा अर्थ को अधिक स्पष्ट करना ।

'आक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी का नव्यतम और बृहत्तम संस्करण आधुनिक कोशविद्या की प्राय: सभी विशेषताओं से संपन्न है। नागरीप्राचारिणी सभा के हिंदी शब्दसागर के अतिरिक्त हिंदी साहित्य सम्मेलन द्वारा प्रकाश्यमान मानक शब्दकोश एक विस्तृत आयास है। हिंदी कोशकला के लब्धप्रतिष्ठ संपादक श्रीरामचंद्र वर्मा के इस प्रशंसनीय कार्य का उपजीव्य भी मुख्यत: शब्दसागर ही है। उसका मूल कलेवर तात्विक रूप में शब्दसागर से ही अधिकांशत: परिकल्पित है। हिंदी के अन्य कोशों में भी अधिकांश सामग्री इसी कोश से ली गयी है । थोडे-बहुत मुख्यत: संस्कृत कोशों से और यदा-कदा अन्यत्र से शब्दों और अर्थों को आवश्यक अनावश्यक रूप में ठूँस दिया गया है। ज्ञानमंडल के वृहद् हिंदी शब्दकोश में पेटेवाली प्रणाली शुरू की गई है। परंतु वह पद्धति संस्कृत के कोशों में जिनका निर्माण पश्चिमी विद्वानों के प्रयास से आरंभ हुआ था, सैकड़ों वर्ष पूर्व से प्रचलित हो गई थी। पर आज भी, नव्य या आधुनिक भारतीय भाषाओं के कोश उस स्तर तक नहीं पहुँच पाए हैं जहाँ तक ऑक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी अथवा रूसी, अमेरिकन, जर्मन, इतालो, फ्रांसीसी आदि भाषाओं के उत्कृष्ट और अत्यंत विकसित कोश पहुँच चुके हैं।

कोष रचना की ऊपर वर्णित विधा को हम साधारणत: सामान्य भाषा शब्दकोश कह सकते हैं । इस प्रकार शब्दकोश एकभाषी, द्विभाषी, त्रिभाषी और बहुभाषी भी होते हैं। बहुभाषी शब्दकोशों में तुलनात्मक शब्दकोश भी यूरोपीय भाषाओं में ऐतिहासिक और तुलनात्मक भाषाविज्ञान की प्रौढ़ उपलब्धियों से प्रमाणीकृत रूप में निर्मित हो चुके हैं। इनमें मुख्य रूप से भाषावैज्ञानिक अनुशीलन और शोध के

NOTES

परिणामस्वरूप उपलब्ध सामग्री का नियोजन किया गया है। ऐसे तुलनात्मक कोष भी आज बन चुके हैं जिनमें प्राचीन भाषाओं की तुलना मिलती है। ऐसे भी कोश प्रकाशित हैं जिनमें एक से अधिक मुल परिवार की अनेक भाषाओं के शब्दों का तुलनात्मक परिशीलन किया गया है।

शब्दकोशों के नाना रूप

शब्दकोशों के और भी नाना रूप आज विकसित हो चुके हैं और हो रहे हैं । वैज्ञानिक और शास्त्रीय विषयों के सामूहिक और उस-उस विषय के अनुसार शब्दकोश भी आज सभी समृद्ध भाषाओं में बनते जा रहे हैं । शाखाओं और विज्ञानशाखाओं के पारिभाषिक शब्दकोश भी निर्मित हो चुके हैं और हो रहे हैं । इन शब्दकोशों की रचना एक भाषा में भी होती है और दो या अनेक भाषाओं में भी । कुछ में केवल पर्याय शब्द रहते हैं और कुछ में व्याख्याएँ अथवा परिभाषाएँ भी दी जाती है । विज्ञान और तकनीकी या प्रविधिक विषयों से संबद्ध नाना पारिभाषिक शब्दकोशों में व्याख्यात्मक परिभाषाओं तथा कभी कभी अन्य साधनों की सहायता से भी बिलकुल सही अर्थ का बोध कराया जाता है। दर्शन, भाषाविज्ञान, मनोविज्ञान, समाजविज्ञान और समाजशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र आदि समस्त आधुनिक विद्याओं के कोश विश्व की विविध संपन्न भाषाओं में विशेषज्ञों की सहायता से बनाए जा रहे हैं और इस प्रकृति के सैकडों-हजारों कोश भी बन चुके हैं । शब्दार्थ कोश संबंधी प्रकृति के अतिरिक्त इनमें ज्ञानकोशात्मक तत्वों की विस्तृत या लघु व्याख्याएँ भी संमिश्रित रहती है। प्राचीन शासन और दर्शनों आदि के विशिष्ट एवं पारिभाषिक शब्दों के कोश भी बने हैं और बनाए जा रहे हैं । अनके अतिरिक्त एक-एक ग्रंथ के शब्दार्थ कोश (यथा मानस शब्दावली) और एक-एक लेखक के साहित्य की शब्दावली भी योरप, अमेरिका और भारत आदि में संकलित हो रही है। इनमें उत्तम कोटि के कोशकारों ने ग्रंथ संदर्भों के संस्करणात्मक संकेत भी दिए हैं। अकारादि वर्णानुसारी अनुक्रमणिकात्मक उन शब्दसूचियों का जिनके अर्थ नहीं दिए जाते हैं, पर संदर्भ संकेत रहता हैं। यहाँ उल्लेख आवश्यक नहीं है। यूरोप और इंगलैंड में ऐसी शब्दसूचियाँ अनेक बनीं। शेक्सपियर द्वारा प्रयुक्त शब्दों की ऐसी अनुक्रमणिका परम प्रसिद्ध है। वैदिक शब्दों की और ऋक्संहिता में प्रयुक्त पदों की ऐसी शब्दसूचियों के अनेक संकलन पहले ही बन चुके हैं। व्याकरण महाभाष्य की भी एक एक ऐसी शब्दानुक्रमणिका प्रकाशित है। परंतु इनमें अर्थ न होने के कारण यहाँ उनका विवेचन नहीं किया जा रहा है।

आधुनिक कोशविद्या : तुलनात्मक दृष्टि

भारत में कोशविद्या के आधुनिक स्वरुप का उद्भव और विकास मध्यकालीन हिंदी कोशों की मान्यता और रचना प्रक्रिया से भिन्न उद्देश्यों को लेकर हुआ । पाश्चात्य कोशों के आदर्श, मान्यताएँ, उद्देश्य, रचनाप्रक्रिया और सीमा के नूतन और परिवर्तित आयामों का प्रवेश भारत की कोश रचनापद्धति में आरंभ हुआ । संस्कृत और इतर भारतीय भाषाओं में पाश्चात्य तथा भारतीय विद्वानों के प्रयास से छोटे-बडे बहुत से कोश निर्मित हुए। इन कोशों का भारत और भारत के बाहर भी निर्माण हुआ । आरंभ में भारतीय भाषाओं के, मुख्यत: संस्कृत के, कोश अंगरेजी, जर्मन, फ्रेंच आदि भाषाओं के माध्यम से बनाए गए । इनमें संस्कृत आदि के शब्द भी रोमन लिपि में रखे गए । शब्दार्थ की व्याख्या और अर्थ आदि के निर्देश कोश की भाषा के अनुसार जर्मन, अंगरेजी, फारसी पुर्तगाली आदि भाषाओं में दिए गए । बँगला, तमिल आदि भाषाओं के ऐसे अनके काशों की रचना ईसाई धर्म प्रचारकों द्वारा भारत और आसपास के लघु द्वीपों में हुई। हिंदी के भी ऐसे अनेक कोश बने। सबसे पहला शब्दकोश संभवत: फरग्युसन का 'हिंदुस्तानी अंग्रेजी' (अंग्रेजी हिंदुस्तानी) कोश था जो कि लंदन में प्रकाशित हुआ । इन आरंभिक कोशों को हिंदुस्तानी कोश कहा गया । ये कोश मुख्यत हिंदी के ही थे । पाश्चात्य विद्वानों के इन कोशों में हिंदी को हिंदुस्तानी कहने का कदाचित यह कारण है कि हिंदुस्तान भारत का नाम माना गया, और वहाँ की भाषा हिंदुस्तानी कही गई । कोशविद्या के इन पाश्चात्य पंडितों की दृष्टि में हिंदी का ही पर्याय हिंदुस्तानी था और वही सामान्य रुप में हिंदुस्तान की राष्ट्रभाषा थी ।

आरंभिक क्रम में कोशनिर्माण की प्रेरणात्मक चेतना का बहुत कुछ सामान्य रुप भारत और पश्चिम में मिलता जुलता था । भारत का वैदिक निघंटु विरल और क्लिष्ट शब्दों के अर्थ और पर्यायों का संक्षिप्त

संग्रह था । यूरोप में भी ग्लासेरिया से जिस कोशविद्या का आरंभिक बीजवपन हुआ था, उसके मूल में बड़ी विरल और क्लिष्ट शब्दों का पर्याय द्वारा अर्थबोध कराना ही उद्देश्य था । लातिन की उक्त शब्दार्थ सूची से शनैः शनैः पश्चिम की आधुनिक कोशविद्या के वैकासिक सोपान आविर्भूत हुए । भारत और पश्चिम दोनों ही स्थानों में शब्दों के संकलन में वर्गपद्धति का कोई न कोई रुप मिल जाता है । पर आगे चलकर नव्य कोशों का पूर्वोक्त प्राचीन और मध्यकालीन कोशों से जो सर्वप्रथम और प्रमुखतम भेदक वैशिष्ट्य प्रकट हुआ वह था – 'वर्णमालाक्रमानुसारी शब्दयोजना' की पद्धति ।

आधुनिक कोश: सीमा और स्वरूप

योरप में आधुनिक कोशों का विकास हुआ, उसकी रूपरेखा का संकेत किया जा चुका है। योरप, एशिया और अफ्रीका के उस तटभाग में जो अरब देशों के प्रभाव में आया था, उक्त पद्धति के अनुकरण पर कोशों का निर्माण होने लगा था । भारत में व्यापक पैमाने पर जिस रूप कोश निर्मित होते चले, उनकी संक्षिप्त चर्चा की जा चुकी है । इन सबके आधार पर उत्तम कोटि के आधुनिक कोषों की विशिष्टताओं का आकलन करते हुए, कहा जा सकता है:

(क) आधुनिक कोशों में शब्दप्रयोग के ऐतिहाससिक क्रम की सरणि दिखाने के प्रयास को बहुत महत्व दिया गया है । ऐसे कोश को ऐतिहासिक विवरणात्मक कहा जा सकता है । उपलब्ध प्रथम प्रयोग और प्रयोगसंदर्भ का आधार लेकर अर्थ और उनके एकमुखी या बहुमुखी विकास के सप्रमाण उपस्थापन की चेष्टा की जाती है। दूसरे शब्दों में इसे हम शब्दप्रयोग और तद् बोध्यार्थ के रूप की आनुक्रमिक या इतिहासानुसारी विवेचना कह सकते है । इसमें उद्धरणों का उपयोग दोनों ही बातों (शब्दप्रयोग और अर्थविकास) की प्रमाणिकता सिद्ध करते हैं ।

(ख) आधुनिक कोशकार के द्वार संगृहीत शब्दों और अर्थों के आधार का प्रामाण्य अपेक्षित होता है। प्राचीन कोशकार इसके लिये बाध्य नहीं था । वह स्वतः प्रमाण समझा जाता था। पूर्व तंत्रों या ग्रंथों का समाहार करते हुए यदा-कदा इतना भी कह देना उसके लिये बहुधा पर्याप्त हो जाता था। पर आधुनिक कोशों में ऐसे शब्दों के संबंध में जिनका साहित्य व्यवहार में प्रयोग नहीं मिलता, यह बताना भी आवश्यक हो जाता है कि अमुक शब्द या अर्थ कोशीय मात्र हैं।

(ग) आधुनिक कोशों की एक दूसरी नई धारा ज्ञानकोशात्मक है जिनकी उत्कृष्ट विश्वकोष के नाम से सामने आता है । अन्य रूप पारिभाषिक शब्दकोश, विषयकोश, चरितकोश, ज्ञानकोश, शब्दकोश आदि नाना रूपों में अपना विस्तार करते चल रहे हैं।

(घ) आधुनिक शब्दकोशों में अर्थ की स्पष्टता के लिये चित्र, रेखा-रत्न, मानचित्र आदि का उपयोग भी किया जाता है।

(ङ) विशुद्ध शास्त्रीय वाङ्मय (शास्त्र) के प्राचीन स्तर से हटकर आज के कोश वैज्ञानिक अथवा विज्ञानकल्प रचनाप्रक्रिया के स्तर पर पहुँच गए। ये कोश रूप विकास से अर्थविकास की ऐतिहासिक प्रमाणिकता के साथ साथ भाषा वैज्ञानिक सिद्धांत की संगति ढूँढने का पूर्ण प्रयत्न करते हैं । आधुनिक भाषाओं के तद्भव, देशी और विदेशी शब्दों के मूल और सार ढूँढने की चेष्टा की जाती है। कभी कभी प्राचीन भाषा या भाषाओं के मूलस्रोतों की गवेषण के व्युत्पत्ति-दर्शन के सदर्भ में महत्वपूर्ण प्रयास होता है। उदाहरणार्थ प्राचीन भारत यूरोपी आर्यभाषा के बहुभाषी तुलनात्मक कोशों में मूल आर्यभाषा (या आर्यों के 'फादर लैग्वेज') के कल्पित मूलरुपों वा अनुमान किया जाता है। दूसरे शब्दों में इसका तात्पर्य यह है कि आधुनिक उत्कृष्ट कोशों में जहाँ एक ओर प्राचीन और पूर्ववती वाङ् मय का शब्दप्रयोग के श्रमिक ज्ञान के लिये ऐतिहासिक अध्ययन होता है, वहाँ भाषाविज्ञान के ऐतिहासिक, तुलनात्मक और वर्णनात्मक दृष्टिपक्षों का प्रौढ़ सहयोग और विनियोग अपेक्षाकृत रहता है । कोशविज्ञान की नूतन रचना प्रक्रिया आज के युग में भाषाविज्ञान के नाना प्रकारों से बहुत ही प्रभावित हो गई है । इस प्रभाव की दूरगामी व्याप्ति का नीचे की पंक्तियों में संक्षेपतः संकेत किया जा रहा है ।

NOTES

मशीन-पठनीय शब्दकोश

आजकल ऐसे कम्प्यूटर प्रोग्राम उपलब्ध हैं जो शब्दकोश के सारे काम करते हैं। वे कागज पर मुद्रित नहीं हैं बल्कि किसी विशिष्ट फाइल-फॉर्मेट में हैं और किसी 'डिक्शनरी सॉफ्टवेयर' के द्वारा प्रयोक्ता को शब्दार्थ ढूढ़ने में मदद करते हैं। इनमें कुछ ऐसी सुविधाएँ भी उपलब्ध हैं जो परम्परागत शब्दकोशों में सम्भव ही नहीं है; जैसे शब्द का उच्चारण ध्वनि के माध्यम से देना आदि।

कोश रचना की प्रक्रिया और भाषाविज्ञान

कोश निर्माण का शब्दसंकलन सर्वप्रमुख आधार है। परन्तु शब्दों के संग्रह का कार्य अत्यत कठिन है। मुख्य रूप में शब्दों का चयन दो स्रोतों से होता है –

(1) लिखित साहित्य से और

(2) लोकव्यवहार और लोकसाहित्य से ।

लिखित साहित्य से संग्रह शब्दों के लिये हस्तलिखित और मुद्रित ग्रंथों का सहारा लिया जाता है। परंतु इसके अंतर्गत प्राचीन हस्तलेखों और मुद्रित ग्रथों के आधार पर जब शब्द संकलन होता है तब उभयविध आधारग्रंथों की प्रमाणिकता और पाठशुद्धि आवश्यक होती है। इनके बिना गृहीत शब्दों का महत्व कम हो जाता है और उनसे भ्रमसृष्टि की संभावना बढ़ती है।

विश्व ज्ञानकोष

विश्वज्ञानकोष, विश्वकोष या ज्ञानकोष ऐसी पुस्तक को कहते हैं जिसमें विश्वभर की तरह तरह की जानने लायक बातों को समावेश होता है। विश्वकोश का अर्थ है विश्व के समस्त ज्ञान का भंडार। अत: विश्वकोश वह कृति है जिसमें ज्ञान की सभी शाखाओं का सन्निवेश होता है। इसमें वर्णानुक्रमिक रूप में व्यवस्थित अन्यान्य विषयों पर सँक्षिप्त किंतु तथ्यपूर्ण निबंधों का संकलन रहता है। यह संसार के समस्त सिद्धांतों की पाठयसामगरी है। विश्वकोश अंगरेजी शब्द इनसाइक्लोपीडिया का समानार्थी है, जो ग्रीक शब्द इनसाइक्लियॉस (एन - ए सर्किल तथा पीडिया - एजुकेशन) से निर्मित हुआ है। इसका अर्थ शिक्षा की परिधि अर्थात् निर्देश का सामान्य पाठयविषय है।

इस किस्म की बाते अनंत है, इसलिये किसी भी विश्वज्ञानकोष को कभी पूरा हुआ घोषित नहीं किया जा सकता। विश्वज्ञानकोष में सभी विषयों के लेख हो सकते हैं किन्तु एक विषय वाले विश्वकोश भी होते हैं। विश्वकोष में उपविषय (टापिक), उस भाषा के वर्णक्रम के अनुसार व्यवस्थित किये गये होते हैं।

पहले विश्वकोष एक या अनेक खण्डों में पुस्तक के रूप में ही आते थे। कम्प्यूटर के प्रादुर्भाव से अब सीडी आदि के रूप में भी तरह-तरह के विश्वकोष उपलब्ध हैं। अनेक विश्वकोश अन्तरजाल पर 'ऑनलाइन भी उपलब्ध हैं।

ऐतिहासिक दृष्टि से विश्वकोषों का विकास शब्दकोषों (डिकशनरी) से हुआ है। ज्ञान के विकास के साथ ऐसा अनुभव हुआ कि शब्दों का अर्थ एवं उनकी परिभाषा दे देने मात्र से उन विषयों के बारे में पर्याप्त जानकारी नहीं मिलती, तो विश्वकोषों का आविर्भाव हुआ। आज भी किसी विषय को समर्पित विश्वकोष को शब्दकोष भी कहा जाता है; जैसे 'सूक्ष्मजीवविज्ञान का शब्दकोश आदि।

स्व प्रगति की जाँच करें:

5. शब्दकोष से अपना अभिप्राय स्पष्ट कीजिए।
6. भारत में विश्वकोषों की परम्परा को समझाएँ।

उपयोगिता

विश्वकोश का उद्देश्य संपूर्ण विश्व में विकीर्ण कला एवं विज्ञान के समस्त ज्ञान को संकलित कर उसे व्यवस्थित रूप में सामान्य जन के उपयोगार्थ उपस्थित करना तथा भविष्य के लिए सुरक्षित रखना है। इसमें समाविष्ट भूतकाल की ज्ञानविज्ञान की उपलब्धियाँ मानव सभ्यता के विकास के लिए साधन प्रस्तुत करती हैं। यह ज्ञानराशि मनुष्य तथा समाज के कार्यव्यापार की सँचित पूँजी होती है। आधुनिक शिक्षा के

विश्वपर्यवसायी स्वरूप ने शिक्षार्थियों एवं ज्ञानार्थियों के लिए संदर्भग्रंथों का व्यवहार अनिवार्य बना दिया है। विश्वकोश में संपूर्ण संदर्भों का सार निहित होता है। इसलिए आधुनिक युग में इसकी उपयोगिता असीमित हो गई है। इसकी सर्वाधिक उपादेयता की प्रथम अनिवार्यता इसकी बोधगम्यता है। इसमें संकलित जटिलतम विषय से संबंधित निबंध भी इस प्रकार प्रस्तुत किया जाता है कि वह सामान्य पाठक की क्षमता एवं उसके बौद्धिक स्तर के उपयुक्त तथा बिना किसी प्रकार की सहायता के बोधगम्य हो जाता है। उत्तम विश्वकोश ज्ञान के मानवीयकरण का माध्यम है।

भारत में विश्वकोषों की परम्परा

भारतीय वाङमय में संदर्भग्रंथों– कोश, अनुक्रमणिका, निबंध, ज्ञानसंकलन आदि की परंपरा बहुत पुरानी है। भारतीय वाङ्मय में संदर्भ ग्रंथों का कभी अभाव नहीं रहा, पर नगेंद्रनाथ वसु द्वारा संपादित बंगला विश्वकोश ही भारतीय भाषाओं से प्रणीत प्रथम आधुनिक विश्वकोश है। यह सन् 1911 में 22 खंडों में प्रकाशित हुआ। नगेंद्रनाथ वसु ने ही अनेक हिंदी विद्वानों के सहयोग से हिंदी विश्वकोश की रचना की जो सन 1916 से 1932 के मध्य 25 खंडों में प्रकाशित हुआ। श्रीधर व्यंकटेश केतकर ने मराठी विश्वकोश की रचना की जो महाराष्ट्रीय ज्ञानकोशमंडल द्वारा 23 खंडों में प्रकाशित हुआ। डॉ. केतकर के निर्देशन में ही इसका गुजराती रूपांतर प्रकाशित हुआ।

स्वराज्य प्राप्ति के बाद भारतीय विद्वानों का ध्यान आधुनिक भाषाओं के साहित्यों के सभी अंगों को पूरा करने की ओर गया और आधुनिक भारतीय भाषाओं में विश्वकोश निर्माण का श्रीगणेश हुआ। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात कला एवं विज्ञान की वर्धनशील ज्ञानराशि से भारतीय जनता को लाभान्वित करने के लिए आधुनिक विश्वकोशों के प्रणयन की योजनाएँ बनाई गईं। सन 1947 में ही एक हजार पृष्ठों के 12 खंडों में प्रकाश तेलुगु भाषा के विश्वकोश की योजना निर्मित हुई। तमिल में भी एक विश्वकोश के प्रणयन का कार्य प्रारंभ हुआ।

इसी क्रम में नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी ने हिंदी में मौलिक तथा प्रामाणिक विश्वकोश के प्रकाशन का प्रस्ताव भारत सरकार के सम्मुख रखा। इसके लिए एक विशेषज्ञ समिति का गठन किया गया और उसकी पहली बैठक फरवरी में हुई और हिंदी विश्वकोश के निर्माण का कार्य जनवरी में प्रारंभ हुआ।

हिंदी विश्वकोश

राष्ट्रभाषा हिंदी में एक मौलिक एवं प्रामाणिक विश्वकोश के प्रणयन की योजना हिंदी साहित्य के सर्जन में संलग्न नागरीप्रचारिणी सभा, काशी ने तत्कालीन सभापति महामान्य पं. गोविंद वल्लभ पंत की प्रेरणा से निर्मित की जो आर्थिक सहायता हेतु भारत सरकार के विचारार्थ सन 1954 में प्रस्तुत की गई। पूर्व निर्धारित योजनानुसार विश्वकोश 22 लाख रुपए के व्यय से लगभग दस वर्ष की अवधि में एक हजार पृष्ठों के 30 खंडों में प्रकाश्य था। किंतु भारत सरकार ने ऐतदर्थ नियुक्त विशेषज्ञ समिति के सुझाव के अनुसार 500 पृष्ठों के 10 खंडों में ही विश्वकोश को प्रकाशित करने की स्वीकृति दी तथा इस कार्य के संपादन हेतु सहायतार्थ 6 लाख रुपए प्रदान करना स्वीकार किया। सभा को केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय के इस निर्णय को स्वीकार करना पड़ा कि विश्वकोश भारत सरकार का प्रकाशन होगा।

योजना की स्वीकृति के पश्चात नागरी प्रचारिणी सभा ने जनवरी, 1957 में विश्वकोश के निर्माण का कार्यारंभ किया। केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय के निर्देशानुसार विशेषज्ञ समिति की संस्तुति के अनुसार देश के विश्रुत विद्वानों, विख्यात विचारकों तथा शिक्षा क्षेत्र के अनुभवी प्रशासकों का एक पचीस सदस्यीय परामर्शमंडल गठित किया गया। सन् 1958 में समस्त उपलब्ध विश्वकोशों एवं संदर्भ ग्रंथों की सहायता से 70,000 शब्दों की सूची तैयार की गई। इन शब्दों की सम्यक परीक्षा कर उनमें से विचारार्थ 30,000 शब्दों का चयन किया गया। मार्च, सन् 1959 में प्रयोग विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग भूतपूर्व प्रोफेसर डॉ. धीरेंद्र वर्मा प्रधान संपादक नियुक्त हुए। विश्वकोश का प्रथम खंड लगभग डेढ़ वर्षों की अल्पावधि में ही सन् 1960 में प्रकाशित हुआ।

NOTES

खंडों में इस विश्वकोश का प्रकाशन कार्य पूरा किया गया। विश्वकोश के प्रथम तीन खंड अनुपलब्ध हो गए। इसके नवीन तथा परिवर्धित संस्करण का प्रकाशन किया गया। राजभाषा हिंदी के स्वर्णजयंती वर्ष में राजभाषा विभाग (गृह मंत्रालय) तथा मानव संसाधन विकास मंत्रालय ने केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा को यह उत्तरदायित्व सौंपा कि हिंदी विश्वकोश इंटरनेट पर पर प्रस्तुत किया जाए। तदनुसार केन्द्रीय हिंदी संस्थान, आगरा तथा इलेक्ट्रॉनिक अनुसंधान एवं विकास केंद्र, नोएडा के संयुक्त तत्वावधान में तथा मानव संसाधन विकास मंत्रालय तथा सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के संयुक्त वित्तपोषण से हिंदी विश्वकोश को इंटरनेट पर प्रस्तुत करने का कार्य अप्रैल में प्रारम्भ हुआ।

इक्कीसवीं शताब्दी के विश्वकोष

विश्वकोषों की संरचना कम्प्यूटर के लिये विशेष रूप से उपयुक्त है। इसीलिये अधिकांश विश्वकोष बीसवीं सदी के अन्त तक कम्प्यूटरों के लिये उपयुक्त फार्मट (स्वरूप) में आ गये हैं। सीडी-रोम आदि में उपलब्ध विश्वकोष के निम्नलिखित लाभ हैं:

- सस्ते में तैयार किये जा सकते हैं।
- एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने में सुविधा (पोर्टेबल)
- इनमें कोई शब्द या लेख खोजने की सुविधा भी पुस्तक-रूप विश्वकोषों की तुलना में बहुत उन्नत एवं सरल होती है।
- इनमें ऐसी विशेषताएँ एवं खूबियाँ होती हैं जिन्हें पुस्तकों में देना सम्भव नहीं है। जैसे - एनिमेशन, श्रव्य (आडियो), विडियो, हाइपरलिंकिंग आदि।
- इनकी सामग्री समय के साथ आसानी से परिवर्तनशील ( ) है। उदाहरण के लिये विकिपीडिया में नये से नये विषय पर भी शीघ्र लेख प्रकट हो सकता है। जबकि पुस्तक रूपी विश्वकोष में कोई नया विषय जोड़ने या कोई सुधार करने के लिये उसके अगले संस्करण तक प्रतीक्षा करनी पड़ती है।

स्व-प्रगति की जाँच के उत्तर

1. **पारिभाषिक शब्दावली**– प्रयोजनमूलक हिन्दी में पारिभाषिक शब्दावली (Technical Terminology) की महत्तम तथा अनिवार्य भूमिका उपस्थित रहती है। पारिभाषिक शब्दावली किसी ज्ञान (Disciplene) विशेष के क्षेत्र में एक निश्चित अर्थ में प्रयुक्त होती है। पारिभाषिक शब्द परिभाषित (Defined) होते हैं। इसकी विस्तृत चर्चा आगे की जा रही है।
2. **अर्धपारिभाषिक शब्द**–सामान्य शब्दों के अलावा कुछ ऐसे शब्द है जो सामान्य तथा पारिभाषिक दोनों रूपों में प्रयोग में लाये जाते हैं। अर्थात् कुछ ऐसे शब्द होते हैं। जिनका प्रयोग स्थिति, विषय-वस्तु तथा संदर्भ के अनुसार कभी तो सामान्य शब्दों के रूप में होता है, और कभी पारिभाषिक शब्दों के रूप में।

   सामान्य शब्द को आसानी से पहचाना जा सकता है किन्तु अर्ध-पारिभाषिक शब्द को उसकी विशिष्टताओं तथा विशेष ज्ञान की स्पष्टताओं के द्वारा पहचाना जा सकता है। माया, विपदा, वेदना, क्रिया, सृजन, आपत्ति, रस, अर्थ आदि ऐसे अनेक शब्द है जो अर्ध-पारिभाषिक शब्द-वर्ग में आते हैं। विश्व की भाषाओं में इस प्रकार के शब्दों की संख्या काफी मात्रा में विद्यमान रहती है।
3. किसी भी भाषा के पारिभाषिक शब्द के लिए निम्नलिखित गुणों का होना आवश्यक माना जाता है–

   1. पारिभाषिक शब्द का अर्थ निश्चित, नियम तथा स्पष्ट होना चाहिए। अर्थात् इन्हें अर्थ-विस्तार तथा अर्थ-संकोच दोष से मुक्त होना चाहिए।

2. पारिभाषिक शब्द उच्चारण की दृष्टि से सरल तथा सुबोध होने चाहिए ताकि प्रयोक्ता के लिए सुविधा हो।

3. पारिभाषिक शब्द के नियम अर्थ में प्रत्यय, उपसर्ग या अन्य उपयुक्त शब्द जोड़कर परिवर्तन किये जाने की गुंजाइश रहनी चाहिए। जैसे Sectratary शब्द के लिए इसमें 'सचिव' प्रयुक्त होता है किन्तु उससे पहले Under शब्द जुड़ जाने से Under Secratary हो जाएगा और हिन्दी में 'अवर सचिव'।

4. समान पारिभाषिक शब्दों में एकरूपता होनी चाहिए।

5. पारिभाषिक शब्द विषय-वस्तु या ज्ञान-क्षेत्र से सम्बद्ध 'संकल्पनाओं' तथा वस्तुओं के लिए सम्बद्ध (अनुरूप) होने चाहिए।

4. **पारिभाषिक शब्दावली एवं प्रयोजनमूलक हिन्दी–** पारिभाषिक शब्दावली का सम्बंध प्रयोजनमूलक हिन्दी से अनिवार्यत: जुड़ा हुआ है। वस्तुत: प्रयोजनमूलक हिन्दी के अंगभूत अनिवार्य तत्व के रूप में पारिभाषिक शब्दावली की महत्ता अक्षुण्ण बनी हुई है। हमारे देश में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के उदय एवं विकास के साथ उसकी सटीक तथा सार्थक अभिव्यक्ति हेतु हिन्दी के प्रयोजनमूलक रूप में उसकी तकनीकी शब्दावली की नितान्त जरूरत महसूस की गई। फलत: हिन्दी में प्रशासन, विधि, विज्ञान एवं टेक्नोलॉजी से सम्बंधित पारिभाषिक शब्दावली का निर्माण एवं प्रचलन हुआ। इस प्रकार वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली के निर्माण के कारण विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हिन्दी अनुपयोग को अत्यधिक गति मिल गई है। अत: पारिभाषिक शब्दावली की अनुप्रयुक्तता प्रयोजनमूलक हिन्दी में एक अनिवार्य तथा अत्यन्त उपादेय तत्व के रूप में सिद्ध हुई है। इस अर्थ में प्रयोजनमूलक हिन्दी के प्रशासन, विधि, दूरसंचार, मानविकी विज्ञान, अंतरिक्ष, कम्प्यूटर तथा प्रौद्योगिकी आदि क्षेत्रों में प्रयुक्ति के उपकरण के रूप में पारिभाषिक शब्दावली की महत्ता अक्षुण्ण है।

5. शब्दकोश (पारम्परिक वर्तनी:शब्दकोष) एक बड़ी सूची होती है जिसमें शब्दों के साथ उनके अर्थ व व्याख्या लिखी होती है। शब्दकोश एकभाषीय हो सकते हैं, द्विभाषिक हो सकते हैं या बहुभाषिक हो सकते हैं। अधिकतर शब्दकोशों में शब्दों के उच्चारण के लिये भी व्यवस्था होती है, जैसे - अन्तर्राष्ट्रीय ध्वन्यात्मक लिपि में, देवनागरी में या आडियो सूचिका के रूप में। कुछ शब्दकोशों में चित्रों का सहारा भी लिया जाता है। अलग-अलग कार्य-क्षेत्रों के लिये अलग-अलग शब्दकोश हो सकते हैं; जैसे - विज्ञान शब्दकोश, चिकित्सा शब्दकोश, विधिक (कानूनी) शब्दकोश, गणित का शब्दकोश आदि।

सभ्यता और संस्कृति के उदय से ही मानव जान गया था कि भाव के सही संप्रेषण के लिए सही अभिव्यक्ति आवश्यक है। सही अभिव्यक्ति के लिए सही शब्द का चयन आवश्यक है। सही शब्द के चयन के लिए शब्दों के संकलन आवश्यक हैं। शब्दों और भाषा के मानकीकरण की आवश्यकता समझ कर आरंभिक लिपियों के उदय से बहुत पहले ही आदमी ने शब्दों का लेखा-जोखा रखना शुरू कर दिया था। इस के लिए उस ने कोश बनाना शुरू किया। कोश में शब्दों को इकट्ठा किया जाता है।

6. भारत में विश्वकोषों की परम्परा– भारतीय वाङमय में संदर्भग्रंथों– कोश, अनुक्रमणिका, निबंध, ज्ञानसंकलन आदि की परंपरा बहुत पुरानी है। भारतीय वाङ्मय में संदर्भ ग्रंथों का कभी अभाव नहीं रहा, पर नगेंद्रनाथ वसु द्वारा संपादित बंगला विश्वकोश ही भारतीय भाषाओं से प्रणीत प्रथम आधुनिक विश्वकोश है। यह सन् 1911 में 22 खंडों में प्रकाशित हुआ। नगेंद्रनाथ वसु ने ही अनेक हिंदी विद्वानों के सहयोग से हिंदी विश्वकोश की रचना की जो सन 1916 से 1932 के मध्य 25 खंडों में प्रकाशित हुआ। श्रीधर व्यंकटेश केतकर ने मराठी विश्वकोश की रचना की जो महाराष्ट्रीय ज्ञानकोशमंडल द्वारा 23 खंडों में प्रकाशित हुआ। डॉ. केतकर के निर्देशन में ही इसका गुजराती रूपांतर प्रकाशित हुआ।

NOTES

स्वराज्य प्राप्ति के बाद भारतीय विद्वानों का ध्यान आधुनिक भाषाओं के साहित्यों के सभी अंगों को पूरा करने की ओर गया और आधुनिक भारतीय भाषाओं में विश्वकोश निर्माण काश्रीगणेश हुआ। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात कला एवं विज्ञान की वर्धनशील ज्ञानराशि से भारतीय जनता को लाभान्वित करने के लिए आधुनिक विश्वकोशों के प्रणयन की योजनाएँ बनाई गईं। सन 1947 में ही एक हजार पृष्ठों के 12 खंडों में प्रकाश तेलुगु भाषा के विश्वकोश की योजना निर्मित हुई। तमिल में भी एक विश्वकोश के प्रणयन का कार्य प्रारंम्भ हुआ।

इसी क्रम में नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी ने हिंदी में मौलिक तथा प्रामाणिक विश्वकोश के प्रकाशन का प्रस्ताव भारत सरकार के सम्मुख रखा। इसके लिए एक विशेषज्ञ समिति का गठन किया गया और उसकी पहली बैठक फरवरी में हुई और हिंदी विश्वकोश के निर्माण का कार्य जनवरी में प्रारंभ हुआ।

अभ्यास-प्रश्न

1. पत्रकारिता से सम्बन्धित सौ (100) शब्द लिखें।
2. पारिश्रमिक शब्दावली से आप क्या समझते हैं ? स्पष्ट करें।
3. पारिभाषिक शब्दावली की निर्माण प्रक्रिया को विस्तारपूर्वक समझाऐं।
4. हिन्दी में तकनीकी शब्दावली के विकास पर प्रकाश डालें।
5. शब्दकोष से आप क्या समझते हैं ? स्पष्ट करें।
6. विश्वज्ञानकोष की उपयोगिता का वर्णन करें।

इकाई - IV

NOTES

जनसंचार के माध्यम

इकाई में शामिल है:

- जनसंचार का अभिप्राय
- जनसंचार के माध्यम
- विज्ञापन में प्रयुक्त हिन्दी
- जनसंचार की विशेषताएँ
- जनसंचार माध्यमों की उपयोगिता
- जनसंचार माध्यमों के लिए समाचार लेखन
- विज्ञापन के प्रकार
- विज्ञापन और प्रयोजनमूलक हिन्दी
- समाचार पत्र
- आकाशवाणी तथा दूरदर्शन के लिए विज्ञापन लेखन

अध्ययन के उद्देश्य :

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप निम्न बिन्दुओं को समझने में सक्षम होंगे -

- जनसंचार का अभिप्राय, माध्यम विज्ञापन में प्रयुक्त हिन्दी
- जनसंचार की विशेषताएँ, समाचार लेखन
- विज्ञापन और प्रयोजनमूलक हिन्दी
- समाचार पत्र, आकाशवाणी तथा दूरदर्शन के लिए विज्ञापन लेखन

NOTES

जन संचार : परिचय

लिटिल जॉन और फॉस (2005) ने जनसंचार को ''एक प्रक्रिया जहाँ मीडिया संगठन बड़ी जनसंख्या के लिए संदेशों को प्रसारित करते हैं और जिस प्रक्रिया के द्वारा उन संदेशों का दर्शकों के द्वारा मांग, उपयोग और उपभोग किया जाता है'' के रूप में परिभाषित किया है। मैक्विल (1994) कहते हैं कि मास मीडिया, ''केवल एक प्रक्रिया संचार को समाज को व्यापक स्तर पर संचालित करती है और आसानी से अपनी संस्थागत विशेषताओं के द्वारा पहचानी जाती है।'' आसानी से जनसंचार को संदेशों का मीडिया या प्रौद्योगिकी संचालित चैनलों के माध्यम से एक इकाई के बड़ी संख्या के प्राप्तकर्ताओं, जिसमें यूजर्स के लिए कुछ प्रकार की लागत या शुल्क (विज्ञापन) का सार्वजनिक हस्तांतरण है। ''कुछ बड़ी मीडिया संगठनों में प्रेषक अक्सर एक व्यक्ति है, संदेशे सार्वजनिक हैं और दर्शकों में बड़ी तथा विविध प्रवृत्ति होती है। हालांकि, यूट्यूब, माई स्पेस, फेसबुक जैसे आउटलेट के आगमन के साथ और टेक्स्ट संदेशों को भेजने में, ध्यान दें कि ये संदेशे बढ़ती आबादी के लिए लागू नहीं होते क्योंकि व्यक्ति अब बड़े दर्शकों को मध्यस्थ चैनलों के माध्यम से बड़े दर्शकों को भेजता है।''

फिर भी, बहुत से जनसंचार बड़े संगठनों से आते हैं जो बड़े पैमाने पर संस्कृति को प्रभावित करते हैं। स्क्राम (1963) इसको ''बड़ी संख्या में लोगों को कुछ उपकरणों से घिरे हुए कार्यरत समूह लगभग उसी समय समान संदेशों को प्रसारित करते हैं।'' आज का कार्य समूह जो अधिकांश जन संचार को नियन्त्रित करता है, जैसे वायकाम, किंग वर्ल्ड, डिज्नी, कॉमकास्ट, और रुपर्ट मर्डाक के समूह जैसी बड़ी कम्पनियां हैं। इन बड़ी कम्पनियों के संगठन की शक्ति का उदाहरण 2000 में उस समय आया जब अमेरिका की एक बहुत बड़ी मीडिया उत्पादक टाइम वार्नर का अमेरिका ऑनलाइन (एओएल) में, इसे इतिहास को सबसे बड़ा विलय बनाते हुए, 181.6 बिलियन डालर में विलय हो गया। उससे ठीक एक साल पहले, वायकॉम ने सीबीएस को अपने लाइनअप एमटीवी, निकेलिडिओन और कई अन्य में जोड़ने के लिए खरीद लिया।

संचार अध्ययन की हमारी परिभाषा, ''संचार के किस माध्यम से किसके लिए कौन क्या कहता है, और उसका परिणाम क्या होगा?'' जब जनसंचार का परीक्षण करते हैं, हमारी दिलचस्पी होती है कि कौन किस सामग्री पर, किस दर्शक के लिए किस माध्यम का प्रयोग करके नियन्त्रण रखता है, और परिणाम क्या होगा? मीडिया के आलोचक राबर्ट मैकचिसनी (1997) ने कहा हमें जनसंचार के बढ़ते हुए केन्द्रीकृत नियन्त्रण पर चिन्ता होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि बहुत कम संगठनों द्वारा जनसंचार को नियन्त्रण के परिणामस्वरूप, ''राजनीतिक लोकतन्त्र के निहितार्थ, किसी भी मानक द्वारा परेशान करते हैं।'' बेन बैगदीकियान (2004) बताते हैं कि पिछले दो दशकों से, बड़े मीडिया बाजार 50 कारपोरेट के स्वामित्व से केवल 5 में चला गया। मैकचेन्सी और बैगदीकियान दोनों के लिए, वहाँ थोड़े से संगठनों के द्वारा इतने अधिक संचारों पर नियंत्रण होने के महान निहितार्थ हैं। शायद यही कारण है कि माई स्पेस, यूट्यूब और फेसबुक जैसे आउटलेट क्यों लोकप्रियता प्राप्त कर रहे हैं, क्योंकि जो थोड़े से लोग अधिकांश जनसंचार आउटलेट पर नियन्त्रण रखे हुए हैं उनको वे वैकल्पिक आवाज प्रदान करते हैं।

जनसंचार को समझने के लिए कुछ मुख्य कारकों को समझना महत्वपूर्ण है जो इसे अन्य संचार के रूपों से अलग करते हैं। पहला, संदेश को बड़े दर्शक वर्ग तक पहुँचाने के लिए मीडिया चैनल पर निर्भरता है। दूसरा, दर्शक की प्रवृत्तियाँ दूर, भिन्न और संदेश तथा माध्यम के आकार में विविधता पर निर्भर होती हैं। तीसरा, जनसंचार अक्सर लाभ संचालित होती है और प्रतिक्रियाएं सीमित होती हैं। चौथे, जनसंचार के अवैयक्तिक स्वभाव के कारण, प्रतिभागी समान रूप से प्रक्रिया के दौरान उपस्थित नहीं होते।

जनसंचार बहुत तेज गति से हमारे जीवन म और अधिक एकीकृत हो रहा है। यह ''कायापलट'' हमारे और प्रौद्योगिकी के बीच झुकाव के प्रतिनिधित्व के कारण है, जहाँ हम भूतकाल की तरह जनसंचार से दूर नहीं होते हैं। हमारे पास अपनी अन्तर्वैयक्तिक और सामाजिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए, तेजी से मध्यस्थ संचार को प्रयोग करने के अवसर उपलब्ध हैं। ओ, सुलिवान (2003) ने इस नये जनसंचार के उपयोग को हमारे वैयक्तिक जीवनों के ''जन वैयक्तिक संचार'' के रूप में निर्दिष्ट किया

है जहाँ (क) पारम्परिक जनसंचार चैनलों को अन्तर्वैयक्तिक संचार के लिए प्रयोग किया जाता है, (ख) पारम्परिक अन्तर्वैयक्तिक संचार चैनलों का उपयोग जनसंचार के लिए होता है, और (ग) पारम्परिक जनसंचार और पारम्परिक अन्तर्वैयक्तिक संचार एक ही साथ आता है। समय के साथ, अधिक से अधिक ओवरलैप होता है। ''संचार प्रौद्योगिकियों में नवाचार मास और अन्तर्वैयक्तिक संचार सिद्धान्त के बीच अवरोध को पहले से अधिक पारगम्य बनाने के लिए शुरू हुआ।'' माईस्पेस, फेसबुक, जंगा, काउचसर्फिंग, यूट्यूब, और बेबो की जैसी साइटें जनवैयक्तिक संचार के क्लासिक उदाहरण हैं जहाँ हम जनसंचार का उपयोग अन्तर्वैयक्तिक सम्बन्धों को बनाए रखने और उसका विकास करने में करते हैं।

शायद हम लोग जनसंचार के साथ हमारे अन्तरनिर्भरता के माध्यम से ''वैश्विक गांव'' में तब्दील हो रहे हैं। अचानक, 'सागर के पार' ''आसपास कोने'' बन गये हैं। मैकलुहान (1964) ने भविष्यवाणी किया था कि विश्व भर में जनसंचार की लोगों को एक करने की योग्यता के कारण ऐसा होगा। जिसे हैगरमैन ''सार्वजनिक क्षेत्र'' कहता है, जनसंचार आपकी व्यक्तिगत सूचनाओं को सार्वजनिक साइटों पर पोस्ट करके जनसंचार का निर्माण करता है, क्या आप उसके खिलाड़ी? यदि ऐसा है, अपने बारे में कुछ भी पोस्ट करने से पहले सावधान हो जाइये कि बहुत से नियोक्ता अपने सम्भावित कर्मचारियों को काम पर रखने से पहले उनके निजी जीवन में देखने के लिए ''गूगलिंग'' कर रहे हैं। जैसे कि हम जनसंचार के निर्णय को निरंतर रखते हैं हम यह ध्यान रखना चाहते हैं कि जनसंचार में सभी सूचना प्रौद्योगिकी शामिल नहीं है। जैसा हमारी परिभाषा कहती है, जनसंचार वह संचार है जो बड़े सम्भावित दर्शकों तक पहुँचती है।

जनसंचार का विकास

समाजों को एक लम्बे समय से पर्यावरण के खतरों और अवसरों के बारे में प्रभावी रास्ते का पता लगाने; प्रसारित, तथ्यों, और विचारों; ज्ञान को बांटने, विरासत और विद्या, नये सदस्यों को अपने अनुभवों को प्रसारित करना, एक विशाल तरीके से मनोरंजन तथा वाणिज्य और व्यापार को फैलाने की इच्छा थी। प्राथमिक चुनौती यह थी कि अधिक से अधिक लोगों तक संदेश को पहुँचाने के संभावित रास्तों का पता लगाएं। हमारी जरूरत लोगों तक त्वरित अभिनव तरीके से संदेश को पहुँचाना है।

अनेक समाचार स्रोतों, तेज रफ्तार कनेक्शन, और उच्च तकनीकी गियर तथा सूचना से लदे इस युग में, आप शायद अन्दाजा नहीं लगा सकते कि जनसंचार के बिना आपका जीवन क्या है। क्या आप अपने दादाओं की ओर पीछे मुड़ कर देख सकते हैं जहाँ वे बिस्तर में पड़े हुए ए एम रेडियों पर बेसबाल खेल की कहानियों ''का इन्तजार हुए'', परिवार के साथ घरों के अन्दर रेडियो पर जैक बेनी का शो सुनते हुए, पार्टी टेलीफोन लाइनों पर (कई उपभोक्ता केवल एक ही लाइन पर)बात करते हुए, श्वेत श्याम टेलीविजनों, एक क्लासरूम जितने बड़े कम्प्यूटरों, बिना कम्प्यूटरों का ऑफिस, या विनायल रिकार्ड खेलते हुए मेजों को बदलने की कल्पना कर सकते थे? स्पष्ट रूप से, जनसंचार ने बहुत तेजी से विकास किया है।

लिखना शुरू करने से पहले मानव सूचनाओं को आगे बढ़ाने के लिए मौखिक परम्पराओं पर भरोसा करते थे। ''आक्सफोर्ड अंग्रेजी शब्दकोश के अनुसार, यह केवल 1920 में ही हो सका जब लोग 'मीडिया' के बारे में बात करते थे और उसके पीढ़ी बाद, 1950 में, एक 'संचार क्रांति' की, लेकिन संचार के साधनों के बारे में चिन्ता का विषय उससे भी बहुत पुराना है। मौखिक और लिखित संचार ने प्राचीन संस्कृति में बहुत बड़ी भूमिका निभाई है। ये मौखिक संस्कृतियां कहानियों का उपयोग करके अतीत के दस्तावेजों से सांस्कृतिक मानकों, परम्पराओं और ज्ञान प्रदान करती थीं। दुनिया भर में लगभग 5000 वर्ष पहले, वर्णमाला के शुरू होने से पहले, लिखित भाषा आइडियोग्रामाटिक (चित्र आधारित) जैसे चित्रलिपि से सम्बन्धित वर्णमाला बदलना शुरू हुई कि संस्कृतियों ने कैसे संचार स्थापित किया।

अभी भी, लिखित संचार अस्पष्ट बना रहा और जनता तक नहीं पहुँच सका जब तक कि ग्रीक और रोमन लोगों ने इसका समाधान शब्दांश वर्णमाला की स्थापना द्वारा ध्वनि के प्रतिनिधित्व से हल नहीं किया। लेकिन, लिखने के लिए कुछ होने के बिना, लिखित भाषा अपर्याप्त थी। अंत में, कागज बनाने की प्रक्रिया

NOTES

को चीन में पूरा किया गया, जो बाद में व्यापारिक रास्तों से पूरो यूरोप में फैला। जनसंचार जल्दी नहीं था लेकिन इसका प्रभाव दूरगामी था। इसने हमेशा के लिए बदल दिया कि संस्कृतियों ने कैसे सांस्कृतिक ज्ञान और मूल्यों की रक्षा करके प्रसारित किया है। किसी भी युग में, कोई भी सांस्कृतिक और सामाजिक आन्दोलन को प्रिन्टिंग प्रेस और गतिशील धातु प्रकार के प्रभाव और उसके विकास से पता लगाया जा सकता है। इस तकनीक के साथ, गुटेनबर्ग किसी पाठ के एक विशिष्ट पेज से अधिक को प्रिन्ट कर सकते थे। लिखित संचार को बड़ी संख्या में लोगों को उपलब्ध कराने के द्वारा सामान्य जनता को सूचना उपलब्ध कराने और बड़े पैमाने पर जनता को आवाज प्रदान करने में उत्तरदायी रही है।

18वीं सदी के औद्योगिक युग में संक्रमण के साथ, सूचना और मनोरंजन चाहने वाले एक बड़े आर्थिक वर्ग के दर्शको की बड़ी जनसंख्या शहरी क्षेत्रों की ओर बढ़ी। इस देश में मुद्रण प्राद्योगिकी आधुनिकता के केन्द्र में थी जिसने पत्रिकाओं, समाचारपत्रों, टेलीग्राफ और टेलीफोन का नेतृत्व किया। 19 वीं शताब्दी के आने के बाद, थामस एडीसन, थियोडोर पुस्कास और निकोला टेस्ला ने सचमुच पूरे विश्व और जनसंचार को विद्युतीकृत किया। 19वी शताब्दी के शुरू में, चलचित्रों और रेडियो के आगमन के साथ, ''इतिहास में पहली बार, सम्पूर्ण जनसंख्या सांस्कृतिक संचार में भाग लेने में सक्षम थी।'' 1950 में, टेलीविजन का युग आया, जो 1960 ई0 तक 90% घरों तक पहुँच गया। 1970 ई0 में, यू0 एस0 को तारयुक्त राष्ट्र बनाकर, केबल ने हवा में पारम्परिक वितरण और प्रसारण को चुनौती देना शुरू कर दिया था। आज 70% से भी अधिक संयुक्त राष्ट्र के घर 500 से भी अधिक चैनलों को पे-पर-वियु (पीपीवी) और मांग पर वीडियो (वीओडी) अपनी उंगलियों पर गिनने के आदी हैं।

सूचना युग ने अंत में औद्योगिक युग की जगह लेना शुरू कर दिया। 1983 में, टाइम्स मैगजीन ने वर्ष की पहली मशीन का नाम पीसी रखा। ठीक एक दशक के बाद, पर्सनल कम्प्यूटर्स ने टेलीविजन को बाहर कर दिया। अन्त में, 2006 में, टाइम पत्रिका ने संचार प्रौद्योगिकी की व्यापकता के उपयोग के लिए ''यू'' को वर्ष के एक व्यक्ति के रूप में नाम दिया।

ईवरसोल (1995) का कहना है, ''यकीनन वेब 'इनफोटेनमेन्ट' प्रौद्योगिकियों के परेड में एकदम नया है जिसने अवसरों के एक नए युग का वादा किया है। सूचना, मनोरंजन, उपभोक्ता उत्पादों की सूचना तक त्वरित पहुँच और लोकतांत्रिक प्रक्रिया में भागीदारी ठीक एक माउस क्लिक की दूरी पर हैं।'' सम्भावना है कि आप, आपके दोस्त, और परिवार कम्प्यूटर मध्यस्थ संचार जैसे कि इन्टरनेट सर्फिंग, ईमेलिंग, और टेक्सटिंग, खरीदारी या चैटिंग रूम की भागीदारी में अंतहीन घंटे व्यतीत करते हैं। रोमेरो (2003) बताते हैं कि, ''नेट ने उस रास्ते को बदल दिया है, उस रास्ते को जिससे हम दूसरों से सम्पर्क करते हैं, सूचना तक हमारी पहुँच, हमारी गोपनीयता का स्तर और वस्तुतः विचार जो हमारी संस्कृति समय और स्थान के अनुसार बुनियादी और गहराई से जड़ें जमा चुकी हैं।''

जितना अधिक जनसंचार का माध्यम विकसित होगा, मार्शल मैकलुहान (1964) बताते हैं, कि हम मीडिया को या तो गर्म या ठंडा समझ सकते हैं यह यूजर को प्राप्त सूचना की मात्रा के साथ-साथ भागीदारी की डिग्री के ऊपर निर्भर करता है। एक गर्म माध्यम ''उच्च परिभाषा की एक एकल भावना को फैलाती है''। गर्म मीडिया के उदाहरणों में, फोटोग्राफ या रेडियो शामिल हैं क्योंकि संदेश को अधिकतर एक भावना का उपयोग करके समझाया गया है और भाग लेने वालों द्वारा थोड़ी भागीदारी की जरूरत होती है। एक दर्शक गर्म मीडिया के साथ अधिक निष्क्रिय होता है क्योंकि वहाँ छानने के लिए कम ही है। टेलीविजन को इसके बहुत बड़ी बहु-संवेदी जानकारी के कारण ठंडा माध्यम समझा जाता है। और अधिक संवेदी डेटा बहु-संवेदी ठंडे मीडिया पर उपलब्ध हैं। हम इन्टरनेट को एक कोल्ड मीडियम समझते हैं। बर्ग नील (2004) इसे एक कदम और आगे ले जाते हैं। ''वर्चुअल वास्तविकता, वास्तविक पर्यावरण की नकल छूने की संवेदनाओं के साथ पूर्ण किए गए कोल्ड मीडिया में अधिकता हो सकते हैं ..... जैसे-जैसे हम भविष्य में डिजिटल संचार की ओर बढ़ते हैं, यह और अन्य धारदार प्रौद्योगिकियां बढ़ती हुई कोल्ड मीडिया की ओर इशारा करती हुई प्रतीत होती हैं।'' ऑनलाइन वीडियो गेम के बारे में विचार करें जिसे लोग खेलते हैं। वे उसमें इतना अधिक तल्लीन हो जाते हैं कि संवेदी इनपुट की बड़ी राशि और उनके द्वारा जरूरी भागीदारी के कारण वे एक कोल्ड मीडियम को प्रस्तुत करते हैं।

NOTES

चूँकि प्रिन्टिंग प्रेस, जनसंचार ने अक्षरश: हमारे सोचे हुए रास्तों को बदल दिया है और एक मानव की तरह व्यवहार करते हैं। हम इसे इतना अधिक मान लिया समझ लेते हैं जैसे ''नई तकनीकें संयुक्त राज्य अमेरिका की संस्कृति में इतनी तेजी से फैली हैं कि ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य अक्सर प्रक्रिया में खो जाते हैं।'' जनसंचार के बारे में इन सभी बातों और अनुसंधान के साथ, यह हमारे लिए किन कार्यों को पूरा करता है?

जनसंचार के कार्य

राइट (1960) ने जनसंचार के कार्यों की सात विशेषताओं को चित्रित किया है जो हमारे जीवन में इसकी भूमिका की अन्तर्दृष्टि का प्रस्ताव करता है।

निगरानी – जनसंचार का पहला कार्य हममें से उन लोगों के आँख और कान की तरह सेवा करना है जो दुनिया के बारे में जानकारी चाहते हैं। जो कुछ भी हो रहा है, जब हम उसके बारे में ताजी खबर जानना चाहते हैं तो हम या तो टेलीविजन की ओर, इन्टरनेट सर्फिंग या समाचारपत्र या पत्रिकाएं पढ़ते हैं। हम जनसंचार पर हमारे दैनिक जीवन के बारे में जैसे मौसम, स्टॉक रिपोर्ट, या खेलों के शुरू होने के समय आदि जैसी सूचनाएं प्राप्त करने के लिए निर्भर होते हैं। उनमें से पहली चीज क्या थी जो आपने वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर पर आतंकी हमले के ठीक बाद किया था? अधिक संभावना है, आप इन्टरनेट या अपने टीवी सेट से आपदा के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त करने के लिए चिपके हुए थे। वास्तव में, आपका लेखकीय परिसर को बन्द कर दिया गया था और घर पर अपने प्रिय लोगों के साथ रह कर सूचना एकत्रित करने की अनुमति दी गई थी, भले ही हमारा परिसर देश के दूसरे छोर पर स्थित था।

सहसम्बन्ध : सहसम्बन्ध बताता है कि मीडिया कैसे तथ्यों को प्रस्तुत करती है जिसे हम विश्व के माध्यम से स्थानांतरित करने के लिए उपयोग करते हैं। जनसंचार के माध्यम से जो सूचना हम प्राप्त करते हैं वह वस्तुनिष्ठ और पूर्वाग्रह के बिना नहीं होती। आपके लेखक के मित्र की दादी ने बताया कि उन्होंने सूचना को रेडियो पर सुना, ''जिसे सच्चा होना ही था'' क्योंकि यह रेडियो पर था। यह बयान सवाल पूछता है कि मीडिया कितनी विश्वसनीय है? क्या मकसद और एजेण्डे पर सवाल किए बिना हम मीडिया का उपभोग कर सकते हैं? जिस सूचना को हम देखते हैं उसपर कुछ लोग चयन, व्यवस्था, व्याख्या, संपादन और आलोचना कर सकते हैं। आपके लेखक के मित्र का एक भाई था जो एक बड़े रियलिटी टीवी शो के लिए सम्पादन करता है। जब पूछा गया कि यदि जो कुछ वास्तव में हुआ है उसका यदि हम निष्पक्ष प्रस्तुतिकरण देखते हैं, वह व्यक्ति जिसने सम्पादन किया था बस हँसने लगा और कहा 'नहीं'।

सनसनीखेज करना : समाचार उद्योग में एक पुरानी कहावत है-''अगर यहाँ खून बहता है-यह आगे बढ़ेगा'' जो सनसनीखेजीकरण के विचार पर प्रकाश डालता है। सनसनी तब होती है जब मीडिया सबसे बड़े सनसनीखेज संदेशों को गुदगुदाते उपभोक्ताओं के समक्ष रखता है। इलियट ने सोच के लिए कुछ दिलचस्प भोजन प्रस्तुत किया है: ''मीडिया के प्रबन्धक नागरिकों की बजाए उपभोक्ताओं के सम्बन्ध में सोचते हैं। अच्छी पत्रकारिता बिकती है, लेकिन दुर्भाग्य से, बुरी पत्रकारिता भी अच्छी तरह बिकती है। और, खराब पत्रकारिता-कहानियाँ जो साधारण तौर पर सरकारी दावों को दुहराती हैं या स्वतन्त्र रिपोर्टिंग की पेशकश करने की बजाए जिसे जनता सुनना चाहती है उसे सुदृढ़ करती है-वह सस्ता और निर्माण करने में आसान है।''

मनोरंजन : जनसंचार हमें मनोरंजन प्रदान करके दैनिक दिनचर्या और समस्याओं से बचाते हैं। पीपल मैगजीन और ई टीवी के जैसी मीडिया हमारे पसन्दीदा हस्तियों की हरकतों के बारे में अपटूडेट रखते हैं। हम टेलीविजन पर स्पोर्ट देखते हैं, फिल्में देखने जाते हैं, वीडियो गेम खेलते हैं और अपने आई-पॉड और रेडियो पर संगीत सुनते हैं। अधिकांश जनसंचार एक ही साथ मनोरंजन और सूचना दोनों प्रदान करते हैं। हम अक्सर अपने खाली समय में मीडिया की ओर अपनी बोरियत और अपने दैनिक जीवन की प्रीडिक्टिविटी से आराम पाने के लिए उनकी ओर उन्मुख होते हैं। हम मीडिया पर भरोसा करते हैं जो हमें ऐसे स्थानों पर ले जाता है जिसकी हम कल्पना तक नहीं कर सकते, हमें वहाँ की संस्कृतियों से

NOTES

पहचान कराता है, और हमें हँसाता और रुलाता है। मनोरंजन मीडिया साहचर्य प्रदान करने में द्वितीयक प्रभाव प्रदान करता है और/या रेचन जिसका मीडिया के माध्यम से हम उपभोग करते हैं।

प्रसारण : जनसंचार सांस्कृतिक मानदंडों, मूल्यों, नियमों, और आदतों को संचारित करने का एक वाहन है। सोचिए कि आपने पहनने के लिए क्या फैशन है या कौन सा संगीत सुनना है। जनसंचार समाजीकरण प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। हम उपयुक्त सांस्कृतिक मानदंडों को प्रदर्शित करने के लिए अपने रोज मॉडल की ओर देखते हैं, लेकिन वे सभी अक्सर अनुचित या रूढ़िवादी व्यवहार को नहीं पहचानते। हम संगीत वीडियो, कमर्शियल या फिल्मों के व्यक्तियों की तरह शापिंग करना, कपड़े पहनना, सूंघना, चलना और बाते करना शुरू कर देते हैं। साफ्ट ड्रिंक कम्पनियां अपने उत्पादों को बेचने के लिए क्रिस्टीना ऑगीलेरा या मारिया केरी को लाखों डालर क्यों भुगतान कर देती हैं? क्या आपने कभी एक जोड़ी जूते खरीदे या अपना हेयर स्टाइल बदला है क्योंकि आपको मीडिया में किसी का सामना करना पड़ा था। स्पष्टतया, जनसंचार में, संस्कृति, उम्र, मीडिया का प्रकार, और अन्य सांस्कृतिक वैरिएबलों के कारक कैसे प्रभावित करते हैं और हम अपनी संस्कृति को सीखते और समझते हैं।

संघटन : जनसंचार लोगों को संकट के समय में संगठित करने का कार्य करता है। पीछे 9/11 के बारे में सोचो। अपनी राजनैतिक वरीयताओं के बावजूद, हम एक राष्ट्र के रूप में दुःखी हुए और इस संकट के दौरान राष्ट्रीय गर्व और देशभक्ति को संभाला। हमारे पहले के उदाहरण का उपयोग करते हुए, आपके लेखक के परिसर ने कक्षाओं को बंद करके अपने साथी नागरिकों के नुकसान पर दुख व्यक्त करने की अनुमति दिया। मीडिया और सूचना तक त्वरित पहुँच के साथ, हम सामूहिक रूप से वास्तविक समय में किसी अन्य समय में समान घटनाएं घटित होने के साक्षी बन सकते हैं, इसप्रकार, एक बड़ी जनसंख्या को एक विशेष घटना के चारों ओर संगठित करते हैं। राजनैतिक वेबसाइट जैसे कि moveon.org राजनैतिक गतिविधि के लिए जनसंचार के संघटन का एक दूसरा मुख्य उदाहरण है।

प्रमाणीकरण : जनसंचार किसी विशेष व्यक्तियों, आन्दोलनों, संगठनों, या उत्पादनों के स्तर और मानदंडों के मान्यकरण का कार्य करता है। विशिष्ट लोगों या समूहों का प्रमाणीकरण सामाजिक मानदंडों को सशक्त बनाता है। यदि आप बहुत से टेलीविजन ड्रामा और हास्यमय परिस्थिति, के बारे में सोचते हैं, कौन प्राथमिक चरित्र होते हैं? कौन से लिंग और जातीयता सितारों के बहुमत रहे हैं? कौन से लिंग और जातीयता उनमें से है जिसे अपराधी या असामान्य माना जाता है? मीडिया विशिष्ट सांस्कृतिक मानदंडों को प्रमाणित करती है जब उन मानदंडों से विविधताओं और भिन्नताओं को हटाती है। बहुत अधिक आलोचना इस बात पर केन्द्रित रही कि कैसे कुछ समूहों को बढ़ावा दिया गया, और दूसरों को-किस प्रकार उन्होंने मास मीडिया में चित्रित किया गया था, हाशिए पर डाल दिया गया।

जनसंचार के विभिन्न कार्यों को दी गई शक्तियों से, हमें अपने जीवन में उपस्थिति के बारे में चिन्तनशील होना चाहिए। अब हम अपना ध्यान जनसंचार के अध्ययन की ओर करेंगे कि जनसंचार के विद्वान क्या अध्ययन करते हैं, और वे कैसे इसका अध्ययन करते हैं।

जनसंचार का अध्ययन

इस पुस्तक के विषय के साथ जारी रखते हुए, जनसंचार की भूमिका के अध्ययन ने हमें मीडिया साक्षर बनाने में मदद करते हुए और हमारी "पहुँच, विश्लेषण, मूल्यांकन और संचार संदेशों" की क्षमता को मजबूत बना कर हमारी जागरूकता को ऊँचाई प्रदान किया है। अपने चारों ओर देखो। समकालीन समाज में जनसंचार का प्रभाव व्यापक है, जैसा कि हम अपने दैनिक जीवन में इसके साथ बंधे हुए हैं।

जनसंचार और लोकप्रिय संस्कृति

संस्कृति साझा व्यवहारों, मूल्यों, विश्वासों और दृष्टिकोणों जिसे हम सामाजीकरण के माध्यम से सीखते हैं। जैसा कि ब्रूमेट ने व्याख्या किया है, "लोकप्रिय संस्कृति वे प्रणालियाँ या पुरावशेष हैं जिसे अधिकांश लोग साझा करते या जानते हैं।" ब्रूमेट के विचारों का उपयोग करते हुए, जनसंचार को लोकप्रिय होने के क्रम में सभी रूपों को सभी के द्वारा उपभोग या उपयोग नहीं किया गया। इसके बजाए, संस्कृति में इसका

NOTES

स्थान इतना व्यापक है कि हमारी इससे कम से कम परिचय है। आपने शायद सरवाइवर, स्क्रब, या लॉस्ट को नहीं देखा होगा लेकिन काफी मुमकिन है कि आप उसके बारे में कुछ जरूर जानते होंगे।

लोकप्रिय संस्कृतियों के विपरीत, उच्च संस्कृतियों में वे मीडिया शामिल हैं जिनको आमतौर पर जनता के लिए नहीं निर्मित किया गया है, निश्चित ज्ञान की आवश्यकता होती है, और उनका अनुभव करने के लिए समय और धन के निवेश की आवश्यकता होती है। उच्च संस्कृतियों के उदाहरणों में ऑपेरा, कविता, थिएटर, शास्त्रीय संगीत और कलाएं शामिल हैं। जब हम सामान्यतया कम संस्कृति शब्द का प्रयोग नहीं करते, "पॉप संस्कृति जन मध्यस्थता प्रकार की 'कम' कला जैसे टेलीविजन कॉमर्शियल, टेलीविजन कार्यक्रम, ज्यादातर फिल्में, साहित्यिक शैली के कार्य और लोकप्रिय संगीत शामिल होते हैं।"

हमेशा इसे ध्यान में रखें कि लोकप्रिय संस्कृति का जरूरी मतलब खराब गुणवत्ता से नहीं होता है। लोकप्रियता सदैव खराब नहीं है और समय के सापेक्ष होती है। उदाहरण के लिए, बेबी बूमर्स के बारे में सोचें। माता-पिता ने कहा कि रॉक-एन-रोल संगीत उनकी पीढ़ी को बर्बाद कर रहा है। हालांकि, उसी संगीत को शास्त्रीय समझा जाता था। 1950 के दशक में यह कहा जाता था कि कॉमिक पुस्तकें बच्चों को भ्रष्ट कर देगी और आज पापयुक्त है। इसके विपरीत कि जनसंचार को कैसे समझा जाता है, इसमें शब्दों, व्यवहारों, प्रवृत्तियों, चिन्हों और व्यवहार के पैटर्न, जो हमारी संस्कृति को प्रदर्शित करते हैं, का प्रत्यारोपण किया जाता है। या, जैसा कि कुछलोग पूछते हैं, क्या यह आसपास का दूसरा रास्ता है?

उदाहरण के लिए, 1980 के दशक में, वेण्डीज ने एक लोकप्रिय कॉमर्शियल प्रसारित किया "बीफ कहाँ है?" 1990 के दशक में, जेरी सेनफील्ड का टेलीविजन शो ने हमें यह कहते हुए पाया, "यादा, यादा, यादा।" और शनिवार की रात में एक नए वाक्यांश को लोकप्रिय किया, "मुझे और अधिक काऊ बेल की जरूरत है।" जनसंचार, जिस भाषा का हम इस्तेमाल करते हैं उसके सहित, समाज के सभी पहलुओं को प्रभावित करता है। हमारे लिए शब्दों या वाक्यांशों का निजीकरण आम है, विशेषरूप से यदि वे मजाकिया हों, और हमारे सामाजिक संदर्भों में तुलनात्मक रूप से अपने जीवन में एकीकृत करें। सिएटल टाइम्स समाचार सेवा (2003) ने रिपोर्ट किया कि अंग्रेजी की आक्सफोर्ड डिक्शनरी का 2003 के संस्करण में अब पेचीदा वाक्यांशों को एचबीओ के शो उच्चतम नारी स्वर –"बाडा बिंग" के द्वारा प्रसिद्ध किया गया है जिसका अर्थ विस्मय से जोर देकर कहना है कि कुछ भी बिना प्रयास के और पूर्वानुमेय रूप से होना शामिल है। इस डिक्शनरी में लोकप्रिय संस्कृति के द्वारा प्रत्यारोपित शब्द 'काउन्टर आतंकवाद' और 'बूटोलिसियस' शामिल हैं। क्या आपने कभी 'वीएच।' देखा है? हो सकता है आपने उनके पॉप संस्कृति डिक्शनरी के संस्करण को देखा होगा। मीडिया के एक्सपोजर के कारण कुछ शब्द हमारे साझा समझ का हिस्सा बन जाते हैं। कुछ दूसरे परिवर्णी शब्दों और भाषा के बारे में सोचें जो अब सामान्य स्थान पर हैं जो कुछ वर्षों पूर्व नहीं थे: एमपी3, डीवीडी, डीवीआर, आईपॉड आदि।

जनसंचार का ग्राउण्डिंग सिद्धान्त

तीस साल पहले ओस्लो त्रिओ (1978) ने तर्क दिया था कि जनसंचार वास्तव में वास्तविकता को नहीं चित्रित करता। दिलचस्प रूप से उस तीस सालों के बाद हमारे पास बड़ी संख्या में "रियलिटी टीवी शो" हैं जो वास्तविकता और कल्पना की बारीक रेखा को निरंतर धुंधला कर रहे हैं। क्या आप हमेशा जनसंचार और कल्पना के बीच अन्तर को बताने में सक्षम होते हैं? अधिकतर लोगों की तर्कसंगत ठहराने की प्रवृत्ति होती है कि दूसरे लोग जनसंचार से उतना प्रभावित नहीं होते जितना वे वास्तव में है। हालांकि, हम सभी जनसंचार के प्रभाव के प्रति अतिसंवेदनशील हैं। हमारे चारों ओर की दुनियां के सिद्धान्त हमारा सबसे अच्छा प्रतिनिधित्व करते हैं। "जनसंचार के सिद्धान्त हमारे सामाजिक घटनाओं की व्याख्याएँ और भविष्यवाणियाँ हैं जो हमारी व्यक्तिगत और सांस्कृतिक जीवन या सामाजिक प्रणालियों के विभिन्न पहलुओं को जनसंचार से संबन्धित करने का प्रयास करते हैं।" हमें जनसंचार को समझने में और अधिक समझदार होने की जरूरत है। "1950 के दशक में टेलीविजन युग की शुरूआत ने दृश्य संचार के साथ-साथ मीडिया के अंत:विषयक सिद्धान्त को प्रेरित किया है। अर्थशास्त्र, इतिहास, साहित्य, कला, राजनीति विज्ञान, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र और नृविज्ञान से योगदान लिया गया था, और संचार और

सांस्कृतिक अध्ययनों के शैक्षणिक विभागों के उद्भव का नेतृत्व किया।'' हम कैसे जनसंचार के साथ एकदूसरे को प्रभावित करें, हमारे जीवन में इसकी भूमिका और हमारे ऊपर इसका प्रभाव आदि का जनसंचार के सिद्धान्त इन स्पष्टीकरणों का पता लगाते हैं।''

NOTES

आइये, अब हम जनसंचार के पाँच मूलभूत सिद्धान्तों पर दृष्टिपात करें : मैजिक बुलेट सिद्धान्त, दो कदम प्रवाह सिद्धान्त, बहु-कदम प्रवाह सिद्धान्त, और संतुष्टि का सिद्धान्त तथा उत्कर्ष का सिद्धान्त।

1. **मैजिक बुलेट सिद्धान्त :** मैजिक बुलेट सिद्धान्त (हाइपोडर्मिक सुई सिद्धान्त भी कहा जाता है) सुझाव देता है कि जनसंचार निष्क्रिय दर्शकों पर बन्दूक से सूचनाओं की गोली से फायरिंग करने की तरह है। ''संचार को एक जादुई गोली की तरह देखा जाता है जो विचारों या भावनाओं या ज्ञान या मंशा को अधिकांश स्वत: एक मन से दूसरे तक हस्तांतरित करता है।'' इस सिद्धान्त को व्यापक रूप से शिक्षाविदों के द्वारा अमान्य कर दिया गया था क्योंकि यह सुझाव देता है कि दर्शकों के सभी सदस्य समान तरीके से संदेशों को समझते हैं, और व्यापक रूप से संदेशों के निष्क्रिय प्राप्तकर्ता। यह सिद्धान्त बीच में आने वाले सांस्कृतिक और जनसांख्यिकीय वैरिएबल को ज्यादा तवज्जो नहीं देती जैसे कि- आयु, जातीयता, लिंग, व्यक्तित्व, या शिक्षा जो हमारे सामने आने वाले मीडिया संदेशों पर अलग तरीके से हमें प्रतिक्रिया व्यक्त करने का कारण होती है। हालांकि, बहुत से लोगों की यह मान्यता होती है कि टेलीविजन की तरह की मीडिया आसानी से सूचना को फैलाती है। जिनका विश्वास है कि टेलीविजन के रियलिटी शो वास्तव में वास्तविकता को चित्रित करते हैं वे मैजिक बुलेट सिद्धान्त, जनसंचार के पाँच मौलिक सिद्धान्त की कुछ मान्यताओं को बनाए रखते हैं : मैजिक बुलेट सिद्धान्त, दो-कदम प्रवाह सिद्धान्त, बहु-कदम प्रवाह सिद्धान्त, उपयोग और सन्तुष्टि का सिद्धान्त और उत्कर्ष का सिद्धान्त।

2. **दो चरण प्रवाह सिद्धान्त :** द्वितीय विश्व युद्ध के बाद, शोधकर्ताओं ने ध्यान देना शुरू किया कि जनसंचार के प्रति सभी दर्शक समान रूप से प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं करते। यह स्पष्ट हो गया कि ऐसा दिखाई देता है कि मीडिया में कम शक्ति है और पहले की मान्यता की तुलना में कम प्रभावी हैं। दो चरण प्रवाह सिद्धान्त सुझाव देता है कि जनसंचार के संदेश सीधे प्रेषक से प्रेषित की ओर नहीं जाते। इसके बजाए, लोगों का एक छोटा समूह, द्वारपाल, स्क्रीन मीडिया संदेशों, इन संदेशों का पुन: आकृति देते और जनता को उनके प्रसारण को नियन्त्रित करते हैं। रायशुमारी के नेता शुरूआत में ''उनकी रुचि के विशेष विषयों की मीडिया सामग्री'' का उपभोग करते हैं और उनके अपने मूल्यों और विश्वासों पर आधारित भाव बनाते हैं। दूसरे चरण में, संदेशों को साझे की विचारधारा के साथ जिनका मीडिया, और राय का पालन करने वालों के साथ कम सम्पर्क होता है ऐसे व्यक्तियों के पास आगे बढ़ाने से पहले उनको फिल्टर करते और समझते हैं। इस सिद्धान्त का उदाहरण राजनैतिक अभियानों के समय सामने आता है। शोधकर्ताओं ने दिखाया है कि एक चुनाव के दौरान अपने उम्मीदवार के चुनाव के बारे में वे सूचना के माध्यम से मीडिया आपके वोट देने की वरीयताओं को प्रभावित करती है। इसलिए, परम्परावादियों का अक्सर तर्क होता है कि वे ''उदार मीडिया'' के द्वारा हाशिए पर कर दिए गए हैं, वे इसलिए भी हाशिए पर हैं क्योंकि धनी परम्परावादी मीडिया के मालिक हैं और उसे नियन्त्रित करते हैं।

3. **बहु चरण प्रवाह सिद्धान्त :** इससे पता चलता है कि विश्वासों, दृष्टिकोणों, और व्यवहारों को प्रभावित करने तथा सूचनाओं को साझा करने की परस्पर साझा प्रवृत्ति होती है। विचार यह है कि ओपीनियन लीडर मीडिया संदेशों का निर्माण कर सकते हैं लेकिन ओपीनियन को मानने वाले ओपीनियन लीडरों को प्रभावित करने में सक्षम हो सकते हैं। इसप्रकार, मीडिया के बीच सम्बन्ध और अधिक जटिल हो जाती है। कुछ का विश्वास है कि ओपीनियन लीडर की भूमिका हमारी बदलती हुई संस्कृति में घटती जा रही है। मुँह प्रसार का यह शब्द एक सर्व शक्तिमान मीडिया की धारणा को असली रूप दिखाती है लेकिन फिर भी पहचानती है कि मीडिया दर्शकों पर कुछ प्रभाव रखती है।

4. **उपयोग और सन्तुष्टि का सिद्धान्त :** उपयोग और सन्तुष्टि के सिद्धान्त से पता चलता है कि दर्शकों के सदस्य अपनी विशिष्ट जरूरतों को सन्तुष्ट करने के लिए सक्रिय रूप से पीछा करते हैं। ''शोध कर्ता अपना ध्यान इसपर केन्द्रित करते हैं कि, मीडिया कैसे दर्शकों को प्रभावित करता है की बजाए दर्शक मीडिया का कैसे उपयोग करते हैं।'' जनसंचार प्रणाली की पारस्परिक प्रकृति मीडिया उपयोगकर्ताओं को एक निष्क्रिय, अनजान प्रतिभागी के रूप में नहीं देखती बल्कि एक सक्रिय, समझदार भागीदार के रूप में जो सामग्री का चुनाव करता है और मीडिया विकल्पों से सूचित होता है। हमारी प्रवृत्ति मीडिया से बचने की होती है जो हमारे मूल्यों, विश्वासों, या पॉकेट बुक्स से सहमत नहीं होते। श्राम (1963) का तर्क है कि हम यह निश्चय करके किसी मीडिया का चयन करते हैं कि किसी विशिष्ट मीडिया से हम कितना संतुष्ट होंगे। क्या आपको एक समाचारपत्र पढ़ना ज्यादा आसान है, या आप टेलीविजन देखना पसन्द करेंगे या रेडियो सुनना? इन्टरनेट पर सभी सूचनाएं होने के बावजूद, वहाँ अभी भी कुछ लोग हैं जो इसे अत्यधिक समय लेने वाला और जटिल मानते हैं।

5. **उत्कर्ष का सिद्धान्त :** उत्कर्ष का सिद्धान्त यह प्रश्न करता है कि जनसंचार का उपभोग करते समय हम कितने सक्रिय रहते हैं। उदाहरण के लिए, बच्चे तीन से पाँच घण्टे प्रतिदिन और औसतन 21 घंटे प्रति सप्ताह टेलीविजन देखते हैं। अमेरिकन अकेडमी ऑफ पेड्रियाट्रिक्स के अनुसार, 18 की आयु तक, औसत अमेरिकन बच्चा 200,000 तक हिंसा के नाटकों को टेलीविजन पर देख चुका होता है। जब हिंसा को टेलिविजन पर दिखाया जाता है, शायद ही इसके नकारात्मक परिणामों को पाया गया है - 47. पीड़ित ने नुकसान के कोई सबूत नहीं दिखाए और 73% अपराधियों को उनके हिंसक गतिविधियों के लिए जवाबदेह नहीं ठहराया गया।

यह सभी किस प्रकार का प्रभाव रखते हैं? क्या यह कहना संभव है कि जब औसत दर्शक हिंसक सामग्रियों के प्रति संवेदनहीन हो जाते हैं या यह एक सामान्य आक्रामकता के आउटलेट के रूप सेवा करता है। सभी हिंसक सामग्री समान रूप से सभी दर्शकों को क्यों नहीं प्रभावित करती? क्या बहुत अधि क हिंसक मीडिया का उपभोग दर्शकों से हिंसक व्यवहार का कारण होती हैं? जो लोग अत्यधिक मीडिया का उपभोग करते हैं वे दुनियां को बहुत अधिक हिंसक और डरावनी जगह पाते हैं क्योंकि बहुत उच्च स्तर की हिंसा को वे देखते हैं।

सिद्धान्त को मनुष्य के सामाजिक जीवन और व्यक्तिगत विश्वासों पर मीडिया के प्रभावों को सामान्य रूप से और अधिक बढ़ा दिया गया है। मीडिया सांस्कृतिक सच्चाइयों जैसे कि जुल्म का डर, शारीरिक छवि, संकीर्णता, धर्म, परिवारों, नस्लवाद की ओर दृष्टिकोणों, लिंग की भूमिकाओं, और नशीली दवाओं के प्रयोग को प्रस्तुत करता है। किलबर्न्स (1999) बताते हैं, ''विज्ञापन से खाने की समस्या नहीं होती, निश्चित रूप से, और किसी से भी अधिक यह मद्यपान के कारण होता है। हालांकि, विज्ञापन खाने, पीने और पतलेपन के बारे में अश्लील, और असामान्य दृष्टिकोणों को बढ़ावा देता है।'' गर्बनर (1990) ने तीन 'बी' का विकास किया जो बताता है कि मीडिया लोगों के पारम्परिक वास्तविकता के भेदों को धुंधला कर देता है, लोगों की वास्तविकताओं को एक आम सांस्कृतिक मुख्य धारा में मिश्रित करता है और मुख्यधारा को संस्थागत हितों और इसके प्रायोजकों के हितों की ओर फिट करने के लिए झुकाता है।

जनसंचार के कुछ सिद्धान्तों को समझने के बाद, हम कुछ और कुशलताओं की ओर देखेंगे जो आपको जनसंचार के महत्वपूर्ण उपभोक्ता बनाने में मदद करेंगे।

मीडिया साक्षरता

यह अध्ययन करने के बाद कि कैसे हम जनसंचार का उपयोग और उपभोग करें, अब हमें संघर्षों, विरोधाभासों, समस्याओं, या जनसंचार के सकारात्मक परिणामों में हमारे उपयोग की जाँच करने की अनुमति दें। जनसंचार के बारे में इतना कुछ सीखने के बाद आप कितने सूचित हैं? हमारी मीडिया उपभोग की चेतना हमारे समाज के एक सदस्य के रूप में इसके प्रभाव को समझना महत्वपूर्ण है। हमारे मध्यस्थ पर्यावरण या जनसंचार के उपभोग के सम्बन्ध में हमारी जागरूकता मीडिया साक्षरता है। जनसंचार का हमारे व्यक्तिगत और व्यावसायिक जीवन में जिम्मेदारी से समझने, पहुँचने, की यह हमारी क्षमता है। पॉटर

(1998) बताते हैं, कि हमें संज्ञानात्मक, भावनात्मक, सौंदर्यबोधक, और नैतिक जागरूकता को बनाए रखना चाहिए जैसा कि हम मीडिया के साथ परस्पर बातचीत करते हैं। स्टैनली जे. बैरन (2002) सुझाव देते हैं कि मीडिया साक्षर होने के लिए हमें कई कौशलों को विकसित करना होगा।

NOTES

जनसंचार के संदेशों की शक्ति को समझना और सम्मान देना : मीडिया साक्षरता के लिए एक महत्वपूर्ण कौशल यह समझना है कि दुनियां भर में और हमारे जीवन के चारों ओर जनसंचार कितना प्रभावशाली है। जनसंचार के माध्यम से मीडिया आकार, मनोरंजन, सूचित, प्रतिनिधित्व, प्रतिबिम्बित, निर्माण, आगे ले जाने, शिक्षित करने और हमारे व्यवहारों, दृष्टिकोणों, मूल्यों तथा आदतों को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष तरीकों से प्रभावित करती है। वास्तव में दुनियां में लगभग प्रत्येक ने किसी न किसी तरह से जनसंचार को छुआ है और व्यक्तिगत तथा व्यावसायिक निर्णयों को व्यापक आधार पर जनसंचार के माध्यम वास्तविक प्रस्तुतिकरण को चित्रित किया है।

शोर को ध्यान देकर और छान कर सामग्री को समझना : जैसा कि हमने चैप्टर 1 में सीखा है, संचार को यदि कोई चीज रोकती है तो वह शोर है। जनसंचार में हमारे उपभोग व्यवहार के कारण बहुत शोर उत्पन्न होता है। मीडिया जिस तक आप पहुँचना चाहते हैं उसपर पूरा ध्यान देने के अलावा आप कितनी बार आप और कुछ करते हैं? क्या जब आप गाड़ी चला रहे होते हैं तो रेडियो सुनते हैं, खाना खाते समय टीवी देखते हैं या जब क्लासरूम में होते हैं तो अपने दोस्त को मैसेज भेजते हैं? जब बात जनसंचार की आती है, हम बहुत से कार्य करते हैं, कोई कार्य जो शोर की तरह का कार्य है और वह संदेश की गुणवत्ता और हमारी समझ और उनके अर्थ को प्रभावित करते हैं। प्राप्त कर रहे संदेशों की तरफ ध्यान न देकर और मीडिया का उपभोग करते समय दूसरे कार्य करके हम अक्सर अपने आप को निष्क्रिय उपभोक्ताओं में बदल देते हैं।

जनसंचार सामग्री को उसके तदनुसार कार्य करने के क्रम में भावनात्मक बनाम तार्किक प्रतिक्रिया से समझना : जनसंचार सामग्री का एक बड़ा भाग भावनात्मक स्तर पर हमारे साथ सम्पर्क करने का इरादा है। इसलिए, जनसंचार की हमारी भावनात्मक प्रतिक्रियाओं को समझना महत्वपूर्ण है। उत्पादों को बेचने के क्रम में विज्ञापन अक्सर हमारी भावनाओं को अपील करता है। "सेक्स बेचता है" एक पुराना विज्ञापन की कहावत है, लेकिन एक जो प्रकाश डालता है कि हम अक्सर कितनी बार भावनात्मक प्रतिक्रियाओं बनाम तार्किक क्रियाओं पर आधारित निर्णय लेते हैं। मैक्सिम या ग्लैमर जैसी पत्रिकाओं पर एक नजर डालिए और जल्द ही आप महसूस करेंगे कि सभी प्रकार के उत्पादों को बेचने के लिए कैसे भावनाएं सेक्स के साथ जुड़ी हुई हैं। तार्किक क्रियाओं से हमारी भावनात्मक प्रतिक्रियाओं पर आधारित किसी निर्णय पर पहुँचने से पहले जनसंचार के बारे में जिसका हम उपभोग करते हैं, हमें महत्वपूर्ण रूप से सोचने की जरूरत है।

जनसंचार सामग्री की बढ़ती उम्मीदों का विकास करना : क्या आप अपने को जनसंचार का सूचित उपभोक्ता समझते हैं? क्या आपको जनसंचार से बहुत उम्मीदें हैं? आप एक रहस्य उपन्यास को पसन्द कर सकते हैं क्योंकि यह एक "मजा" है या चलचित्र आपके दिमाग को कुछ घण्टों के लिए वास्तविकता से दूर ले जाती है। हालांकि, बैरन (2002) ने हमको चुनौती दिया है कि जितना हम मीडिया का उपभोग करते हैं उससे कहीं अधिक और चाहते हैं। "जब हम अपने सामने की सामग्री से कुछ अधिक उम्मीद करते हैं, हम थोड़ा प्रयास और सावधानी से अर्थ देने का प्रयत्न करते हैं।" यह आप पर निर्भर है कि आप गुणवत्ता के तौर पर क्या स्वीकार करना चाहते है। आपके लेखकों ने नोटिस किया है कि हमने कम और कम मुख्य धारा की फिल्में देखते हैं क्योंकि, हम इसे "वे मूर्खतापूर्ण हैं" के रूप में रखते हैं। अधिक से अधिक हम विदेशी फिल्मों, स्वतन्त्र फिल्मों और वृत्तचित्रों की ओर देखेंगे, ऐसा लगता है कि हॉलीवुड द्वारा जारी की गई बहुत सी लोकप्रिय फिल्मों की तुलना में वे बेहतर गुणवत्ता की हैं।

शैली सम्मेलनों और मान्यता को समझना जब वे मिश्रित की जा रही हों : सभी मीडिया में अपनी अद्वितीय विशेषताएं होती हैं या "कुछ विशिष्ट, मानकीकृत शैली के तत्व" जो उनको एक श्रेणी या शैली में चिन्हित करते हैं। हम विभिन्न रूपों के जनसंचार से कुछ चीजों की उम्मीद करते हैं। उदाहरण के लिए,

NOTES

हममे से अधिकांश का विश्वास है कि हम समाचार और मनोरंजन के बीच अन्तर बनाने में सक्षम हैं। लेकिन क्या हम ऐसे हैं? टेलीविजन के समाचार शो अक्सर एक घटना के वीडियो के छूटे हुए हिस्सों को भरने के लिए कहानी के हिस्सों को फिर से निर्मित करता है। क्या आप हमेशा ''पुनः अस्वीकरण'' को पकड़ा है? यूनाइटेड 93 या रेन्डीशन की जैसी फिल्में प्रभावी रूप से तथ्यों और कल्पना के बीच की लाइन को धुंधला करती हैं, और हमारे ऊपर ऐसा प्रभाव डालती हैं जैसे हम ''वास्तविकता'' को देख रहे हैं। अस्सी साल के बाद भी, वाल्टर लिपमैन (1922) ने पहचाना कि मीडिया हमारे जीवन में इतना अधिक आक्रामक है कि हमें यह पहचान करने में कठिनाई होती है कि क्या वास्तव है और कहाँ मीडिया के द्वारा कुशलतापूर्वक छेड़छाड़ की गई है। ''रियलिटी'' टीवी शैली अब इस लाइन को और भी धुंधला कर रही है। एक दूसरा उदाहरण आर्नोल्ड श्वाजनेगर का उसके कैलीफोर्निया के गवर्नर का चुनाव है। वह और दूसरे, अक्सर उनको ''गवर्नर'' के रूप में निर्दिष्ट करते थे, उसके टर्मिनेटर के रूप में काल्पनिक भूमिका और कैलिफोर्निया के गवर्नर के रूप में उसके वास्तविक भूमिका को धुंधला कर रही थी। जनसंचार के संदेशों के बारे में महत्वपूर्ण रूप से सोचें, कोई बात नहीं कि उनके स्रोत कितने विश्वसनीय हैं। यह आवश्यक है कि हम सभी जनसंचार संदेशों के स्रोतों के बारे में महत्वपूर्ण ढ़ंग से सोचें। कोई बात नहीं कि एक मीडिया का स्रोत कितना विश्वसनीय है, जिसे हम सुनते या देखते हैं उसपर हम हमेशा विश्वास नहीं कर सकते क्योंकि सभी जनसंचार राजनैतिक, लाभ, या व्यक्तिगत कारकों से प्रेरित होते हैं। प्रचारकों, सम्पादकों, और प्रकाशकों के द्वारा उनके परिप्रेक्ष्य --से सूचना को उनके अनुभवों और एजेण्डों द्वारा सूचित करके प्रस्तुत किया जाता है। यदि मकसद शुद्ध है या स्पिन कम है, हम चुनिंदा रूप से अपने स्वयं के जीवन के अनुभवों पर आधारित अर्थों की व्याख्या करने की प्रवृत्ति होती है। मध्यस्थ संदेशों के सम्बन्ध में दर्शक हमेशा समान धारणा नहीं रखते हैं।

जनसंचार के आन्तरिक संदेशों को समझने के लिए इसके प्रभावों को समझें, चाहे जितना ही यह जटिल हो। यह कौशल हमसे चाहती है कि संवेदनशीलता को विकसित करें कि मीडिया में क्या हो रहा है। इसका मतलब यह नहीं कि आपको डीवीआर कार्यक्रम या इन्टरनेट सर्फ करने के लिए उल्लेख किया जा रहा है। इसका आशय गतिविधि या संदेशों के पीछे प्रेरणा से परिचित होना है। ''प्रत्येक माध्यम की अपनी स्वयं की विशिष्ट भाषा होती है। इस भाषा को मूल्यों-प्रकाश का पसन्द, सम्पादन, विशेष प्रभाव, संगीत, कैमरे का एंगल, पृष्ठ पर स्थिति, और हेडलाइन का आकार तथा उसका स्थान से इस भाषा को व्यक्त किया जाता है। मीडिया पाठ को पढ़ने में सक्षम होने के लिए, आपको इसकी भाषा को समझना बहुत जरूरी है। आपकी समझ या व्याख्यात्मक क्षमता पर ये क्या प्रभाव डालती हैं? उदाहरण के लिए, ईराक युद्ध अधिकांश समाचार के कवरेज में बैकग्राउण्ड में अमेरिकन झण्डा, बाज, के साथ-साथ ''स्वतन्त्रता'' और ''मुक्ति'' जैसे शब्दों का प्रतीक शामिल था। युद्ध जैसे कुछ ''उद्देश्य'' के कवरेज में इन प्रतीकों को प्रयोग करने का मकसद क्या था? सीएसआई के जैसे शो में सम्पादकीय पसन्द को ग्लैमराइज और फोरेन्सिक साइन्स को ''सेक्सी'' बनाया जाता है। सतह पर, हम यह सोच नहीं सकते कि फोरेन्सिक साइन्स इतना रोमांचक होगा, लेकिन सीएसआई जैसे प्रोग्राम इसे ऐसा ही दिखाते हैं। रियलिटी शो जैसे कि म्गजतमउम डांमवअमत भ्वउम म्कपजपवद के पास एक विशिष्ट फारमूला है जो हममें प्रत्येक हफ्ते पहचान और आशा ले आते हैं।

सारांश

समाजों को हमेशा ही सूचना को प्रेषित करने के लिए प्रभावी और कुशल साधनों की जरूरत है। जनसंचार इस वृद्धि का परिणाम है। यदि आपको याद है हमारे जनसंचार की परिभाषा जैसे - मीडिया प्रौद्योगिकी चैनलों की सहायता से व्यापक रूप से प्राप्तकर्ताओं को संदेशों का सार्वजनिक प्रसारण, से आप आसानी से जनसंचार के बहुआयामी रूपों को पहचान गये होंगे, जिसमें आप अपने व्यक्तिगत, शैक्षिक, और व्यावसायिक जीवन में भरोसा करते हैं। इनमें प्रिंट, श्रवण, दृष्य, और इंटरऐक्टिव मीडिया रूपों को शामिल किया गया है। एक अपेक्षाकृत, हाल ही का जनसंचार घटना जिसे जन-वैयक्तिक-संचार के नाम से जाना जाता है इसमें जनसंचार के चैनलों को अन्तर्वैयक्तिक संचार और रिश्तों को संयुक्त किया गया है, जहाँ व्यक्ति अब प्रौद्योगिकी की ओर पहुँच प्राप्त कर रहे हैं जो उनको एक बड़े दर्शक तक पहुँचने की अनुमति देती है।

स्व प्रगति की जाँच करें:

1. जनसंचार के किसी एक कार्य का वर्णन करें।
2. जनसंचार के मैजिक बुलेट सिद्धान्त को समझाइए।

NOTES

जबकि जनसंचार सामाजिक आन्दोलनों और राजनैतिक भागीदारियों की सफलता के लिए महत्वपूर्ण है इसके सात मूलभूत कार्य हैं। उनमें से पहला निगरानी, या ''वाच डॉग'' की भूमिका है। सहसम्बन्ध तब आता है जब दर्शक तथ्यों और उपयोगी सूचना को मास मीडिया स्रोतों से प्राप्त होती है। जब बहुत अपमानजनक या शानदार कहानियां प्रस्तुत की जाती हैं तब हम मीडिया की सनसनीखेज कार्यों के गवाह बनते हैं। दैनिक दिनचर्या या चिन्ता से बचने की जरूरत में हम मीडिया के मनोरंजन मूल्यों के कारण उसकी ओर मुड़ते हैं। सांस्कृतिक संस्था के रूप में, जनसंचार सांस्कृतिक मूल्यों, मानदंडों, और व्यवहारों, को संचारित करता है तथा दर्शकों का इस्तेमाल करता है, और सांस्कृतिक मूल्यों की पुष्टि करता है।

जैसा कि मीडिया को प्रौद्योगिकी के रूप में विकसित किया गया है, इसलिए उनको समझने के लिए विद्वानों के सिद्धान्त हैं। जिन पाँच सिद्धान्तों की हमने चर्चा किया है वे अलग हैं, प्राथमिक रूप से निष्क्रियता की डिग्री बनाम सक्रियता जो वे दर्शकों प्रदान करते हैं। मैजिक बुलेट सिद्धान्त निष्क्रिय दर्शकों को मानती है जबकि दो कदम प्रवाह और बहु कदम प्रवाह सिद्धान्त का सुझाव है कि दर्शकों और संदेशों के बीच एक पारस्परिक सम्बन्ध है। उपयोगों और संतुष्टिकरण का सिद्धान्त सुझाता है कि दर्शक मीडिया का चुनाव अपनी व्यक्तिगत आवश्यकताओं को पूरा करने और उसे सन्तुष्ट करने के लिए करते हैं। गर्बनर की उत्कर्ष का सिद्धान्त इस सुझाव के द्वारा कि मीडिया दृष्टिकोणों को आकार देने या बनाने के लिए कई सांस्कृतिक संस्थाओं में से एक है, जो उनको लम्बी अवधि के परिप्रेक्ष्य को ओर ले जाता है।

हमारे जीवन में जनसंचार की गैर-सवालिया भूमिका के कारण, मीडिया साक्षरता कौशलें किसी भी जिम्मेदार उपभोक्ता और नागरिक के लिए महत्वपूर्ण हैं। विशेषरूप से, ध्यान देकर मीडिया सामग्री को समझना, जनसंचार के भावनात्मक बनाम तार्किक उत्तरों को समझना, जनसंचार सामग्री की उच्चतम उम्मीदों का विकास, सम्मेलन की शैलियों को समझना और उनकी पहचान करना जब वे मिश्रित हों, जनसंचार की आन्तरिक भाषा को समझना, और इन सबसे ऊपर-महत्वपूर्ण रूप से विचार करके जनसंचार संदेशों की ताकत, सम्मान और समझ के द्वारा हम मीडिया साक्षर हो सकते हैं।

समाज पर जनसंचार का प्रभाव

संदेशों के सटीक और तेज हस्तांतरण के लिए अग्रणी संचार प्रौद्योगिकी में क्रांति की दुनिया गवाह बनी है। संचार और विकास के नये तरीके इतने तेज हैं कि नयी मीडिया को प्राप्त करना और उसके साथ कदम मिला कर चल पाना मुश्किल हो रहा है। तकनीकी उन्नति भी नये विचारों के विकास में मदद कर रही है और पूरे विश्व को एक साथ सिकोड़ कर रख दिया है, न केवल भौगोलिक रूप में बल्कि सामाजिक सांस्कृतिक नजरिए से भी। पिछले दशकें में विश्व के राजनैतिक और आर्थिक परिदृश्य में भारी परिवर्तन हुआ है।

सामाजिक अनुसंधान में और अधिक जोर देकर जनसंचार पर पूछे गये सवाल कि मास मीडिया किस प्रकार समाज को प्रभावित करता है। इसप्रकार के सवालों को पूछने का कारण, मास मीडिया में भाग लेने और बिताए गए समय तथा विशेषरूप से वितरण में, मास मीडिया में निवेश की गई राशि है। जैसा कि प्रत्येक नये माध्यम को व्यापक उपयोग के लिए अपनाया जाता है, वहाँ पर जनसंचार प्रणाली के प्रभावों बढ़ती चिन्ताओं की वजहें रही हैं, और इस विचार से कि मास सोसायटी के सदस्यों को आसानी से नियन्त्रित किया जा सकेगा, ने आलोचकों को परेशान कर दिया है। ऐसा माना गया है कि अलग-थलग और विमुख व्यक्ति उन लोगों की दया पर हैं जो मीडिया को नियन्त्रित कर सकते हैं। लोगों पर अन्य प्रतियोगी सामाजिक और मनोवैज्ञानिक प्रभावों के कारणऐसा माना जाता है कि मीडिया में महान शक्ति होती है। संचार अनुसंधान सामाजिक और व्यवहार विज्ञान रणनीतियों और सिद्धान्त निर्माण का विस्तार है।

एक जांचकर्ता ने तेजी से परिष्कृत तकनीकों और प्रणालियों का इस्तेमाल किया है, वे अनुसंधान परिणामों के साथ शुरू हुए जो उनके पहले के स्पष्टीकरण को संशोधित करना चाहता था कि कैसे और किस हद तक, जन संचार व्यक्तियों और समाज को प्रभावित करेगा। विज्ञान की रूपरेखा के भीतर बड़े पैमाने पर अनुसंधान 1920 के दशक में देर से शुरू हुआ। बाद के अनुसंधान ने इस विचार को तेजी से प्रश्न में ला खड़ा किया। जनसमाज की अवधारणा ने जनसंचार प्रभाव के सिद्धान्त को उत्पन्न किया, जिसमे

NOTES

मीडिया को इतना शक्तिशाली देखा गया कि सदस्यों के बीच में उनके प्रभाव को सीधा और एक समान होने के कारण मीडिया प्रभाव की मैजिक बुलेट थीयरी के नाम से पुकारा गया, जैसा कि जनसंचार के प्रभावों को एक समान और प्रत्यक्ष सोचा गया। आज, यूनिफार्म प्रभाव सिद्धान्त का थोड़ा ही बाकी रह गया है।

मैजिक बुलेट थीयरी की एक बड़ी समस्या यह थी कि लोगों के बारे में इसके अन्तर्निहित मान्यताएं गलत थीं। जल्दी ही यह खोजा गया कि लोग निष्क्रिय प्राप्तकर्ता की बजाए सक्रिय प्राप्तकर्ता थे। लोगों की जरूरतों, दृष्टिकोणों, मूल्यों और व्यक्तिगत वैरिएबल में व्यक्तिगत भेदभाव पर मनोवैज्ञानिकों ने जोर देना शुरू किया है। मानव प्रकृति एक समान नहीं थी लेकिन समाज में सीखने के चयनात्मक व्यवहार के कारण, मनोवैज्ञानिक रूप से एक दूसरे से असमान थी। एक समान जैविक बन्दोबस्ती के प्रभाव से कहीं अधिक मानव प्रकृति को आकार देने में पर्यावरण के प्रभाव पर जोर देना शुरू हुआ। इसने चयनात्मक तरीके पर जोर देने का नेतृत्व किया जिसमें लोग मास मीडिया में भाग लेते थे और तरीकों में एक बड़ी विविधता के साथ इस तरीके से जिसमे लोग जन मध्यस्था के संदेशों को समझ कर व्याख्या कर सकें। समाज में विभिन्न सामाजिक श्रेणियां हैं: अमीर और गरीब, बूढ़े और जवान, पुरुष और महिला, शिक्षित और अशिक्षित। जनसंचार के चयन में उनका दिखावा उनके सामाजिक भेदभाव से आता है। जैसे अनुसंधान आगे बढ़ता है, यह पाया गया कि मास मीडिया के श्रोता केवल साधारण अलग व्यक्तियों में से नहीं थे बल्कि वे दोस्तों, परिवारों, काम के सहयोगियों, समुदाय आदि से बंधे हुए थे, उनको सामाजिक संबंधों पर आधारित चयनात्मकता का सिद्धान्त कहा गया।

पिछले कुछ दशकों से, जुड़ाव के विभिन्न रूपों में जो मीडिया को उनके स्रोतों से जोड़ते हैं अर्थात् समाज और अन्य संस्थाओं को प्रकाश में लाया जा चुका है: वास्तव में मीडिया समाज और उनके ग्राहकों और श्रोताओं के लिए क्या करती है? अपने व्यवहार, दृष्टिकोण, और जीवन के रास्तों को बदलने में लोगों को कौन मजबूर करता है? संचार और सीखने की प्रक्रिया के रूप में आम तौर पर हम कहेंगे "ज्ञान"। लेकिन मीडिया का प्रत्यक्ष उत्पाद स्वयं ज्ञान नहीं है बल्कि "ज्ञान बढ़ाने" की संभावनाओं के साथ "संदेशे" होते हैं। मास मीडिया ज्ञान उत्पादन की एक मुख्य गतिविधि के रूप में केवल संस्था को शामिल नहीं करती है। दूसरों में, जैसे कि शिक्षा, धर्म या विज्ञान बहुत अधिक समान रूप से और अन्य संस्थाओं की तरह चित्रित किया जा सकता है, जैसे कि राजनीति और कानून, एक महत्वपूर्ण सहायक गतिविधि के रूप में ज्ञान उत्पन्न करते हैं। काम करने में इन दूसरी संस्थाओं से अक्सर मीडिया को अलग करना बहुत कठिन होता है, क्योंकि मास मीडिया उनको जनता तक पहुँचने के लिए एक चैनल प्रदान करती है। हालांकि, ज्ञान के उत्पादन के सम्बन्ध में मीडिया कई मायने में विशिष्ट है। उनके पास सभी प्रकार के सामान्य 'ज्ञान के लिए वाहन के कार्य' हैं। वे सार्वजनिक क्षेत्र में, पूरे समाज और सभी सदस्यों की पहुँच में संचालित होता है।

जनसंचार को विभिन्न तरीकों से परिवर्तन के लिए योगदान देते हुए पाया जाता है। आन्ध्रप्रदेश, केरल और पश्चिम बंगाल के गांवों के सर्वेक्षण में पॉल हार्टमैन ने देखा कि समाचारपत्र पढ़ने के बाद साक्षर लोगों का एक भाग, सूचनाओं और विचारों को दूसरों को पारित कर देता है। लोग रेडियो केवल मनोरंजन के लिए सुनते हैं, लेकिन कुछ कार्यक्रमों को सुनने का बिन्दु बनाते हैं, जैसे कि जो कार्यक्रम किसानों और महिलाओं से संबोधित होते हैं और बदलाव को प्रोत्साहित करने के लिए डिजाइन किए गए होते हैं। मीडिया जोखिम एक महत्वपूर्ण कारक के रूप में, बेहतर कृषि और स्वास्थ्य अभ्यासों और महिलाओं की तरफ अधिक सकारात्मक दृष्टिकोणों को बढ़ावा देने में और उत्तरदाताओं को प्रभावित करने वाली समस्याओं के बारे में जागरूकता निर्माण में एक विश्लेषण सर्वेक्षण में उजागर हुए। वहाँ पर दूसरे पहलू भी हैं जिनके महत्व को गिराना मुश्किल है। ये परिवर्तन का मुद्दा फिल्मों और लोकप्रिय संगीत से जुड़ा है हालांकि, इसका अपने आप में बदलाव बहुत महत्वा का नहीं है लेकिन परोक्ष रूप से सीखने का एक स्रोत है। विशेषरूप से संदर्भ स्रोत प्रदान करना इसमें नहीं दिखता जो लोगों को सामाजिक परिवर्तन की समझ बनाने में सहायता कर सके जिसे वे अपने चारों ओर देखते हैं। दूसरा अवलोकन, फिर से पश्चिमी बंगाल से है, जो पहनावें के फैशनो पर फिल्मों के प्रभाव और उसका प्रदर्शन जो गांव के पुरुषों में प्रदर्शित होता

NOTES

है की समानान्तर घटना की ओर निर्देशित है। ऐसी रिपोर्ट है कि खेतों में काम करने वालों में कैसे फैशन बदल रहा है और यह कि कुछ युवा फिल्मों में देखी गई शैली की नकल करते हुए : अपने बालों को लम्बा बढ़ा कर और अधिक पारंपरिक ड्रेसों को पहनने की बजाए लम्बे और फैले हुए पांयचों की पैन्टों को पहनते हैं। यह युवाओं और उनके माता-पिता के बीच घर्षण का एक स्रोत है जो इसको यौन संस्कृति और जाति मानदंडों की शुद्धता और प्रदूषण सहित पारम्परिक मूल्यों के प्रस्थान के लक्षण के रूप में देखते हैं। यह अवलोकन अपने आप में तुच्छ दिखाई देता है। इससे क्या फर्क पड़ता है कि युवा लोग किस प्रकार के कपड़े पहनते हैं? विकास के साथ इसका क्या करना है? एक निश्चित तरीके से इन सवालों का जवाब देना आसान नहीं है लेकिन वे कुछ उदाहरणों का संकेत देते हैं, ''सहानुभूति'' को बढ़ाने की मीडिया की क्षमता का एक उदाहरण, नयी भूमिकाओं को पहचान करने की क्षमता और एक बदला हुआ जीवन, जिसे लर्नर (1958) ने एक व्यापक अर्थों में विकास की आवश्यक वस्तु के रूप में देखा। लर्नर के अनुसार, किसी व्यक्ति द्वारा प्राप्त की गई परिवर्तन की ओर जाती नई आकांक्षाएं उसे एक नई भूमिका और बेहतर परिस्थिति में कल्पना करने की क्षमता जिसे, उन्होंने कहा, ''अच्छे कपड़े'' पहनना हो सकता है। यहाँ हमारे पास कार्यवाही में सहानुभूति का एक मामला है: युवा लोग फिल्मों की संस्कृति से प्रभावित होते हैं जो न केवल ''अच्छे कपड़े'' से बल्कि वास्तव में उसे पहनने की आकांक्षा से प्रभावित थे। कोई शक नहीं, इस तरह के कपड़े को अपनाना आवश्यक रूप से हमेशा व्यक्तिगत पसंद का विशुद्ध मामला नहीं था बल्कि इससे यह भी प्रतिबिम्बित होता है कि दुकानों में क्या उपलब्ध था, जो बदले में फिल्मों द्वारा लोकप्रिय बनाए गए फैशन से प्रभावित है। इससे प्रदर्शित होता है कि प्रक्रिया को न केवल एक मनोवैज्ञानिक रूप में बल्कि व्यापक आर्थिक और सांस्कृतिक घटना के रूप में समझा जाना चाहिए। किसी हद तक, इसे परिवर्तन की इच्छा की घोषणा के रूप में भी प्रस्तुत किया जा सकता है, प्रतिबंधात्मक और रूढ़िवादी मूल्यों और पारंपरिक ग्राम समाज की संरचना के सामने आधुनिकता को स्वीकार करने का एक साधन है। अटकलों की यह लाइन को अवलोकनों के द्वारा मजबूत किया गया है कि युवाओं की ''बगावत'' जिसे इन आधुनिकता के प्रतीकों के साथ उसके लगाव का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिनमें क्षेत्र की सीमा पर: जाति भेदभाव, लिंग भूमिकाओं, आर्थिक असमानता और शोषण, परिवार नियोजन और लोकतांत्रिक भागीदारी जैसी एक जटिल ''प्रगतिवादी'' दृष्टिकोण जिसमें एक हाथ से दूसरे हाथ तक जाने की प्रवृत्ति होती है।

वीडियो निश्चित रूप से ''संचार का एक वांडर चाइल्ड'' है। यह व्यक्तियों के अनुरूप विकास के संदेशों को इस तरीके से प्रदान करते हैं जो टेलीविजन और रेडियो के लिए सम्भव नहीं है। यह लोकप्रिय भागीदारी, ज्ञान को साझा करने की सुविधाएं, व्यक्तियों के द्वारा स्व-विकास के प्रयास के लिए समूहों और समुदायों को प्रोत्साहित कर सकता है। मनोरंजन प्रदान करने के अलावा, यह शिक्षा और प्रशिक्षण प्रदान करने का एक औजार साबित हो सकता है। इसकी सम्भावनाओं को अभी तक, व्यापक रूप से अतृप्त और अप्रयुक्त रही हैं। वीरबाला और वी एस गुप्ता ने तीन केस अध्ययनों पर कार्य किया है जहाँ पर वीडियो प्रौद्योगिकी को जागरूकता के निर्माण के लिए और आर्थिक तथा ग्रामीण विकास के निर्माण के लिए अपनाया और तात्कालिक बनाया गया है।

प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता इला भट्ट की अध्यक्षता में, सेवा "में (स्व-नियोजित महिलाओं का संगठन)ने दिखाया है कि कैसे वीडियो प्रौद्योगिकी का प्रयोग महिला निर्माण श्रमिकों, सब्जी विक्रेताओं और अन्य ऐसे स्व-नियोजित महिलाओं की शिकायतों को जाहिर करने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है जिनके पास सामूहिक सामाजिक कार्यवाही के लिए कोई मंच नहीं है। अहमदाबाद के मानेकचौक में सब्जी विक्रेताओं को उनके पारंपरिक कार्यों से हटाने के म्युनिसिपल कमेटी की कार्यवाही के खिलाफ, इन महिलाओं ने अपने आन्दोलनरत मूड और उनको बलपूर्वक हटाने के म्युनिसिपल कमेटी के निर्णय के विरोध के निश्चय को अपने विरोध आन्दोलन का विडीयो टेप बनाया। वीडियो में टेप किए गए मीटिंग और आन्दोलनो ने म्युनिसिपल अधिकारियों को महिला श्रमिकों की शिकायतों और उनको समझने के बारे में आश्वस्त किया। अधिकारियों ने उनको अपने पारंपरिक कार्य स्थल से हटाने की अपनी योजना को छोड़ने का फैसला किया।

सेवा ने नये ढ़ंग के कई स्वयं सहायता कार्यक्रमों जैसे निरक्षर महिलाओं के लिए बैंक एकाउन्ट खुलवाने और उनको ऋण तथा विपणन की सुविधाएं उपलब्ध कराने में, इसके अतिरिक्त उनको सामाजिक कार्य की मुख्य धारा में लाकर एक लम्बा रास्ता तय किया है। इन महिला श्रमिकों ने वीडियो कैमरा को संचालित करना और अपने विरोध के कार्यक्रमों को रिकार्ड भी सीखा। जब ऐसे कार्यक्रम - सामूहिक सामाजिक कार्यों को कैसे आयोजित करें - विधिवत वीडियो टेप किया जाता है और बाद में उनके समकक्षों को लखनऊ में दिखाया जाता है, आन्दोलनरत महिलाओं को उनकी प्राकृतिक भंगिमा और अभिव्यक्ति को देखकर, बाद वाले इतने उत्साहित हुए कि उन्होंने सीधे तौर पर लखनऊ में उसी के समान कार्यक्रम करने का निश्चय किया। ऐसी थी एक नवीनीकृत और कल्पनाशील अवधारणा कार्यक्रम की जिसे प्रमुख निवेश की तरह वीडियो प्रौद्योगिकी का उपयोग करके निर्माण किया गया था।

खेड़ा सामुदायिक परियोजना (केसीपी), जिसे बड़े पैमाने पर प्रलेखित किया गया है, ने 1984 में ग्रामीण संचार के लिए यूनेस्को का प्रतिष्ठित पुरस्कार प्राप्त किया। परियोजना स्थानीय चित्रण का, विकेन्द्रीकृत टेलीविजन प्रसारण का आदर्श उदाहरण है, जो ग्रामीण क्षेत्र में सामाजिक परिवर्तन कायम करने में प्रभावी है। बड़े पैमाने पर दर्शकों की भागीदारी, विशिष्ट मुद्दों की रुचियों की पहचान और ग्रामीण समुदाय के लिए प्रासंगिक, केन्द्र सरकार से राजनैतिक स्वायत्तता और राज्य सरकार से समर्थन इस संचार पहल की सफलता के लिए बढ़ रहे कारकों में थे। केसीपी, एसआईटीई से सीखे गये पाठ का प्रतीक है और एक प्रभावी चित्रण है कि क्या एक विकेन्द्रीकृत और भागीदारी सामुदायिक कार्यक्रम एक उत्प्रेरक एजेन्ट के रूप में सामाजिक परिवर्तन और ग्रामीण विकास के लिए कर सकता है।

कित्तूर, कर्नाटक में 12,5000 की आबादी वाला ऐसा गांव जिसने एक पथप्रदर्शक की तरह सेवा किया जिसमें सी-डॉट के द्वारा विकसित 128 लाइन ग्रामीण स्वचालित एक्सचेन्ज (आरएएक्स) को 1986 के मध्य में स्थापित किया गया। 74 ग्राहकों में से स्थानीय किसान और छोटे व्यापारी थे। उन्होंने अद्‌भुत रूप से औसत 2,400 कालें प्रति टेलीफोन प्रति वर्ष किया। कित्तूर में 74 लाइनों के प्रभाव का मूल्यांकन में स्थानीय बैंकों में नकद जमा में 80% की वृद्धि दर्ज किया गया, स्थानीय व्यापारिक आय में 20 से 30 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी हुई, और आसान, स्थानीय निवासियों के लिए अधिक तेज मेडिकल डॉक्टरों तक पहुँच से आपातकालीन स्वास्थ्य का अनुभव हुआ। मूल्यांकन सर्वेक्षण से पता चला कि कित्तूर गांव ने ग्रामीण टेलीफोन सेवा के निम्नलिखित फायदे दर्ज किए गए :

1. समय और पैसों की बचत।
2. कृषि उत्पादों के लिए उच्च कीमतें।
3. कृषि उत्पादों की बिक्री में वृद्धि।
4. चिकित्सा में तेज ध्यान।
5. मित्रों और रिश्तेदारों से सामाजिक सम्पर्क में वृद्धि।
6. अधिक कानून और व्यवस्था।
7. तेजी से सूचना और समाचार का प्रवाह।

कित्तूर में टेलीफोन इतना लोकप्रिय हुआ कि पड़ोसी गांवो ने भी उसी के समान सेवा की मांग रखी। स्वचालित ग्रामीण फोन का कित्तूर अनुभव की सफलतापूर्वक स्वागत किया गया। कित्तूर परियोजना और सी-डॉट के अन्य अनुसंधानों ने भारतीय टेलीफोनों की धारणा को एक लक्जरी होने की बजाए एक व्यापारिक आवश्यकता होने के रूप में मदद किया है। ऊपर के तीन चित्रण सामाजिक परिवर्तन और जागरूकता, राष्ट्रीय विकास और आर्थिक उत्थान के लिए वीडियो प्रौद्योगिकी, टेलीविजन तथा टेलीफोन के उपयोग, उस विचार को घर में लाते हैं जिसे सामाजिक रूप से प्रासंगिक और उद्देश्यपूर्ण कार्यक्रमों के लिए आधुनिक संचार प्रौद्योगिकी का प्रयोग किया जा सकता है। उनका प्रयोग, हालांकि, मनोरंजन और वाणिज्यिक शोषण के प्रयोजनों ने प्राथमिक रूप से व्यापक रूप से कानूनी चिन्ताओं को बढ़ाया है।

NOTES

प्रो0 सेलो सुमरदजान ने इण्डोनेशियन समाज पर उपग्रह संचार के सामाजिक प्रभावों का अध्ययन किया है। इण्डोनेशिया एक कम विकसित देशों में से है जिसने पलापा उपग्रह को अपने आधुनिकीकरण के अभियान के लिए खरीदा। रेडियो, टेलीविजन, टेलीफोन और फेसीमाइल को पलापा के द्वारा गहराई से प्रेरित किया गया जिसका संचालन 1970 दशके के मध्य में शुरू किया गया था। इण्डोनेशिया के उपग्रह पलापा को इण्डोनेशिया के राष्ट्रीय विकास में विशेषरूप से तत्काल संचार और जनसंचार के क्षेत्र में त्वरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। व्यक्तियों के बीच में तत्काल संचार पलापा से पहले समय और धैर्य का उपभोग था। लेकिन पालपा के साथ, देश भर में और अन्तर्राष्ट्रीय टेलीफोन कालें बिना देरी किए और न्यूनतम ध्वनि अवरोधों के आती थीं। इस 'त्वरित' टेलीफोन संचार को आगे टेलीफोन से फेसीमाइल को जोड़कर बढ़ाया गया, जो व्यापारिक दुनिया में एक लम्बी छलांग लगाने का कारण बना। व्यक्ति से व्यक्ति तक तेज और सटीक सूचना सौदों में तेजी और व्यापारिक गतिविधियों को संभव बनाता है। अन्य बातों के साथ, इन्डोनेशिया पालपा को धन्यवाद कहता है और जो आज आर्थिक समुदाय के सक्रिय सदस्यों में से एक है।

मास मीडिया के उपकरण के रूप में, पलापा ने रेडियो, और टेलीविजन के माध्यम से देश की एक बड़ी जनसंख्या के सामने संचार के चैनलों को खोल दिया। इसके सकारात्मक प्रभावों ने 'बहासा इन्डोनेशिया' ने एक सामान्य भाषा के रूप में सभी स्थानीय भाषाओं के ऊपर फैलाव को प्रदर्शित किया। इसने टेलीविजन के माध्यम से, अपने दर्शकों को अन्य निवासी समूहों की संस्कृतियों और कला प्रदर्शनियों के अलावा सीधे महत्वपूर्ण सरकारी प्रसारणों को सुनने के द्वारा लोगों में राष्ट्रवाद की भावना को मजबूत करके और उनका अपने राष्ट्रपति की टेलीविजन पर लगातार उपस्थिति के परिणामस्वरूप उनके साथ व्यक्तिगत परिचय कराने में भी सहायता किया। लेकिन, इसका नकारात्मक पक्ष पर, वहाँ विदेशी टेलीविजन कार्यक्रमों के माध्यम कार्यक्रमों का युवाओं द्वारा नकल और आधुनिक व्यावहारात्मक पैटर्न के बीच सामाजिक संघर्ष की ऐसी प्रवृत्ति महसूस होती है जिसे रूढ़िवादी पुरानी पीढ़ी के द्वारा अस्वीकृति जो ऐसे पैटर्नों की निन्दा अनैतिक और अभद्र पैटर्न के रूप में करते हैं। शोध के सबूत और अधिक सोच ने इस विचार का एहसास कराया कि सामाजिक संरचना के तथ्यों और सामाजिक संस्थाएं नकल और प्रसार की प्रक्रिया में शक्तिशाली हस्तक्षेप करते हैं। फिर भी, हमें सावधान रहना चाहिए कि एक गलत धारणा के रूप में प्रसार की प्रक्रिया या, जहाँ यह होता है हमेशा तुच्छ रूप में होता है। यह कम से कम प्रशंसनीय है कि बड़े आन्दोलनों के लिए महिला मुक्ति का आन्दोलन मास मीडिया के माध्यम से विज्ञापन का व्यापक प्रसार एक अच्छा सौदा हो सकता है। सारे विश्व में, महिलाओं की स्थिति राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर चिन्ता का विषय हो गई है। महिलाओं के खिलाफ उनके बारे में असमानता, उत्पीड़न, शिक्षा या अपराध के मुद्दों पर प्रकाश डालने में मीडिया ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसके परिणाम में, कई महिला संगठन सामने आयी हैं, जो महिलाओं के खिलाफ अपराध के मुद्दों को रोकने के बारे में काफी मुखर रहे हैं और महिलाओं की आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक और समस्त स्थितियों में संरचनात्मक सुधार ला रहे हैं। परिणामस्वरूप, महिलाओं ने अपने को कई स्वयं सहकारी संगठनों और महिला मंडलों में संगठित किया है जो उनके स्व-रोजगार और आत्म निर्भरता की तरफ कार्य कर रहे हैं। एक परिणाम के रूप में, महिलाओं से सम्बन्धित नीतियों को सरकार के द्वारा लागू किया गया है जिसमें विकास और परिवर्तन की प्रक्रिया महिलाओं के सशक्तीकरण की वैचारिक सोच के लिए पाली के रूप में अग्रणी होकर महिलाओं को इसमें बराबर का साझीदार और प्रतिभागी होने पर जोर दिया गया है। मीडिया ने अधिकांश तीसरी दुनिया के देशों में प्रचलित श्रमिक बच्चों के मुद्दों पर सकारात्मक प्रकाश डाला है, जहाँ वे घरेलू नौकर, या कालीन बुनकारों, काँच की चूड़ियां बनाने या उसमें सहायता करने में संलग्न हैं, और सभी प्रकार की गतिविधियों को कर रहे हैं। हमारे अपने ही देश में, सरकारी और गैरसरकारी संगठन इसके दोष के बारे में जागरूकता और इसके खिलाफ जनमत निर्माण के द्वारा बाल श्रमिकों की समस्या के उन्मूलन की ओर कार्य कर रहे हैं। कोई शक नहीं कि इस क्षेत्र में अभी बहुत कुछ किया जाना है, लेकिन लेकिन संचार ने निश्चित रूप से इसके सामाजिक प्रभाव की दिशा में कार्य शुरू कर दिया है। इन मौलिक मुद्दों के अलावा, समय समय पर मीडिया ने पर्यावरण बचाव, प्रदूषण, प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण, स्वास्थ्य के मुद्दे, रक्तदान, नेत्रदान, एड्स, कैन्सर, आणविक हथियार, परमाणु विज्ञान के शांतिपूर्ण उद्देश्यों के लिए उपयोग, निरस्त्रीकरण, आतंकवाद, युद्ध, दमन और सबसे

ऊपर बुनियादी रूप से सभी के लिए मानव अधिकार की ओर सकारात्मक जनमत निर्माण किया है। लेकिन परिवर्तन की प्रक्रिया अनावश्यक रूप से तेज, हिंसक और धरती हिलाने वाली नहीं होनी चाहिए बल्कि सामान्य, क्रमिक और धीमी गति से होनी चाहिए।

राजनीतिक विचारों को आकार देने में मास मीडिया की भूमिका

NOTES

मास मीडिया के राजनैतिक प्रभाव का अध्ययन करने में, हम कुछ संस्थाओं - मीडिया संगठनों का अध्ययन करते हैं। मीडिया संस्थाए अनिवार्य रूप से, जैसा कि नाम से तात्पर्य है, मध्यवर्ती और मध्यस्थ होती हैं। ऐसी संस्थाए कई अर्थों में मध्यवर्ती हैं: यह अक्सर हमारे (प्राप्तकर्ता के रूप में) और अनुभव की दुनिया के बीच हस्तक्षेप करती हैं जो सीधी समझ और सम्पर्क के बाहर आती है, कभी हमारे और अन्य संस्थाओं के बीच जिनसे हमें सौदा करना होता है। वे हमारे (और कभी-कभी अक्सर हमारा दूसरों से सम्पर्क में) साथ दूसरों से सम्पर्क करने के अर्थ में एक चैनल के रूप में मध्यस्थ थे, और इस अर्थ में भी कि हमारा व्यक्तियों, वस्तुओं, संगठनों और मास मीडिया के द्वारा हमारे द्वारा प्राप्त किए गए ज्ञान से आकार प्रदान की गई घटनाओं के सम्बन्ध में भी मध्यस्थ थे। हम अपने समाज के बारे में भी और सरकार तथा राजनैतिक नेताओं से हमारे सम्पर्क के प्रत्यक्ष अनुभव से अपेक्षाकृत कम जान सकते हैं जो अधिकतर मीडिया से लिए गए ज्ञान पर आधारित है। मास मीडिया के राजनैतिक प्रभाव के बारे में मान्यताओं ने जनसंचार अनुसंधान की दिशा के मार्गदर्शन में एक रचनात्मक भूमिका निभाई है।

अभी तक के रूप में अग्रणी जांच ने मीडिया को जोड़ तोड़ के उद्देश्य में नियोजित करने के लिए इसके लोकप्रिय प्रभावों और एक सर्वशक्तिमान और सक्षम होना स्वीकार किया है, यह स्वाभाविक था कि काफी अधिक ध्यान लोगों के राजनैतिक विचारों और दृष्टिकोणों के संचार के प्रभावों को दिया गया है। मास मीडिया के इस्तेमाल का नाटकीय उदाहरण इसके 1930 के प्रथम विश्व युद्ध में राजनैतिक विचारों और आदर्शों को प्रचारित करने में किया गया था, इसी के साथ अनुभवजन्य विश्लेषण में राजनीति विज्ञान की रुचि ने दृढ़विश्वास का नेतृत्व किया है कि शोध के लिए प्रमुख लक्ष्य में राय और दृष्टिकोणों को व्यक्तिगत प्राप्तकर्ताओं के बीच परिवर्तन की प्रक्रियाएं होनी चाहिए।

हमने नोट किया है कि समकालीन शहरों में जनसंचार के विभिन्न माध्यमों से सूचनाओं के निरंतर प्रवाह को लगातार उजागर कर रहे हैं। राजनैतिक यथार्थवाद में, विशेषरूप से, हमारा समाचार मीडिया पर निर्भरता खड़े रूप में पूर्ण है। कोई भी शायद ही, कभी राजनैतिक घटनाओं, निर्णयों, या गतिविधियों को पहले ही प्राप्त करता है। मास मीडिया जनता को सूचित करने और शिक्षित करने के द्वारा लोकतांत्रिक प्रणाली में राजनैतिक व्यवहार को समझने की ओर एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जाने माने राजनैतिक स्तंभकार वाल्टर लिपमैन ने अपने क्लासिक, सार्वजनिक मत (1922) में विश्व और वास्तविकताओं पर निर्भरता के बीच चर्चा किया है, जिसका हम अनुभव और उसपर कार्य करते हैं। उन्होंने बताया कि पर्यावरण जिसमें हम रहते हैं, के बारे में हम जो कुछ भी जानते हैं वह अप्रत्यक्ष रूप से हमतक आता है जिसे हम स्वयं पर्यावरण की तरह व्यवहार करते हैं। लिपमैन ने नोट किया, कि यद्यपि ''हमें इस धारणा और विश्वास पर यह पता करना मुश्किल होता है जिस पर हम कार्य कर रहे होते हैं, इसे दूसरे लोगों, दूसरे आयु और विश्व के चित्रों पर लागू करना आसान होता है जिनके लिए वे बहुत अपरिहार्य थे।'' लगभग सभी व्यक्ति ऐसी घटनाओं से व्यवहार करता है जो कि हमारी दृष्टि के बाहर और काबू करने में कठिन हैं। अपनी मौजूदा मूल्य और सामजिक व्यवस्था के बाहर, कल्पनाएं और प्रतीकें, मानव संचार के लिए महत्वपूर्ण हैं। जिसे मनुष्य और उसके पर्यावरण के साथ समायोजन कहा जाता है, जो कल्पनाओं के माध्यम से जगह लेता है। इस लिए, जनसंचार के नये युग में, लिपमैन ने राजनैतिक सोच के सिद्धान्त की रूपरेखा को आगे बढ़ाया।

आधुनिक समाज में, संचार चैनलों की जटिलताएं शरीर के तन्त्रिका तन्त्र के अनुरूप हैं जिसमें यह ऐसे साधन के रूप में कार्य करता है जिसके द्वारा राजनैतिक निर्देशों का पालन किया जाता है। राजनैतिक लक्ष्यों को निर्धारित करना, राष्ट्रीय मूड को प्रभावित करना, चेतना और राजनैतिक निर्णयों लेने की इच्छा में : ''नाड़ियां'' मास मीडिया के संचार चैनलों में राजनीतिक दिशा में बदलाव का पता लगाने के लिए

NOTES

अपरिहार्य है। चूँकि संचार इतना व्यापक है, कोई भी जनसंचार को सामाजिक प्रणाली को प्रमुख निधारिक के रूप में उम्मीद करना चाहिए, और चूँकि राजनीति सामाजिक गतिविधि का एक रूप है, हम उसी को सच होने में सच मान सकते हैं और पूछ सकते हैं, 'कितनी दूर और किन तरीकों से समूहों और व्यक्तियों के राजनैतिक सम्बन्धों को उनके बीच संचार के द्वारा प्रभावित किया जाता है। चूँकि संचार राजनीति व्याप्त है और कुछ भी एक समय या किसी अन्य पर एक माध्यम के रूप में कार्य करती है, सवाल कठिन है। इसका जवाब देने का एक तरीका, वास्तव में, राजनैतिक प्रणाली के एक मॉडल का वर्णन करना है, जो पूरी तरह से संचार की अवधारणा का उपयोग करते हैं जैसा कि कार्ल डब्ल्यू ड्यूश के द्वारा ''सरकार की नस'' में किया है। उसके राजनैतिक साइबरनेटिक्स के एक प्रमुख मुद्दे में हॉब्स की शक्ति केन्द्रित राजनीति अर्थात् 'नसों से मांसपेशियों तक' की धारणा से उसकी राजनीति के सार की पुनः परिभाषा से बहुत दूर है। यह सिद्धान्त कि सरकार शक्ति की तुलना में संचालन की एक समस्या है जो राजनैतिक अध्ययन के लिए नये विश्लेषणात्मक ढाँचे प्रदान करती है जिसे संचार और राजनीति की साइबरनेटिक्स दृष्टिकोण के लोकप्रिय रूप में जाना जाता है। मास मीडिया अनुसंधान के मुख्य परम्पराओं के कई सर्वेक्षण उपलब्ध हैं। यह तर्क कि शोध अनावश्यक रूप से दो कथनों पर टिकी हुई है। पहला, अध्ययन ने प्राथमिक प्रभावों पर ध्यान केन्द्रित किया है: जो कि मीडिया को सीधे उजागर व्यक्तियों सहित परिवर्तनों पर आधारित है। दूसरे प्रभावों में – प्रभावित व्यक्तियों से जुड़े हुए व्यक्तियों उनके दूसरे व्यक्तियों या समूहों के लिए नतीजों पर कम जोर दिया गया है। शोधों ने भी एक विशेष प्रकार के राजनैतिक अभिनेता पर जोर दिया है – वे लोग जो बड़े पैमाने के श्रोता में शामिल होते हैं।

इस परम्परा की शोध परियोजनाएं थोड़े दिन की होती हैं जो व्यक्तिगत व्यवहार की अपेक्षा सरल कार्यों पर आधारित है। राजनैतिक प्रभावों के एक अध्ययन में, एक स्पष्ट सवाल का विषय चुनाव है। क्या मास मीडिया मतों को परिवर्तित करता है? क्योंकि यह आसान और सतही निष्कर्षों को आमन्त्रित करता है कि यदि कुछ हफ्तों या महीनों के मतदाताओं के अध्ययनों के द्वारा मीडिया के खुलासे ने कुछ वोटों में परिवर्तन ला दिया है, तो 'मीडिया का चुनाव पर प्रभाव' नगण्य है। इस सवाल का एक वैकल्पिक जवाब यह हो सकता है: 'निर्वाचन प्रक्रिया में मीडिया का क्या कार्य है।' मीडिया संदेशों को आगे बढ़ाते हुए संचार चैनलों में से हैं, जो श्रोताओं को 'प्रभावित' कर सकता है या नहीं कर कर सकता। कोई वैकल्पिक अवधारणा नहीं है जो प्रभावित करे कि मीडिया अपने संदेशों (और स्वयं मीडिया) की शक्ति तक ही सीमित है। यह एक सवाल खुला छोड़ देता है: किसके ऊपर या किस प्रकार का क्या प्रभाव है?' जब ऐसा सवाल किया जाता है तो निर्वाचन प्रक्रिया में मास मीडिया के कार्य को अधिक व्यापक और अधिक महत्वपूर्ण देखा जा सकता है। सामान्य दिशा जिसमें मास मीडिया आगे जा रही है वह सामाजिक सन्दर्भ की अधिक से अधिक जागरूकता की ओर है जिसमें संचार होता है। मास मीडिया के 'प्रभावों' को पुरानी परम्पराओं में अन्तर्निहित सीमित अर्थों में ज्यादा देर नहीं निर्दिष्ट करना चाहिए। उस परम्परा के परिणाम हमें बिल्कुल अधूरे और भ्रामक तस्वीर के साथ छोड़ देते हैं कि कैसे मीडिया प्रभावित और संचालित होती है और किस प्रकार राजनीति कार्य करती है।

अब सवाल जो हमारे दिमाग में उठता है – ''मास मीडिया के द्वारा किस प्रकार के राजनैतिक सम्बन्ध प्रभावित होते हैं और उसके परिणाम क्या हैं?'' यह निर्विवाद रूप से मान लिया गया है कि शुरूआती रूप में प्रत्येक प्रभाव एक व्यक्ति पर कार्य करते हैं और इसमें कम से कम एक दूसरे व्यक्ति के साथ उसके सम्बन्ध के संशोधन शामिल हैं। सबसे अधिक सीमित राजनैतिक सम्बन्ध जिसे मास मीडिया प्रभावित कर सकता है, इसलिए, दो विशेष व्यक्तियों के बीच द्विपक्षीय सम्बन्ध हैं। पैमाने के दूसरे छोर पर राजनैतिक प्रणाली आती है जिसे एक पूर्ण रूप से समाज के सदस्यों की पूर्णता में अपने अन्तर्सम्बन्ध ी भूमिकाओं को माना जाता है। इसप्रकार, मास मीडिया का सबसे अधिक प्रभाव राजनैतिक प्रणाली पर होता है। उन चरम सीमाओं के बीच एक बड़ी संख्या में समूह या संस्थाएं आती हैं। हम, इसलिए, मास मीडिया के प्रभाव को तीन स्तरों के अनुसार वर्गीकृत कर सकते हैं: व्यक्तिगत, मध्यस्थ समूह या संस्था और पूर्ण प्रणाली।एक स्तर के भीतर या एक स्तर और दूसरे के बीच परिवर्तित सम्बन्धों में प्रभाव शामिल होते हैं। चूँकि वहाँ पर केवल एक 'पूर्ण प्रणाली' है वहाँ निस्संदेह उन स्तरों के भीतर कोई परिवर्तन नहीं हो सकते। 'प्रणाली पर प्रभावों' प्रणाली के संस्थाओं या व्यक्तियों के सम्बन्धों पर प्रभावी होता है अर्थात्

NOTES

स्तरों के बीच परिवर्तन होता है। अभ्यास में, स्पष्टतया, एक ही समय में, संचार उनमें एक से अधिक जोड़ों को प्रभावित करता है।

सम्बन्धों के स्तरों की पहचान करना आसान है। लेकिन रिश्तेदारी के सम्बन्धों के बारे में क्या है? मास मीडिया ज्ञान, दृष्टिकोण या व्यवहार में शामिल परिवर्तन को प्रभावित करती है। जहाँ उनके पास राजनैतिक गुण होता है वे परिवर्तन सम्बन्धित पक्षों के सापेक्ष 'भार' को उन ताकतों के संतुलन में जो राजनैतिक घटनाओं के दौरान शासित होती हैं उसको बदल देते हैं। उदाहरण के लिए, संयुक्त राज्य अमेरिका में, दर्शकों के दृष्किोण में परिवर्तन 1960 के चुनाव अभियान के दौरान प्रसिद्ध निक्सन-केनेडी बहस के परिणामस्वरूप आयी, जिसने दो उम्मीदवारों के सापेक्ष भार को बदल दिया। राजनैतिक 'भार' के बदलते हुए एक विशिष्ट अर्थ में, मीडिया को एक वस्तुपरक प्रभावों को रखने वाला जाना जा सकता है। लेकिन केवल वही प्रभाव नहीं होते हैं जिससे लोग प्रभावित होते हैं। प्रश्न 'किस प्रकार का प्रभाव किस पर और क्या?' में द्वितीयक और वस्तुपरक जवाब की प्रवृत्ति होती है। कह सकते हैं, मास मीडिया के द्वारा विविध भारों (या महत्व के) उनके अपने 'भारों' से जुड़े हुए है। मीडिया प्रभाव का पूरा महत्व आखिर में उस राजनैतिक प्रश्नों पर निर्भर रहता है जिसमें किसी की रुचि होती है। 'किस प्रकार के राजनैतिक सम्बन्ध ों को मीडिया प्रभावित करते हैं? क्योंकि यह मीडिया के बारे में सवाल बिलकुल नहीं है बल्कि राजनीति और विभिन्न प्रकार की राजनैतिक सिद्धान्तों का अध्ययन है। एक व्यक्ति के लिए जो प्रभाव महत्व का लगता है वह दूसरे के लिए तुच्छ हो सकता है। सबसे अधिक सामान्य रूप जिनमें एक व्यक्ति का सम्बन्ध राजनैतिक प्रणाली में मास मीडिया द्वारा प्रभावित हो सकता है, वह उसकी राजनीति की समझ है। राजनैतिक अभिनेता कौन हैं? क्या वे घटनाओं को नियन्त्रित करते हैं या वे स्वयं उनके द्वारा नियन्त्रित होते हैं? क्या राजनीति एक बहुमूल्य गतिविधि है? राजनैतिक मुद्दे क्या हैं। ऐसे सवालों के जवाब और जागरूकता को आंशिक रूप से स्वयं मीडिया के गुणों द्वारा अनुकूलित किया जाएगा, जैसे कि छोटी अवधि की घटनाओं को परिभाषित करने की प्रवृत्ति और दर्शकों द्वारा आसानी से आत्मसात करने के लिए विषयों के सुविधाजनक प्रतीकों में से हैं। एक व्यक्ति की नीतियों की सोच से एक कदम आगे उसके द्वारा समझे गये राजनैतिक प्रणाली की वैधता को स्वीकृति या अस्वीकृति है। जब कभी हम मास मीडिया की संस्था के ऊपर प्रभाव के बारे में बात करते हैं हम अभी भी वास्तव में व्यक्तियों पर उनके प्रभावों की बात करते हैं: 'संसद पर मास मीडिया के प्रभाव' का मतलब राजनैतिक सम्बन्ध में मीडिया द्वारा संसद के सदस्यों या गैर-सदस्यों के आपसी राजनैतिक सम्बन्धों पर कुछ कारणों से परिवर्तन हैं। फिर भी ऐसी स्थितियों को पता लगाना सम्भव है जहाँ एक प्राप्तकर्ता न केवल एक प्रेषक, संदेश और/या माध्यम बल्कि एक प्राप्तकर्ता होने की जागरूकता से प्रभावित हो सकता है।

समाजीकरण एक प्रक्रिया है जिसके दौरान विश्व के लोग उससे सीखने की उम्मीद कर सकते हैं और विश्व उनसे क्या उम्मीद करता है। सीखने की प्रक्रिया में मानव समाज के साथ रहने को परिभाषित किया गया है या वह प्रक्रिया जिससे मानव व्यवहार को सीखा या बनाए रखा जाता है। इसप्रकार, एक व्यक्ति जो समाजीकृत है उसको वह जिस समाज में रहता या रहती है और इसकी कई बुनियादी दृष्टिकोणों, मानदंडों और मूल्यों के बारे में न्यूनतम बुनियादी जानकारी प्राप्त करे। लोग धीरे-धीरे इसके बुनियादी दृष्टिकोणों को बनाते हैं जो उनके ध्यान को शासित कर सकता है। लोग परिवारों में रहने, राजनीति में, शैक्षिक जीवन और इसी प्रकार के अन्य में समाजीकृत होते हैं। वे दिन के निश्चित समय में रेडियो और टेलीविजन को खोलते हैं, नाश्ते के समय वे समाचारपत्र पढ़ सकते हैं या वे रात में सोने से पहले कोई पुस्तक या पत्रिका पढ़ना पसन्द करते हैं। मीडिया से समाजीकरण यह निर्धारित करने में मदद करता है कि हम विभिन्न स्रोतों से प्राप्त सूचनाओं पर कैसे विश्वास करें। देश में प्रेस ने सरकार और शासनों के खिलाफ आलोचना पर प्रकाश डाल कर एक सकारात्मक भूमिका निभाई है। आजादी के बाद, देश को विभिन्न प्रकार की समस्याओं जैसे साम्प्रदायिक दंगे, प्रवास और शरणार्थी की समस्याओं से सामना करना पड़ा। इन समस्याओं के साथ निपटने में मास मीडिया महत्वपूर्ण भूमिका निभाने में साम्प्रदायिक सद्भाव, और धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण की आवश्यकता पर बल देते हुए दंगों के समाचारों से निपटने में निकट रूप से शामिल हुई। संविधान को अपनाने के बाद, भारत सरकार ने देश के विकास के लिए एक योजना तैयार किया। इन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए सरकार और लोगों को एक मंच पर लाने में उनके साथ संचार करके एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई

NOTES

है। लोग राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मामले की घटनाओं से बराबर सचेत रहने के लिए समाचारपत्र खरीदकर पढ़ते हैं, अन्य पढ़ने की सामग्री जो उनकी पसंद और स्वाद से सम्बन्धित होती है, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं के बारे पढ़ने, मीडिया के बारे में सुनने से मीडिया ने स्वतंत्रता से और सामान्य रूप से कार्य करना प्रारम्भ कर दिया है। लोकतांत्रिक देशों में लोगों की नागरिक स्वाधीनता और अधिकारों की रक्षा के लिए मीडिया बहुत आवश्यक है। मास मीडिया ने साउथ अफ्रीका के रंगभेदी शासन के खिलाफ जातिवादी भेदभाव को मिटाने में एक बहुत महत्वपूर्ण भूमिका अदा किया और साउथ अफ्रीका की सरकार के खिलाफ जनमत का निर्माण करके महान राष्ट्रवादी नेता, 'नेल्सन मांडेला' को राजनैतिक आजादी देने के लिए मजबूर किया। इसप्रकार, रंगभेद की समाप्ति हुई और नई लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं की शुरूआत हुई। हाल ही में, शक्तियों के खिलाफ शीर्ष में मिस्त्र, ट्यूनीशिया, और लीबिया में सामाजिक मीडिया ने लोकप्रिय आन्दोलनों में एक महान भूमिका अदा किया था।

इसी के समान, म्यांमार की निर्वासित राष्ट्रपति, नोबल पुरस्कार विजेता आंग सुई केई को संचार ने स्वतंत्रता दिलाई। किसी देश में लोगों की राजनैतिक आजादी को अधिक देर तक दबाकर नहीं रखा जा सकता। इतिहास ने भी समय-समय पर प्रदर्शित किया है कि लोगों के बीच में राजनैतिक आजादी और चेतना बहुत वांछित है। लोग अभी भी मुसोलिनी और हिटलर के अत्याचार को नहीं भूल सकते। आँसू और दर्द के निशान अभी भी मानव जाति के मस्तिष्क में ताजी हैं, और जर्मनी कभी भी इतिहास के उस दौर को कभी नहीं भूल सकता। इसीप्रकार, बोस्निया, साराजेवो, हर्जेगोविना, पाकिस्तान और कम्बोडिया के जातिवादी संघर्ष अब उन देशों की विशेष सीमाओं तक सीमित नहीं हैं बल्कि पूरे विश्व में लोगों ने उसके बारे में सुना, देखा और पढ़ा है और उनकी निन्दा भी की है। मीडिया हमें अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में राजनैतिक स्थिति के बारे में जानने के अवसर देता है। वे हमें विभिन्न मुद्दों पर जनमत को बनाने और मोड़ने में मदद करते हैं।

मास मीडिया ने आदिवासियों को भी राष्ट्र की मुख्य धारा में लाने की निर्णायक भूमिका निभाई है। दक्षिणी बिहार के असन्तुष्ट आदिवासी अपने गुटीय विभाजनों के बावजूद, एक शिक्षित आदिवासी समुदाय और अधिक प्रभावी राजनैतिक संगठन के उभरने से अपने बीच बढ़ती राजनैतिक चेतना से सिहर रहे थे। आदिवासियों के इस मूड ने एक अलग झारखण्ड राज्य को बनाने की मांग के रूप में अभिव्यक्ति पायी। ऐसा ही छत्तीसगढ़ और उत्तराखंड के मामले में हुआ।

समाजशास्त्रियों के लिए राजनैतिक घटनाओं का विश्लेषण करना एक पसंदीदा विषय रहा है। उन्होंने प्रेस के चुनावों के व्यवहार के अध्ययन में समाचारपत्र और जनमत के बीच सम्बन्ध में पूरी रुचि के साथ व्यक्त किया है। मुम्बई के गुजराती, मराठी और हिन्दी समाचारपत्रों में प्रेस के स्वभाव पता लगाने के लिए एक अध्ययन किया गया जिससे पता चला कि बड़े पैमाने के समाचारपत्र राजनैतिक रूप से पक्षपाती थे और उनकी भविष्यवाणियाँ व्यापक रूप से बाहर से थे (रौंया, 1953)। हक और नारंग (1983) ने 1962 और 1977 के दो भारतीय चुनावों में कवरेज की प्रवृत्ति की पहचान के लिए तीन राष्ट्रीय दैनिक दि हिन्दू, दि टाइम्स ऑफ इण्डिया, और दि हिन्दुस्तान टाइम्स के सम्पादकीय सामग्री का विश्लेषण किया। उनके अनुसार, उस समय की सत्तारूढ़ कांग्रेस पार्टी का दोनों चुनावों के कवरेज में प्रभुत्व था। स्थान और आवृत्ति के मामले में, चुनाव से सम्बन्धित मदों में पूर्व से बाद के चुनाव में तेज वृद्धि थी।

जनसंचार स्पष्ट रूप से भारी संक्रमण के मध्य में है, जिसे केवल समय ही बतायेगा। प्रत्येक नवाचार एक तरफ तो कुछ जोड़ता है वहीं दूसरी ओर कुछ घटाता है। किसी भी घटना में, ऐसे सभी नवाचारों का अप्रत्याशित अभाव है। एक अन्तिम बिन्दु जहाँ पर बहुत कम संदेह हो सकता है वह मीडिया है, चाहे मोल्डरों या परिवर्तन के रिफ्लेक्टर निस्संदेह परिवर्तन के संदेशवाहक हैं, या अपने निर्माताओं या अपने श्रोताओं द्वारा ऐसे देखे जाते हैं, और यह उनके अवलोकन में है कि मास मीडिया पर मुख्य परिप्रेक्ष्य को संगठित किया जा सकता है। आने वाली पीढ़ी में, हमारे समाज में प्रत्येक व्यक्ति का जीवन और कई दूसरे समाजों में परिवर्तनों द्वारा प्रभावित होंगे। लेकिन इन परिवर्तनों की कई दिशा अभी भी निर्धारित की जानी है। क्या संचार का प्रसारण हमें पास लाएगा या अलग करेगा? क्या मीडिया विविध दृष्टिकोण और व्यापक रेज के व्यक्तियों के लिए खुला होगा, या प्रेस की ओर पहुँचकर अधिक प्रतिबोधित हो जाएगा?

क्या वहाँ नीति निर्माण में व्यापक भागीदारी होगी, या इच्छाशक्ति अधिक केन्द्रीकृत हो जाएगी? इसप्रकार के सवालों के जवाब कई कारकों पर निर्भर होंगे, लेकिन उनमें से एक, उस हद तक होगा जिस तक हममें से प्रत्येक मीडिया को समझता है और उसके द्वारा प्रयोग होने की बजाए एक ढंग जिसमें हम उसका प्रयोग करेंगे।

जनसंचार के माध्यम तथा विज्ञापन में प्रयुक्त हिन्दी

आधुनिक युग में जनसंचार के माध्यम तथा विज्ञापन आदि की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। ये दोनों क्षेत्र एक दूसरे से घनिष्ठ सम्बंध रखते हैं। इन क्षेत्रों में हिन्दी का विशिष्ट प्रयोजनमूलक रूप प्रयुक्त होता है जिससे उसकी उपदेयता और अभिव्यक्ति क्षमता के नये रूप उद्घाटित होते हैं। अत: इन क्षेत्रों की विशद चर्चा आवश्यक है।

क–जनसंचार के माध्यमों में प्रयुक्त हिन्दी :

जन संचार के माध्यमों के अन्तर्गत मुख्यत: समाचार पत्र, रेडियो, दूरदर्शन, फिल्म तथा कम्प्यूटर आदि आते हैं। जनसंचार के इन सभी माध्यमों ने विश्व में फैली समस्त मानव–जाति जीवन को प्रभावित किया है। शिक्षा ने विज्ञान को जन्म दिया है और विज्ञान ने जनसंचार के आधुनिक साधनों को। जनसंचार के ये साधन मनुष्य की आधुनिक शिक्षा तथा विज्ञान दोनों के प्रचार एवं प्रसार के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका तथा दायित्व का निर्वाह कर रहे हैं।

"जनसंचार" अंग्रेजी के Mass Communication शब्द का पर्यायी शब्द है। जिसका मतलब है–"किसी वस्तु या विषय का सब के लिए साँझा होना"। अत: 'Communication' उस प्रक्रिया को कहा जाएगा। जिसके द्वारा किसी भाव, विचार अथवा जानकारी को हम दूसरों तक पहुँचाते हैं। जब यह प्रक्रिया सामूहिक पैमाने पर होती है तो इसे 'जनसंचार' अर्थात् Mass-communication कहते हैं।

दूसरी ओर विचार करें तो पता चलता है कि 'जनसंचार' शब्द समूह में प्रयुक्त 'संचार' शब्द संस्कृत के 'चर' धातु से बना है जिसका अभिप्राय है–"चलना"। इसी से संचार शब्द बना जिसका तात्पर्य है–आगे बढ़ना; फैलाना आदि। इस संदर्भ में 'जनसंचार' से अभिप्राय होगा–मानव समुदाय के सभी मिले-जुले वर्गों तक बड़े पैमाने पर, चाहे वह समीप हो या दूर, कुछ विचार, भाव अथवा सूचनाएँ शब्दों या प्रतीकों द्वारा सम्प्रेषित किये जाते हैं और इस काम के लिए इलैक्ट्रॉनिक उपकरणों आदि का प्रयोग किया जाता है, तो कहा जाएगा कि 'जनसंचार' की प्रक्रिया जारी है।

अत: स्पष्ट है कि जनसंचार का अर्थ सूचना (Information) को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाना है। इतना ही नहीं जनसंचार के माध्यमों द्वारा जनमत का निर्माण भी सहज सम्भव होता है।

जनसंचार की विशेषताएँ

अ) जनसंचार की सबसे प्रमुख विशेषता है कि यह साधारण जनता के लिए होता है अर्थात् यह विशेष वर्ग के लिए नहीं होता।

आ) जनसंचार की दूसरी विशेषता यह है कि यह अपना संदेश तीव्रतम गति से गंतव्य तक पहुँचाता है। समाचार पत्र, रेडियो तथा टेलीविजन के माध्यम से तीव्र गति से कोई भी संदेश जन-सामान्य तक पहुँचाया जा सकता है।

इ) जनसंचार का माध्यम लिखित या मौखिक कोई भी हो सकता है। मौखिक में भाषण या वक्तव्य द्वारा और लिखित में समाचार पत्र-पत्रिकाएँ आती हैं।

ई) जनसंचार प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष हो सकता है। प्रत्यक्ष रूप से जनता के समक्ष खड़े होकर संदेश दिया जा सकता है। अप्रत्यक्ष रूप से पर्दे के पीछे रहकर जनता को संदेश दिया जा सकता है।

उ) जनसंचार की सबसे प्रमुख विशेषता यह है कि इसमें जन-सामान्य की प्रतिक्रिया का पता चल जाता है।

ऊ) जनसंचार का प्रभाव गहरा होता है और उसे बदला भी जा सकता है।

NOTES

जनसंचार माध्यमों की उपयोगिता

जनसंचार माध्यमों की उपयोगिता अलग-अलग स्थितियों तथा अलग-अलग संदर्भों में अलग-अलग है। किन्तु इसके बावजूद इन सभी माध्यमों का उद्देश्य तथा लक्ष्य एक ही है। समाज की शैक्षिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा राजनीतिक धरोहर को वृद्धिगत करने तथा व्यक्ति के 'जानने' व 'अभिव्यक्ति' के मूलभूत अधिकार को अक्षुण्ण रखने की दिशा में संचार माध्यमों की उपयोगिता को मुख्यत: पाँच प्रकार से स्पष्ट किया जा सकता है।

1) **सूचना** (Information) —जनसंचार के माध्यमों के द्वारा विश्व की विभिन्न घटनाओं, सामाजिक तथा राजनयिक स्थितियों की सूचना जन-सामान्य को यथाशीघ्र उपलब्ध हो जाती है। इसी के साथ, देश-विदेश की प्रगति तथा वैज्ञानिक आविष्कारों की गति की सूचना भी जनता तक पहुँचाते हैं।

2) **अभिव्यक्ति** (Expression) —जनसंचार के माध्यमों द्वारा व्यक्ति अपने विचार तथा भावों को स्वतंत्र रूप से अभिव्यक्त करता है। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता सरकारी माध्यमों की अपेक्षा समाचार पत्रों में अधिक खुले रूप से रहती है। इसीलिए समाचार पत्रों की महत्ता अन्यों की तुलना में बढ़ जाती है।

3) **विचार तथा घटनाओं का विश्लेषण**—जनसंचार के माध्यम देश-विदेश की घटनाओं की सूचना देने के साथ ही साथ उनके अर्थ का विश्लेषण भी करते हैं तथा सही मुद्दों तथा विचारों के लिए जन-सामान्य का मत-परिवर्तन करने में अहम् भूमिका अदा करते हैं।

4) **प्रगति एवं विकास**—जनसंचार के माध्यम जन-सामान्य की सामाजिक तथा राजनीतिक प्रगति, आर्थिक विकास आदि के लिए सघन अभियान चलाते हैं तथा मिशन के रूप में कार्य करते हैं।

5) **मनोरंजन** (Entertainment) —रेडियो, दूरदर्शन तथा फिल्म आदि जनसंचार के माध्यमों जनता के लिए रोचकता तथा मनोरंजन के प्रभावी साधन बनते हैं। इसके साथ, देश-विदेश की कला एंव संस्कृति के समुचित विकास के लिए भी अपना महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करते हैं।

जनसंचार के माध्यम

जनसंचार के समस्त माध्यमों को तीन भागों में विभाजित किया जाता है–

अ) शब्द संचार माध्यम :
इसके अन्तर्गत समाचार पत्र, पत्रिकाएँ तथा पुस्तकें आदि आते हैं।

आ) श्रव्य संचार माध्यम :
इसके अन्तर्गत रेडियो, कैसेट तथा टेपरिकॉर्डर आदि आते हैं।

इ) दृश्य संचार माध्यम :
इस कोटि के अन्तर्गत दूरदर्शन, वीडियो तथा फिल्म आदि आते हैं।

जनसंचार माध्यमों के लिए समाचार लेखन

जनसंचार माध्यमों में समाचार पत्र, रेडियो तथा दूरदर्शन का विशेष स्थान है और इनके लिए समाचार लेखन का उससे भी अधिक महत्व माना जा सकता है। समाचार को हासिल करना, उसे लिखना और उस पर यथास्थिति संपादकीय संस्कार करना एक अत्यन्त कौशल की बात है। जब कोई घटना सर्वप्रथम दुनिया के सामने लाई जाती है तब वह समाचार कहलाती है और प्राप्त समाचार का सुयोग्य व सटीक सम्पादन किया जाना समाचार पत्र, रेडियो, तथा दूरदर्शन आदि तीनों माध्यमों के संदर्भ में अत्यन्त महत्व रखता है। समाचारों के संदर्भ में कुछ सतर्कता बरतनी पड़ती है। जैसे–समाचार झूठ या अश्लील नहीं होना चाहिए, समाचार किसी की मानहानि या बदनामी करने वाला नहीं होना चाहिए, कोई भी समाचार कानून

का उल्लंघन न करता हो, समाचार ऐसा न हो कि जनता की भावनाओं को भड़काए। समाचार लेखन में निम्नलिखित बातों की ओर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए–

NOTES

अ) समाचार लेखन की भाषा शैली अत्यन्त स्पष्ट, सरल तथा सुबोध होनी चाहिए।

आ) समाचार में अपरिचित शब्दावली का प्रयोग नहीं किया जाना चाहिए।

इ) समाचारों का लेखन संक्षिप्त तथा प्रभावशाली होना चाहिए।

ई) समाचार लेखन में घटना के सम्बंध में निम्न प्रश्नों का ध्यान रखा जाना चाहिए– कहाँ?, कब?, किसने?, किसलिए?, किसे? और कैसे?

उ) समाचार अपने आप में पूर्ण होना चाहिए अर्थात् समाचार आधा-अधूरा नहीं लगना चाहिए।

ऊ) समाचार लेखन की भाषा में सम्प्रेषणीयता का होना आवश्यक है। अर्थात् समाचार में पांडित्य प्रदर्शन अथवा अनावश्यक वैचारिक विश्लेषण नहीं होना चाहिए।

ए) समाचारों का लेखन तथ्यात्मक जानकारी पर आधारित होना चाहिए। अर्थात् समाचार लेखक को सत्यान्वेषी होना आवश्यक है।

ऐ) समाचार लेखन में निर्वैयक्तिकता का होना अपेक्षित है। अर्थात् समाचारों में संवाददाता या समाचार लेखक का व्यक्तित्व नहीं झलकना चाहिए।

समाचार-अभिकरण

आधुनिक युग में तथा जनसंचार हेतु समाचार-अभिकरणों (छमे (हमदबपमे) का बहुत महत्व है। उपग्रहों के आविर्भाव के कारण संचार प्रणाली अति शीघ्रगामी हो गई है। टेलेक्स, फोन, टेलीप्रिंटर, फैक्स, वायरलेस आदि अनेक संसाधनों द्वारा समाचारों का तीव्र गति से आदान-प्रदान संभव हो सका है। अद्यतन समाचारों के लिए विश्व भर में विविध समाचार एजेन्सियाँ कार्य रही हैं। भारत में कुछ महत्वपूर्ण समाचार एजेन्सियाँ निम्नानुसार हैं–

1. **पी०टी०आई०**–यह अंग्रेजी शासन काल से कार्यरत है जो पहले ए०पी०आई० के नाम से जानी जाती थी। स्वतंत्रता के बाद उसका नाम भारतीयकरण करके इसका नाम पी०टी०आई० अर्थात् प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया कर दिया गया। यह सरकारी एजेन्सी के रूप में जानी जाती है तथा अंग्रेजी में समाचार प्रसारित करती है।
2. **यू०एन०आई०**–देश के कुछ बड़े समाचार पत्रों ने मिलकर यू०एन०आई० अर्थात् यूनाइटेड न्यूज ऑफ इंडिया की स्थापना सन् 1961 में की। एक प्रकार से सरकारी एजेन्सी पी०टी०आई० की प्रतियोगी संस्था के रूप में यू०एन०आई० कार्य कर रही है। यह भी अंग्रेजी में ही समाचार वितरित करती रही हैं।
3. **हिन्दुस्तान समाचार**–भारतीय भाषाओं में समाचार प्रसारित करने के उद्देश से 1949 में "हिन्दुस्तान समाचार" नामक एजेन्सी शुरू की गई। शुरू में इसके द्वारा प्रादेशिक समाचारों के संकलन एवं प्रसारण आदि कार्य सम्पन्न होता रहा। सन् 1954 में सर्वप्रथम देवनागरी (हिन्दी) टेलीप्रिंटर का उपयोग इस समाचार एजेन्सी ने शुरू किया। बाद के वर्षों में इसका फैलाव देशभर में हो गया।
4. **भाषा**–प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया ने हिन्दी भाषा में समाचार प्रसारित करने के उद्देश्य से 1986 में "भाषा" न्यूज एजेन्सी का गठन किया। इसकी सेवाएँ देशभर के सैकड़ों बड़े एवं छोटे समाचार पत्र ले रहे हैं।
5. **यूनीवार्ता**–यूनाइटेड न्यूज ऑफ इंडिया समूह ने 1982 में हिन्दी में समाचार के लिए "यूनीवार्ता" नामक एक अलग एजेन्सी की स्थापना की। अंग्रेजी समाचार एजेन्सी की छत्रछाया में रहने के कारणा अनेक मूलभूत सुविधाएँ इसे अनायास प्राप्त हो गईं। फलतः इसके कार्य का फैलाव देशभर में शीघ्रता से हो गया।

स्व प्रगति की जाँच करें:

3. कित्तूर गांव ने ग्रामीण टेलीफोन सेवा के कौन-से फायदे दर्ज किए हैं?
4. जनसंचार की क्या विशेषताएँ हैं ?

NOTES

6. **समाचार भारती**–भारतीय भाषाओं में समाचार देने के उद्देश्य से सन् 1965 में "समाचार भारती" नामक समाचार एजेन्सी की स्थापना की गई। यह संस्था लिमिटेड कम्पनी के रूप में प्रारम्भ की जाने के कारण मात्र पूरक बनी रही और उसका स्वतंत्र रूप से विकास नहीं हो सका।

ख–विज्ञापन :

जनसंचार के माध्यमों में विज्ञापन (Advertisement) की अपनी विशेष भूमिका होती है। सामान्यत: विज्ञापन का सम्बंध व्यापार विशेष से जुड़ा हुआ है। वस्तुओं के उत्पादन तथा वितरण की प्रक्रिया में विज्ञापन एक अनिवार्य तथा उपादेय तत्व के रूप में महत्तम कार्य कर रहा है। अत: विश्व की समस्त अर्थ-व्यवस्था में एक शक्तिमान हथियार के रूप में विज्ञापन का प्रयोग सर्वत्र किया जा रहा है।

विज्ञापन शब्द अंग्रेजी के Advertisement का हिन्दी रूपान्तरण है जिसका अर्थ है–सार्वजनिक सूचना, सार्वजनिक घोषणा, विशेष रूप से ज्ञापित वस्तु, विशेष सूचना या जानकारी देना।

विज्ञापन विक्रय-कला का एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण एवं अनिवार्य तत्व है। विज्ञापन लोगों को वस्तु के बारे में संक्षिप्त शब्दों में अधिक-से-अधिक जानकारी देता है तथा सम्बंधित उत्पादित वस्तु के बारे में उपभोक्ता के मन में विश्वसनीयता पैदा करने की पूरी कोशिश करता है। इस सम्बंध में प्रसिद्ध विचार स्टार्च ने विज्ञापन पर विचार करते हुए स्पष्ट किया है कि–"विज्ञापन प्राय: मुद्रण के रूप में किसी प्रस्ताव को लोगों के सम्मुख प्रस्तुत करता है जिससे कि वे उसके अनुसार कार्य करने को प्रेरित हो सकें"। किन्तु उक्त परिभाषा में दृश्य एवं श्रव्य (Audio-Visual) साधनों अथवा माध्यमों का विचार नहीं किया गया है। इस दृष्टि से डॉ० डरबन की परिभाषा द्रष्टव्य है :

"विज्ञापन के अन्तर्गत वे सब क्रियाएँ आ जाती हैं, जिनके अनुसार दृश्यमान अथवा मौखिक संदेश जनता को सूचना देने के उद्देश्य से तथा उन्हें या तो किसी वस्तु को क्रय करने के लिए अथवा पूर्व निश्चित विचारों, संस्थाओं अथवा व्यक्तियों के प्रति झुक जाने के उद्देश्य से सम्बोधित किये जाते हैं।" इस प्रकार, संक्षेप में कहा जा सकत है कि–

"विज्ञापन जनसम्पर्क का एकमात्र ऐसा शक्तिशाली साधन है जिसके माध्यम से उत्पादित-वस्तु के बारे में प्रभावी सूचना द्वारा उपभोक्ता के मन में विश्वास पैदा कर उसके क्रय हेतु उन्हें व्यापक पैमाने पर प्रेरित किया जाता है।"

उक्त चर्चा के आधार पर विज्ञापन के कुछ महत्त्वपूर्ण उद्देश्य तथा कार्य हैं–उत्पादित वस्तु का परिचय देना, सम्बंधित वस्तु की माँग बढ़ाना, बिक्री बढ़ाना, विक्रय समर्थन बढ़ाना, बिचौलियों की वस्तु की अधिक बिक्री हेतु विवश करना, उपभोक्ताओं को सम्बंधित वस्तु, तथा उसमें निहित विशेषताओं का स्मरण दिलाते रहना आदि।

विज्ञापन के प्रकार

बाजार एवं अर्थ-व्यवस्था की अलग-अलग स्थिति एवं संदर्भ के अनुसार विज्ञापन का स्वरूप भी बदलता है। अलग-अलग प्रसार माध्यमों से किये जाने वाले विज्ञापन अलग-अलग प्रकार के होते हैं जो अपना प्रभाव भी वैसा ही छोड़ते हैं। अत: व्यापार, उत्पादन सेवा तथा व्यवसाय आदि की प्रकृति तथा आवश्यकता के अनुसार विज्ञापन का स्वरूप भी बदल जाता है। अत: विज्ञापन को मुख्यत: निम्नानुसार भेदों में विभाजित किया जा सकता है–

A) अनुनेय विज्ञापन (Persuasive Advertisement) :

इन्हें सामान्य विज्ञापन भी कहा जा सकता है। इस प्रकार के विज्ञापन व्यक्ति के जीवन की सर्व सामान्य या मूलभूत आवश्यकताओं (Fundamental needs) जैसे–भोजन, कपड़ा, स्वास्थ्य, मकान तथा शिक्षा आदि से सम्बंधित वस्तुओं के होते हैं और इन्हें खरीदने के लिए उपभोक्ताओं को सीधे-सीधे प्रेरित करते हैं।

NOTES

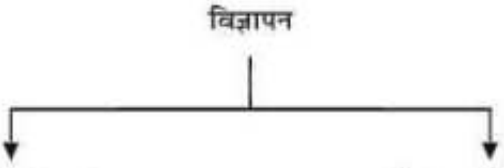

विज्ञापन के प्रकार	विज्ञापन के माध्यम
1. अनुनेय	1. प्रेस माध्यम (समाचार पत्र, पत्रिकाएँ)
2. सूचनाप्रद	2. मनोरंजन (रेडियो, दूरदर्शन, सिनेमा)
3. संस्थानिक	3. बाह्य माध्यम (पोस्टर, होर्डिंग, विद्युत चल सिस्टम)
4. औद्योगिक	
5. वित्तीय	
6. वर्गीकृत	

B) सूचनाप्रद विज्ञापन (Informative Advertisement) :

इसे ज्ञानप्रद विज्ञापन के नाम से भी जाना जाता है। कुछ वस्तुएँ जीवन में स्थायी महत्व रखती हैं किन्तु इनका मूल्य बहुत अधिक होने के कारण सामान्य उपभोक्ता अपने जीवन में उन्हें बार-बार नहीं खरीदता। इन वस्तुओं की तकनीक आदि के बारे में भी सामान्य उपभोक्ता को उचित जानकारी नहीं होती जिसके कारण उन्हें खरीदने में वे झिझक महसूस करते है। ऐसी विशिष्ट वस्तुओं जैसे– मोटरकार, स्कूटर, फ्रिज, टेलीविजन, वाशिंग मशीन, कूलर तथा एयन कंडीशनर आदि के बारे में उपभोक्ताओं को उचित जानकारी व सूचना उपलब्ध कराने वाले विज्ञापन सूचनाप्रद या ज्ञानप्रद विज्ञापन की श्रेणी में आते हैं।

C) सांस्थानिक विज्ञापन (Institutional Advertisement) :

इस प्रकार के विज्ञापन संस्थाओं से सम्बंध रखते हैं अर्थात् ऐसे विज्ञापन किसी संस्था की प्रतिष्ठा को विज्ञापित करते हैं। इन विज्ञापनों के माध्यम से सम्बंधित संस्थाएँ अपनी साख, महत्वपूर्ण सेवा तथा सामाजिक अथवा सांस्कृतिक दायित्वों का वहन करती हैं–जैसे, बजाज फाउंडेशन, भारतीय ज्ञानपीठ, फोर्ड फाउन्डेशन आदि। साधारणतया इस प्रकार के विज्ञापन 'जन-सम्पर्क' (Public Relation) की श्रेणी में रखे जा सकते हैं।

D) औद्योगिक विज्ञापन (Industrial Advertisement) :

औद्योगिक क्षेत्र में बड़े उद्योग छोटे सहायक कार्यों के लिए लघु उद्योगों की सहायता लेते हैं। इससे श्रम विभाजन होता है और समय की बचत भी होती है। इसी प्रकार, उद्योगों द्वारा निर्मित वस्तुओं की बिक्री के लिए एजेन्सी आदि देने के लिए इन विज्ञापनों का प्रचुर उपयोग किया जाता है। बड़े उद्योग विज्ञापनों द्वारा छोटे उद्योगों से आवश्यक कच्चा माल अथवा सहायक सामग्री टेंडरों आदि द्वारा आमंत्रित करते हैं। जैसे–कार बनाने वाली कम्पनी स्वयं टायर, ट्यूब नहीं बनाती बल्कि अन्य उद्योगों से माँगते हैं। कुछ कम्पनियाँ अपने उत्पाद की बिक्री बढ़ाने हेतु अन्य उद्योगों से तालमेल बनाकर उनसे निर्मित वस्तुओं को भी प्रचारित करती हैं। ये सारे विज्ञापन औद्योगिक विज्ञापन की श्रेणी में आते हैं।

E) वित्तीय विज्ञापन (Financial Advertisements) :

बैंक, जीवन बीमा, साधारण बीमा, सहकारी संस्थाएँ तथा विभिन्न वित्तीय संस्थाएँ अपनी गति-विधियों तथा शेयर अथवा डिबेंचर आदि जारी करने की सूचना आदि देने के लिए इन विज्ञापनों का सहारा लेती हैं। ये संस्थाएँ अपनी वार्षिक साधारण सभा, वार्षिक लेखा तथा वार्षिक आय-व्यय सम्बंधी तुलन पत्र आदि की सूचना जनता को देकर अपनी साख तथा महत्ता बनाये रखना चाहती है। अत: ऐसे विज्ञापनों में दृश्य-श्रव्य सामग्री की अपेक्षा लिखित ब्यौरा या सामग्री अधिक मात्रा में विद्यमान रहती है।

NOTES

F) वर्गीकृत विज्ञापन (Classified Advertisement) :

इस श्रेणी में विज्ञापन मुख्यत: विभिन्न समाचार पत्रों में मौजूद रहते हैं। प्रत्येक व्यावसायिक समाचार पत्रों तथा कुछ पत्रिकाओं में एक या कुछ अधिक पृष्ठ वर्गीकृत विज्ञापन हेतु सुरक्षित (आरक्षित) रखे जाते हैं। विवाह सम्बंध, छोटी-मोटी नौकरियाँ, किराये के मकान, छोटे या लघु उद्योगों के उत्पादन, खोयी या पाई वस्तुएँ, निविदा आदि से सम्बंधित विज्ञापन इस श्रेणी में आते हैं। वर्गीकृत विज्ञापन अपेक्षाकृत संक्षिप्त एवं तत्काल प्रभावकारी होते हैं, इसलिए ये बहुत अधिक लोकप्रिय भी माने जाते हैं।

विज्ञापन के माध्यम

विज्ञापन माध्यमों से तात्पर्य है–जन-संचार या जन-सम्पर्क के वे माध्यम जिनके द्वारा विज्ञापन प्रसारित या प्रचारित किये जाते हैं। इन विज्ञापन माध्यमों को मुख्यत: तीन भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है–

अ) प्रेस माध्यम

आ) मनोरंजन माध्यम

इ) बाह्य माध्यम

A) प्रेस माध्यम (Press Media) :

नियमित रूप से प्रकाशित होने वाले समाचार पत्रों अथवा पत्रिकाओं में जो विज्ञापन प्रकाशित किये जाते हैं, उन्हें प्रेस विज्ञापन कहा जाता है। यह विज्ञापन के लिए अत्यन्त प्रभावी तथा जन सुलभ माध्यम हैं क्योंकि इनका प्रसार अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक भी हो सकता है। प्रेस विज्ञापनों को मुख्यत: राष्ट्रीय विज्ञापन (National Advertisements), वर्गीकृत विज्ञापन (Classified Advertisement) तथा समाचार विज्ञापन (News Advertisement) आदि श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है।

समाचार पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से शीघ्र प्रकृति के विज्ञापन तुरन्त दिये जा सकते हैं। इसकी एक विशेषता यह भी है कि क्षेत्र-विशेष की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए उनके सामाजिक तथा सांस्कृतिक संदर्भ के अनुसार विज्ञापन प्रकाशित किये जा सकते हैं। समाचार पत्रों के विज्ञापनों से तात्कालिक प्रभाव बनाये जा सकते हैं और उन्हें अधिक लोगों तक सहज एवं सरलता से कम खर्चीले रूप से पहुँचाया जा सकता है।

B) मनोरंजन माध्यम (Entertainment Media) :

इस श्रेणी के विज्ञापन मुख्य रूप से रेडियो, दूरदर्शन तथा सिनेमा आदि माध्यमों से प्रसारित किये जाते हैं। रेडियो जन-सामान्य के मनोरंजन का एक सहज सुलभ साधन है और इस माध्यम से दिये जाने वाले विज्ञापनों में शब्द शक्ति तथा शब्दों के उच्चारण आदि पर विशेष जोर दिया जाता है। उत्पादनकर्ताओं द्वारा प्रायोजित कार्यक्रम, रेडियो रूपक, नाट्य छटा तथा प्रभावी संवादों के माध्यम से विज्ञापन दिये जाते हैं। रेडियो द्वारा प्रसारित विज्ञापनों का गहरा प्रभाव उपभोक्ताओं के मानस पटल पर पड़ता है। विविध भारती सेवा के अन्तर्गत प्रसारित कोहिनूर गीत गुँजार, एच.एम.वी. के सितारे, मफतलाल ग्रुप की संतों की वाणी, जौहर के जवाब, क्रिकेट वीद विजय मर्चेन्ट तथा रेडियो सिलोन का बीनाका गीता माला आदि का प्रभाव जन-मानस से कभी मिट नहीं सकता।

आधुनिक युग में विज्ञापन क्षेत्र में एक शक्तिशाली माध्यम के रूप में टैलीविजन उभर कर सामने आया है। दूरदर्शन विज्ञापनों में दृश्य एवं श्रव्य दोनों रूपों का अद्‌भुत तालमेल कल्पना शक्ति का अत्यन्त प्रभावी साकार रूप भी देखा जा सकता है। ये विज्ञापन दर्शक उपभोक्ताओं के मन पर जादुई रूप में छा जाते हैं और दर्शक वस्तु के क्रय के लिए लालयित तथा आतुर हो उठता है। फलत: दूरदर्शन को विज्ञापन का सबसे अधिक सशक्त एवं प्रभावी माध्यम माना गया है। इसीलिए स्वाभाविकता रेडियो तथा समाचार पत्रों की विज्ञापन दरों से दूरदर्शन के विज्ञापन की दरें बहुत अधिक रहती हैं।

विज्ञापन का तीसरा महत्त्वपूर्ण माध्यम है सिनेमा। भारतवर्ष में मनोरंजन का अत्यन्त लोकप्रिय साधन सिनेमा को ही माना गया है। फलतः फिल्मों के निर्माण की अद्भुत गति भारत में देखी जा सकती है। प्रतिदिन दर्शकों की लाखों-करोड़ों की संख्या में सिनेमा गृहों तथा वीडियो-पार्लरों में फिलमें देखी जाती हैं। अतः सिनेमा विज्ञापन का प्रभाव दर्शकों पर स्थायी रूप से बना रहता है। सिनेमा गवृहों में स्लाइड आदि के माध्यम से भी विज्ञापन दिये जाते हैं।

C) बाह्य माध्यम (Out-door Media) :

इसे विज्ञापन का सहायक माध्यम माना जा सकता है। उपभोक्ता जब अपने घर से बाहर होता है तब जिन माध्यमों प्रकारों से वह प्रभावित होता है उन्हें बाह्य माध्यम की श्रेणी में रखा जा सकता है—जैसे, पोस्टर, होर्डिंग, विद्युत चल डिस्टल तथा बस अथवा रेल के अन्दर के पोस्टर आदि।

इन विज्ञापनों को ऐसे स्थानों पर प्रदर्शित किया जाता है जहाँ से बहुसंख्य लोगों का आवागमन होता है। जैसे—रेलवे स्टेशन, भीड़-भरे चौराहे, मुख्य बाजार, मुख्य सड़कें या राजमार्ग आदि। बस या रेल के डिब्बों में भी पोस्टरों के रूप में बहुत-सारे विज्ञापन लगाये जाते हैं जो यात्रियों को अपनी ओर आकर्षित करते हैं।

इस प्रकार, दृष्टिगत होता है कि बाह्य विज्ञापनों ने भी समस्त दुनिया को पादाक्रान्त कर लिया है

विज्ञापन की विशेषताएँ

व्यावसायिक जगत में वस्तुओं के निर्माताओं द्वारा उपभोक्ताओं को आकर्षित करके उन्हें अपने उत्पाद खरीदने के लिए उत्प्रेरित करने वाले विज्ञापन अपने में कुछ विशेषताएँ लिऐ हुए होते हैं। इन विशेषताओं में मुख्य हैं—

(i) उपभोक्ताओं के ध्यानाकर्षण की शक्ति,

(ii) उत्पादित वस्तु के बारे में सूचना या जानकारी देना,

(iii) वस्तु के बारे में उपभोक्ताओं के मन में विश्वास निर्माण करना,

(iv) उपभोक्ताओं की सूक्ष्म इच्छाओं को जाग्रत करना,

(v) उपभोक्ताओं को वस्तु के क्रय सम्बंधित निर्णय लेने में सहायक होना,

(vi) उत्पादित वस्तु की सर्वश्रेष्ठता अथवा वरियता दर्शाना या सिद्ध करना,

(iii) उत्पादित वस्तु के बारे में तकनीकी या अन्य आवश्यकता एवं उपयोगिता उपभोक्ता का बताना।

विज्ञापन और प्रयोजनमूलक हिन्दी

विज्ञापन की भाषा-प्रयुक्ति अपनी एक विशिष्टता लिए हुए है। विज्ञापनों में प्रयुक्त हिन्दी की विशेषता है उसी शब्द-शक्ति और भावबोध का तत्व, जो विज्ञापन के उद्देश्य की पूर्ति हेतु सक्षम सिद्ध होते हैं। एक सक्षम एवं सफल विज्ञापन के लिए चार गुणों का होना आवश्यक माना गया है—(1) आकर्षक मूल्य (Attention Value), (2) श्रवणीयता एवं सुपाठ्यता (Realdability and Listenability), (3) स्मरणीयता (Memorability) तथा (4) विक्रय की शक्ति (Selling Power)। विज्ञापन के इन चारों गुणों को रूपायित करने के लिए उसकी अभिव्यक्ति हेतु संदर्भ एवं स्थिति के अनुरूप भाषा एवं उसमें प्रयुक्त शब्दों का रूप बदलता रहता है। विज्ञापन में शब्द के सामर्थ्य को पहचान कर उसकी प्रयुक्ति की जाती है।

विज्ञापन में जीवंतता एवं आकर्षण आ जाता है। जैसे 'और' शब्द सामान्य रूप से इतना परिचित है कि लगता है कि उसमें कुछ विशेष बात नहीं हो सकती। किन्तु जब यह 'और' शब्द विज्ञापन में प्रयुक्त किया जाता है तब पता चलता है कि उसमें कितनी शक्ति समाहित है। और टी०वी० की दुनिया में अब एक नया धमाका—ऑटानिका! और हार्लिक्स अब नये पैक में! इसी प्रकार अनेक शब्द या वाक्यांश देखे जा सकते हैं। विज्ञापन में, इस प्रकार, शब्द के सामर्थ्य को पहचानकर उसे वैशिष्ट्यपूर्ण आयामों में प्रस्तुत किया जाता है।

NOTES

विज्ञापन की भाषा-प्रयुक्ति उसके संदर्भ, आवश्यकता तथा माध्यम के अनुसार बदलती रहती है। समाचार पत्र, आकाशवाणी तथा दूरदर्शन के विज्ञापनों की भाषा एक-सी नहीं होती, हो भी नहीं सकती। समाचार पत्र-पत्रिकाओं के विज्ञापन की भाषा में स्थानीय उपभोक्ता की आवश्यकता के अनुसार सामाजिक अथवा सांस्कृतिक संदर्भों का प्रयोग किया जाता है। इसमें शब्द बाहुल्य की अधिक गुंजाइश रहती है। आकशवाणी के विज्ञापन में केवल श्रव्यता पर अधिक बल होने के कारण शब्दों के चयन और उच्चारण पर अधिक जोर देकर उसके प्रभाव को बढ़ाया जाता है। दूरदर्शन के विज्ञापन में दृश्य एवं श्रव्य दोनों का प्रयोग किया जाता है। अत: ऐसे विज्ञापनों को अधिक कलात्मक तथा प्रभावशाली बनाये जाने के लिए शब्दों के उच्चारण के साथ दृश्यों के प्रस्तुतिकरण की ओर विशेष ध्यान दिया जाता है। इन तीनों प्रचार-माध्यमों के विज्ञापनों में हिन्दी का एक विशिष्ट रूप प्रयुक्त होता है। जिसमें भाषायी लचीलापन, कोमलता, संक्षिप्तता तथा प्रभावोत्पादकता के साथ शब्द-स्वरों का आरोह-अवरोह, बलाघात तथा उच्चारण आदि पर विशेष रूप से ध्यान दिया जाता है।

समाचार-पत्र, आकाशवाणी तथा दूरदर्शन के लिए विज्ञापन-लेखन

आधुनिक युग को विज्ञापन का युग कहा जाता है। विज्ञापन प्रसारण के अनेक साधन उपलब्ध हैं किन्तु समाचार पत्र, आकाशवाणी तथा दूरदर्शन आदि प्रसार माध्यमों में विज्ञापन का स्थान सर्वोपरि माना जा सकता है। ये माध्यम अपनी-अपनी प्रवृत्ति में एक-दूसरे से भिन्न जरूर हैं किन्तु तीनों के माध्यम से जनसम्पर्क अत्यंत प्रभावी तथा व्यापक पैमाने पर स्थापित किया जा सकता है। अत: उक्त तीनों माध्यमों में विज्ञापन का स्थान अक्षुण्ण महत्ता रखता है। इन तीनों माध्यमों के लिए विज्ञापन लेखन पर संक्षेप में विचार किया जा रहा है।

समाचार-पत्र के लिए विज्ञापन लेखन

समाचार-पत्र को विज्ञापन के लिए अत्यंत प्रभावी माध्यम माना जा सकता है क्योंकि समाचार-पत्र व्यक्ति के परिवार और कार्यालयों आदि में आने के कारण बहुत अधिक समय तक वे लोगों के सामने रहते हैं। अन्य लोग भी इन्हें पढ़ते हैं। इस प्रकार लाखों-करोड़ो लोगों तक समाचार-पत्र पहुँचता है। अत: अत्यंत सावधानी तथा कौशल के साथ इनमें दिया जाने वाला विज्ञापन तैयार किया जाता है। समाचार पत्र में दिये जाने वाले विज्ञापन में मुख्यत: निम्नलिखित भाग होते हैं–

अ) शीर्ष पंक्ति (Headline)

आ) अनुपूरक शीर्ष पंक्ति (Sub-Headline)

इ) विषय-वस्तु (Text)

ई) विज्ञापनकर्ता का व्यापारी चिह्न (Monogram या Signature)

उ) घोष वाक्य (Slogan या Baseline)

विज्ञापन के लिए उसकी शीर्ष पंक्ति अर्थात् हेडलाइन की विशेष महत्ता होती है। इससे पाठकों का ध्यानाकर्षण होकर उनके मन में कौतूहल तथा उत्सुकता जाग्रत होती है। जैसे–'घंटों का काम मिनटों में' (मिक्सर-ग्राउंडर का विज्ञापन), 'चलो पढ़ायें.....कुछ कर दिखायें' (साक्षरता आंदोलन का विज्ञापन) आदि। अनुपूरक सुर्खी या सब हेडलाइन मुख्य शीर्ष वाक्य के पूरक के रूप में (विषय-विस्तार हेतु) प्रयोग में लाया जाता है।

उदा० 1. शीर्ष पंक्ति–जूही की खूबसूरती का राज

पूरक शीर्ष पंक्ति–नया इंटरनेशनल लक्स

उदा० 2. यह आपके साथ भी हो सकता है (साथ में दोनों कटे पैर वाले पुरुष का चित्र)

पूरक शीर्ष पंक्ति–दुर्घटना से बचिये, वाहन धीरे चलाइये।

NOTES

विज्ञापन की सफलता में मुख्य विषय-वस्तु तथा उसके आकर्षक प्रस्तुतीकरण का बहुत बड़ा हाथ होता है। ग्राहकों की मानसिकता तेजी से बदलते समय-चक्र तथा फैशन आदि का ध्यान में रखते हुए उत्पादित वस्तु की आवश्यकता और अनिवार्यता प्रतिपादित करना मुख्य विषय-वस्तु का उद्देश्य होता है। विषय-वस्तु के अन्तर्गत उत्पादित वस्तु की उपयोगिता, उसमें निहित गुण, अन्य उत्पादनों से हटकर उसमें अधिक गुणों का होना तथा कभी-कभी उसमें समाहित उत्कृष्ट तकनीकी बातों की जानकारी भी दी जाती है। ताकि ग्राहक उस वस्तु को खरीदने के लिए प्रेरित हो।

समाचार पत्रों के विज्ञापनों में विज्ञापनकर्ता कम्पनी अथवा फर्म की मुद्रा (मोनो) या व्यापारी बोध चिह्न (यदि बोर्ड हो) को प्रमुखत: अंकित किया जाता है जिससे सम्बंधित की पहचान ग्राहकों को यथाशीघ्र हो सके। यह बोध चिह्न अत्यन्त संक्षिप्त और आकर्षक होने का प्रयास किया जाता है। इस चिह्न (Monogram) को सम्बंधित संस्था, कम्पनी या फर्म का दर्पण कहा जा सकता है। बाम्बे डाइंग का "झुके हुए पलड़े का तराजू" मफतलाल गुरुप का "कंधे पर पृथ्वी रखा, उठने के लिए तैयार आदमी" तथा किर्लोस्कर अथवा टाटा का अक्षरों का बोध चिह्न आदि देखे जा सकते हैं।

समाचार पत्र, दूरदर्शन अथवा आकाशवाणी के विज्ञापनों में बोध वाक्य या घोष वाक्यों का भी बखूबी प्रयोग किया जाता है। ऐसे वाक्य अत्यंत संक्षिप्त एवं आकर्षक होने के साथ सम्बंधित कम्पनी की या फर्म की एक अच्छी-खास झाँकी प्रस्तुत कर देते हैं। ग्राहकों का कौतूहल, कल्पनाशक्ति तथा क्रय-इच्छा को तीव्रता से जाग्रत करने के लिए तथा सम्बंधित विज्ञापनकर्ता के उत्पाद की विश्वसनीयता को प्रतिपादित करने हेतु ऐसे घोष या बोध वाक्यों का विज्ञापनों में बखूबी प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण के तौर पर विडियोकॉन का "ब्रींग होम द लिडर" ओनिडा का "नेबर्स एनवे-ओनर्स प्राइड", खेतान का "सिर्फ नाम ही काफी है", पेप्सी कोला का "ये है राइट चाइस बेबी" तथा दिनेश मिल का "टेक द वर्ल्ड इन यूवर ट्राइट" आदि घोष वाक्य देखे जा सकते हैं-

आकाशवाणी के लिए विज्ञापन लेखन

आकाशवाणी पूर्णत: श्रव्य माध्यम होने के कारण उससे प्रसारित विज्ञापन उसी दृष्टि से तैयार किये जाते हैं। भाषा में सरलता, संक्षिप्तता तथा माधुर्य होता है। उच्चारण में विशेष कौशल एवं बलाघात के प्रयोग पर बल दिया जाता है ताकि वह विज्ञापन अत्यन्त प्रभावशाली बनकर श्रोता ग्राहकों को अपनी ओर आकर्षित कर सकें।

आकाशवाणी के माध्यम से प्रसारित विज्ञापनों में समय का अत्यंत महत्व होता है। सामान्यत: विज्ञापनों की अवधि 10 सेकण्ड, 20 सेकण्ड और अधिक से अधिक 30 सेकण्ड हो सकती है। इतने कम समय में अत्यंत प्रभावशाली विज्ञापन पूर्ण रूप से दिया जाना आवश्यक होता है। इसके लिए ऐसे विज्ञापन तैयार करते समय शब्द सुर और समयावधि का तालमेल अत्यंत खूबी के साथ करना जरूरी हो जाता है।

आकाशवाणी पर प्रसारित विज्ञापन का एक और लोकप्रिय प्रकार है "प्रायोजित कार्यक्रम"। सामान्यत: लोगों के मनोरंजन हेतु ऐसे कार्यक्रम कम्पनियों, फर्मों अथवा व्यापारी संस्थाओं द्वारा 15 मिनट, 30 मिनट अथवा कभी-कभी 60 मिनट की निर्धारित अवधि के लिए प्रायोजित किये जाते हैं। कार्यक्रम के शुरू, बीच अथवा अन्त में प्रायोजक के उत्पाद के बारे में आकर्षक रूप में विज्ञापन दिया जाता है और सम्बंधित कार्यक्रम उस विशिष्ट अत्यन्त लोकप्रिय भी पाये गये हैं। उदाहरणार्थ "बीनाका गीतमाला", "कोहिनूर गीत गुंजार", "क्रिकेट वीद विजय मर्चेंट", जौहर के जवाब", "एच.एम.वी. के सितारे" आदि प्रायोजित कार्यक्रम देखे जा सकते हैं।

दूरदर्शन के लिए विज्ञापन लेखन

दूरदर्शन दृश्य तथा श्रव्य दोनों का मिला-जुला माध्यम है। पूरे परिवार के सदस्यों के लिए दूरदर्शन एक अत्यन्त प्रभावी माध्यम होने के कारण इसके द्वारा प्रसारित विज्ञापन का असर बहुत दूरगामी हुआ है। दूरदर्शन दृश्य एवं श्रव्य का मिला-जुला रूप है किन्तु इसके बावजूद इसमें 'श्रव्य' की अपेक्षा 'दृश्य' पर

स्व प्रगति की जाँच करें:

5. जनसंचार के माध्यमों को कितने भागों में विभाजित किया जाता है ?
6. विज्ञापन माध्यमों को कितने भागों में विभाजित किया जाता है ? किसी एक का वर्णन करें।

NOTES

अधिक जोर रहता है। दर्शक भी 'सुनने' की बजाय 'देखना' अधिक पसंद करते हैं। फलतः दूरदर्शन पर 'निवेदन' के साथ जो चलचित्र दिखाये जाते हैं, उन्हें अत्यधिक महत्व प्राप्त हो जाता है। इसलिए, दूरदर्शन के लिए तैयार किये जाने वाले विज्ञापनों में 'दृश्यों' (Visuals) पर अधिक पर अधिक बल देकर तद्नुसार श्रव्य सामग्री तैयार की जाती है। दूरदर्शन के विज्ञापन अत्यधिक प्रभावी होने के लिए निम्नलिखित बातों पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए :

1. दूरदर्शन का विज्ञापन लेखन कुछ हद तक फिल्मों के लिखे जाने वाले पटकथा लेखन जैसा ही होता है। पहले दृश्य-चित्र तैयार करके तद्नुसार 'निवेदन' (Comentry) लिखा जाना चाहिए। चलचित्र के दृश्य के अनुसार 'निवेदन' होना चाहिए।

2. निवेदन अत्यन्त संक्षिप्त किन्तु प्रभावशाली हो। कभी-कभी निवेदन का कुशलतापूर्वक उपयोग किया जाता है।। दिनेश मिल्स का विज्ञापन दृष्टव्य है।

3. दूरदर्शन के विज्ञापनों में संगीत की अहम् भूमिका होती है। संगीत और सुरों द्वारा विज्ञापन अत्यन्त आकर्षक एवं चिरस्मरणीय हो जाते हैं। इस संदर्भ में ब्रिटानिया बिस्कुट कम्पनी का विज्ञापन देखा जा सकता है।

4. उत्पादित वस्तु की विश्वसनीयता तथा गुणवत्ता (Quality) के कारण बड़े नामवर व्यक्ति, कलाकार अथवा खिलाड़ी आदि इसका इस्तेमाल करते हैं। इनका बखूबी उपयोग विज्ञापनों में किया जा सकता है। सम्बंधित व्यक्तियों को लेकर अत्यन्त आकर्षक चलचित्र, घोष वाक्य या बोध वाक्य अथवा पामोलिव सेविंग क्रीम का विज्ञापन देखा जा सकता है। कपिलदेव द्वारा कहा जाने वाला वाक्य–'पामालिव का जवाब नहीं' आदि ऐसे सैकड़ों विज्ञापन देखे जा सकते हैं।

5. रोजमर्रा के जीवन की अनेक समस्याओं को लेकर उनके निराकरण हेतु किस प्रकार विशिष्ट वस्तु उपयोगी हो सकती है, इसे विज्ञापनों द्वारा बहुत आकर्षक एवं प्रभावी रूप से दिखाया जा सकता है। जैसे–शुभ्र निर्मल धुलाई के लिए परेशान कोई गृहिणी और उसका उपाय। स्वादिष्ट भोजन के लिए चिंता करता परिवार और फिर उसका उपाय। स्कूल से लौटा बच्चा जो भूख से परेशान है और रोटी, सब्जी या चावल नहीं खाना चाहता ऐसे बच्चें को खुश करती माँ। इस संदर्भ में व्हील, निरमा, एरियल, सनफ्लॉवर तेल, एम.डी.एच. मसाले तथा मैगी फूड्स आदि के विज्ञापन दृष्टव्य है।

स्व-प्रगति की जाँच के उत्तर

1. **जनसंचार के कार्य** – राइट (1960) ने जनसंचार के कार्यों की सात विशेषताओं को चित्रित किया है जो हमारे जीवन में इसकी भूमिका की अन्तर्दृष्टि का प्रस्ताव करता है।

   नगरानी - जनसंचार का पहला कार्य हममें से उन लोगों के आँख और कान की तरह सेवा करना है जो दुनिया के बारे में जानकारी चाहते हैं। जो कुछ भी हो रहा है, जब हम उसके बारे में ताजी खबर जानना चाहते हैं तो हम या तो टेलीविजन की ओर, इन्टरनेट सर्फिंग या समाचारपत्र या पत्रिकाएं पढ़ते हैं। हम जनसंचार पर हमारे दैनिक जीवन के बारे में जैसे मौसम, स्टॉक रिपोर्ट, या खेलों के शुरू होने के समय आदि जैसी सूचनाएं प्राप्त करने के लिए निर्भर होते हैं। उनमें से पहली चीज क्या थी जो आपने वर्ल्ड ट्रेड सेन्टर पर आतंकी हमले के ठीक बाद किया था? अधिक संभावना है, आप इन्टरनेट या अपने टीवी सेट से आपदा के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त करने के लिए चिपके हुए थे। वास्तव में, आपका लेखकीय परिसर को बन्द कर दिया गया था और घर पर अपने प्रिय लोगों के साथ रह कर सूचना एकत्रित करने की अनुमति दी गई थी, भले ही हमारा परिसर देश के दूसरे छोर पर स्थित था।

2. **मैजिक बुलेट सिद्धान्त** : मैजिक बुलेट सिद्धान्त (हाइपोडर्मिक सुई सिद्धान्त भी कहा जाता है) सुझाव देता है कि जनसंचार निष्क्रिय दर्शकों पर बन्दूक से सूचनाओं की गोली से फायरिंग करने की तरह है। ''संचार को एक जादुई गोली की तरह देखा जाता है जो विचारों या भावनाओं या ज्ञान या मंशा को अधिकांश स्वतः एक मन से दूसरे तक हस्तांतरित करता है।'' इस सिद्धान्त

को व्यापक रूप से शिक्षाविदों के द्वारा अमान्य कर दिया गया था क्योंकि यह सुझाव देता है कि दर्शकों के सभी सदस्य समान तरीके से संदेशों को समझते हैं, और व्यापक रूप से संदेशों के निष्क्रिय प्राप्तकर्ता। यह सिद्धान्त बीच में आने वाले सांस्कृतिक और जनसांख्यिकीय वैरिएबल को ज्यादा तवज्जो नहीं देती जैसे कि- आयु, जातीयता, लिंग, व्यक्तित्व, या शिक्षा जो हमारे सामने आने वाले मीडिया संदेशों पर अलग तरीके से हमें प्रतिक्रिया व्यक्त करने का कारण होती है। हालांकि, बहुत से लोगों की यह मान्यता होती है कि टेलीविजन की तरह की मीडिया आसानी से सूचना को फैलाती है। जिनका विश्वास है कि टेलीविजन के रियलिटी शो वास्तव में वास्तविकता को चित्रित करते हैं वे मैजिक बुलेट सिद्धान्त, जनसंचार के पाँच मौलिक सिद्धान्त की कुछ मान्यताओं को बनाए रखते हैं : मैजिक बुलेट सिद्धान्त, दो-कदम प्रवाह सिद्धान्त, बहु-कदम प्रवाह सिद्धान्त, उपयोग और सन्तुष्टि का सिद्धान्त और उत्कर्ष का सिद्धान्त।

3. मूल्यांकन सर्वेक्षण से पता चला कि किसूर गांव ने ग्रामीण टेलीफोन सेवा के निम्नलिखित फायदे दर्ज किए गए :

   1. समय और पैसों की बचत।
   2. कृषि उत्पादों के लिए उच्च कीमतें।
   3. कृषि उत्पादों की बिक्री में वृद्धि।
   4. चिकित्सा में तेज ध्यान।
   5. मित्रों और रिश्तेदारों से सामाजिक सम्पर्क में वृद्धि।
   6. अधिक कानून और व्यवस्था।
   7. तेजी से सूचना और समाचार का प्रवाह।

4. **जनसंचार की विशेषताएँ**

   अ) जनसंचार की सबसे प्रमुख विशेषता है कि यह साधारण जनता के लिए होता है अर्थात् यह विशेष वर्ग के लिए नहीं होता।

   आ) जनसंचार की दूसरी विशेषता यह है कि यह अपना संदेश तीव्रतम गति से गंतव्य तक पहुँचाता है। समाचार पत्र, रेडियो तथा टेलीविजन के माध्यम से तीव्र गति से कोई भी संदेश जन-सामान्य तक पहुँचाया जा सकता है।

   इ) जनसंचार का माध्यम लिखित या मौखिक कोई भी हो सकता है। मौखिक में भाषण या वक्तव्य द्वारा और लिखित में समाचार पत्र-पत्रिकाएँ आती हैं।

   ई) जनसंचार प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष हो सकता है। प्रत्यक्ष रूप से जनता के समक्ष खड़े होकर संदेश दिया जा सकता है। अप्रत्यक्ष रूप से पर्दे के पीछे रहकर जनता को संदेश दिया जा सकता है।

   उ) जनसंचार की सबसे प्रमुख विशेषता यह है कि इसमें जन-सामान्य की प्रतिक्रिया का पता चल जाता है।

5. **जनसंचार के माध्यम–** जनसंचार के समस्त माध्यमों को तीन भागों में विभाजित किया जाता है–

   अ) शब्द संचार माध्यम :

   इसके अन्तर्गत समाचार पत्र, पत्रिकाएँ तथा पुस्तकें आदि आते हैं।

   आ) श्रव्य संचार माध्यम :

   इसके अन्तर्गत रेडियो, कैसेट तथा टेपरिकॉर्डर आदि आते हैं।

इ) दृश्य संचार माध्यम :

इस कोटि के अन्तर्गत दूरदर्शन, वीडियो तथा फिल्म आदि आते हैं।

6. इन विज्ञापन माध्यमों को मुख्यत: तीन भागों में वर्गीकृत किया जा सकता है–

अ) प्रेस माध्यम

आ) मनोरंजन माध्यम

इ) बाह्य माध्यम

A) प्रेस माध्यम (Press Media) : नियमित रूप से प्रकाशित होने वाले समाचार पत्रों अथवा पत्रिकाओं में जो विज्ञापन प्रकाशित किये जाते हैं, उन्हें प्रेस विज्ञापन कहा जाता है। यह विज्ञापन के लिए अत्यन्त प्रभावी तथा जन सुलभ माध्यम हैं क्योंकि इनका प्रसार अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक भी हो सकता है। प्रेस विज्ञापनों को मुख्यत: राष्ट्रीय विज्ञापन (National Advertisements), वर्गीकृत विज्ञापन (Classified Advertisement) तथा समाचार विज्ञापन (News Advertisement) आदि श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है।

समाचार पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से शीघ्र प्रकृति के विज्ञापन तुरन्त दिये जा सकते हैं। इसकी एक विशेषता यह भी है कि क्षेत्र-विशेष की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए उनके सामाजिक तथा सांस्कृतिक संदर्भ के अनुसार विज्ञापन प्रकाशित किये जा सकते हैं। समाचार पत्रों के विज्ञापनों से तात्कालिक प्रभाव बनाये जा सकते हैं और उन्हें अधिक लोगों तक सहज एवं सरलता से कम खर्चीले रूप से पहुँचाया जा सकता है।

अभ्यास-प्रश्न

1. जनसंचार का अभिप्राय स्पष्ट करते हुए इसके माध्यमों का वर्णन कीजिए।
2. जनसंचार की विशेषताओं को विस्तारपूर्वक समझाऐं।
3. जनसंचार के माध्यमों की क्या उपयोगिता है? स्पष्ट करें।
4. जनसंचार माध्यमों के लिए समाचार लेखन पर प्रकाश डालिए।
5. विज्ञापन के प्रकारों का विस्तारपूर्वक वर्णन करें।
6. समाचार-पत्र के लिए विज्ञापन लेखन को समझाऐं।

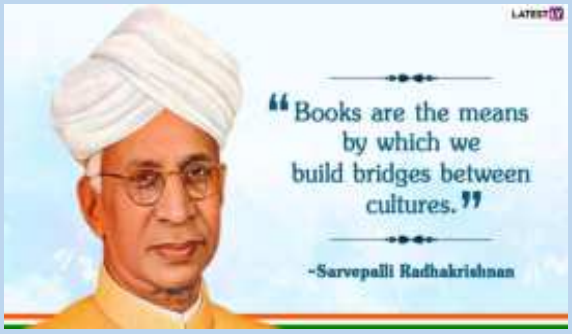

Center for Distance Learning & Continuing Education
MAHATMA GANDHI CHITRAKOOT GRAMODAYA VISHWAVIDYALAYA
Chitrakoot, Satna (M.P.) 485334
E-mail : directordistancemgcgv@gmail.com